CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

Indespensible Books to Know

Glory of India

1967

HISTORY, CULTURE, RELIGION AND PHILOSOPHY etc.

भारतीय-साहित्य

संस्कृत, पाली, प्राकृत, हिन्दी और अंग्रेजी ग्रंथ

MOTILAL BANARASIDASS
Publishers and Booksellers
CHOWK, VARANASI

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

डा० राजेन्द्र प्रसाद, भूतपूर्व राष्ट्रपति, भारत "........आपने प्रकाशन के कार्यक्रम का जो विवरण भेजा है उससे मैं बहुत प्रभावित हुआ। भारतीय विद्याविषयक की ओर, स्वाधीनता प्राप्ति के बाद, सरकार और विद्वानों का ध्यान पहले से अधिक है और प्रकाशन के क्षेत्र में अग्रणी होने के नाते आपका जो कर्तव्य है उसे आप बहुत निष्ठा के साथ निबाह रहे हैं।...मुझे आशा है कि आप के इन सभी प्रयासों का आदर भारत सरकार तथा अन्य प्रादेशिक सरकारें करेंगी........।"

Dr. S. Radhakrishnan, President of India: "......I know you have been doing valuable work for over a half century and inspite of great troubles you had, you were persisting in good work......."

M. M. Dr. H. P. Shastri....................The firm of M/s. Motilal Banarsidass have absorbed nearly the whole of India and much of European book trade on Indology.

ESTD. 1903

TELEGRAM : GLORYINDIA
TELEPHONE : 227655 & 221985

MOTILAL BANARSIDASS
BUNGALOW ROAD, JAWAHARNAGAR
DELHI-7

BRANCH
MOTILAL BANARSIDASS
Nepalikhapra, Varanasi
(U. P.)

BRANCH
MOTILAL BANARSIDASS
Chauhatta, PATNA.
(BIHAR)

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

Tele { Gram "Glory India"
Phone 2898

Estd. 1903

CATALOGUE OF BOOKS

RELATING TO

Ancient Indian Culture, Religion Philosophy Grammar & Literature Etc,

भारतीय संस्कृति एवं साहित्य सम्बन्धी पुस्तकें

1967

MOTILAL BANARSIDASS
PUBLISHERS & BOOKSELLERS
Nepali Khapra, Varanasi.
मोतीलाल बनारसीदास—नेपाली खपड़ा, वाराणसी

Branches at :
1. **Motilal Banarsidass, Post Box 1586, Delhi**
2. **Motilal Banarsidass, Chouhatta, Patna**

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

आवश्यक विज्ञप्ति

(१) आदेश-पत्र में अपना पता स्पष्ट अक्षरों में लिखा करें। पार्सल रेल से मँगवाना हो तो रेलवे स्टेशन का नाम अवश्य उल्लेख करें। बड़ा आदेश पर १०) रुपये अग्रिम अवश्य भेजें। बीजक में कुछ गलती मालूम पड़े, फिर भी माल अवश्य छुड़ा लें और पत्र-व्यवहार द्वारा बीजक की गलती ठीक करा लें।

(२) प्रकाशकों द्वारा समय-समय पर पुस्तकों के मूल्य घटते-बढ़ते रहते हैं, अतः पुस्तकों के मूल्य का उत्तरदायित्व नहीं है।

(३) वेङ्कटेश्वर प्रेस, बम्बई की पुस्तकों का दाम २० प्रतिशत बढ़ गया है। इसलिए उनकी प्रकाशित पुस्तकों का मूल्य बढ़ा कर माल भेजा जायगा।

(४) इस सूचीपत्र का शेष भाग भी शीघ्र प्रकाशित हो रहा है।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

शिक्षा मन्त्रालय की पुराने संस्कृत ग्रन्थों के पुनः प्रकाशन की योजना के अन्तर्गत प्रसिद्ध संस्कृत विश्वकोश 'शब्दकल्पद्रुम' राष्ट्रपति डा० राजेन्द्रप्रसादजी को भेंट करते हुए अखिल भारतीय प्राच्य सम्मेलन के अध्यक्ष डा० वी० राघवन् तथा प्रकाशन प्रतिष्ठान मोतीलाल बनारसीदास के सञ्चालक—

श्री सुन्दरलाल जैन।

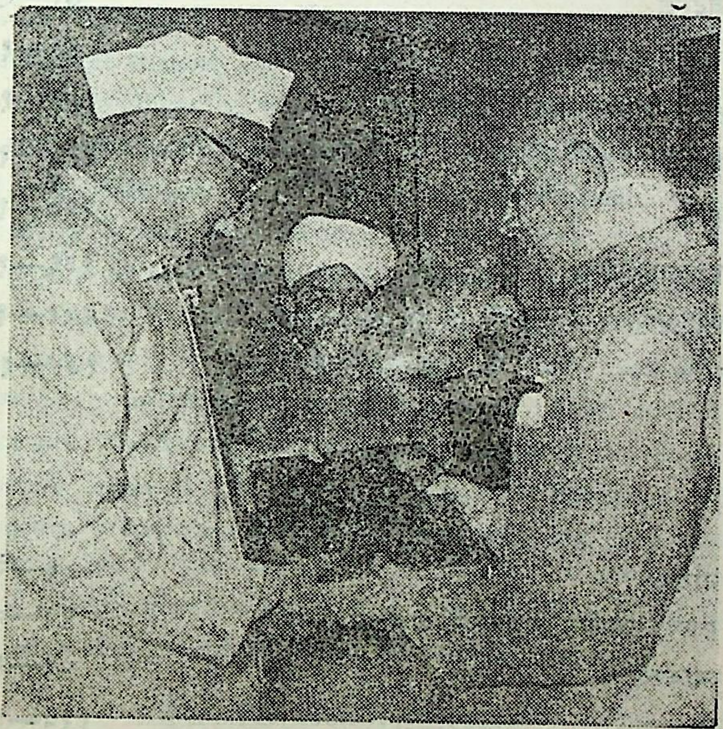

मोतीलाल बनारसीदास

(१) पो० बा० ७५, वाराणसी।

(२) बङ्गलो रोड, जवाहरनगर, दिल्ली–७।

(३) चौहट्टा, पटना।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

विषय–सूची

प्रथम खण्ड

वेद-उपनिषद्	१—४६
धर्मशास्त्र-कर्मकाण्ड	४७—७०
वेदान्त	७१—६६
रामानन्दवेदान्त	६६—१००
न्याय-वैशेषिक-मीमांसा-सांख्य-योग	१००—१२२
शैव	१२२—१२७
तन्त्र	१२७—१३६
इतिहास-पुराण	१३६—१५०
ज्योतिष	१५१—१७४
नीति	१७४—१८२

द्वितीय खण्ड

नाटक	१—२३
काव्य, सुभाषित, गद्यकाव्य, अलंकार, चम्पू	२३—८५
व्याकरण	८५—११८
कोश	११८—१३३
संगीत	१३३—१३६
शिल्प	१४०—१४२
विलम्ब से उपलब्ध होनेवाली नवीनतम पुस्तकों की सूची	

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

ATHARVA VEDA SAMHITA

Translated with a critical and exegetical commentary, by William Dwight Whitney. Revised and brought nearer to completion and edited by Charles Rockwell Lanman.

Royal Octavo. pp. clxii+iv+1046 in 2 Vols. Rs. 30.00

This work includes, in the first place, critical notes upon the text, giving the various readings of the manuscripts, and not alone of those collated by Whitney in Europe, but also of those of the apparatus used by S.P. Pandit in the great Bombay edition. Second, the readings of the Paippalada or Kashmir version, furnished by the late Prof. Roth. Further, notice of the corresponding passages in all the other Vedic texts, with report of the various readings. Further, the data of the Hindu scholiast respecting authorship, divinity and meter of each verse. Also, reference to the ancillary literature, especially to the well-edited Kausika and Vaitāna Sutras, with an account of the ritualistic use therein made of the hymns or parts of hymns, so far as this appears to cast any light upon their meaning. Also extracts from the printed commentary. And, finally, a simple literal translation with introduction and indices. Prefixed to the work proper is an elaborate critical and historical introduction.

ईशादि-दशोपनिषदः

शांकरभाष्योपेताः

उपनिषदों में ईश, केन, कठ, प्रश्न, मुण्डक, माण्डूक्य, ऐतरेय, तैत्तिरीय, छान्दोग्य और बृहदारण्यक ये १० उपनिषदें अत्यन्त प्रसिद्ध और प्रचलित हैं। इन पर श्रीशंकराचार्य कृत भाष्य की प्रसिद्धि भी सर्वविदित ही है। शांकरभाष्य सहित इन उपनिषदों के संस्करण अधिक मूल्यवान् होने से सहसा सब लोग उनसे लाभ नहीं उठा पाते थे अतः

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

भारत सरकार की सहायता से हमने शंकरग्रन्थावली को अत्यन्त स्वल्पमूल्य में ३ भागों में प्रकाशित किया है। जिसके ६०० पृष्ठों वाले प्रथम भाग में ये दसों उपनिषद् शांकरभाष्य सहित केवल ८-२५ रु० में प्राप्य है। आकर्षक छपाई का शुद्ध संस्करण इतने स्वल्प मूल्य में अन्यत्र दुर्लभ है। शीघ्रता करें। मूल्य ८-२५

THE UPANISADS

Translated with an

Introduction by Prof. F. Max Muller. in 2 Vols.

Rexin bound, Demy Octavo, CLXII+670 pages, Rs. 40.00 two vol.

Vol. I. *The Chāndogya Upanisad; The Talvakārā Upanisad; The Aitareya Aranyaka; The Kaushitaki-Brāhmana-Upanisad and The Vajasaneyi-Saṃhitā-Upanisad.*

Vol. II. The Katha Upaniṣad; The Mundaka Upanisad; The Taittiriya Upanisad; The Brıhdaranyaka Upanisad; The Svetasvatara Upanisad; The Prasna Upanisad and The Maitrayana-Brahamana Upanisad :

These Upanisads were the harbinger of the Ancient Vedic Literature beyond the frontiers of India and powerfully impregnated the very philosophy of Schopenhauer. They enlightened the religious outlook of Raja Ram Mohan Roy and by these Upanisads, the love for Sanskrit literature, was first kindled in the mind of Prof. Max Muller, and in them we find real nuggets of thought and precious jewels of faith and hope.

ऋग्वेद प्रातिशाख्य

प्रथम भाग

सम्पादक डा० मंगलदेव शास्त्री एम. ए., डी. फिल.

प्रत्येक संहिता के अध्ययन के लिये प्रातिशाख्य का ज्ञान आवश्यक है। ऋग्वेद संहिता संसार का सर्व प्राचीन ग्रन्थ और भारतीय संस्कृति की अमूल्य निधि है। इसके

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

प्रातिशाख्य का आलोचनात्मक संस्करण आज तक उपलब्ध नहीं था। डा० साहब ने कमी की पूर्त्ति वर्तमान संस्करण से कर दी है। इसमें मूल का पूरा आशय स्पष्ट हो गया है। पूर्व भाष्यकारों ने जिस अंश को छोड़ दिया था उसे भी स्पष्ट करने की चेष्टा की गई है। विस्तृत भूमिका तथा विशेष टिप्पणी एवं पाठान्तर सहित यह विशिष्ट संस्करण वैदिक साहित्य जिज्ञासुओं के लिये अत्यन्त उपादेय है। पक्की कपड़े की जिल्द उत्तम छपाई। मूल्य २०.००

एकादशोपनिषदः

ईश, केन, कठ, प्रश्न, मुण्डक, माण्डूक्य, ऐतरेय, तैत्तिरीय, उपनिषदों पर

श्रीमदुदासीन अमरदासजी कृत "उपनिषन्मणिप्रभा" व्याख्या
छान्दोग्य–बृहदारण्यक पर नित्यानन्दाश्रमकृता "मिताक्षरा"
तथा कैवल्योपनिषद् पर शंकरानन्दकृता "दीपिका" व्याख्या सहित।

श्रीशंकराचार्य के भाष्य को समझने के लिये उपनिषदों पर श्रीअमरदासजी की मणिप्रभा व्याख्या अत्यन्त उपादेय, सरल और सुबोध सिद्ध हुई है। यही कारण था कि लाहौर में इसके कई संस्करण हाथोंहाथ निकल गये। इधर बराबर इसकी माँग आती रही अतः हमने पुनः इसे प्रकाशित करवाया है। प्रस्तुत संस्करण अत्यन्त शुद्ध छपा है, साथ में उपनिषदों की मंत्रवर्णानुक्रमणी भी दे दी है।

डबलडिमाई साइज में पक्की कपड़े की जिल्द मूल्य केवल १५.००

A CONCORDANCE TO THE PRINCIPAL UPANISHADS & BHAGAVADGITA

BY COL. G. A. JACOB.

pp 1092 Cloth bound Rs. 19.40

A long out-of-print book is again reprinted by offset process under the Scheme of reprinting of out-of-print Sanskrit books sponsored by the Ministry of Education. Govt. of India. It is a very important book and its want was felt keenly by the scholars. One of the major difficulties in appreciating the various commentaries on Vedic Sutras and other Ancient Indian Philosophical texts is that numerous citations from the Upanishads and Bhagavadgita are found in them without any exact-

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

authenticated reference to the original source. To overcome this difficulty, Col. G. A. Jacob had compiled this concordance and has provided relevant cross references to furnish indispensable material to students of Philosophy, Philology and Lexicography.

CRITICAL STUDY OF RIGVEDA–(1.37-63)

Particularly from the Point of View of Paninian Grammar by

DEO PRAKASH PATANJAL SHASTRI,

Demy, pages 440 Cloth bound Rs. 21

It is an exhaustive analysis of the formation of the Vedic words by means of the rules of Panini's Grammar. It is also intended to fill the gap which Sayana has left in his explanation of the words in his memorable commentary on the Rigveda as also to correct his explanations where they seem to be wrong or fanciful.

केनोपनिषद्

अनुवादक व संग्रहकर्ता—आहिताग्नि यमुनाप्रसाद त्रिपाठी

डिमाई आठ-पेजी : पृष्ठ संख्या १९२ सजिल्द : मूल्य ४.००

इस उपनिषद् में आदि और अंत में शान्तिपाठ है। यही शान्तिपाठ सामवेदीय उपनिषदों में प्राय: सर्वत्र है। इसमें चार खण्ड हैं। प्रथम में आठ मंत्र हैं जिसके अंतिम पाँच के तृतीय तथा चतुर्थ पाद 'तदेव ब्रह्म त्वं विद्धि नेदं यदिदमुपासते' इन सब मन्त्रों में एक ही है। इसका अर्थ यह है कि उसी को तुम ब्रह्म समझो तथा यह जिसकी उपासना की जाती है।

दूसरे खण्ड में परब्रह्म परमात्मा के ज्ञान होने की कठिनता स्पष्ट दिखायी गयी है और यह बात भी कही गयी है कि मनुष्य यदि इसी जीवन में परब्रह्म परमात्मा को जान सका तो सबसे बड़ा लाभ हुआ यदि न जान सका तो सबसे बड़ी हानि होगी।

तीसरे खण्ड में आख्यायिका के रूप में यह कहा गया है कि अग्नि, वायु और इन्द्र जो सबसे बड़े देवता हैं वे भी परब्रह्म परमात्मा को न जान सके। और इन्द्रदेव ने उमादेवी से पूछकर ज्ञान प्राप्त किया।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

चौथे खण्ड में उमादेवी ने इन्द्र को यह बतलाया है कि जो कुछ तुम्हारी विजय होती है और उससे तुम महिमा को प्राप्त करते हो वह सचमुच उसी यक्ष, जो परब्रह्म परमात्मा है की विजय का फल है।

इसमें अंग्रेजी के अनुवाद जो डा० राधाकृष्णन्, स्वामी गम्भीरानन्दजी, पं० गयाप्रसादजी, स्वामी शर्वानन्दजी और श्री अरविन्द ने किये हैं और हिन्दी के अनुवाद जो पं० श्रीपाद दामोदर सातवलेकर व स्वामी दयानन्द ने किये हैं, इस ग्रन्थ को समझने और हृदयङ्गम करने के लिये दे दिया गया है।

प्रस्तुत पुस्तक में प्रत्येक मन्त्र का पदच्छेद, अन्वय, शब्द, शब्दार्थ, भावार्थ व्याख्या और अंग्रेजी के अनुवाद दिया गया है जिससे लोगों को समझने में अधिक सुविधा प्राप्त हो।

THE GRHYA SUTRAS

Translated by H. Oldenberg, with an Introduction to the authors of each Grhya, Sutra, and edited by F. Max Muller.

Rexin bound, Demy Octyvo, XXXIX + 816 pages

(in two volumes) Rs. 40-00 for 2 Vols.

Vol. I. *The Grhya Sutras*; or, 'Rules of Vedic Domestic Ceremonies' : have *Sankhayan-Grhya-Sutra; Asvalayana-Grhya-Sutra; Paraskar-Grhya-Sutra and Khadira-Grhya-Sutra,*

Vol. II. *The Grhya Sutras* : or, Rules of Vedic Domestic Ceremonies' : have *Gobhila - Grhya-Sutra; Hiranyakesi - Grhya-Sutra. Apestamba-Grhya-Sutra; and Yajna-Paribhasa-Sutra;*

These volumes contain the literature of the Grhya-Sutras and throw light on the development of the Grhya rituals (Domestic ceremonies) during the oldest period of Hindu antiquity. These ceremonies are either contemporaneous with or even earlier than the most ancient hymns of the Rig-veda.

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

CHHANDASVATI-VAK (छन्दस्वतीवाक्)

(Selected Vedic Mantras)

by V. S. Agrawala.

The Chhandasvati-Vak is a selection of about four hundred Mantras from forty Hymns of the Rigveda. The Jnāna Sukta placed in the beginning indicates the high ideas of Truth and wisdom of the Vedic Rishis meetng in assemblies. The Samjuāna Sukta placed at the end of the collection Shows the spirit of sympathetic understanding and harmony which inspired the poets and which they wanted to spread as the atmosphere of true concord and amity in the political counsels and assemblies.

Price Rs. 1.50

THE ZEND—AVESTA

Translated by James Darmesteter, with Introduction and Notes'

Rexin bound, Demy 8vo, CLIX + 1028 Pages,

in 3 vols. Rs. 60.00 for 3 Vols.

The Zend-Avesta Vol.I. : *The Vendidad*

This is a compilation of religious & mythical tales.

The Zend-Avesta Vol,II. : *The Sirozahs, Yasts,* and *Nyayis, Sirozahs & Nyayis* are the short prayers for all, while *Yasts* are hymns of praise and glorification to the several *Izads.*

The Zend-Avesta Vol. III. : *The Ynsnn; Vispnrnn; Afrinngnn; Gnns & Miscellaneous Fragments, Yasna* is the chief liturgy of the Zoroastrians, *Visparad* are the Lords or the Ritual, *Afrinagan* are blessings, while Gahs are the five divisions of the day when particular prayers are to be recited.

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

There has been no other great belief in the world that ever left such poor and meagre monuments of its past splendour. Great is the value which the Avesta, and the belief of the Parsis, have in the eyes of the historian and theologist as they represent the last reflex of the ideas which prevailed in Iran five centuries preceding and seven centuries following the birth of Christ, a period which gave to the world the GOSPELS, the TALMUD, and the QUR'AN. By the help of the Parsi religion and Avesta, we are enabled to go back to the very heart of that momentous period in the history of religious thought, which saw the blending of the Aryan mind with the Semitic, and thus opened the second stage of Aryan thought.

THE DESTINY OF THE VEDA IN INDIA

By—Louis Renou

The Destiny of the Veda in India is a masterly exposition of the different points of view, ancient, medieval and modern about the Veda and its relation to the vast Sanskrit literature that developed under its impact. Prof. Renou is renowned for his critical and accurate study of the Indian Literature. In this work the learned author starts by tackling the medieval accretion on Vedic studies. Clearing off the shadows cast by Tantrism, Smrtis, Epics and Puranas and having studied the Vedic impact on iconography, etc., Prof. Renou deals with the Rgveda and an analysis of the Vedangas, the scholary texts and commentaries with the premier Veda makes this study truly comprehensive.

Rs. 10.00

THE NIGHANTU & THE NIRUKTA

by DR. LAKSHMAN SARUP, M. A, D. PHIL. (OXON) *Royal Octavo : pp 343 : Rexin bound with gold embossed Rs. 30.00*

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

The Nighantu—The most ancient collection of words of Vedic language,—contains five Chapters. The first three deal with Synonyms, the fourth with Homonyms and the fifth dealing with Deities, seems to be combined efforts of several generations of the past & is the earliest known attempt in Lexicography in India. This Traditional List of Words received Etymological explanations from Yaska.

Taking both the East and the West together, Yaska is the first writer on Etymology, is the first to treat it as a Science in itself, and has enunciated his doctrines in the Nirukta. He was a man of comprehensive knowledge, vast reading and was familiar with the various schools of grammatical thought. He has distinctly mentioned Pratisakhyas i.e. Phonetic Treatises containing the Physiological and Acoustic aspects of phonetics. Thus it is Nirukta by Yaska that makes us pre-suppose that the Rig-veda-samhita is essentially in the same condition in which we know it today. He has equally treated Sonorics and Semantics. In Yaska's argument that words are preferred to gestures on of the economy of effort, we have a strikingly modern note.

Dr. Lakshman Sarup has collated all the available Nirukta Manuscripts and has produced, for the first time, a complete English Translation of the whole of Nirukta with numerous Exegetical and Critical notes and complete Introduction to the Nighantu & Nirukta with detailed description of all the manuscripts and their divisions and has exhaustively discussed the date and Phonetic Equipment of Yaska, Importance of Etymology and its principles with Philological speculations of the original writer. He has made comparative study of East & West and has pointed out the fundamental difference between YASKA & PLATO. Origin of Language and its Parts of Speech have also been treated sagaciously along with Aristotle's definitions. Semantics, how

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

Names are given, criticism and rejoinder along with Early anti-Vedic Scepticism have been cited. Alphabetical list of stories related in the Nirukta, Index of authorities cited therein and the list of quotations given and arranged in the order of Samhitas, have been added at the end.

पुरुषसूक्त (माध्यन्दिनशाखीय)

महीधरभाष्य, प्रत्येक पद का हिन्दी में अर्थ तथा विशेष वक्तव्य सहित

साहित्याचार्य पं० जनार्दनशास्त्री पाण्डेय, एम० ए०

छात्रों को प्रारम्भ से ही वैदिक साहित्य की ओर रुचि और उसमें प्रवेश हो, इस भावना से परीक्षाओं में पुरुषसूक्त रखा गया है। किन्तु इसकी उसकी उपलब्ध टीकाएँ इतनी कठिन हैं कि कोमलमति बालक पुरुषसूक्त के महत्व को कुछ भी नहीं समझ पाते। अत: इस संस्करण में महीधरभाष्य में प्रत्येक मूल के पद को बड़े टाइप में देकर उसका हिन्दी में अर्थ कर दिया गया है जिससे छात्र प्रत्येक पद को हृदयंगम कर सकें। साथ ही सूक्त का परिचय इस प्रकार दे दिया है जो छात्रों के लिए ही क्या सामान्य पाठकों के लिए भी अत्यन्त उपादेय है। मूल्य ००.१५

प्राचीन भारतीय साहित्य

(प्रथम भाग—वैदिक साहित्य)

राष्ट्रभाषा हिन्दी में अद्यतन परिवर्द्धित, संशोधित संस्करण

मूल ले० श्री एम० विण्टरनिट्ज हिन्दी अनुवादक—प्रो० लाजपत राय,

विदेशीय विद्वानों द्वारा जो प्राचीन भारतीय साहित्य के इतिहास लिखे गये हैं उनमें श्री एम० विण्टरनिट्ज के इतिहास का अपना विशिष्ट स्थान है, यही कारण है कि प्राय: भारत के प्रत्येक विश्वविद्यालय में यह पढ़ाया जाता है। मूल पुस्तक को लिखे आज ३०–३५ वर्ष हो गये पर इसका स्थान आज भी वही बना है। हमने उसी का हिन्दी संस्करण अद्यतन खोजों से परिपूर्ण कराकर प्रकाशित किया है। अब यह संस्करण प्रत्येक छात्र एवं प्रोफ़ेसर के लिये नितान्त उपयोगी हो गया है। कापी थोड़ी ही छपी हैं

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

इसलिये अपनी कापी तुरन्त मंगा लें ताकि दूसरे संस्करण की प्रतीक्षा न करनी पड़े।

इसमें वेद-वेदाँग अथवा वैदिक वाङ्मय, ऋग्वेद, अथर्ववेद, प्राचीन वैदिक यज्ञ परम्परा, सामवेद, यजुर्वेद, ब्राह्मणग्रन्थ, आरण्यक-उपनिषद्, उपनिषदों का मूल प्रतिपाद्य, वेदाँग साहित्य, वेदार्थ में सहायक वेदांग ग्रन्थ और वेदों के काल निर्णय का विशद विवेचन है। अन्त में अनुक्रम दिग्दर्शक है। मूल्य १०.००

BRHAD-DEVATA

Sanskrit text, English Translation & Notes.

By Macdonell

Brhad-Devata is an index of the 'many gods', a much more extensive work than any of the other Anukramanis, as it contains about 1200 slokas interspersed with occasional tristubhs. It is divided into eight adhyayas corresponding to the astakas of the Rg-veda. Following the order of the Rg-veda, its main object is to state the deity for each verse. But as it contains a large number of illustrative myths and legends, it is of great value as an early collection of stories. A peculiarity of this work is that it refers to a number of supplementary hymns (khilas) which do not form a part of the canonical text of the Rg-veda.

Part I critically edited in the original Sanskrit with an introduction and seven appendices and Part II contains the English translation and notes.

Price for 2 Vols. Rs. 15.00

रजोवाद

ले०—महामहोपाध्याय विद्यावाचस्पति पं० मधुसूदन ओझा

स्वर्गीय म० म० मधुसूदन ओझाजी ने संहिताओं, ब्राह्मणों, उपनिषदों एवं पुराणों का गम्भीर अध्ययन करने के बाद भारतीय साहित्य को वैदिक विज्ञान नाम से जो नयी देन दी है, उसीके अन्तर्गत यह रजोवाद भी है। स्वर्गीय ओझाजी ने सदसद्वाद के बाद रजोवाद की रचना की है। इसमें रजस् (dust) से ही विश्व की उत्पत्ति हुई है, यह सिद्ध

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

किया गया है। प्रारम्भ में रजोवादाधिकार की स्थापना करके भूतसर्ग और विश्वसट्सर्ग की विवेचना की गयी है। प्रारम्भ में डा० वी० एस० अग्रवाल की ५२ पृष्ठों की अंग्रेजी में भूमिका है, जिसमें पूरे विषय को संक्षेप में समझाया गया है। बीच-बीच में विभिन्न चित्रों द्वारा भी तत्तद् विषया परिचय कराया गया है।

रायल साइज, पक्की जिल्द, आकर्षक छपाई सहित पुस्तक का मूल्य ६.००

चतुर्वेदात्मकः पञ्चशाखीयो

रुद्रसंग्रहः

सम्पादकः—श्री श्रीकृष्णदेवः

वाराणसेय संस्कृत विश्वविद्यालय की प्रथमा परीक्षा में निर्द्धारित रुद्राध्याय पत्र के लिए सभी शाखाओं के रुद्रों का इसमें सस्वर संकलन किया गया है। यह पुस्तक छात्रों के अतिरिक्त सर्वसाधारण के लिए भी संग्राह्य है। मूल्य केवल २.००

VEDIC INDEX OF NAMES & SUBJECTS

BY MACDONELL & KEITH.

Demy Octavo : 2 Vols. pp. 1152 Cloth bound Jacketed Rs. 60.00

This STANDARD WORK OF REFERENCE IS REPRODUCED by PHOTO-OFFSET process from the original volumes and as the Origin of Indian Culture is linked with the study of Sanskrit & Sanskrit Literature, this VEDIC INDEX provides Historical matter accessible to, in the earliest literary documents of India and thus a conspectus of the most ancient phase of ARYAN CIVILIZATION that can be realised by direct evidence, is furnished in Sanskrit Alphabetical Order and with Sanskrit & English Indexes at the end.

This is a very useful compilation and every student of Vedic Literature finds it invaluable. It is much more than what its

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

name implies. There are illuminating notes on a variety of subjects, Civil law for instance, which supply the background without which an exegesis of Vedic texts, including in the term the compendia of religion, ritual, tradition and philosophy known as Brahmanas would not be possible.

A book of genuine value, a comprehensive work on vedic antiquities furnishing complete information on social and political life of the Vedic Aryans, their manners, customs, superstitions and mythology as well as geographical and historical data found in the Vedic literature.

Translations or explanations of all Sanskrit Words are given. Compound Sanskrit Words have been divided into their component parts and for Obscure & Irregularly-formed sanskrit words etymological explanations are provided.

VEDIC CONCORDANCE

By—Maurice Bloomfield.

pp. Rexin Bound with gold embossed Rs. 40.00

Vedic Concordance is nothing less than an alphabetical index to every line (pada) of every stanza of the entire published Vedic Literature and to every liturgical formula (yajus, praisa, etc.) therein contained. It will enable the student of the Vedas to see at a glance every occurrence of a given text (verse or formula) in the whole Vedic literature and to ascertain with ease the liturgical uses of that text.

Firstly, it will serve as a register of the *varietas lectionis* for the texts of the Vedic literature. The individual passages appear in different Vedic texts, often in different form, varying more or less in the choice or the arrangement or the grammatical forms of the words.

Secondly, the Concordance will give the key to the liturgical employment of every mantra as prescribed by the ceremonial books. It will thus become possible greatly to advacne our know-

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

ledge of the hymns and the ceremonies in their relation to one another. The text and the liturgical action that accompanied it often serve as a mutual commentary each to the other, that yields us a clear understanding of both.

Thirdly, the future editor of a Vedic text will find in it a complete assemblage of all the mantras an auxiliary of the very first importance. In the constitution of a Vedic text, the mantras are the most intractable part of the material concerned, because they are written in a dialect which—differing, as it does, considerably from the classical speech—was imperfectly understood by scribes. Since much of the material of this kind with which the future editor will have to deal, is quite certain (as experience shows) to be contained in the literature previously published, it is obvious how serviceable the concordance will be in the establishment of the next texts,

This work, moreover, will be most useful in determining the relations of the different Vedic schools (Sākhās) to one another. And diverse subsidiary uses of such a collection as this will suggest themselves to various scholars. Thus the initial words of the several mantras form by themselves a very considerable part of a word-index to the mantras. And, again the great frequency with which the mantras begin with the name of a divinity, incidentally makes the book a most useful tool for the student of the Vedic mythology and religion.

वैदिककोश

रचयिता—डा० सूर्यकान्त

सुपररायल आठ पेजी : पृष्ठ ६१० : वस्त्रावेष्टित, मूल्य २१.५०

प्रस्तुत वैदिक कोश में प्रगल्भ लेखक ने वेदगत विषयों एवं नामों का परिपूर्ण कोश उपस्थित करके संस्कृत हिन्दी जगत् का भारी उपकार किया है। मैकडानल तथा कीथ कृत

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

वैदिक इण्डेक्स का इसमें पूर्ण समावेश है और जो-जो त्रुटियाँ उसमें रह गयी थीं, उन्हें पूर्णरूपेण तथा नयी खोजों का समावेश हर एक उद्धरण को मिलाकर यथा स्थान रख दिया गया है। इसमें पाठकों को पहली बार वैदिक पदों के ऐतिहासिक याज्ञिक अर्थों के साथ-साथ उनके भावमय अथवा प्रतीकपरक अर्थ भी पढ़ने को मिलेंगे। यह अनोखी परिपूर्णता ही इस कोश की अपनी विशेषता है।

वैदिक ग्रामर

(छात्र संस्करण)

मूल लेखक डा० मेक्डानल, हिन्दी अनुवादक—डा० सत्यव्रत,

हिन्दी में वैदिक साहित्य के व्याकरण को दर्शानेवाली कृतियों का अभाव हो रहा है। अतएव इस त्रुटि को पूर्ण करने के लिए A. A. Macdonell कृत Vedic Grammar for Students का प्रामाणिक अनुवाद अनुभवी विद्वान् डा. सत्यव्रत ने वैदिक साहित्य के छात्रों की कठिनाई को अनुभव करते हुए किया है।

वैदिक व्याकरण पाणिनि व्याकरण से बहुत मात्रा में भिन्न है। इस पुस्तक में वैदिक ध्वनियों का ध्वन्यात्मक अनुसन्धान एवं वैदिक साहित्य का भाषा विज्ञान उज्ज्वल करके प्रत्यक्ष कर दिया गया है और वैदिक ध्वनियों की विशेषता को तीसरे परिशिष्ट में भली प्रकार दर्शा दिया गया है। वैदिक साहित्य में वैदिक गद्य और पद्य दोनों ही व्याकरण के दृष्टिकोण से इसमें वर्णित है और जहाँ कहीं ऋग्वेद से अन्य वेदों की भाषा में भिन्नता पायी गयी है, उसका भी यथोचित निराकरण कर दिया गया है।

विषय प्रवेश में वैदिक ध्वन्यात्मक परिचय, पदों का सुमधुर संयोग, विभक्तियों के रूप, क्रिया पद के रूप, अव्यय, नाम धातु तथा उनकी बनावट और संयोग तथा वाक्य रचना आदि प्रदर्शित हैं। परिशिष्टों में क्रियाएं, छन्द भेद एवं ध्वन्यात्मक परिचय व अन्त में वैदिक व साधारण सूचियाँ दे दी गयी हैं।

वैदिक धर्म एवं दर्शन

मूल लेखक ए० बी० कीथ, अनुवादक—डा० सूर्यकान्त

रायल साईज, कपड़े की जिल्द सहित, मूल्य ५०.०० (दो भाग)

प्रस्तुत रचना डक्टर कीथ रचित 'दी रिलिजन एण्ड फिलासफी आफ दि वेद एण्ड उपनिषदस्' का हिन्दी रूपान्तर है। खरे - खोटे की पहचान और तर्क प्रणाली में

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

'कीथ' अपने समान आप ही थे और आज के वैदिक छात्र में इसी विवेक एवं तर्क शक्ति को उत्पन्न करना प्रस्तुत प्रयास में विद्वान् अनुवादक का प्रमुख लक्ष्य है। 'कीथ' ने ईसाई होकर भी वेद की गरिमा को पूजा है। भारतीय संस्कृत और संस्कृति के वेद मेरुदण्ड और वैदिक धर्म के आधार हैं। मौलिकता के नाते आजतक वेदों ने ही भारतीय एकता को अक्षुण्ण रखा है और यह वेद भूत के अनिश्चित गर्भ से मौखिक परम्परा से प्राप्त वाद में लिपिबद्ध कर दिये गये हैं। वेद ही इस देश के सभी ग्रन्थों के निर्माण की पृष्ठभूमि है।

वैदिक धर्म क्या था और कैसा था, ऋषियों की दर्शन क्षेत्र में कहाँ तक प्रगति थी, विद्वान् लेखक ने उक्त पुस्तक में इसका अनूठा प्रदर्शन किया है और वैदिक धर्म के स्रोत, ऋग्वेद एवं आर्य परवर्ती संहिताएं और ब्राह्मण, उत्तर साहित्य, अवेस्ता और तुलनात्मक वेद शास्त्र, वेद के देवता और दानव व उनका स्वरूप, वैदिक सर्ग रचना एवं सृष्टि विद्या, देवताओं का पारस्परिक सम्बन्ध, महान् देवता—द्यु स्थानीय—अन्तरिक्ष स्थानीय - पृथ्वी स्थानीय, प्रकृति के छोटे देवता, भावकृति देवता और वैयक्तिक देव, देव वर्ग, पुरोहित और नायक, दानव, वैदिक कर्मकाण्ड, ऋग्वेद में कर्मकाण्ड, वैदिक यज्ञ का समय, यज्ञ के आनुषंगिक अनुष्ठान इत्यादि का विशद विवेचन है।

VEDIC MATHEMATICS

or

'Sixteen Simple Mathematical Formulas From the Vedas'

(For one line Answers to all Mathematical Problems)

by

Jagadguru Swami Sri Bharati Krsna Tirthaji Maharaj

Vedic Mathematics by the late Sankaracarya of Govardhana Pitha is a monumental work. In his deep layer explorations of cryptic Vedic mysteries relating specially to their calculus of short-hand formulae and their neat and ready application to practical problems, the late Sankaracarya shows the rare combination of the probing insight and revealing intuition of a yogi with the analytic acumen and synthetic talent of a Mathematician.

Royal Size, 426 Pages, Price. Rs. 10.00

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

वैदिक विश्वदर्शन

लेखक—पं० हरिशंकर जोशी एम० ए०

यह एक महत्त्वपूर्ण रचना है। इसमें वेद के मन्त्रों की सच्ची व्याख्या, वेदों का विद्या और आत्मपरक अर्थ, वैदिक व्याख्या की योग्यताएं, वैदिक विश्वदर्शन के तत्त्वों का निर्णय, ज्योतिष और संवत्सर, ब्रह्म द्वारा तत्त्व निर्णय, पञ्चपर्वा विद्या, अष्टौ लोकाः, अष्टौ पुरुषाः प्रकृतयश्च, ब्रह्म विषयक वैदिक रहस्य, प्राणविद्या, अश्वमेध-पुरुषमेध-गोमेध, पितृमेध, गुहाया त्रिःसप्तवाद, सदसद्वाद, वेदों में अग्नि, घृत आदि, दाशराज्ञ युद्ध अदिति और दिति तथा निर्ऋति और वृषभ—ये विषय विस्तारपूर्वक स्पष्ट व्याख्यात हैं। वेद की कई परिभाषाओं और प्रतीकों के विवरण इसमें सुलभ हैं। वेदार्थ जिज्ञासु पाठकों के लिए यह अद्भुत सामग्री है।

रायल आठ पेजी साइज में लगभग ३५० पृष्ठ मूल्य केवल ६-००

VEDIC HYMNS

Translated with Introduction & Notes by F. Max Muller, along with Index to words etc. etc.

Rexin bound, Demy 8vo., p. CXXXV + 1056 Rs. 40.00 for 2 Vols.

Vol. I. *Hymns to the Maruts, Rudra, Vayu & Vata,*
Vol. II. *Hymns to Agni* (Mandalas I-V),

In this work, Max Muller has advanced step by step to that impregnable fortress of ancient Vedic Literature—The Rg-Veda—and has grouped *Hymns* according to the *deities* to which they are addressed; along with such *Hymns* as have a common object, to enable the reader to see at a glance all that has been said of a certain god, and has placed as much material as possible for an exhaustive study of each individual deity, with the chief aim to help forward a critical study of the *Veda.*

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

व्रात्यकाण्ड (अथर्ववेद के अन्तर्गत)

(भाष्य तथा भाषानुवाद सहित)

ले०—डा० श्रीसम्पूर्णानन्द

यह अथर्ववेद का पन्द्रहवाँ काण्ड है। वेदों के भाष्यकर्ता श्रीसायण-माधव ने भी इस काण्ड का भाष्य नहीं किया, जिससे इन मन्त्रों का आशय आज तक अज्ञात-सा ही पड़ा रहा। इस कमी को दूर करने के लिए विद्वान् लेखक ने चिरकाल तक अध्ययन एवं मनन कर इस काण्ड पर संस्कृत में भाष्य किया है। साथ ही साथ साधारण जनता के उपयोग के लिए हिन्दी भाषा में भी अनुवाद कर राष्ट्रभाषा की अनुपम सेवा की है। वेदार्थ के जिज्ञासु इसके लिए सदा कृतज्ञ रहेंगे। इसका विशुद्ध संस्करण सर्वप्रथम प्रकाशित किया गया है। बढ़िया कागज, सुन्दर छपाई। मूल्य ३.००

SATAPATHA BRAHMANA (Madhyandina School)

Translated by Julius Eggeling, Demy Octavo : pages 2551 :: Rexin Bound & Gold embossd Five Vols. Price Rs. 100.00

The present Treatise is a faithful and authoritaive translation of Satapatha Brahmana by Julius Eggeling in Five Parts covering Vols. XII, XXVI, XLI, XLIII & XLIV of the Sacred Books of the East, by Rt. Hon'ble Prof. F. Max Muller.

The theological treatises called Brahmanas, belong to the later Vedic Period. They are in prose and deal with the sacrificial ceremonials and are ritual Text-books. Their contents can be classified under the three heads of practical sacrificial directions (VIDHI), explanations (ARTHAVADA) exegetical, mythological, or polemical and theological or philosophical speculations on the nature of things (UPANISADS). They reflect the spirit of an

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

age in which all intellectual activity is concentrated on the sacrifice, describing its ceremonies, discussing its value, speculating on its origin & significance.

The ritual explanations of the White Yajur-Veda is to be found in extra-ordinary fullness in the Satapatha Brahmana, the 'Brahmana of the Hundred Paths' so called because it consists of 100 lectures (Adhyayas). This Work is next to Rig-Veda and is the most important production in the whole range of Vedic Literature. The geographical data of the Satapatha Brahmana point to the land of the Kuru-Pancalas, being still the centre of Brahmanical culture.

The Satapatha Brahmana contains reminiscences of the days when the country of 'Videha' was not as yet Brahmanised. It is a mine of important data and noteworthy narratives. Internal evidence shows it to belong to a late period of Brahmana age. Its style, as compared with the earlier works of the same class, displays some progress towards facility and clearness. Its treatment of the Black-Yajur Veda, is throughout more lucid and systematic. On the theosophic side, too, we find the idea of the unity in the Universe more fully developed than in any other Brahmana work, WHILE ITS UPANISHAD IS THE FINEST PRODUCT OF VEDIC PHILOSOPHY.

सामतन्त्रम् (सामवेद प्रतिशाख्य)

सम्पादक—ए० एम० रामनाथ दीक्षित

पृष्ठ प्राय: ४०० मूल्य २०—००

अन्य वेदों की अपेक्षा सामवेद सम्बन्धी साहित्य अधिक था। पतञ्जलि के अनुसार सामवेद की १००० शाखाएँ थीं। रामनाथ दीक्षितजी द्वारा सम्पादित 'सामतन्त्र' सामवेद सम्बन्धी साहित्य में एक महत्त्वपूर्ण ग्रन्थ है। सम्पादक ने विभिन्न हस्तलेखों की समीक्षा करके इस ग्रन्थ का सम्पादन किया है। परिश्रम की जितनी सराहना की जाय, उतनी कम ही है।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

वैदिक साहित्य के प्रेमियों के लिए यह एक महत्त्वपूर्ण उपहार है। साथ ही साथ वेद प्रेमियों के लिए संग्रहणीय भी है।

SELECTIONS FROM BRAHMANAS AND UPANISADS

Text with translation and Bhasya

by

Dr. R. C. Dwivedi

To grasp the continuous flow of Indian Literature and culture, the study of the Brahmanas and the Upanisads can hardly be exaggerated. Selection from the important Brahmanas and the Upanisads with the Bhashya of Sayana on the Brahmanas and that of Sankara on the Upanisads together with the translation of the text by European scholars will prove useful to the students and the teachers of the Vedic lore. A long introductory note on the Brahmanas and the Upanisads by the learned editor has made this edition very valuable. Rs. 8.00

STUDIES IN THE BRAHMANAS

by

A. C. BANERJEA, M. A., Ph.D. [LONDON] with a Foreword by Prof. L. Renou of France. Demy Octavo : Pages 202 : Cloth bound : Price Rs. 15.00

This volume is the result of a deep study of the Brahmanas— a domain so difficult and almost forgotten. The author suggests a novel and penetrating approach to these old texts of obscure wisdom in applying to them with advantage the modern theories of sociology. His central idea is to determine precisely the significance of words implying the notion of the exogamous group as opposed to the group of 'non-marriageable' on account of the important of such words the precise exegesis of which is of considerable significance for our understanding of the Vedic society. Many terms of frequent controversy have been unhesitatingly

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

considered and useful information with regards to the terms of parentage and many other connected problems has been provided.

The contents begin with the word 'ARI' in the Rg Veda and Clan Exogamy in the Brahmanas has been scanned and the words 'JANA' and 'JAMI' have been considered. Family Relationship is studied from the words AGRE DIDHISU, 'DIDHISUPATI', 'PARIVITTA', 'PARIVIVIDANA', 'ANUJAVARA', 'BHRATRVYA' & 'SAJATA'. Social & Functional Groups have been taken into account, and concluding with VRATYA Problem, Appendix to Clan Exogamy in the Brahmanas, General Bibliography, Periodicals & Index.

HYMNS OF THE ATHARVA-VEDA

Rexin bound, Demy Octavo, LXXIV+716 pages

Rs. 20-00

The Hymns of the Atharva-Veda : together with extracts from the Ritual Books and the Commentaries; translated by Maurice Bloomfield, with Introduction and Notes.

The present volume comprises about one third of the entire material of the Atharva-Veda in the text of the Saunaka-school. But it represents the contents and spirit of the fourth Veda in a far greater measure than is indicated by this numerical indication. A fairly complete history of each of the hymns translated, is presented. The employment of the hymns in the Atharvanic practices is in closer touch with the original purpose of the composition of the hymns than is true in the case of the other collections of Vedic hymns.

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

वेद-उपनिषद्

१ अग्निदेवता मंत्र संग्रह—पं० सातवलेकर ०.५०
२ अग्निवेश्य गृह्यसूत्र-मुल २.२५
3 Agnihotra—P. E. Dumont (French) 32.00
४ अथर्ववेद-मूल (सूक्ष्म अक्षर) पं० सातवलेकर ६.००
५ अथर्ववेद-मूल (स्थूल अक्षर) अजमेर ६.००
६ अथर्ववेद-मूल मंत्र सूची सहित ८.००
७ अथर्ववेद—सायण भाषानुसारी भा० टी० २ भाग १२.००
८ अथर्ववेद—भाषा भाष्य—भाष्यकार जयदेव शर्मा (४ खण्डों में) ३२.००
९ अथर्ववेद (शौनकीय) सायणाचार्य भाष्य, विश्वबन्धु सम्पादित, पाँच भाग में २२५.००
१० अथर्ववेद—सुबोध हिन्दी भाष्य (१ से ६, ११ से २० काण्ड) पं० सातवलेकर ४०.००
११ अथर्ववेद (पैप्पलाद संहिता) प्रथम खण्ड, सम्पादक दुर्गा मोहन भट्टाचार्य ११.२५
१२ अथर्ववेद व्याकरणपदसूची—विश्वबन्धु ६०.००
13 Atharvaveda (2 Vols)–English Translation with a critical Exegetical Comm.—W. D. Whitney 30.00
14 Atharva Veda and the Ayurveda—Karambelkar 16.00
१५ अथर्ववेद एण्ड गोपथब्राह्मण (M. Bloomfield का हिन्दी रुपान्तर) अनुवादक डा० सूर्यकान्त २५.००
१६ अथर्ववेद पदपाठानुक्रमणिका—विश्व बन्धु सम्पादित २५.००
17 Atharvaveda-Pratishakhya—English Translation W. D. Whitney 20.00
१८ अथर्ववेद के मन्त्रो की अनुक्रमणिका १.५०
१९ अथर्ववेद—व्रात्य काण्ड (संस्कृत तथा हिन्दी) डा० सम्पूर्णानन्द ३.००
20 Atharvaveda (Vratya kanda)—English Translation Sampurnanand 3.00
२१ अथर्ववेद शतक—जगदीश लाल १.००
22 Atharva Vedic Civilisation—Karambelkar 11.25

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

२३ अथर्ववेदीय ज्योतिष—छोटेलाल शर्मा १.००
२४ अथर्ववेदीय दन्तोद्धव विधि—राम गोपाल शास्त्री ५.००
२५ अथर्ववेदीय बृहत् सर्वानुक्रमणिका—विश्वबन्धु सम्पादित १५.००
२६ अथर्ववेदीय मन्त्र विद्या—प्रिय रत्न आर्य १.५०
27 Aditi and other Deities in the Veda—M. P. Pandit 4.00
२८ अप्रकाशित उपनिषद्—ब्रह्मयोगी कृत सव्याख्या, मद्रास २०.०c
२९ अवेस्ता—संस्कृत छाया व भाषानुवाद सहित—राजा राम शास्त्री १.५०
३० अवेस्ता – (२ भाग) एर्वद. मा० फ० कांगा सम्पादित ४०. ०
३१ अश्विनी देवता (मन्त्र संग्रह)—पं० सातवलेकर ५.००
३२ अष्टात्रिंशदुपनिषद् – मूलमात्र (गुटका) २.००
३३ अष्टादश उपनिषद्—अर्थव्याकरण बोधक टिप्पणी सहित प्रथम खण्ड
लिमयेवाडेकर सम्पादित: २०.००
३४ अष्टाविंशत्युपनिषद्— सम्पादक स्वामी द्वारिकादास शास्त्री ३.००
३५ अष्टोपनिषद्—टीकाकार स्वामी भास्करानन्द ३.००
36 Asya Vamasya Hymns—Kunhan Raja 12.00
३७ आचार्य सायण और माधव—बलदेव उपाध्याय ६.००
38 Atman in Der Grossen Wald Geheimlehra—Gelder 40.00
39 Atman and Brahman in Vedic Religion – J. Wadiar 1.00
४० आपस्तम्ब शाखोक्त देवेसंज्ञक मंत्र oc.१२
४१ आपस्तम्ब शुल्व सूत्रम्—कपर्दीय—करविन्द, सुन्दरराजीय व्याख्या ३.००
४२ आपस्तम्ब श्रौत सूत्र—रामाग्नि चिद्वृति तथा धूर्त स्वामि भाष्य (३ भाग) ३०.००
४३ आपस्तम्ब श्रौत सूत्र (धूर्त स्वामी भाष्य) चिन्नस्वामी शास्त्री, दो भाग (बड़ोदा) ३२.००
44 Arctic Home in the Vedas—Tilak 8.00
45 Aryan Ecliptic Cycle—H. S. Spencer 25.00
४६ आश्वलायन गृह्य सूत्र—नारायण वृति, गृह्य परिशिष्ट, गृह्य कारिका—पूना ४.२५
४७ आश्वलायन श्रौत सूत्र—सिद्धान्ति भाष्य सहित, सम्पादक डा० मंगल देव शास्त्री
(द्वितीय भाग) ४.००
४८ आश्वलायन सूत्र प्रयोग दीपिका—भट्ट मञ्जनाचार्य ५.००
49 Etudes Sur La Voca Bulai Re Du Rg Veda—L. Renou. 12.00
50 Introduction to Sayana's Rig Bhasya—K. Ray 7.00

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

51	India of Vedic Kalpasutra—Ramgopal	35.00
52	Indus Civilisation in the Rig Veda—Deshmukh	2.00
53	Imanence of the Vedas—Aprabuddha	1.50
५४	ईशकेनकठाद्युपनिषद्—रंगरामानुज भाष्य सहित (पूना)	३.७५
५५	ईश केन कठोपनिषद्—दिगंबरानुचर विरचितार्थं प्रकाश व्याख्या	१.५०
५६	ईशादि दशोपनिषद्—शांकर भाष्य सहित	८.२५
५७	ईशादि दशोपनिषद्—ब्रह्मयोगी कृत सव्याख्या—२ भाग	३०.००
५८	ईशादि नौ उपनिषद्—अन्वय, हिन्दी व्याख्या सहित	२.५०
५९	ईशादि पञ्चोपनिषत्—शांकर भाष्य, आनन्दगिरि तथा शंकरानन्दी (काशी)	६.००
६०	ईशावास्य रहस्य—सत्यदेव शास्त्री	२.५०
६१	ईशावास्य वृत्ति—विनोबा भावे	०.७५
६२	ईशावास्य उपनिषद्—विनोबा भावे	०.४०
६३	ईशावास्यादि उपनिषद्—विद्यानन्द कृत हिन्दी टीका	८.००
६४	ईशावास्योपनिषद्—शांकर भाष्य तथा हिन्दी अनुवाद	०.२५
६५	ईशावास्योपनिषद्–म० म० श्रीधर शास्त्री पाठक प्रकाशिका, बालबोधिनी व्याख्या	२.५०
६६	ईशावास्योपनिषद्—हिन्दी अनुवाद सहित	०.१०
६७	ईशावास्योपनिषद्—मनस्विनी व्याख्या	१.५०
६८	ईशावास्योपनिषद्—बालकृष्ण शास्त्री	१.५०
६९	ईशावास्योपनिषद्—भा० टी० पं० सातवलेकर	२.००
७०	ईशावास्योपनिषद्—वाचस्पति पाण्डे विकल कृत हिन्दी अनुवाद	१.००
71	Isavasyopanisad with English Translation S. Sarvanand	0.75
72	Isavasyopanisad with English Translation S. Chinmayanand	3.00
73	Isavasyopanisad with English Translation Arthur Avalon	3.00
७४	ईशावास्योपनिषद् दर्पण—सत्यदेव	१.००
७५	ईशोपनिषद्—शांकर भाष्य आनन्दगिरि, पूना	१.५०
76	Isopanishad with Sankara Comm. and English Translation—K. Ray	3.00

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

77 Isha Upanishad—English Translation
Sri Aurobindo 2.50

78 Isavasyopanisad—English Translation
A. V. Gopalachariar 0.75

७९ ईशोपनिषद् भाष्य—इन्द्र विद्या वाचस्पति २.००

८० उदक शांति—आपस्तम्बीय प्रयोग सहित ०.५०

८१ उदक शांति—शौनकीय (ऋग्वेदीय) प्रयोग सहित ०.५०

८२ उपनिषद् चिन्तन—देवदत्त शास्त्री २.५०

८३ उपनिषद् दिग्दर्शन—दीवान चन्द २.७५

८४ उपनिषद् परिचय—विष्णुतीर्थ स्वामी ६.००

८५ उपनिषद् प्रकाश—स्वामी दर्शनानन्द ३.५०

८६ उपनिषद्—(भाषा) शंकर कौशल्य (आलूबाबा) ३.५०

८७ उपनिषद् भाष्य—आर्यमुनि ६.००

८८ उपनिषद् मन्त्र वाक्य महाकोश—२२३ उपनिषद् वाक्य २५.००

८९ उपनिषद् मन्दाकिनी—देवदत्त शास्त्री ५.००

90 Upanishads—English Translation by F. Max—
Muller—2 Vols 40.00

91 Upanishads—English Translation Notes and
Explanation—Nikhilananda 4 Vols 105.00

92 Upanishads—English Translation (abridged)
Swami Nikhilananda 16.87

93 Upanishads—French Translation in 17 parts
L. Renou 195.70

94 Upanishads—C. Rajagopalachari 1.00

95 Upanishads—Translated by G. R. Mead 1.50

96 Upanishads—an Anthology—D. S. Sarma 2.50

97 Upanishads—The Gate Way of Knowledge
M. P. Pandit 6.00

98 Upanishads–in Story and Dialogue—R. R. Diwakar 2.50

99 Upanishads and Modern Biology
K. A. Patwardhan 4.50

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

१०० उपनिषद् संग्रह (अनुवाद) पं० देवेन्द्रनाथ शास्त्री ६.००
१०१ उपनिषद समुच्चय — शंकरानन्द दीपिका १०.००
102 Upanishadic Stories and their Significance
Swami Tattwanand 2.00
१०३ उपनिषदों की कथाएँ—शंकर राव देव १.००
१०४ उपनिषदों की कहानियाँ—२ भाग राम प्रताप त्रिपाठी शास्त्री ५.००
१०५ उपनिषदों के चौदह रत्न ०.४५
१०६ उरु ज्योति—वासुदेव शरण अग्रवाल ३.००
१०७ उषा देवता (अर्थ तथा स्पष्टीकरण सहित) सातवलेकर ४.००
१०८ ऊहगानम्—दशरात्रपर्व १.००
१०९ ऋक् संग्रह—सायण भाष्य, अंग्रेजी नोटस ३.००
११० ऋगर्थसार (प्र० भा०) आर्येन्द्र शर्मा २.५०
१११ ऋग्भाष्यम्—मूल १.८१
112 Rig Bhashya Sangraha—Text with English
Translation—Dev Raj Chanana 10.00
११३ ऋग्यजुस्सामाथर्व विधान ०.२५
११४ ऋग्वर्णक्रम लक्षणम्—सटीक नरसिंह सूरि १.५०
115 Rig Vidhan—J. Gonda 20.00
११६ ऋग्वेद संहिता (मूल) सातवलेकर (सूक्ष्म अक्षर) १०.००
११७ ऋग्वेद संहिता (स्थूलाक्षर) मूल अजमेर १०.००
११८ ऋग्वेद संहिता—भाषाभाष्य — स्वामी दयानन्द ५ भाग ३०.५०
११९ ऋग्वेद संहिता (पद पाठ) बुक साइज १५.००
१२० ऋग्वेद संहिता—सायण भाष्य सहित, भट्ट मोक्षमुलर सम्पादित—चार भाग १४०.००
१२१ ऋक्संहिता—स्कन्द स्वामी, वेङ्कटमाधव भाष्य, तृतीय खण्ड १.१२
१२२ ऋग्वेद संहिता (पदपाठ सहित) भट्ट मोक्षमूलर सम्पादित २ भाग ४०.००
१२३ ऋग्वेद संहिता—सायण भाष्य, पदादि सूची सहित, पाँच भागों में सम्पूर्ण १५०.००
१२४ ऋग्वेद संहिता—भा० टी०, भाष्यकार पं० जयदेव शर्मा, आठ भागों में ६४.००
१२५ ऋग्वेद संहिता—सायण भाष्यानुसार हिन्दी टीका—चार भाग २४.००
१२६ ऋग्वेद भाष्य—स्वामी दयानन्द ९ भाग ६४.५०
१२७ ऋग्वेद संहिता—कपालि शास्त्री विरचित सिद्धाञ्जन भाष्य सहित २ भाग ६०.००

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

१२८ ऋग्वेद संहिता—परिभाषा सर्वानुक्रम स्वाहाकार प्रयोग, ऋग्विधान मंत्र कोष ८.००

१२९ ऋग्वेद संहिता—स्कन्दस्वामी, उद्गीथ, वेङ्कटमाधव और मुद्गलीया भाष्य सहित ८ भाग, विश्वबन्धु सम्पादित ३६०.००

१३० ऋग्वेद—पं० रामगोविन्द कृत हिन्दी भाषान्तर १२.००

१३१ ऋग्वेद संहिता—वेंकट माधव भाष्य सहित, ४ भाग दुष्प्राप्य

१३२ ऋग्वेद भाष्य—स्कन्द स्वामी कृत प्रथम अष्टक ६.७५

१३३ ऋग्वेद प्रातिशाख्य-मूल, अनेक टिप्पणियों सहित-मंगलदेव शास्त्री सम्पादित। २०.००

१३४ ऋग्वेद प्रातिशाख्य—शौनकीय १०.००

135 Rigveda—English Translation by Wilson incomplete 4 Vols 15.00

136 Rigveda—English Translation by R. T. H. Griffith—2 vols 40 00

137 Rigveda, Mandal VII—English Translation H. D. Velankar 20.00

138 Rigveda—German Translation in 4 Vols Karl. F. Geldner 200.00

१३९ ऋग्वेदादि भाष्य भूमिका—स्वामी दयानन्द ३.००

१४० ऋग्वेद भाष्य भूमिका (सायण) बदरीनाथी ०.६२

१४१ ऋग्वेद भाष्य भूमिका—सायण, हिन्दी अनुवाद—जगन्नाथ पाठक ३.००

१४२ ऋग्वेदानुक्रमणी (माधव भट्ट) ४.००

१४३ ऋग्वेद मन्त्र वर्णानुक्रम सूत्र—सातवलेकर २.००

१४४ ऋग्वेद व्याख्या—माधवकृत, कुन्हनराजा सम्पादित २०.००

१४५ ऋग्वेद के ऋषि, उनका सन्देश और दर्शन २.००

१४६ ऋग्वेद की कतिपय दान स्तुतियों पर विचार—युधिष्ठिर मीमांसक ०.२५

१४७ ऋग्वेद की ऋक् संख्या—युधिष्ठिर मीमांसक ०.५०

१४८ ऋग्वेद शतक—जगदीश लाल १.००

१४९ ऋग्वेदिक आर्य—राहुल सांकृत्यायन ८.००

१५० ऋग्वेदिक काल में पारिवारिक सम्बन्ध—शिवराज शास्त्री २७.५०

१५१ ऋग्वेद में रुद्र देवता—सातवलेकर ०.६२

152 Rigveda Mantras in their Ritual Setting—Apte 4.50

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

153 Rigvedic Geography of India—Bhargava 21.00
१५४ ऋग्वेदीय उद्गीथ भाष्य ५.००
१५५ ऋक् सूक्त संग्रह—हरिदत्त शास्त्रीकृत भाष्यानुसारी हिन्दी व्याख्या सहित ६.५०
१५६ ऋषि दयानन्द के ग्रन्थों का इतिहास—युधिष्ठिर मीमांसक ६.००
१५७ ऋषि दयानन्द के पत्र और विज्ञापन (परिशिष्ट सहित) ७.७५
१५८ ऋक् सूक्त वैजयंती—भा० टी० २५.००
159 Age of the Rigveda—N. N. Law 15.00
१६० एक सौ आठ उपनिषद्—हिन्दी टीका सहित (३ जिल्दो में) २१.००
१६१ एकादशोपनिषत् संग्रह—स्वामी सत्यानन्द ४.५०
१६२ एकादशोपनिषद्—ईशादि आठ उपनिषद् पर "मणिप्रभा", छान्दोग्य, बृहदारण्यक पर "मिताक्षरा" तथा कैवल्योपनिषद् पर दीपिका टीका टीकाकार अमर दास, उत्तम संस्करण १५.००
१६४ एकादशोपनिषद्—सत्यव्रत सिद्धालंकार १२.००
165 Eclipse Cult in Vedas, Bible and Koran Shamasastri 1.00
166 Eight Upanishads—with Sankara Comm. and English Translation—Gambhiranand 2 Vols 14.00
167 Eight Upanishads—Sri Aurobindo 4 00
168 Etymology of Yaska—Siddheswar Verma 25.00
169 Epithets in Rigveda—J. Gonda 63.00
१७० ऐतरेय उपनिषद्—शांकर भाष्य, आनन्दगिरि तथा शङ्करानन्दी सहित ३.००
१७१ ऐतरेय उपनिषद्—शांकर भाष्य, आनन्द गिरि टीका २.००
१७२ ऐतरेय उपनिषद्—शांकर भाष्य, हिन्दी अनुवाद ०.४५
१७३ ऐतरेय उपनिषद्—(अरठों) आश्वलायनीय ०.५०
१७४ ऐतरेय उपनिषद्—भा० टी० पं० सातवलेकर ०.७५
175 Aitareyopanishad with English Translation D. Venkataramiah 1.50
176 Aitareyopanisad—with English Translation S. Chinmayanand 2.50
177 Aitaryopanishad–English Translation–Sarvanand 1.00

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

१७८ ऐतरेय ब्राह्मण—गंगा प्रसाद उपाध्याय द्वारा अनुवादित ५.००
१७९ ऐतरेय ब्राह्मण—मूल २.००
१८० ऐतरेय ब्राह्मण—सायण भाष्य सम्पूर्ण २ भाग में अप्राप्य
१८१ ऐतरेय ब्राह्मण—षड्गुरु शिष्यकृत सुखप्रदाख्य वृति १—३२ अध्याय १६.५०
१८२ ऐतरेय ब्राह्मण—पदानुक्रमणिका ४.००
१८३ ऐतरेयारण्यक—सायणाचार्य कृत भाष्य सहित ५.५०
१८४ ऐतरेयारण्यक पर्यालोचन अथवा ऐतरेयारण्यक आचार विचार
डा० मगलदेव शास्त्री २.००
१८५ ऐतरेयालोचन—ऐतरेय ब्राह्मणस्य उपोद्घात : २.२५
186 Aspectual Function of the Rigvedic Present & Aorist—J. Gonda 72.00
187 Astronomical Lights on Vedic Culture R.V. Vaidya 9.00
188 Atomic Theory of the Vedas—P.D.Roual 3.50
१८९ कठ उपनिषद्—भा० टी० प० सातवलेकर १.५०
१९० कठोपनिषद्—शाङ्कर भाष्य तथा उसका हिन्दी अनुवाद ०.७०
१९१ कठोपनिषद्—नरेन्द्रदेव सिंह शास्त्री कृत अनुवाद २.२५
१९२ कठोपनिषद्—विद्यावती ०.८१
१९३ काठकोपनिषद्—शंकर भाष्य, आनन्द गिरि तथा गोपाल यतीन्द्र टीका द्वयोपेता ३.००
१९४ काठकोपनिषद्—आनन्द गिरि शंकर भाष्य, प्रभा हिन्दी व्याख्या १.५०
१९५ काठकोपनिषद्—शंकर रामानुज भाष्य, तथा श्रीधर व्याख्या सहित ५.००
196 Kathopanisad with Sankar Bhasya and English Translation—Ray 4.00
197 Kathopanishad with English Translation Chinmayanand 4.50
198 Kathopanishad with English Translation D. S. Sharma 1.00
199 Kathopanisad with English Translation Sarvanand 1.50
२०० काठक गृह्य सूत्र—त्रयभाष्य सारयुक्त १५.००
२०१ कलिसन्तरणोपनिषद्—भा० टी० ०.१५

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

202 Comparative and Etymological Dictionary of Vedic Interpretations—Viswabandhu, 2 vols 14.00

२०३ कात्यायन श्रौत सूत्र—श्री कर्काचार्य विरचित "कर्क भाष्य" सहित— १२–२६ अध्याय १४.००

२०४ कात्यायन श्रौतसूत्र की भूमिका—विद्याधर कृत ०.५०

205 Call of the Vedas—A.C Bose 2.50

206 Kashmirian Atharvaveda—Book 16 & 17 L.C. Barett 32.00

207 Kashmirian Atharvaveda–Book 19 & 20 L.C. Barett 32.00

२०८ केन उपनिषद्—शांकर भाष्य, प्रकाशिका, श्रीधर शास्त्री कृत बाल बोधिनी सहित २.५०

२०९ केन उपनिषद्—भा० टी० सातवलेकर १.७५

२१० केनोपनिषद्—शांकर भाष्य तथा हिन्दी अनुवाद सहित ०.६०

२११ केनोपनिषद्—संस्कृत, हिन्दी तथा अंग्रेजी अनुवाद–प० यमुना प्रसाद त्रिपाठी ४.००

२१२ केनोपनिषद्—शांकर भाष्य तथा आनन्द गिरि टीका—पूना १.५०

213 Kenopanishad English Translation T.M.P Mahadevan 0.50

214 Kenopanishad with English Translation S. Chinmaynand 4.25

215 Kenopanishad—English Translation 0.64

216 Kenopanishad with English Translation Sri Aurobindo 2.50

217 Kenopanishad with English Translation Swami Sarvanand 0.75

218 Kenopanishad with English Translation & Notes Sitanath Goswami 5.50

219 Kenopanishad with Sankar Bhashya, English Translation & Notes—K. Ray 3.50

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

220 Concept of Maya from the Vedas to the 20th Century—Reyna Reoth 10.50

221 Kaivalya Upanishad with English Translation S. Chinmaya Nand 2.50

222 Concordance to Principal Upanishads & B. Gita G. A. Gacob 19.40

223 Kauthuma Grhyasutra 9.00

२२४ कौशिक गृह्यसूत्र, (अथर्ववेदीय) भाषाटीका सहित-उदयनारायण सिंह ४५.००

२२५ कौषीतकी ब्राह्मण पर्यालोचन अथवा कौषीतकि ब्राह्मण आचार विचार डा० मंगलदेव शास्त्री २.५०

२२६ कौशीतकि बाह्मणारण्यक विषय कोष—केवलानन्द ६.००

२२७ क्या वेद में इतिहास है—श्री जयदेव शर्मा २.५०

228 Critical Interpretation & Investigation of Epithets of Soma—Kapadia 5.00

229 Critical Studies on Katyayana's Sukla Yajur Pratisakhya 4.50

230 A Critical Study of Nivids (of Rigveda) S. P. Niyogi 10.00

231 Critical Study of Rigveda D. P. Patanjal 25.00

232 Quintessence of the Upanishads—G.G. Desai 3.44

233 Quintessence of Rig veda—Kunhan Raja 4.30

२३४ खादिर गृह्य सूत्र—रुद्रस्कन्द वृति तथा हिन्दी अनुवाद २.५०

२३५ खादिर गृह्य सूत्र—श्री पट्टाभिराम विरचित सूत्रार्थं बोधनी वृति सहित २.४८

२३६ खादिर गृह्य सूत्र—श्री जगद गुरु शृंगेरी मठ २.२५

२३७ गणपत्यथर्वशीर्षं—मूल ०.१५

२३८ गणेशाथर्वशीर्षम्—सभाष्यम्, पूना ०.५०

२३९ गोज्ञान कोष—२ भाग—दामोदर सातवलेकर १२.००

२४० गोभिल गृह्यकर्म प्रकाशिका—भाषाटीका ३.००

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

२४१ गोभिल गृह्यसूत्र—सटीक, उदयनारायणसिंह २.५०

२४२ गोभिल गृह्य सूत्रम्—श्री मुकुन्द शर्मा विरचित मृदुला व्याख्या ४.००

२४३ ग्रामगेय—प्रथम तथा द्वितीय भाग ५.००

244 A Grammatical Word Index to Atharvaveda (अथर्ववेद व्याकरण पदसूची) Ed. Vishwa Bandhu 60.00

245 A Grammatical Word Index to Rigveda (ऋग्वेद व्याकरण पदसूची) Ed. Vishva Bandhu 50.00

246 A Grammatical Word Index to the Four Vedas 2 vols. Ed. Vishva Bandhu 100.00

247 A Grammatical Word Index to the Principal Upanishads (उपनिषद् वैयाकरण पदसूची)—विश्वबन्धु 40.00

248 A Grammatical Word Index of Taittiriya Samhita (तैत्तिरीय संहिता वैयाकरण पदसूची)—विश्वबन्धु 40.00

249 Grihya Sutras—Eng. Translation, 2 vols Oldenberg and M. Muller 40.00

250 Glimpses into Poetic Beauty of the Rigveda M. K. Verma 6.68

251 Glorious Thoughts of the Vedas—N. B. Sen. 15.00

२५२ चतुर्विशत्युपनिषत् सार संग्रह (२४ उपनिषदों का सरल सार हिन्दी में) ४.००

२५३ चतुर्वेद भाष्य भूमिका संग्रह—बलदेव उपाध्याय ५.००

२५४ चारो वेदों के मन्त्रों की वर्णानुक्रमणिका—अजमेर २.५०

२५५ चतुर्वेद महावाक्य टीका १.१२

२५६ चरणव्यूह—मुल (बंबई) ०.१२

२५७ चरणव्यूह शौनक प्रणीत महिदास कृतभाष्य युत १.००

२५८ चारायणीय मन्त्रार्षाध्याय—मूल ४.००

२५९ छान्दोग्य उपनिषद् भाष्य—अजमेर १०.००

२६० छान्दोग्य उपनिषद्—विद्यानन्द कृत हिन्दी भाष्य १०.००

261 Chhandogya Upanishad with Samkhya Point of View - A. S. Gupta 3.00

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

२६२ छान्दोग्य ब्राह्मण-गुण विष्णु कृत वेदार्थ प्रकाश सहित १७.००
२६३ छान्दोग्योपनिषद्—शांकर भाष्य तथा हिन्दी अनुवाद सहित ५.००
२६४ छान्दोग्योपनिषत्—शांकर भाष्य, आनन्दगिरि तथा शङ्करानन्दीसहित ८.००
२६५ छान्दोग्योपनिषद—टीकाकार नारायण स्वामी ५.००
२६६ छान्दोग्योपनिषद्—नित्यानन्द कृत मिताक्षरा टीका ३.००
२६७ छान्दोग्योपनिषद्—रंगरामानुज भाष्य, वीरराघवाचार्य ९.००
२६८ छान्दोग्योपनिषद्—रंग रामानुज भाष्य, पूना ५.५०
२६९ छान्दोग्योपनिषद शांकर भाष्य तथा आनन्दगिरि व्याख्या सहित, पूना ७.५०
270 Chhandogya Upanishad—with English Translation Swami Swahanand 8.00
271 Chhandogya Upanishad with Sankar Comm. & English Translation by G. Jha 8.00
272 Chhandasvati Vak (Select Vedic Mantras) V. S. Agarwal 1.50
२७३ जैमिनीय ब्राह्मण (सामवेदीय)—रघुवीर १०.००
274 Zend Avesta—English Translation by J. Darmesteter & L. H. Mills, 3 Vols 60.00
२७५ जैमिनीयश्रौत सूत्रवृत्ति—प्रेमनिधि शास्त्री ४०.००
276 Jaiminiya Upanisad Brahman (जैमिनीयोपनिषद्-ब्राह्मण) Ram Deva 6.00
277 Geography of Rigveda—Bhargava 21.00
२७८ ज्ञान की गरिमा (वैदिक कहानियाँ) बलदेव उपाध्याय २.००
279 The Teachings of Upanishads—Basant Kumar Chattopadhyaya 8.00
280 The Twelve Principal Upanishads—Text with Translation and Notes with comm of Sankara Anandagiri and Sankaranand—Rore and others Vol II & III 6.00
281 Date of the Rigveda—Mankad 5.00
282 Destiny of the Veda—L. Renou 10.00

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

२८३ तलवकारोपनिषद् भाष्य (खुला पत्रा) १·८१
२८४ ताण्ड्य महाब्राह्मणम् सायणभाष्य सहित--सम्पूर्ण २५·००
285 Taittiriya Upanishad—with English translation.
Swami Sarvanand 2·00
286 Taittiriya Upanishad--Chinmayanand 5·00
२८७ तैत्तिरीयऐतरेय उपनिषद्–रंगरामानुज भाष्य ६·७५
२८८ तैत्तिरीय ब्राह्मणम् (सायण भाष्योपेतम्) २ भाग १७·२५
२८९ तैत्तिरीयसंहिता सायणभाष्योपेता भाग १, ७, ८ १८·००
२९० तैत्तिरीय संहिता (कृष्ण यजुर्वेदीय) —मूल—सातवलेकर १०·००
290 a Taittiriya Sambita–English Translation–Keith 2vols
(Shortly)
२९१ तैत्तिरीय संहिता पदानुक्रमणी प्रथम खण्ड २·००
२९२ तैत्तिरीयोपनिषद्—शांकर भाष्य, हिन्दी अनुवाद १·००
२९३ तैत्तिरीयोपनिषद् with Swarna 1·40
२९४ तैत्तिरीयोपनिषद्—पं० सातवलेकर हिन्दी अनुवाद १·५०
२९५ तैत्तिरीयोपनिषद् शांकर भाष्य तथा आनन्दगिरि व्याख्या, पूना २·७५
२९६ Taittiriyopanishad Bhashya (तैत्तिरीयोपनिषद्भाष्य)
A. K. Tirtha कृत वनमालाव्याख्या ५·५०
२९७ तैत्तिरीयोपनिषद् भाष्य वार्तिक, सुरेश्वर कृत भाष्य तथा
आनन्दगिरि टीका ३·२५
२९८ तैत्तिरीयोपनिषद् (भाष्य टीकाद्युपेता) अद्वैतानन्द तात्पर्य दीपिका १·००
299 The Thirteen Principal Upanishads--R. E. Hume 15·00
300 Thousand–Syllabled Speech— V. S. Agrawal 50·00
३०१ दण्डक शुक्लयजुर्वेदीय (पत्राकार) ०·७५
३०२ दशोपनिषद्, २ भाग ब्रह्मयोगि व्याख्या सहित प्रत्येक भाग १५·००
३०३ दशोपनिषद्—अच्युतानन्द गिरि कृत; हिन्दी अनुवाद ५·००
३०४ दशोपनिषद: (मूल) —स्थूलाक्षर—पूना ३·००
३०५ दशोपनिषद्—शांकर भाष्य सहित ८·२५
३०६ दस्युविवेचन तथा दास मीमांसा—गिरीशचन्द्र अवस्थी १·२५
307 Danastutis of Rigveda--B. H. Kapadia 6·00
३०८ देवतावाद का भौतिक तथा वैज्ञानिक रहस्य—हंसराज १·००
३०९ दैवत संहिता—सातवलेकर—तीन भाग ३०·००

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

३१० देवताध्याय ब्राह्मण—सायणकृत वेदार्थप्रकाश सहित १५·००
311 Drapsa:-Vedic Cycle--Shamasastry. 2·00
३१२ द्राह्यायण गृह्य सूत्र—सटीक सानुवाद २·५०
३१३ द्राह्यायण गृह्यसूत्र वृत्तिः—रुद्रस्कन्द प्रणीता १·५०
३१४ धर्मकोष (उपनिषद् काण्ड) ४ भाग—लक्ष्मणशास्त्री ११०·००
315 Nine Upanishads,Eng.Trans.--Mead & Chattopadhyaya 1·50
316 Nambudari Veda Recitation--J. F. Staal. 36·48
३१७ नारायणोपनिषद्—स्वामी विश्वेश्वरानन्दतीर्थकृत हिन्दीटीका सहित २·००
३१८ नारदीयाशिक्षा—भट्ट शोभाकर ·५०
319 NIGHANTU & NIRUKTA—
English translation Dr. Lakshman Swarup. 30·00
३२० निघंटु और निरुक्त (लक्ष्मण स्वरूप) अनु. सत्यभूषण योगी शीघ्र
३२१ निरुक्त—हिन्दी व्याख्या—पं० भगवद्दत्त १५·००
322 Nirukta of Yaska and the Science of Etymology
B. Bhattacharya 6.00
३२३ निरुक्त–अमरेश्वर ठाकुर कृत बंगला ३ भाग २७.००
३२४ निरुक्तम्–दुर्गाचार्य वृत्ति समेतम् २ भाग पूना २४.२५
३२५ निरुक्त–व्याख्याकार आचार्य विश्वेश्वर १६.००
326 Nirukta Chapter I to VII--S. Ray 6.00
३२७ निरुक्त–छज्जूराम शास्त्री, संक्षेपितया दुर्गाचार्य भाष्य २५.००
३२८ निरुक्त पंचाध्यायी–छज्जूराम शास्त्री ५.००
३२९ निरुक्त प्रथमकाण्ड–डा० कपिलदेव २.५०
३३० निरुक्त लघुवृत्तिः; (सप्तपादिका) १.२५
३३१ निरुक्त शेष (मराठी)–यशवंत खुशाल देश पाण्डे ६.००
३३२ नृसिह पूर्वोत्तर तापनीयोपनिषत्—शांकरभाष्य तथा विद्यारण्य प्रणीत
दीपिका सहित २.५०
333 Neo Upanishadic Philosophy--K. V. Gajendragadkar 2.50
334 New Vedic Selection--N. K. N. Shastri Telang
& V. B. Chaube 12.50
335 Notes on Brahmanas--J. Gonda 15.00
336 Non Rigvedic Mantras in the Marriage Ceremonies --
N. Pillai 20.00

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

337 Non Rigvedic Mantras Rubrication in A. G. Sutra–Apte 5.00
३३८ पञ्चविंशदुपनिषद्––मूलमात्र सजिल्द गुटका २.००
339 Pancavimsa Brahmana (Eng. Trans.) W. Caland 10.00
३४० पंचोपनिषदः—प्रकाश भाष्य सहित (ईश, केन, कठ, मुण्डक, माण्डूक्य) ०.७५
३४१ पवमानपञ्चक सूक्त—पं० सातवलेकर ०.५०
३४२ पादविधानम्—शौनककृतं, अज्ञातकर्तृक व्याख्यायुतम् १.२५
३४३ पारस्कर गृह्यसूत्रम्––(पञ्चभाष्योपेतम्) १०.००
३४४ पारस्कर गृह्यसूत्र—मूलमात्र ०.८५
३४५ पितृ संहिता—शिवदत्त मिश्र ०.२४
३४६ पितृ संहिता––रामगीता सहित ०.७५
३४७ पुराणगत वेद विषयक सामग्री का समीक्षात्मक अध्ययन—
रामशंकर भट्टाचार्य १२.५०
३४८ पुरुषसूक्त––मूल ०.०६
३४९ पुरुषसूक्त––सायणभाष्य-महीधर भाष्य मंगलभाष्य निम्बार्कमत—
भाष्य—चतुष्टय सहितम् २.००
३५० पुरुषसूक्त––सायणभाष्य सहितम् ०.५०
३५१ पुरुषसूक्तम्—महीधर भाष्य, शब्दार्थ तथा हिन्दी व्याख्या
जनार्दन शास्त्री पाण्डेय ०.१५
३५२ पुष्पसूत्रम् (सामप्रातिशाख्यम्) अजातशत्रुकृत भाष्य सहितम् ७.५०
३५३ प्रश्न उपनिषद–पं० सातवलेकरकृत हिन्दी अनुवाद १.५०
३५४ प्रश्न मुण्डक माण्डूक्य उपनिषदः—रङ्ग रामानुज भाष्यादि तथा
वीरराघवाचार्य टीका ४.५०
३५५ प्रश्नोपनिषद्––शाङ्कर भाष्य और उसका हिन्दी अनुवाद ०.५५
३५६ प्रश्नोपनिषद्—शांकरभाष्य तथा आनन्दगिरि व्याख्या १.५०
३५७ प्राथमिक वेद संग्रह—रघुवर मिट्ठूलाल शास्त्री २.००
358 Principal Upanishads–S. Radhakrishnan 26.25
359 Poet-Philosophers of the Rigveda--Dr. Kunhan Raja 20.00
360 Four Studies in the Language of Rigveda–J. Gonda 63.00
३६१ बृहदारण्यक-उपनिषद्—विद्यानन्द कृत हिन्दी ८.००
३६२ बृहदारण्यक-श्वेताश्वतरादि उपनिषद्–रङ्गरामानुज भाष्य,
वीरराघवाचार्य टीका १४.६५

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

363 Brihadaranyaka Upanishad–Text with English Trans. 7.50
364 Brihadaranyaka Upanishad with Sankar's Commentary & English Translation.–Swami Madhavananda 12.00
३६५ बृहदारण्यकोपनिषद्–नित्यानन्द कृत मिताक्षरा व्याख्या ४.००
३६६ बृहदारण्यकोपनिषद्–शांकर भाष्य तथा उसका हिन्दी अनुवाद ६.५०
३६७ बृहदारण्यकोपनिषद्–शांकर भाष्य तथा आनन्दगिरि व्याख्या १३.००
३६८ बृहदारण्यकोपनिषद्-शांकर भाष्य–आनन्दगिरि तथा शंकरानन्दी १६.००
३६९ बृहदारण्यकोपनिषद् भाष्य वार्तिकम्–सुरेश्वराचार्य विरचितम्, आनन्दगिरि व्याख्यायुक्त–भाग १ ४.७५
३७० बृहदारण्यकोपनिषद् भाष्य सजिल्द ६.००
३७१ बृहदारण्यकोपनिषद् (रामानुज टीका) ४.७५
372 Brihad Devata–Text with English Translation and Notes, 2 Vols--A. A. Macdonell 15.00
३७३ बृहद्देवता (शौनकीय) हिन्दी व्याख्या सहित डा० राम कुमार राय १५.००
३७४ भारद्वाज ऋषि का दर्शन ७.००
३७५ भवसन्तारणोपनिषद् (हिन्दी टीका सहित) स्वामी श्रीराम प्रपन्नजी १.००
३७६ भारद्वाज शिक्षा–नागेश्वर टीका १.५०
३७७ मनुष्यों की सच्ची उन्नति का सच्चा साधन—सातवलेकर २.००
३७८ मन्त्र संहिता—(काशी) १.००
३७९ मन्त्र संहिता–हिरण्य केशीय १.२५
३८० मरुत्सूक्तम् ०.२५
३८०क मरुद्देवता मंत्र संग्रह की समन्वय चरण सूची २.००
३८१ मरुद्देवता का मंत्र संग्रह ५.००
३८२ महानारायणोपनिषद्–नारायण कृत दीपिका सहित ०.६९
३८३ माण्डूक्य उपनिषद् हिन्दी अनुवाद–पं० सातवलेकर ०.५०
३८४ माण्डूक्योपनिषद्–शांकर भाष्य तथा उसका हिन्दी अनुवाद १.२५
३८५ माण्डूक्योपनिषद्–गौड़पादीय कारिका, शांकर भाष्य और आनन्दगिरि टीका सहित–पूना ३.५०
३८६ माण्डूक्योपनिषद–सगौडपादीय कारिका, आनन्दगिरि-शांकर भाष्य सहित—काशी ४.००

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

387 Mandukyopanishad—Text with English Translation
S. Sarvanand 0.75

388 Mandukyopanishad with Gaudapada Karika and
English Translation by S. Nikhilanand 6.00

३८९ माण्डूक्य रहस्य विवृति-सच्चिदानन्द सरस्वती १३.५०

390 Manava Srauta Sutra Eng. Trans.-J. M. Van Gelder 40.00

391 Minor Upanishads-Text with Translation 1.50

392 Miraculous and Mysterious in the Vedic Literature,—
B. A. Parab 6.75

393 Mysticism in Rigveda-T. G. Mainkar 8.00

३९४ मुक्तिकोपनिषद-हिन्दी टीका सहित ०.२५

३९५ मुण्डक उपनिषद् -पं० सातवलेकर कृत हिन्दी अनुवाद १.५०

396 Mundakopanishad—Text with Eng. Translation by
S. Sarvanand 1.00

397 Mundakopanishad-Chinmayanand 3.50

398 Mundakopanishad—S.Ray 4.00

३९९ मुण्डकोपनिषद्-शांकर भाष्य तथा म. म. श्रीधर शास्त्री पाठक कृत
बालबोधिनी टीका २.५०

४०० मुण्डकोपनिषद्-शांकर भाष्य तथा उसका हिन्दी अनुवाद ०.५५

४०१ मुण्डकोपनिषद्-शांकर भाष्य आनन्दगिरि टीका १.००

४०२ मूल संस्कृत उद्धरण-प्रो. जे. मुइलर; सम्पादक और
अनुवादक डा० राम कुमार राय १-५ भाग, प्रत्येक भाग २०.००

४०३ मैत्रायणी आरण्यक-सातवलेकर ०.७५

४०४ मैत्रायणी संहिता (यजुर्वेद) १०.००

405 Maitrayani Upanishad Eng. Trans.-V. Buitenen 36.00

406 Maitri or Maitrayaniya Upanishad Text with Eng.Trans.5.00

407 Message of the Upanishads—Sain Das 1·50

408 Message of RigVeda—Aprabuddna 20·00

409 Yaksha Prana (Eng. & Sans.) –K. B. Iyer 1·00

410 Yajurveda-English Translation—Devichand 20·00

४११ यजुर्वेद—मूल (सूक्ष्म अक्षर)पं० सातवलेकर २·००

४१२ यजुर्वेद वा० सं० पादसूची १·५०

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

४१३ यजुर्वेद भाषाभाष्य—सजिल्द—२ भाग-दयानन्द १३·००
४१४ यजुर्वेद भाषा भाष्य (२ खण्डों में)-भाषाकार पं० जयदेवशर्मा १६·००
४१५ यजुर्वेदभाष्यविवरण—भाग १ पं० ब्रह्मदत्त जी जिज्ञासु १६·००
४१६ यजुर्वेदभाष्य—(सजिल्द) स्वामी दयानन्द १—४ भाग ३४·००
४१७ यजुर्वेद का सुबोध भाष्य—अध्याय ४० आत्मज्ञान (ईशोपनिषद्) २·००
४१८ यजुर्वेद का सुबोध भाष्य-अध्याय ३६ (सच्ची शान्ति का सच्चा उपाय) १·५०
४१९ यजुर्वेद संहिता—शुक्ल (पत्राकार) स्थूलाक्षर दौलतराम गौड़ ५·००
४२० यजुर्वेद का सुबोघ भाष्य—अध्याय १ (श्रेष्ठतम कर्म का आदेश) १·५०
४२१ यजुर्वेद का सुबोध भाष्य—अध्याय-३०
(मनुष्यों की उन्नति का सच्चा साधन) २·००
४२२ यजुर्वेदका सुबोध भाष्य-अध्याय ३२ (एक ईश्वर की उपासना) १·५०
४२३ यजुर्वेद संहिता मूल (गुटका) —अजमेर ३·००
४२४ यजुर्वेद संहिता मूल (स्थूलाक्षर) पं० सातवलेकर ४·००
४२५ यजुर्वेद सर्वानुक्रम सूत्र १·५०
४२६ यजुर्वेद—(स्थूल अक्षर) अजमेर ४·००
४२७ यजुर्वेद हिन्दी टीका सहित-श्री रामशर्मा ६·००
४२८ यजुर्वेद शतक—विद्यार्थी १·००
४२९ याज्ञवल्क्य शिक्षा—पं० ज्वाला प्रसाद जी मिश्र ०·६०
४३० याज्ञिक्युपनिषद्विवरणम—पुरुषोत्तमानन्द तीर्थ रचितम् ४·००
४३१ योगोपनिषदः—पं० रा० महादेव-शास्त्री द्वारा सम्पादित तथा
टी० आर० श्रीनिवास अयंगार द्वारा अंग्रेजी अनुवाद १६·००
४३२ रजोवाद—मधु सूदन ओझा ६·००
433 Ramakrishna Upanishad—C. Rajagopalachari 1·00
434 Religion and Philosophy of Atharva-Veda—N. J. Shande 10·00
४३५ रुद्र (नमक-चमकात्मक अध्याय)—पत्रात्मक ०·७५
४३६ रुद्रं चमकं च-सस्वरं लघुन्यास सहितम् ०·४०
४३७ रुद्रभाष्य—श्री अभिनव शंकराचार्य प्रणीत १·६०
४३८ रुद्रभाष्यम्—श्री अभिनव शंकराचार्य प्रणीतम् १·२५
४३९ रुद्र संग्रह—श्री कृष्णदेव २·००
४४० रुद्रस्वाहाकार पद्धति ०·२५

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

४४१	रुद्रस्वाहाकार विधि	०·२४
४४२	रुद्राध्याय:–सायण तथा भट्टभास्करभाष्यसहित—कर्मपर:	२·००
	अद्वैतपर:	२·००
४४३	रुद्राष्टाध्यायी—हिन्दी टीका सहित	२·५०
४४४	रुद्राष्टाध्यायी—श्री शिवदत्त मिश्र	१·००
४४५	रुद्री–मूल	०·७५
446	Life & Society in the Vedic Age.—Dr. Priti Mitra	8·00
447	Lights on Upanishads—T. V. Kapali Sastri	5·25
448	Lights on Veda "	2·00
४४९	लाट्यायन श्रौतसूत्रम्–अग्निष्टोमान्तम्—मुकुन्द झा कृत व्याख्या	३·००
450	Lectures on Rigveda.—V. S. Ghate	8·00
४५१	लौगाक्षिगृह्यसूत्र—देवपालकृत भाष्य सम्पूर्ण–२ भाग	५·१०
४५२	वंश ब्राह्मण—सायणकृत वेदार्थ प्रकाश युक्त	१५.००
४५३	वशिष्ठ ऋषि का दर्शन	७.००
454	Vajasaneya Pratisakhya Part I (Eng .Trans) S. N. Ghoshal	6·00
४५५	वाराह गृह्यसूत्र—सानुवाद	१.५०
456	Warterbuch Zum Rigveda—Grassman.	157·50
457	Wisdom of Upanishads—Annie Besant.	3·00
458	Vision in Long Darkness.—V. S. Agarwal	50·00
459	Vision of the Vedic Poets.—J. Gonda	81·00
४६०	वेद का स्वरूप और प्रामाण्य—करपात्री जी	४.५०
४६१	वेदचयनम्—विश्वभर नाथ त्रिपाठी	४.५०
४६२	वेद परिचय—३ भाग	५.००
४६३	वेद में चर्खा—सातवलेकर	०.६२
४६४	वेद निरुक्त शास्त्रार्थ लतिका—हरिपुष्पाचार्य	०.७५
४६५	वेद प्रकाश—सत्यज्ञानानन्द तीर्थ	२.५०
४६६	वेद भाष्य पद्धति को दयानन्द की देन का सार	२·५०
४६७	वेद भाष्यानुशीलन—दयानन्द	१·००
४६८	वेद मीमांसा (बंगला) २ भाग	२२·५०
४६९	वेद रहस्य—स्व० श्री महात्मा नारायण स्वामी जी कृत	२·५०

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

४७०	वेद रश्मि—डा० वासुदेव शरण अग्रवाल	५.००
४७१	वेद लावण्यम्—२ भाग—सुधीरकुमार गुप्त	१०.००
४७२	वेदवाद द्वात्रिंशिका—सुखलाल जी	१.००
४७३	वेद विकृति विवरणम्	०.५०
४७४	वेद विद्या—वासुदेव शरण अग्रवाल	५.००
४७५	वेद विज्ञान मीमांसा	०.५०
४७६	वेद विद्या निदर्शन—भगवद्दत्त	१२.५०
४७७	वेद विमर्श—ले०वेदव्रत शास्त्री सिद्धान्तशिरोमणि	२.००
४७८	वेदसार—विश्वबन्धु	३.००
479	The Vedas.—F. Maxmuller	6·50
४८०	वेदांग प्रकाश—अव्ययार्थ	०.२५
४८१	वेदांग प्रकाश—आख्यातिक	५.००
४८२	वेदांग प्रकाश—उणादिकोष	१.८०
४८३	वेदांग प्रकाश—कारकीय	०.४५
४८४	वेदांग प्रकाश—गणपाठ	०.६०
४८५	वेदांग प्रकाश—धातुपाठ	०.७५,०.६२
४८६	वेदांग प्रकाश—सामासिक	०.९२,०.६२
४८७	वेदांग प्रकाश—नामिक	०.६५
४८८	वेदांग प्रकाश—निघण्टु वैदिक कोष	०.६५
४८९	वेदांग प्रकाश—पारिभाषिक	०.७५,०.६५
४९०	वेदांग प्रकाश—वर्णोच्चारण शिक्षा	०.२०
४९१	वेदांग प्रकाश—सन्धि विषय	१.००,०.५०
४९२	वेदांग प्रकाश—सौवर	०.३७,०.२५
४९३	वेदांग प्रकाश—(स्त्रैणतद्धित)	१.७५
४९४	वेदांग ज्योतिष—सव्याख्या	१.५०
४९५	वेदार्थ विचार—सीताराम शास्त्री	१७.००
४९६	वेदानुवचन—बाबा नगीना सिंह	६.००
४९७	वेदों का वास्तविक स्वरूप—डा० मंगल देव	०.३७
४९८	वेदों पर अश्लीलता का व्यर्थ आक्षेप—सत्य प्रकाश	०.६२
499	Vaikhanasa Srauta Sutra (Text) W. Caland	7·50
500	Vaikhanas Smarta Sutra (English Translation) W. Caland	3·75

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

501 Vaikhanas Smarta Sutra (text) Ed. W. Caland 1·50
५०२ वैदिक आख्यान—डा० गंगा सागर राय २·००
५०३ वैदिक इतिहासार्थ निर्णय—शिवशंकर ८·५०
504 Vedic Index of Names & Subject (2vols)
Macdonell & Keith 60.00
५०५ वैदिक इन्डेक्स—मेकडोनेल व कीथ २ भाग
अनुवादक—डा० रामकुमार राय ४०.००
५०६ वैदिक इतिहास विमर्श—आचार्य वैद्यनाथ जी शास्त्री ८.००
507 Vedic India --Renou 12·00
508 Vedic India --A. Ragozin 20·00
५०९ वैदिक उपदेश—भाग १ १.२५
510 Vedic Age --R. C. Majumdar 35·00
511 Vedic Culture--Swami Mahadevanand Giri 7·50
512 Vedic Concordance--M. Bloomfield 40·00
513 Vedic Chronology & Vedant Jyotish--B. G. Tilak 4.50
५१४ वैदिक कोष—सूर्यकान्त २२-५०
515 Vedic Glossary of Sri Aurobindo--A. B. Purani 15·00
516 Vedic Grammar for Students--A. A. Macdonell 10·00
516 (a) „ „ (Hindi) डा० सत्यव्रत (शीघ्र)
५१६अ वैदिक चिकित्सा—दामोदर सातवलेकर १.५०
५१७ वैदिक छन्दोमीमांसा—युधिष्ठिर मीमांसक ४.५०
५१८ वैदिक ज्योति—वैद्यनाथ शास्त्री ७.००
५१९ वैदिक दर्शन—प्रो० राममूर्ति त्रिपाठी ६. ०
५२० वैदिक देव शास्त्र—सूर्यकान्त ३०.००
५२१ वैदिक धर्म आणि षडदर्शने—शंकर रामचन्द्र रजवाड़े ०.५०
५२२ वैदिक धर्म एवं दर्शन—दो भाग-कीथ, अनु० सूर्यकान्त ५०.००
५२३ वैदिक धर्म और विकास--पं० गंगा प्रसाद जी १.००
५२४ वैदिक निबन्धावली—डा० मुन्शी राम शर्मा ४.००
५२५ वैदिक पशुयज्ञ मीमांसा—विश्वनाथ विद्यालंकार १.००
526 Vedic Painting--O. C. Gangoly 15·00
५२७ वैदिक भारत में यज्ञ---मुनिदेवराज विद्यावाचस्पति २.००

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

528 Vedic Bibliography Vol II R. N. Dandekar 30'00
५२९ वैदिकपदानुक्रम कोश–संहिता, ब्राह्मण, उपनिषद आदि
सूत्रवर्गीय १६ भाग ३२०.००
५३० वैदिक भाषानुशीलन–गंगाधर मिश्र ४.००
५३१ वैदिक मनुस्मृति ४.५०
532 Vedic Mythology-A. A. Macdonell 25'00
५३३ वैदिक माइथोलोजी (वैदिक पुराकथा शास्त्र) ए० ए०मेकडोनल
अनु० डा० रामकुमार राय १५.००
534 Vedic Mathematics-J. Bhartikrishna 10'00
५३५ वैदिक युग के भारतीय आभूषण–राय गोविन्द चन्द १५.००
536 Vedic Reader for Students--A. A. Macdonell 3,00
536(a) ,, ,, (हिन्दी) शीघ्र
537 Vedic Religion & Philosophy--Swami Prabhanand 2·50
538 Vedic Law of Marriage 1·75
539 Vedic Lectures–V. S. Agrawal 10·00
५४० वैदिक वाङ्मय का इतिहास भाग १–भगवद्दत्तजी १०'००
५४१ वैदिक विज्ञान और भारतीय संस्कृति–गिरिधर शर्मा चतुर्वेदी ५.००
५४२ वैदिक विज्ञानम्–रघुराज मिश्र ०.७५
५४३ वैदिक विज्ञान–शिवशंकर शर्मा २.००
५४४ वैदिक विनय–अभयदेव-२ भाग ३.००
५४५ वैदिक विश्व दर्शन–हरिशंकर जोशी ९.००
५४६ वैदिक व्याकरण भास्कर–आचार्य रुद्रमिश्र शास्त्री ६.००
547 Vedischen Lexicographik--Aryendra Sarma 78.00
५४८ वैदिक संस्कृति का विकास–लक्ष्मण शास्त्री जोशी ५.००
५४९ वैदिक संस्कृति के मूल तत्त्व --मंगल देव शास्त्री ३.००
५५० वैदिक साहित्य-राम गोविन्द त्रिवेदी ६.००
५५१ वैदिक साहित्य और संस्कृति—बलदेव उपाध्याय ८.००
५५२ वैदिक साहित्य और संस्कृति—भास्करानन्द लोहनी ३.००
५५३ वैदिक साहित्य परिशीलन–रजनीकान्त ३.००
५५४ वैदिक स्वराज की महिमा–सातवलेकर ०.७५
५५५ वैदिक साहित्य का इतिहास–राज किशोर सिंह ४.००
५५६ वैदिक साहित्य की रूपरेखा–प्रो० हंसराज अग्रवाल २.००

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

५५७	वैदिक साहित्य की रूपरेखा—पाण्डेय एवं जोशी	४.००
५५८	वैदिक साहित्य चरित्रम्	३.००
५५९	वैदिक साहित्य में नारी—प्रशान्त कुमार वेदालंकार	७.००
५६०	वैदिक सूक्त पंचकम्—"प्रकाश" हिन्दी व्याख्योपेतम्	०.५०
५६१	वैदिक सूक्त मंजरी-हिन्दी अंग्रेजी व्याख्या सहित—डा० रामकृष्ण शास्त्री	०.७५
५६२	वैदिक सूक्त संचय—जनार्दन शास्त्री पाण्डेय	.७५
५६३	वैदिक सूक्त संग्रह—सं० टी० भाषा टीका—पं० वेणी राम शर्मा	.८०
564	Vedic Selections–Part I & II·Ed. K.C· Chatterji	7·50
५६५	वैदिक स्वर मीमांसा—युधिष्ठिर मीमांसक	४.००
566	Vedic Hymns—Max Muller & Oldenberg–2 vols	40·00
567	Vedic History--G. K. Pillai	3·25
५६८	वैष्णवोपनिषद्—पं० रा० महादेव शास्त्री	२०.००
569	Vocabalaire Du RgVeda--L· Renou	12·00
570	Women in the Vedic Age--Shakuntala Rao	2·50
५७१	शतपथ ब्राह्मण सायण भाष्य प्रथम काण्ड—बम्बई	१२.००
५७२	शतपथ ब्राह्मण सायण भाष्य तथा टिप्पणी सहित संपूर्ण पाँच जिल्द	२००.००
५७३	शतपथ ब्राह्मणम् (शुक्लयजुर्वेदीय) सायण हरिस्वामी और द्विवेदी गङ्ग कृत भाष्य सार—संपादक डा० अल्बर्ट वेवर	१००.००
५७४	शतपथ ब्राह्मणम् (सश्चरम्)—म० म० श्री चितस्वामी	६.००
575	Satapatha Brahmana--5 Vols Eng. Tran. J. Eggeling	100·00
५७६	शांखायन गृह्यसूत्रम्—सीताराम सहगल	३०.००
५७७	शांखायनारण्यकम्—श्रीधर शास्त्री	१.००
५७८	शाक्तोपनिषद्—पं० रा० महादेव शास्त्री	८.००
५७९	शिक्षा सूत्राणि—आपिशलि, पाणिनि, चन्द्रगोमी	०.२५
५८०	शिक्षादिवेदषडंगानि	३.००
५८१	शिक्षादिवेदांगचतुष्टय (शिक्षा, ज्योतिष, छन्द, निघण्टु)	०.५०
५८२	शुक्ल यजुर्वेद माध्यंदिनी संहिता—अन्त में अष्ट विकृतियाज्ञवल्क्य शिक्षा, प्रतिज्ञा, सर्वानुक्रमानुवाक सूत्र पारस्कर गृह्यसूत्र मन्त्रकोष आदि भी हैं	१०.००
५८३	शुक्ल यजुर्वेद संहिता—रफ	२.००
५८४	शुक्ल यजुर्वेदीय रुद्राष्टाध्यायी—स्थूलाक्षर	०.७५
५८५	शुक्ल यजुर्वेदीय रुद्राष्टाध्यायी – गौरीनाथ पाठक	०.२५

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

५८६ शुल्ब सूत्रम् --कर्कभाष्य महीधर वृत्तिसहित ०.७५
५८७ शुल्वसूत्र (कात्यायन श्रौतसूत्र का परिशिष्ट अंश) संस्कृत वृत्ति सहित ०.३७
५८८ शैवोपनिषद्—ब्रह्मयोगी कृत सव्याख्या १२.००
589 Saiva Upanisahd—Eng. Trans.–S. Iyangar 9·00
590 Short Vedic Grammar–K. Ray 1·50
५९१ श्वेताश्वतरोपनिषद १.००
५९२ श्वेताश्वतरोपनिषद शांकर भाष्य तथा उसका हिन्दी अनुवाद १ .०५
593 Svetaswataropanisahd with Eng. Trans–S. Yogishanand 1.50
५९४ षडंगरुद्री-मूल १.५०
595 Sadvimsha Brahmana (Trans) –Bolle 34,50
५९६ षट् सूक्तानि—मूल ०.३२
५९७ श्रीसूक्त विद्याधर, पृथ्वीधर, कंठ भाष्य त्रय यन्त्रस्थ
598 The Seers of Rigvede Dr. V, G. Rahurkar 25.00
५९९ श्री सूक्त भा० टी० ०.२५
६०० श्री सूक्त (मूल) ०.१३
६०१ श्रौत कोष (संस्कृत मूल) ४०.००
602 Sraut Kosa–English Translation 2 Vols 75.00
६०३ श्रौत पाठ–२ भाग ६.००
६०४ श्रौत पदार्थ निर्वचन (यज्ञ शब्द कोष) ६.४८
६०५ श्रौत सूत्र (कात्यायन) –देव याज्ञिक पद्धति २०.००
६०६ श्रुति सार समुद्धरणम् १.१२
६०७ श्रुति सार समुद्धरणम्–सच्चिदानन्द योगीन्द्र कृत तत्त्व दीपिका १.२५
६०८ सत्याषाढ़ श्रौत सूत्रम् वैजयन्ती व्याख्या सहितम् (१–१० भाग) ४२.५०
६०९ संहितोपनिषद् ब्राह्मण सायण तथा द्विजराज भट्ट कृत व्याख्या द्वयोपेता १५.००
610 Some Observations on Relation Between God & Power in Veda–Gonda 20.50
६११ सांख्यायन गृह्यसंग्रह–वासुदेव कृतः तथा कौषीतकि गृह्य सूत्राणि च २.५०
६१२ सामतंत्र (सामवेद प्रातिशाख्य) राम नाथ दीक्षित २०.००
६१३ सामविधानब्राह्मण सायणकृत वेदार्थ प्रकाश तथा भरतस्वामिकृत पदार्थ मात्रा विवृति व्याख्यायुत—डा० बी० आर० शर्मा १५.००
६१३अ सामवेद संहिता मूल प० सातवलेकर (सूक्ष्म) २.००
614 Sama Veda–English Translation—Devichand 15.00

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

615 Sama Veda–Translated into English with a popular Commentary – Ralph Griffith 20.00
616 Samaveda Samhita–English Translation–Stevenson 12.00
६१७ सामवेद (स्थूल अक्षर) मूल ३.००
६१८ सामवेद-हिन्दी टीका सहित–श्री राम शर्मा ६.००
६१९ सामवेद के मन्त्रों की अनुक्रमणिका ०.५०
६२० सामवेद भाषा भाष्य–पं० जयदेव शर्मा ८.००
६२१ सामवेद-हिन्दी अनुवाद सहित–वीरेन्द्र शास्त्री ६.००
६२२ सामवेद शतक–जगदीश लाल १.००
६२३ सामवेद सर्वस्वम्–रामनाथ दीक्षित ५.००
६२४ सामवेद संहिता–(अर्थ व स्पष्टीकरण सहित) १५.००
६२५ सामवेद संहिता (गुटका) मंत्र सूची सहित २.५०
६२६ सामवेद संहिता मन्त्र सूची सहित ३.००
627 Sama Veda Samhita Agneya Parva–B. K. Lahiri 5.00
६२८ सामवेदीय आह्निक उपाकर्म पद्धति–काशी १.७५
६२९ सामवेदीय सुबोधिनी पद्धति ७.५०
६३० सामवेदीय रुद्र जपविधि—ऋषि शंकर अग्निहोत्री श्रीमाली कृत भाष्य आंग्लानुवाद सहित ४.००
631 Sayana's Introduction to Rig Bhashya (With English Translation) S. Ray 7.00
632 Significance of the Agneya Sukta of Rigveda–B. Kumar 1.00
633 Sigmatischen Aoriste in Veda—J, Narten 98.20
634 Suparna–E. Anantacharya 10.00
६३५ सूक्तानि ०.४०
636 Selections From Brahmanas & Upanishads– Dr. R. C. Dwivedi 8.00
637 Soma Hymns of Rigveda–S. S. Bhave Vol II & III 18.00
638 Soma in the Legends–B. H. Kapadia 2.50
639 Some Vedic Lights on Ahur Mazda & Zarathushtra –Kulkarni 2.50
640 Studies in the Upanishads--G. Mukhopadhyaya 16.50
641 Studies in the Brahmanas–Dr. A. C. Banerjee 15.00
642 Studies in Vedic Interpretation (on the line of Shri Aurobindo)–A. B. Purani 20.00

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

643	Stylistic Repetition in the Veda–J. Gonda	92.92
644	Sparks from the Vedic Fire–V. S. Agrawal	30.00
645	Science of the Vedas–Shrinivasan	1.50
६४६	सौरसूक्त मूल	०.१२
६४७	हिन्दी ऋग्वेद भाष्य भूमिका (सायण भाष्य भूमिका का अनुवाद) श्री जगन्नाथ पाठक	३.००
६४८	हिन्दी निरुक्त व्याख्याकार प्रो० उमाशंकर शर्मा "ऋषि"	६.२५
६४९	हिन्दी वैदिक व्याकरण —उमेश चन्द्र पाण्डेय	२.००
६५०	हिन्दी वैदिक व्याकरण–राम गोपाल	१५.००
६५१	हिरण्यकेशीय मंत्र संहिता	१.२५
652	Hymns of Atharva Veda–Bloomfield	20.00
653	The Hymns of the Atharva Veda–Griffith, 2 Vols	40.00
654	Hymns of Rigveda	3.00
655	Hymns of Rigveda–C. Manning	4.00
656	The Hymns of Yajurveda-- Griffith	20.00
657	Hymns of Creation–V. S. Agrawal	3.00
658	Hymns from the Rigveda–Peterson	6.50
659	Hymns from the Vedas–A. C. Bose	40.00
660	Heat in the Rigveda and Atharva Veda–C. J. Blair	37.50

WE SUPPLY ALL KINDS OF BOOKS
ON INDOLOGY TO ALL PARTS
OF THE WORLD AT THE
SHORTEST PERIOD

MOTILAL BANARSIDASS

DELHI :: VARANASI :: PATNA

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

धर्मशास्त्र एवं कर्मकांड

सनातन धर्मोद्धार

(चार भागों में) (भाषा भावप्रभा टीका सहित)

नखछेदराम दूबे कृत, रायल आठ पेजी : १५९२ : सजिल्द मूल्य २०-००

प्रस्तुत पुस्तक का उद्देश्य है कि धार्मिक तथा नीति सम्बन्धी शिक्षा देकर नवयुवकों में मानसिक बल के साथ-साथ धर्म-बल और चरित्र-बल बढ़ाया जाय। इस उद्देश्य की पूर्ति के लिये सनातन धर्म का यह संग्रह बनाया गया जिसे सब सम्प्रदाय स्वीकार कर सकें और जिसके द्वारा नवयुवकों को धर्म के सिद्धान्तों और प्रधान उपदेशों की शिक्षा मिले।

ग्रन्थ बड़ी प्रौढ़ संस्कृत भाषा में लिखा गया है और ग्रन्थकार ने सम्पूर्ण ग्रन्थ का हिन्दी अनुवाद भी सरल भाषा में कर दिया है जिससे केवल हिन्दी जानने वालों को भी ग्रन्थ का अभिप्राय विदित हो जाय। ग्रन्थ के दो भाग हैं, पूर्वार्द्ध और उत्तरार्द्ध और प्रत्येक भाग के दो-दो खण्ड हैं। ग्रन्थ के पहले व दूसरे भागों में सनातनधर्म के अनेक बड़े बड़े गम्भीर प्रश्नों का विवेचन और पूर्ण पांडित्य से प्रमाण पूर्वक सनातन धर्म के सिद्धान्तों का समर्थन है। उत्तरार्द्ध के दोनों खण्डों में धर्म का बहुत अच्छा निरूपण किया गया है और सामान्य धर्म का उपदेश विपुल रीति से आ गया है, एवं ग्रन्थकार ने उसको कई अंशों में उपबृंहित किया है।

DHARMA SUTRAS

A Study in their Origin & Development *by* DR. S.C. BANNERJI. *Demy Octavo* : *Pages* 570 : *Cloth bound* : *Price Rs.* 37.00

This book is an attempt, for the first time, at an exhaustive study of the DHARMA SUTRAS as a species of the Kalpasutras. The author critically examines the views of the earlier scholars on the various problems connected with this literature. Especially interesting is his treatment of the text-problem. He surveys the contents of the Dharmasutras systematically and then gives an

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

illuminating account of the life of ancient Indians reflected in these works. Of great interest are the chapters on the Flora & Fauna and the geographical materials found in this literature. The chapter, entitled Lexicographical Notes, though brief, will enrich the lexical literature in Sanskrit.

SIMILES IN MANUSMRITI

By DR.M.D. PARADKAR M.A., PH.D., *Demy Octavo, PP. 112, Cloth bound, Rs.* 6.00

Hindu Law is based upon Manu-Smriti which professes to teach Rules of Conduct & is a work of Dharma-Sastra. The author is not much interested to express his Similes in the usual form accepted in poetics. Consequently peculiarities of construction figure prominently in the work.

Similes as a general rule, spring out of the thought material that is very deeply set in one's experience and are at the same time calculated to call out similar experience in the reader. They have played a significant part in enriching the human language & experience. A careful and critical study of the Similes used by an author, is sure to give his power of observation, his expression, his flight of imagination, his development of thought, his vocabulary, his language, his actual meaning or idea, his conciseness or brevity, his use of synonyms, his power of comparison, his religion and above all the Philosophical attitude with an Historical Back-ground resulting into a Cultural Reading of the Period with its environments and surroundings,

The present volume is Dr. Paradkar's Thesis and deals in full detail and exhaustively not only with the Similes occurring in the Manu–Smriti, but also some other figures either based on similes or independent of it — these latter, of course forming the main subject of his study & his interesting findings regarding stylistic & structural peculiarities in that work. The book is divided into four chapters elucidating the Field of Observation, Peculiarities of Construction of the Similes, Translation (of the Passages) & Notes and Other Alankaras respectively & is a *MILESTONE FOR OTHER FELLOW WORKERS IN THE FIELD.*

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

कर्मकाण्ड-प्रदीपः

(प्रथमो भागः)

[दशकर्मादिपद्धतिः]

सम्पादक—साहित्याचार्य जनार्दन शास्त्री पाण्डेय, एम० ए०

पारस्कर गृह्य सूत्र के अनुसार यजुःशाखीय कर्मकाण्ड कराने वालों के लिए यह अपूर्व पुस्तक है। इसमें पञ्चाङ्ग कर्म, गर्भाधानादि सोलह संस्कार, मूलाश्लेषादि २१ शांतियाँ, गोदानादि, २० दानकर्म, दानविधि, प्रतिग्रहविधि, द्रव्य-देवता, प्रायश्चित्तप्रयोग, सावित्रीव्रत, पीपलव्रत, तुलसीविवाह पूजा, धात्रीपूजा, गृहप्रवेश, वास्तु पूजन, शिलान्यास विधि आदि १०० से अधिक विषयों से पूर्ण। कर्मकांडियों के लिए सर्वोत्तम पुस्तक। मूल्य ८.७०

मनुस्मृति

(१,२ अध्याय)

कुल्लूक भट्ट कृत "मन्वर्थमुक्तावली", सत्यभूषणयोगिकृत "विद्याधरी भाष्य" तथा जी. बुल्हर कृत अंग्रेजी अनुवाद सहित।

सम्पादक—सत्यभूषण योगी, एम. ए. शास्त्री, वेदालङ्कार

भारतीय धर्मग्रन्थों में मनुस्मृति का अपना स्वतंत्र स्थान है। इसमें भी प्रारंभ के २ अध्याय अत्यन्त महत्त्वपूर्ण हैं जो प्रायः सभी विश्वविद्या- लयों में उच्च कक्षाओं में पढ़ाये जाते हैं। यद्यपि इस ग्रंथ पर कई टीकाएँ हुईं किन्तु कुल्लूक भट्ट की "मन्वर्थ-मुक्तावली" अपना सानी नहीं रखती, इसीलिए श्री योगी जी ने उपर्युक्त टीका के साथ इस ग्रंथ का आधुनिक ढंग से संपादन किया है। साथ में विद्याधरी भाष्य नाम से अपनी स्वतंत्र टीका भी दी है जिसमें कई नवीन उद्भावनाओं का समावेश किया है। साथ ही पाश्चात्य विद्वान् श्री बुह्लरकृत अंग्रेजी अनुवाद भी दिया गया है ताकि प्राच्य एवं पाश्चात्य दोनों ढंगों से अध्ययन करनेवाले इस ग्रंथ से लाभ उठा सकें। इसकी भूमिका में खोजपूर्ण विषयों का समावेश है। इस प्रकार अत्यन्त आकर्षक एवं स्वच्छ छपाई के साथ सजिल्द क्राउन सोलह पेजी के लगभग ३०० पृष्ठों की इस पुस्तक का मूल्य केवल ६.००

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

कर्मठगुरु

पं० मुकुन्दवल्लभ जी ज्योतिषाचार्य द्वारा संकलित

नवीन परिवर्धित संस्करण

कर्मकाण्ड करानेवाले विद्वानों के लिये यह अमूल्यनिधि है। इसको पास में रखने से सामान्य ज्ञान रखनेवाला व्यक्ति भी आसानी से कर्मकाण्ड तो करा ही सकता है साथ ही बहुत से ऐसे विषयों का भी उसे ज्ञान हो जाता है जो अत्यावश्यक, लोकोपकारी तथा सद्यः फलद है।

इसमें ४ प्रकरण हैं, पहिले नित्य प्रकरण में दैनिकचर्या से संबद्ध सभी विषयों का विवरण है, दूसरे नैमित्तिक प्रकरण में विशेष निमित्तों से किये जानेवाले कर्मों का विधान दिया गया है, तीसरे पूजाहोम प्रकरण में सभी कर्मों के होम विधान के साथ प्रायः सभी संस्कारों की विधि दी गई है, चौथे काम्य कर्म प्रकरण में विशेष उद्देश्यों से किये जानेवाले कर्मों की विधि के साथ आश्चर्यजनक प्रभाव दिखाने वाले यंत्र मंत्रों का चमत्कारिक विवरण भी दिया गया है। इस प्रकार यह पुस्तक एक संग्रहणीय रत्न हो गयी है।

अधिक प्रशंसा क्या की जाय आप स्वयं देखकर इसकी परीक्षा करें।

मूल्य केवल ६ ००

हिन्दी भाषा टीका सहित

विवाह पद्धति

चतुर्थी कर्म सहित

पं० भैयाराम शर्मा द्वारा संपादित

सोलह संस्कारों में विवाह एक प्रसिद्ध संस्कार है। हिन्दुओं के अन्य संस्कारों में देशाचार या लोकाचार से भले ही कुछ अन्तर आता हो किन्तु विवाह पद्धति में प्रायः कोई विशेष अन्तर नहीं आता। लोगों को सन्देह रहता है कि इन मंत्रों का अर्थ क्या होता है जिनके द्वारा किया गया यह संस्कार जीवन-पर्यन्त वैध समझा जाता है। अतः श्री भैयाराम जी ने इस पूरी पद्धति को ठीक क्रम से देकर प्रत्येक कर्म प्रक्रिया को भाषा में समझा दिया है और प्रत्येक मंत्र का भी अनुवाद कर दिया है। जिससे आसानी से कोई भी साधारण पढ़ा लिखा व्यक्ति विवाह करा सकता है और उसकी महत्ता को समझा सकता है। पुस्तक अत्यन्त उपयोगी है।

मूल्य केवल २.००

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

The Institutes of Visnu

Rexin bound, Demy Octavo. XXXVII+316 *pages, Rs.* 20.00

A collection of ancient legal Aphorisms, translated by Julius Jolly, with critical Introduction & Notes.

The volume contains the study of *Visnu-Smriti*, or, Vaisnava Dharmasastra which is founded on its close connection with one of the oldest Vedic schools, *the Kathas*. This work has been the source from which other Sutrakaras drew and deals with such subjects as are enshrined in duty and morality as the basis of law.

The Laws of Manu

Rexin baund, Demy 8*vo. CXXXVIII*+620 *pages. Rs*, 20-00

With extracts of severs commentaries of *Medhatithi*; *Govindaraya*; *Sarvajna–Narayana*; *Kulluka Bhatt; Raghvananda & Nandana–carya*, as well as an *Anonymous Tippana;* translated by Georg Buhler, with critical Introduction and Notes, and forms the basis of Hindu Law.

In the present work sacred law has been fully stated as well as the good and bad qualities of human actions and the immemorial rule of conduct to be followed by all the four castes. It includes not only the precepts for the moral duties of all Aryas, but also the special rules regarding the conduct of kings and the administration of justice.

The Minor Law Books

Rexin bound, Demy Octavo, XXIV+396 *pages. Rs.* 20.00

Narada & Brhaspati : Translated by Julius Jolly, with critical introduction & Notes. It has the bearing on the origin and history of the authoritative lawbook of ancient India.

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

The present volume accords throughout with the *editio princeps* of the *Narada Smrti* in the *Bibliothica Indica*. The repute of Narada as a legal writer has been so great as to embody, upwards of half his work, in the authoritative compositions of the mediaeval and modern writers in the province of Sanskrit-law, while the fragments of *Brhaspati* are among the most precious relics of the early legal literature of India.

The Sacred Laws of The Aryas

Rexin bound, Demy Octavo, CII+672 *pages, in* 2 *Vols. Rs.* 40.00

Vol. I. *Apastamba & Gautama Aphorisms*, translated with critical introduction & Notes, by Georg Buhler. The former are compiled for the express purpose of strictly regulating even the smallest acts of one's life and the latter contain special reference to the *Sama-Veda*.

Vol. II. *Vasistha Dharma-Sutra & Baudhayana Dharma-Sutra*, translated with critical Introduction & Notes by Georg Buhler. The former are the last remnant of the Sutra of a Vedic School while the latter is the work of a teacher of the *Black Yajur-Veda*, who composed manuals on all the various sub-divisions of the *Kalpa*, and founded a *Sutra-Karan* which is said to exist to the present day.

These *Sutras* are the principal source of the metrical *Smrtis* and presuppose the development of the prose literature of the *Brahmanas*, dealing chiefly with the duties of the Vedic student. These laws have been best preserved, and have remained free from the influence of sectarians.

Teachings of Dharmasastra

By : J. R. Gharpure

Royal Octavo pp 116 *Full cloth bound* *price Rs.* 10.00

These lectures are both historical and expository in character.

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

After defining Dharma and comparing it with such concepts as Law and Morality, the author gives a brief history of the sources of Dharma, pointing out how there was an evolution from the original idea of sruti being the supreme source of Dharma to that of sruti and smrti being considered equally authoritative and finally to that sadacara being extremely important in deciding what is Dharma. He has also something to say on the role of the Courts established by the British in India in the evolution of Hindu Law.

Aspects of The Social And Political System of Manusmrti

By : K. V. Rangaswami Aiyangar

Royal Octavo *pp* 220 *full cloth bound* *price Rs.* 12.00

In the literatures of the world, *Manusmrti* has held for centuries a unique position. Even in its present recension it is admittedly above two thousand years old. For atleast a thousand years earlier the name of Manu was cited as the author of many floating dicta to which his name gave weight. The aim of the lectures now published is not designed as a defence of Manu or of the social and political ideas contained in his work and claiming to rest on a semi-divine authority. The lectures merely endeavour to present the salient features of the social and political system of *Manusmrti* —and of Indian society—as understood for centuries by those who drew their inspiration from the work. The only innovation is the presentation of the ideas in language and terms more easily intelligible to modern readers. The lectures constitute a prolegomena to the study of *Manusmrti*.

Juridicial Studies In Ancient Indian Law

By

L. Sternbach

Since 1937, the author has published forty comprehensive

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

studies on ancient Indian Law. These publications, each of which is an entity in itself, and hitherto dispersed in a Number of Journals, Magazines and commemorative Volumes, have now been revised and compiled in two Volumes.

The first Volume contains articles on ancient Indian Law proper based on Dharmasastras, the Smrtis and the Arthasastras are liberally illustrated with quotations and references from these sources. These studies deal in particular with the theory and Practice of the law of deposit; pledge; suretyship; labour; debts; and marriage. It also deals with the legal position of prostitutes and the legal position of physicians; legal, fiscal, social and penal privileges; the protection of plants; infanticide and many other aspects of life in ancient India.

The second volume, now in the Press, deals in particular with the application of law and the manner in which the technical legal rules were reflected in Sanskrit literary works, such as the katha literature. The author comes to the conclusion that the often theoretical legal rules, as included in the Dharmasastras, Smrtis and other sources of Ancient Indian law are faithfully reflected in the Sanskrit classics. Price Vol I Rs. 50.00

The Hindu Judicial System

By : S. Varadachariar

Demy Octavo pp 230 *Full cloth bound* *Price Rs.* 10.00

The author shared the feeling expressed by Mr. Jayaswal that the Hindu Law of Procedure is well worth a critical study which will repay the student of comparative jurisprudence. The author has accordingly laid stress on comparative and historical study instead of contenting himself with a descriptive account. With this purpose, he has much more frequently referred to the history and to the rules of the Roman and the early English Law, the Canon Law and other foreign systems than he will otherwise have deemed necessary. He has dealt with the subject only its broad outlines.

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

१	अग्निष्टोम पद्धति—"आध्वर्यत्र पद्धति", "औद्गात्र पद्धतिः होत्र पद्धतिश्च" खण्ड १–३	७·५०
२	अग्निहोत्र चन्द्रिका–देवव्रात भाष्य सहित वामन शास्त्री	४·२५
३	अनुष्ठान प्रकाश—चतुर्थी लाल कृत	१२·००
४	अन्त्य कर्म दीपक—म० म० नित्यानन्द पन्त पर्वतीय	४·००
५	अब्धिनौयान मीमांसा—वेंकटाचलशास्त्री	२·००
६	अभिषेक चतुष्टयी—मातृ प्रसाद पाण्डेय	·२०
७	अर्की विवाह - पं० वायुनन्दन जी मिश्र	·२४
८	अर्हत्तिथिभास्कर—श्री राजनारायण शास्त्री	२·००
९	अश्लेषाज्येष्ठा शांति	·५०
१०	अशौच निर्णय—भाषा टीका	·२४
११	आचार भूषणम् (हिरण्यकेश्याह्निक) त्र्यम्बककृतम्	६·५०
१२	आचार मयूख	१·२५
१३	आचारसार (गदाधर पद्धति)	४·५०
१४	आचारादर्श –मूल (पुस्तकाकार)	१ २५
१५	आचारार्क–मूल (पत्राकार)	१·२५
१६	आचारेन्दुः–त्र्यम्बक विरचित	६·००
१७	आङ्गिरस स्मृति—ए० एन० कृष्ण अयंगार सम्पादित–मूल	१२·००
१८	आधान पद्धति—वामन शास्त्री	३·००
१९	आपस्तम्बीय धर्मसूत्र–मूल, पाठभेद, टिप्पणी, उज्ज्वल वृत्ति सहित	३·००
२०	आब्दिक एकोद्दिष्ट श्राद्ध प्रयोग भा० टी०	·३०
२१	आर्य विद्या सुधाकर (संस्कृत)—डा० मंगल देव शास्त्री	१०·००
२२	आर्याभिनव, गुटका (दो रंगी छपाई तथा सजिल्द)	१·००
२३	आर्याभिनव, गुटका	·७५, ·४०
२४	आर्य विधानम्–विश्वेश्वर नाथ रेऊ प्रणीत भा० टी० सहित	२०·००
२५	आर्योद्देश्य रत्नमाला (नागरी)	·०६
२६	आशौच निर्णय (त्र्यम्बक कृत)	·२५
२७	आशौच निर्णय :–वाचस्पति मिश्र प्रणीत "मनोरमा" हिन्दी टीका	·५०
२८	आशौच निर्णयः–हिन्दी टीका सहित	·५०
२९	आह्निक कर्म चन्द्रिका—विशुद्धानन्द ब्राजक	१·००
३०	आह्निक कर्म सूत्रावली—मूल मात्र	४·००
३१	आह्निक सूत्रावली—दौलतराम गौड, काशी	८·००

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

३२ आह्निक सूत्रावली (शुक्लयजुर्वेद)—वैद्यनारायण बम्बई ६·००
33 Introduction to Modern Hindu Law–Derrett. J.Duncan 30.00
34 Introduction to Vyavahar Kanda–K. V. Rangaswami 14.00
35 Introduction to Dev Dharma–S. P. Kanal 2.00
36 India of Dharmasastras by V. Mitra 25.00
37 Institutes of Visnu–Jolly 20.00
३८ उग्ररथ शांति प्रयोग ५·००
३९ उद्वाह तत्त्वम् (सटीक) रघुनन्दन, भट्टाचार्य ५·६२
४० उपनयन पद्धति—चतुर्थी लाल १·५०
४१ उपनयन पद्धति—भाषा टीका ·७५
४२ उपनयन पद्धति– भाषा टीका (बड़ी) ·७५
४३ उपनयन पद्धति—रामस्वरूप शर्मा १·२५
४४ उपनयन पद्धति–भाषा टीका—पं० वायुनन्दन मिश्र १·००
४५ उपनयन पद्धति—विद्याधर गौड १·५०
४६ उपनयन मार्तण्ड भाषा० टीका—पं० विन्ध्याचल दत्त ·७५
४७ उपाकर्म पद्धति–सटिप्पण १·२५
४८ उमामहेश्वर गुटका (नेपाली) २·००
४९ उपाध्याय रत्न चन्द्रिका—सुरेश दत्त शर्मा १०·५०
५० एकादशी व्रतोद्यापन प्रकाश—पं० भास्करानन्द २·२५
५१ एकोद्दिष्ट श्राद्ध पद्धति (भाषा टीका) ·३७
५२ एकोद्दिष्ट श्राद्ध पद्धति (भाषा टीका) ·३२
५३ एकोद्दिष्ट श्राद्ध प्रयोग भाषा टीका ·२५
54. Origin and Development of Dattatreya Worship in India–H. S. Joshi 12.50
55 Origin and Development of the Rituals of Ancestor—Worship in India–D. D Shastri 35.00
५६ और्ध्व दैहिक कर्म पद्धति ४·००
५७ कर्मकाण्ड क्रमावली—सोमशम्भु विरचित १·५०
५८ कर्मकाण्ड प्रकाशिका—वैष्णव दास संगृहीत ·६०
५९ कर्मकाण्ड प्रदीप (दशकर्मादि पद्धतिः)–शुक्ल यजुर्वेदीय प्रथम भाग—सम्पादक पं० जनार्दन शास्त्री पाण्डेय ८·००
६० कर्मकाण्ड भास्कर—विशाल मणि शर्मा ५·५०
६१ कर्मठगुरु—राज ज्योतिषी पं० मुकुन्द बल्लभ कृत : नित्य कर्म के लिए सबसे बढ़िया ग्रंथ ६·००

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

६२	कर्म प्रदीप—छान्दोग्य परिशिष्ट	२·२५
६३	कर्म मीमांसा दर्शन—भाषानुवाद सहित	८·५०
६४	कर्म मीमांसा—लेखक आचार्य वैद्यनाथ शास्त्री	२·२५
६५	कर्म विपाक संहिता—शिव गोविन्द दीक्षित	४·००
६६	कर्म विपाक संहिता—भाषा टीका	५·००
६७	कलश प्रतिष्ठा	·०६
६८	कल्प पूजा	१·२५
६९	कातीय तर्पण पद्धति (हिन्दी टीका)—पं० अनन्तराम डोगरा	·१५
७०	कातीयेष्टि दीपक (दशपौर्णमास पद्धति)—नित्यानन्द पन्त पर्वतीय	२·००
७१	कात्यायन मत संग्रह—नारायण चन्द्र बनर्जी	२·८१
७२	कात्यायनीयशान्ति प्रयोग	·२५
७३	कान्य कुब्ज वंशावली	·६०
७४	कान्य कुब्ज वंशावली	२·००
७५	काल तत्त्व विवेचनम्—रघुनाथ भट्ट, भाग २	७·५०
७६	काल माधव कारिका—माधवा चार्य	·७५
७७	काल माधव (सटीक)	३·००
७८	काल विवेक—जीमूत वाहन, पं० मधु सूदन सम्पादित	५·२५
७९	काशी महिमा प्रकाश वा काशीखण्ड सार—काशीनाथ झा	२·५०
८०	काशी मोक्ष विचार—सुरेश्वराचार्य	१·५०
८१	कुण्डमण्डप सिद्धि—भाषा टीका—पं० वायुनन्दन मिश्र	·५२
८२	कुम्भ विवाह—मूलमात्र—पं० वायुनन्दन मिश्र प्रणीत	·२४
८३	कुल देवता स्थापन विधि हनुमद्ध्वज दान विधिश्च	·०५
८४	कूपाराम मीमांसा अर्थात् वृहत्कूपाराम पद्धतिः	·६४
८५	कूपोत्सर्ग पद्धतिः—भाषा टीका, टीकाकार—पं० सीता राम झा	·२०
८६	कूपोत्सर्ग पद्धति	·१५
८७	कृत्यकल्पतरु—लक्ष्मीधर विरचित, ब्रह्मचारी, गृहस्थ, नियतकाल श्राद्ध, दान, व्रत, तीर्थ विवेचन, शुद्धि, राजधर्म और व्यवहारकाण्ड १० भागों में	१७१.००
८८	कृत्यरत्नाकर—चण्डेश्वर ठक्कुर विरचित	६.००
८९	कृत्यशिरोमणि—तूफानी शर्मा प्रणीत	४·००
९०	कृत्यसार समुच्चय—अमृत नाथ शर्मा	१·७५
९१	कृत्य सार सम्मुच्चय—अमृत नाथ झा, पं० गंगाधर मिश्र कृत वृहत् टिप्पणी परिशिष्ट सहित	५·००

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

९२	क्यों (धर्म दिग्दर्शन) माधवाचार्य शास्त्री–२ भाग	१६·००
93	The Concept of Dharma in Valmiki Ramayana By Dr. Benjamin Khan	20.00
९४	क्षत्रिय वंश भास्कर–इन्द्र देव नारायण सिंह	४·००
९५	क्षत्रिय संध्या प्रयोग–भाषा टीका	·२०
९६	गदाधर पद्धति–आचार सार	४·५०
९७	गणपति पूजा होम पद्धति	·१२
९८	गयायात्रा पद्धति—मूल	·४५
९९	गयाश्राद्ध पद्धति–सीताराम शास्त्री	·४५
१००	गयाश्राद्ध पद्धति	·२५
१०१	गायत्रीपूजा पद्धति—संग्रह कर्ता विभाकराचार्य	·२५
१०२	गृहस्थ रत्नाकर–चण्डेश्वर	५·२५
१०३	गोत्रावली–भाषा टीका	·३७
104	Gotras in Panini—V. S. Agrawal	3.00
१०५	गोविन्दार्चन चन्द्रिका–मूल मात्र (पत्राकार)	१०·००
१०६	गोदान पद्धति (भाषा टीका)	·१२
१०७	गोदान पद्धति–पं० वायुनन्दन मिश्र	·१५
१०८	गोदान विधि तुलादान सहित–मूल	·१०
१०९	गौडीय श्राद्ध प्रकाश महानिबन्ध—पं० चतुर्थी लाल	८·००
११०	गौतम धर्मसूत्रम् परिशिष्टम् (द्वितीय प्रश्नम्)	१२·००
१११	गौतम धर्मसूत्र–हरदत्त प्रणीत मिताक्षरा व्याख्या सहितम्	४·५०
११२	गौरीशंकर गुटका–नेपालियों के लिये	३·००
११३	गृह निर्माण व्यवस्था—भाषा टीका	·६२
११४	ग्रहयोग तत्वम्—रघुनन्दन भट्टाचार्य	·८७
११५	ग्रह शान्ति –हिन्दी टीका सहित	१·२५
११६	ग्रह प्रयोग अर्थात् ग्रहशान्ति—मूल–पं० वायुनन्दन मिश्र कृत	२·५०
११७	ग्रह शान्ति अर्थात् ग्रह प्रयोग–भा० टी०—दौलतराम गौड	४·००
११८	चतुर्विंशतिमत संग्रह—भट्टोजी दीक्षित	५·००
११९	चतुर्वर्गचिन्तामणि—दान खण्ड १-२ भाग	१५·००
१२०	चतुर्वर्गचिन्तामणि—प्रायश्चित खण्ड	१२·००
१२१	चूड़ाकरण पद्धति, टिप्पणी परिशिष्ट–श्री विद्याधर शास्त्री	·२५
१२२	छन्दोगानां उपनयन पद्धतिः—संस्कृत टीका	१·७५
१२३	छन्दोगानां पार्वण पद्धतिः—संस्कृत टीका	·४०

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

१२४ छन्दोगानां विवाह पद्धतिः—इन्दुमती टीका १·७५

१२५ छन्दोगानां संक्षिप्ताह्निक ०·४०

१२६ छान्दोग्य स्मार्त प्रायश्चित्त संग्रह ·३७

१२७ जन्म दिन पूजा पद्धति ०·२५

१२८ जय सिंह कल्पद्रुम—मूलमात्र—रत्नाकर दीक्षित १२·००

१२९ जाति निर्णय—पं० शिवशंकर काव्यतीर्थ ४.००

१३० जाति भास्कर—पं० ज्वाला प्रसाद जी मिश्र ८.००

१३१ जाति विज्ञान का आधार (गेयर) हिन्दी अनुवाद ७.००

132 Juridical Studies in Ancient Indian Law
Vol. I—Sternback 50.00

133 Teachings of Dharmasastra—By J. R. Gharpure 10.00

१३४ टोडरानन्द (सर्ग सौख्य, अवतार सौख्य) प्रथम भाग १०.००

१३५ तिथ्यर्क–दिवाकर कृत २.००

१३६ तिथि चिन्तामणि ०.७५

१३७ तिथि निर्णय—भट्टोजी दीक्षित विरचितः नागो जी भट्ट विरचितश्च २.५०

१३८ तिथि विवेक—डा० जे० बी० चौधरी ३.००

139 Tirtha-Kalpa—Ed. D. R. Bhandarkar 3.75

१४० तीर्थ चिन्तामणि—वाचस्पति मिश्र ३.७५

१४१ तीर्थ तत्त्वम् .७५

१४२ तीर्थेन्दु शेखर– नागेश भट्ट १.५०

१४३ तुलसी पूजा पद्धति .१५

१४४ त्रिकाल संध्या (ऋग्वेदीय) .२५

१४५ त्रिकाल सन्ध्या (यजुर्वेदीय) .१९

१४६ त्रिकाल सन्ध्या (हिरण्यकेशीय तथा आपस्तम्बीय) .२०

१४७ त्रिपिण्डी श्राद्ध पद्धति (मूल)–पं० वायुनन्दन मिश्र १.००

१४८ त्रिशच्छ्लोकी–शंकर शास्त्री ४.५०

१४९ त्रिस्थली सेतु—भट्टोजि दीक्षित १.५०

१५० त्रिस्थली सेतु—नारायण भट्ट कृत ५.५०

151 Thoughts from Manu to Gandhi—Brown, Mackenzie 3.00

१५२ दत्तक मीमांसा—नन्द पण्डित कृत मंजरी व्याख्या ५.५०

१५३ दशपूर्ण मास प्रकाश—प्रथम भाग धूर्त स्वामी भाष्यवृत्ति, रुद्र दत्त
प्रणीत सूत्र दीपिका सहित १०·००

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

१५४	दशकर्म पद्धति–मूलमात्र	२.००
१५५	दशकर्म पद्धति—भाषा टीका	२.००
१५६	दशकर्म पद्धति–कर्म काण्ड प्रदीप–जनार्दन शास्त्री पाण्डेय प्रथम भाग	८.००
१५७	दान क्रिया कौमुदी—गोविन्दानन्द प्रणीत	२.२५
१५८	दानखण्डोक्त पुण्याहवाचन	.२५
१५९	दानचन्द्रिका—(मूल) पत्राकार	१.१०
१६०	दानदीपिका—भाषा टीका	.५०
१६१	दानमयूख—नीलकण्ठ भट्ट विरचित	२.५०
१६२	दान मयूख—मूल मात्र	२.००
१६३	दान सागर (वल्लाल सेन) ४ भाग, सम्पूर्ण	३०.००
१६४	दानोद्योत—आयेन्द्र शर्मा सम्पादिता	६.५०
१६५	द्विरागमन—इष्टशोधन दत्तक मुहूर्त व्यवस्था, भाषा टीका	.१३
१६६	दीक्षा तत्त्व मीमांसा–भाषा टीका—वेणीराम शर्मा	१.४८
१६७	दीक्षाप्रकाशिका–अष्टांग सिद्धि पंचांग और कुलाकुलादि चक्रादियों से युक्त	१.००
१६८	दुर्गापूजा पद्धति–गुटका	२.००
१६९	दुर्गापूजा—श्यामा पूजा पद्धतिः	.७५
१७०	द्वैत निर्णय सिद्धान्त संग्रह—भानुभट्ट मीमांसक	१.००
१७१	धनिष्ठा पञ्चक शांति—भाषा टीका	.३५
172	Dharma–Annie Besant	1.60
१७३	धर्म और समाज—स० राधाकृष्णन्	८.००
१७४	धर्म और समाज–डा० सुखलाल संघवी	३.००
१७५	धर्म और दर्शन–बलदेव उपाध्याय	४.००
१७६	धर्मका स्वरूप आधुनिक अमेरिका में—स्नेडर, हर्बर्ट डब्ल्यू	५.००
१७७	धर्म के नाम पर–कर्नल इंगरसोल	३.००
१७८	धर्मकल्पद्रुम–दयानन्दकृत २ से ५, ७, ८ भाग	१७.५०
१७९	धर्मकोष—(व्यवहार काण्ड) तीन खण्डो में, पं० लक्ष्मण शास्त्री कृत	८०.००
१८०	धर्मकोष–(संस्कार काण्ड)–प्रथम भाग	४५.००
१८१	धर्मतत्त्व निर्णय–वासुदेव शास्त्री	१.००
१८२	धर्मतत्त्व निर्णय परिशिष्टम्—वासुदेव शास्त्री	१.२५
१८३	धर्म-तुलनात्मक दृष्टि में–राधाकृष्णन्	५.००
१८४	धर्मदर्शन की रूपरेखा–हरेन्द्र प्रसाद सिन्हा	५.५०

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

१८५ धर्म प्रदीप–मूल २.००
१८६ धर्म विज्ञान–स्वामी दयानन्द कृत ३ भाग १३.००
१८७ धर्म शास्त्र का इतिहास–मूल लेखक पी० वी० काणे, अनुवादक–
अर्जुन चौबे काश्यप प्रथम खण्ड २१.००
द्वितीय खण्ड १३.००
१८८ धर्मशास्त्रीय व्यवस्था पत्रसंग्रह, सम्पादक–डा० सुभद्र झा १०.००
१८९ धर्मशास्त्रे व्याख्यान द्वयम्–श्री हरी राम शुक्ल १.१०
१९० धर्मसिन्धु–पं० मिहिर चन्द्र कृत हिन्दी टीका १२.००
१९१ धर्मसिन्धु–मूल (संस्कृत) ४.००
192 Dharma-Sutras (A study in their Origin and Development) By Sures Chandra Banerjee 37.00
१९३ धर्मानुबन्धि श्लोक चतुर्दशी–शेषकृष्ण विरचिता, १.००
१९४ धार्मिक विमर्श समुच्चय–नरहरि शास्त्री ३.५०
१९५ नवग्रह पद्धति (नवग्रह शांति; ध्यान, स्तोत्र तथा गणपति मंत्र सहित) .४५
१९६ नवग्रह विधान पद्धति–अनिष्ट ग्रहों के स्तोत्र पाठादि का संग्रह .६०
१९७ नवरात्र प्रदीप–(नन्द पण्डित) सम्पादक वैद्यनाथ शास्त्री २.००
१९८ नारद स्मृति (बंगला)––एन. सी. भट्टाचार्या ४.००
१९९ नारदीय-शिक्षा–संस्कृत टीका १.५०
२०० नारायण बलि प्रयोग–"विष्णु प्रिया" हिन्दी व्याख्या सहित .६०
२०१ नित्यकर्म पद्धति–भाषा टीका .३७
२०२ नित्यकर्म पद्धति–मूल .१२
२०३ नित्यकर्म प्रयोग .५५
२०४ नित्यकर्म प्रयोग माला–पं० चतुर्थीलाल जी २.००
२०५ नित्य नैमित्तिक कर्म समुच्चय (शुक्ल यजुर्वेदीय) ५.५०
२०६ नित्य हवन पद्धति (हिन्दी टीका)–सोहनलाल गोयल .३५
२०७ नित्याचार पद्धति—विद्याधर वाजपेयी प्रणीत ५.२५
२०८ नित्याचार प्रदीप–नृसिंह वाजपेयी प्रणीत १२.७५
209 Nityahnikam–English Translation 1.00
२१० निर्णयसिन्धु—(कमलाकर भट्ट)–नारायण आचार्य टिप्पणी सहित ९.००
२११ निर्णयसिन्धु—मूल ५.००
२१२ निर्णयसिन्धु–(कमलाकर भट्ट)—कृष्ण भट्ट संस्कृत व्याख्या सहित २२.००
२१३ नीति मयूख—नीलकंठ प्रणीत १.२५

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

२१४	नृसिंहप्रासाद–तीर्थसार–सम्पादक, पं० सूर्यनारायण शुक्ल	१.५०
२१५	नृसिंहप्रासाद–प्रायश्चित सार–दलपति राज	३.२५
२१६	नृसिंहप्रासाद–व्यवहार सार–दलपति राज	४.००
२१७	नृसिंहप्रासाद–श्राद्ध सार, सम्पादक विद्याधर मिश्र	२.००
२१८	नूतन वास्तु प्रबन्ध—भाषा टीका	.६२
२१९	पञ्चदान पद्धति—मूल मात्र–पं० वायुनन्दन मिश्र	.४०
२२०	पञ्चमङ्गलम्	.४०
२२१	पञ्चमहायज्ञ	.२०
२२२	पञ्चरत्न विवाह पद्धति—पं० फलाहारी शर्मा	२.००
२२३	पञ्चायतन देवताओं की पृथक्-पृथक् अष्टोत्तरशतनामावली	.३७
२२४	पद्य पंचाशिका—भाषा टीका	.७५
२२५	परिशिष्टोक्त पुण्याहवाचन–भाषा टीका	.२५
२२६	पञ्च देवता पूजन—भाषा टीका	.१९
२२७	पराशर स्मृति–भाषा टीका	१.२५
२२८	पश्वालंभ मीमांसा–वामन शास्त्री	१.००
२२९	पारमेश्वर संहिता–गोविन्दाचार्य	१५.००
२३०	पाराशर धर्म संहिता—सायण माधवाचार्य कृत टीका व्यवहार–काण्ड (दो भाग)	९.५०
२३१	पाराशर स्मृति–हिन्दी टीका सहित	१.००
२३२	पार्थिव पूजा–भाषा टीका	.१२
२३३	पार्वण श्राद्ध–मूल	.१२
२३४	पार्वण श्राद्ध–भाषा टीका पं० वायुनन्दन मिश्र	.३२
२३५	पार्वण श्राद्ध पद्धति–भाषा टीका	.३७
२३६	पितृकर्म निर्णय–त्रिलोक नाथ मिश्र	३.००
२३७	पुत्तल विधान पद्धति–भाषा टीका–पं० वायुनन्दन मिश्र	.४०
२३८	पुत्तल विधान पद्धति—मूल	.३०
२३९	पुराणोक्त विवाह पद्धति–मूल–पं० वायुनन्दन मिश्र	.४०
२४०	पुरुषार्थ चिन्तामणि—पूना	९.००
२४१	पुरुषार्थ चिन्तामणि—रामकृष्ण भट्ट सूनु विष्णुभट्ट कृत	५.००
२४२	पुरुषार्थ सुधानिधि—सायणाचार्य विरचित	१४.००
२४३	पूजा तत्त्व—म० म० पं० गोपीनाथ कविराज	४.००
२४४	पूजा भास्कर—गुटका	३.००

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

२४५ पूतना शांति—भाषा टीका .१२
२४६ पूतना शांति—भाषा टीका .२५
२४७ पूतना शांति—शिशु तोषिणी भाषा टीका सहित .२५
२४८ पौरोहित्य कर्मसार—भाग १–३ १.६५
२४९ प्रतिष्ठा महोदधि—वायुनन्दन मिश्र यन्त्रस्थ
२५० प्रतिसांवत्सरिक श्राद्ध प्रयोग .५०
२५१ प्रदोष पूजन पद्धति—मोहन शर्मा .२५
२५२ प्रदोष व्रतचन्द्रिका—विशुद्धानन्द परिव्राजक .७५
२५३ प्रमुख स्मृतियों का अध्ययन–डा० लक्ष्मी शंकर ठाकुर ६.५०
२५४ प्रयोग रत्न—नारायण भट्टी अन्त्येष्टि (ऋग्वेदीय) ३.५०
२५५ प्राचीन भारतीय लोक धर्म—अग्रवाल ४.००
२५६ प्रायश्चित्त कदम्ब–भाषा टीका १.००
२५७ प्रायश्चित्त प्रकाश–पं० चतुर्थी लाल शर्मा १.७५
२५८ प्रायश्चित्त प्रदीप—कृत्य प्रदीप–शुद्धि प्रदीप २.५०
२५९ प्रायश्चित्तेन्दु शेखर (कुण्डार्कश्च)–नागोजी भट्ट २.५०
२६० प्रेतमञ्जरी भाषा टीका १.७५
२६१ प्रेत मञ्जरी (हिन्दी टीका) १.००
२६२ प्रेत मञ्जरी–भाषा टीका—पं० वायुनन्दन मिश्र २.४८
263 Fictions in the Development of the Hindu Law Texts
C. Sankara Ram Sastri 4.00
२६४ बालभटी–बालभट प्रणीत २.२५
२६५ बीस स्मृतियाँ–भा०टी० खण्ड १, २—ले० श्रीराम शर्मा आचार्य १४.००
२६६ बौधायन धर्मसूत्रम्—गोविन्द कृत विवरण २०.००
२६७ ब्रह्म कर्म समुच्चय (हिरण्य केशीय) विषय ३८८ ६.००
२६८ ब्राह्मणोत्पत्ति मार्तण्ड, भाषा टीका १०.००
२६९ ब्राह्मण सर्वस्व २५.००
२७० भारत की तीर्थ यात्रा ६.४८
२७१ भारत के त्यौहार—सुरेशचन्द्र शर्मा ३.००
२७२ भारतीय धर्म व्यवस्था—वाचस्पति गैरोला ४.००
२७३ भारतीय विवाह पद्धति २.५०
२७४ भारतीय व्रतोत्सव ३.००

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

२७५ मदन महार्णव (कर्म विवाक के ऊपर) २६·००
२७६ मदनरत्न प्रदीप, व्यवहार काण्ड—मदन सिंह कृत १२·००
२७६क मध्यकालीन धर्म साधना—हजारो प्रसाद द्विवेदो ५·००
२७७ मनु की समाज व्यवस्था—सत्यमित्र दूबे ७·५०
२७८ मनुस्मृति-मेधा तिथि भाषा (बंगला) २४·५०
२७९ मनु संहिता—कुल्लूक भट्ट कृत व्याख्या, अंग्रेजी,
बंगला अनुवाद—एस. राय, अध्याय १, २, ७, १५·००
२८० मनुस्मृति (द्वितीयोध्यायः) संस्कृत-हिन्दी टीका सहित ·७५
२८१ मनुस्मृति "मणिप्रभा" हिन्दी टीका सहित १—४ अध्याय २·५०
२८२ मनुस्मृति "मणि प्रभा" हिन्दी टीका "विमर्श" सहित ५·००
२८३ मनुस्मृति—स्वामी दर्शनानन्द ५·००
२८४ मनुस्मृति—हिन्दी टीका सहित ६·००
२८५ मनुस्मृति—भाषा टीका ४.००
286 Manu Smriti (ch. 1-2) Text, Kulluka and English
Translation and Notes By-S. B. Yogi 6.00
287 Manusmriti, Notes-By M. M. Ganga Nath Jha
Part I (Textual) 15.00
Part II Explanatory 18.75
Part III Comparative 18.75
288 Manusmriti-The Laws of Manu with the Bhasya of
Medhatithi Translated into English by Ganga Nath Jha
Vol II to V 68.11
289 Manu Dharma Sastra-Kewal Motwani 15.00
२९० महालक्ष्मी पूजा पद्धति भाषा टीका १·२५
291 My Varnashrama Dharma-M. K. Gandhi 1.50
292 Minor Law Books—J. Jolly 20.00
२९३ मूलशान्ति पद्धति—पं० वायुनन्दन मिश्र ·६०
294 Modern Theories of Hindu Jurisprudence Vol. II
—K. Basu 5.00
२९५ यजुर्वेदीय सन्ध्या ·१९
२९६ यजुर्वेदीय कर्मप्रयोग (दर्शतर्पण सहित) १·२५
२९७ यजुःसन्ध्यावन्दनम् (सस्वर) ·४०

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

२९८	यज्ञतत्त्व प्रकाशः—चिन्नस्वामी	३·००
२९९	यज्ञोपवीत पद्धति, भाषा टीका—रामस्वरूप	१·५०
३००	यतिधर्म संग्रह—विश्वेश्वर सरस्वती कृत	२·७५
३०१	याज्ञवल्क्यस्मृति—सुबोधिनी, बालंभट्टी व मिताक्षरा	१७·००
३०२	याज्ञवल्क्यस्मृति—अपरार्का टीका सहित	१९·५०
३०३	याज्ञवल्क्यस्मृति—मिताक्षरा व्याख्या सहित	९·००
३०४	याज्ञवल्क्य स्मृति—मिताक्षरा संस्कृत टीका व डा. उमेशचन्द्र पाण्डेय कृत हिन्दी टीका सहित-आचाराध्याय	३·००
३०५	यात्रातत्त्वम्	२·००
306	Yajnavalkya-Samhita—Vyavaharadhyaya—S. Ray	11-50
३०७	राजधर्म कौस्तुभ—(अनन्त देव) अंग्रेजी भूमिका	२०·००
308	Raja Dharma —K. V. Ranga Swami	5-00
३०९	रामनवमी व्रत पूजापद्धति, जानकी नवमी व्रत पूजा सहित	·४०
३१०	रामविवाह पद्धति, मूल—पं० वायुनन्दन मिश्र	·२४
३११	रामार्चा पद्धति (भाषा टीका)—पं० मातृप्रसाद पाण्डेय	·४८
३१२	रुद्रयोगपद्धति, मूल—पं० वायुनन्दन मिश्र	४·००
३१३	लक्ष्मीपूजन प्रयोग	१·००
314	Laws of Manu–G. Buhler	20.00
315.	List of Tirthas	3.00
३१६	लघुपूजानुष्ठान पद्धति	·५६
३१७	वर्णव्यवस्था का संक्षिप्त इतिहास—सीताराम शर्मा	१·५०
३१८	वर्षकृत्य—सम्पादक पं० रामचन्द्र झा, २ भाग	११·००
३१९	वार्षिक रत्नावली, (नेपाली)	६·००
३२०	वर्षक्रिया कौमुदी—गोविन्दानन्द	५·२५
३२१	वर्षकृत्य दीपक, म. म. पं० नित्यानन्द पन्त पर्वतीय	१०·००
३२२	वसन्तोत्सव निर्णय—सूर्यनारायण शुक्ल	·१५
३२३	वासिष्ट धर्मशास्त्र, सटिप्पण	१·००
३२४	वासिष्ठी हवन पद्धति, भाषा टीका, (मथुरा)	१·२५
३२५	वासिष्ठी हवन पद्धति, भा. टी. विश्वनाथ शास्त्री	·७५
३२६	वासिष्ठी हवन पद्धति, भाषा टीका—पं० वायुनन्दन मिश्र	·९६
३२७	वासिष्ठी हवन पद्धति, हिन्दी टीका सहित	·५०
३२८	वासिष्ठी हवन पद्धति, भाषा टीका	·७५

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

३२९	वास्तु पूजापद्धति—गृह प्रवेश पद्धति सहित	.७५
३३०	वास्तुप्रतिष्ठा संग्रह—पं० रामचन्द्र कृत	२·५०
३३१	वास्तु शान्ति प्रयोग, मूल—पं० वायुनन्दन मिश्र	·८८
३३२	विज्ञप्ति रत्नावली, अन्वयार्थ सहित	१·००
३३३	विधान पारिजात—अनन्त भट्ट	१५·००
३३४	विधानमाला—नृसिंह भट्ट शङ्कर कृत	६·२५
३३५	विवाद चिन्तामणि—मूल	२·५०
336.	Vivada Chintamani-English Translation—G. gha	16.00
३३७	विवाद रत्नाकर—चण्डेश्वर कृत	६·००
३३८	विवाहसोपाङ्ग विधि, भाषा टीका	३ ००
३३९	विवाह पद्धति, भाषा टीका—पं० वायुनन्दन मिश्र	१·००
३४०	विवाह पद्धति—पं० काशीनाथ	१·००
३४१	विवाह पद्धति, भाषा टीका (बड़ी)	१·००
३४२	विवाह पद्धति हिन्दी टीका—स्व० पं० चतुर्थीलाल	१·१०
३४३	विवाह पद्धति—आर्य समाज	·७०
३४४	विवाह पद्धति, भाषा टीका—भैयाराम कृत	२·००
३४५	विश्वकर्मा पूजा, भाषा टीका—शिवदत्त मिश्र शास्त्री	·४०
३४६	विष्णुयोग पद्धति मूल—पं० वायुनन्दन मिश्र	३·६८
३४७	विष्णु स्मृति, सम्पादक—जे० जोली	१०·००
३४८	विष्णु स्मृति—व्याख्या, केशव वैजयन्ती, नन्द पण्डित २ भाग	४०·००
३४९	वीर मित्रोदयः—मित्र मिश्र (परिभाषा प्रकाश, संस्कार प्रकाशश्च)	३०·००
३५०	,, (आह्निक प्रकाश)	१५·००
३५१	,, (पूजा प्रकाश)	१०.००
३५२	,, (लक्षण प्रकाश)	१७·५०
३५३	,, (राजनीति प्रकाश)	१२.५०
३५४	,, (तीर्थ प्रकाश)	१५·००
३५५	,, (व्यवहार प्रकाश)	१५·००
३५६	,, (श्राद्ध प्रकाश)	१०·००
३५७	,, (समय प्रकाश)	७·५०
३५८	,, (भक्ति प्रकाश)	५·००
३५९	,, (शुद्धि प्रकाश)	७·५०
३६०	,, १–१२ प्रकाश (सम्पूर्ण)	१४५·००

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

३६१ वृहद्गोदान पद्धति—तुलादान, शय्यादान सहित ·३७
३६२ वेदोक्त गृह्यवास्तु पद्धति—मूल खुलापत्रा १.००
३६३ वैवाह पद्यावली, हिन्दी टीका सहित १·५०
३६४ वैश्य सन्ध्या प्रयोग, भाषा टीका ·२०
३६५ व्यवहार निर्णय—वरदराज प्रणोत, के. वी. रंग स्वामो संपादिता ३०·००
३६६ व्यवहार भानु ·२०
३६७ व्यवहार मयूख १·५०
368 Vyavahara Mayukha–English Translation–P. V. Kane 10.00
३६९ व्यवहार माला १·५०
३७० व्यवहार विज्ञानम्, "सुधा" हिन्दी व्याख्या, दो भाग १·३०
३७१ व्रतकोष—होशिङ्ग जगन्नाथ शास्त्रिणा सङ्कलितः ४·००
३७२ व्रतराज—विश्वनाथ शर्मा विरचित भाषा टीका १६·००
३७३ व्रतार्क, भाषा टीका ८·००
३७४ व्रतोद्यापन प्रकाश—पं० चतुर्थीलालजी कृत ३·७५
३७५ व्रात्यता प्रायश्चित्त निर्णयः (महान् लघुश्च)—नागेश भट्ट विरचित २·५०
३७६ शवसूतकाशौच प्रकरणम् ५·६२
३७७ शाखोच्चार समूह ·२०
३७८ शान्तिप्रकाश—पं० चतुर्थी लाल जी ६·५०
३७९ शास्त्रतत्त्वनिर्णय ५·००
३८० शिखासूत्र ०.७५
३८१ शिलान्यासपद्धति—विद्याधर जी गौड़ ·२५
३८२ शिलान्यासपद्धति—देहलो न्यास पद्धति—पं० वायुनन्दन मिश्र ·६०
३८३ शिवार्चनपद्धति १·००
३८४ शुक्लयजुर्वेद सन्ध्योपासना पद्धति, भाषा टीका अनन्त राम डोगरा ·१५
३८५ शुक्लयजुःशाखोय कर्मकाण्डप्रदीप ८·००
३८६ शुद्धिकौमुदी—गोविन्दानन्द प्रणीत ३·७५
३८७ शुद्धिप्रदीपः प्रायश्चित प्रदीपः कृत्यप्रदीपश्च—कृष्ण मित्र २·५०
३८८ शुद्धिमयूखः—मूल १·००
३८९ शूद्रदशगात्र—एकादशाह वृषोत्सर्ग—मूल ·४०
३९० शूद्रपार्वण एकोद्दिष्ट श्राद्ध पद्धति—पं० वायुनन्दन मिश्र ·२०
३९१ शूद्राचार शिरोमणि—सम्पादक पं० नारायण शास्त्री खिस्ते (दो भाग) ३·००
३९२ श्राद्ध कल्पलता—नन्द पण्डित ६·००

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

३९३	श्राद्ध क्रिया कौमुदी–गोविन्दानन्द प्रणीत	५·२५
३९४	श्राद्ध चन्द्रिका—भरद्वाज दिवाकर भट्ट	४·००
३९५	श्राद्ध निर्णय—पं० शिवशंकर	३·५०
३९६	श्राद्ध पद्धति "इन्दुमती" मैथिली टीका·टीकाकार-वाचस्पति मिश्र	२·५०
३९७	श्राद्ध पारिजात—रुद्रदत्तपाठक	३·७५
३९८	श्राद्ध प्रयोग दीपिका—सम्पादक गोपाल शास्त्री	१·२५
३९९	श्राद्ध मंजरी—पं० बापूभट्ट विरचिता	३·००
४००	श्राद्ध मयूख—मूल	१·५०
४०१	श्राद्ध विज्ञान	·७५
४०२	श्राद्धविवेक—रुद्रधर झा	२.५०
४०४	श्राद्ध वितंक अर्थात् श्राद्ध संग्रह अथवा श्राद्ध पद्धति भाषा टीका	५·००
४०५	श्राद्ध विश्राम—सम्पादक रुद्र प्रसाद अवस्थी	२·५०
४०६	श्रावणी उपाकर्मपद्धति प्रयोग (यजुर्वेदीय) मूल	२·००
४०७	श्रुति सार समुद्धरणम्—सच्चिदानन्द योगीन्द्र कृत "तत्त्वदीपिका" व्याख्यायुतम्	१·२५
४०८	षडशीतिः – पं० "शुद्धि चन्द्रिका" व्याख्यायुता	४·००
४०९	षोडश संस्कार विधि —भाषा टीका (सनातन धर्मी)	४·००
४१०	सकामशिवपूजन विधान—हिन्दी टीका सहित	·६०
४११	सत्यार्थप्रकाश—स्वामी दयानन्द सरस्वती	२·००
४१२	सत्यार्थप्रकाश (अजिल्द)	४·००
४१३	सत्यार्थप्रकाश (सजिल्द बढ़िया)	६·००
४१४	सनातन धर्म शिक्षा–रामस्वरूप शर्मा	०·१५
४१५	सनातनधर्मोद्धार–४ भाग	२०·००
४१६	सन्ध्याभाष्य समुच्चयः–षड्भाष्य सहितः	३·००
४१७	सन्ध्याविधि (यजुर्वेदीय) हिन्दी टीका सहित	·३७
४१८	सन्ध्यावन्दनम् (कृष्णयजुर्वेदीय) सभाष्यम्	·८०
४१९	सन्ध्योपासनाविधि—मन्त्रानुवाद सहित	·८०
४२०	सन्ध्योपासनविधि–अर्थ सहित	·०८
४२१	संन्यासग्रहण पद्धति—शिवदत्त मिश्र शास्त्री	·४०
४२२	संन्यासग्रहण पद्धति–भाषा टीका	१·५०
४२३	सब धर्मो की बुनियादी एकता—डा० भगवान दास	१२·००
४२४	समय मयूख—मूल	२·००

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

४२५	सम्बन्ध निर्णय—गोपाल पंचानन	१·२५
४२६	सरयूपारीण ब्राह्मण वंशावली—वेणी माधव शास्त्री	१·८०
४२७	सरयूपारीण ब्राह्मण वंशावली--कृष्ण विहारी पाण्डेय	१·२५
४२८	सरस्वती पूजा पद्धति–मूर्तिपूजा विधान सहित	·२५
४२९	सर्वदेव पूजा भाषा टीका	·१९
४३०	सर्वदेव प्रतिष्ठा प्रकाश (मूल)-पं० चतुर्थी लाल	४·५०
४३१	सर्वदेव सामान्य पूजा	·५०
४३२	संच्छिप्त दीक्षापद्धति–तुलादान पद्धति सहित	०·१९
४३३	सर्व पूजा	.३१
४३४	संक्षिप्त दीक्षा पद्धति तुलादान पद्धतिश्च	.२०
४३५	संक्षिप्त मनुस्मृति—देवदत्त शास्त्री	३.५०
४३६	संस्कारगणपति–रामकृष्ण प्रणीत	१५.००
४३७	संस्कार दीपक—म० म० पं० श्री नित्यानन्द पर्वतीय विरचित १–३ भाग	१८.००
४३८	संस्कार दीपक—हर्षनाथ झा विरचित	७.००
४३९	संस्कार पद्धति–पूना	३.७५
४४०	संस्कार पद्धतिः	४.00, ५.००
४४१	संस्कार मयूखः—मूल	१.५०
४४२	संस्कार रत्नमाला–गोपीनाथभट्ट कृत खण्ड १–२	३.०८
४४३	संस्कार रत्नमाला, २ भाग, पूना	१८.५०
४४४	संस्कार विधि—महर्षि दयानन्द जी कृत	१.१२, १.२५
४४५	सापिण्ड्यकल्प लतिका—श्रापोदेवेन विरचिता नारायणदेव कृत टीका सहित	१.२५
४४६	सामवेद श्राद्ध प्रयोगः दर्शतर्पण सहित	१.२५
४४७	सामवेद सन्ध्यावन्दनम्	.४०
४४८	सामवेदीय आह्निकम् उपाकर्म पद्धति (श्रावणी) सहितम्—	१.७५
५४९	सामवेदीय सुबोधिनी पद्धति—शिवराम	७.५०
४५०	सामवेदोपाकर्म प्रयोगः	१.४०
451	Similes in Manusmriti–By Dr. M. D. Paradkar	6.00
452	Studies in Some Aspects of Hindu Samskaras in Ancient India–By Heramba Chatterjee	12.00
४५३	स्मार्तप्रभु–प्रथम भाग, म० म० पं० विद्याधर शर्मा गौड़	१.२५

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

३९३ श्राद्ध क्रिया कौमुदी—गोविन्दानन्द प्रणोत ५·२५
३९४ श्राद्ध चन्द्रिका—भरद्वाज दिवाकर भट्ट ४·००
३९५ श्राद्ध निर्णय—पं० शिवशंकर ३·५०
३९६ श्राद्ध पद्धति "इन्दुमती" मैथिली टीका·टीकाकार-वाचस्पति मिश्र २·५०
३९७ श्राद्ध पारिजात—रुद्रदत्तपाठक ३·७५
३९८ श्राद्ध प्रयोग दीपिका—सम्पादक गोपाल शास्त्री १·२५
३९९ श्राद्ध मंजरी—पं० बापूभट्ट विरचिता ३·००
४०० श्राद्ध मयूख—मूल १·५०
४०१ श्राद्ध विज्ञान ·७५
४०२ श्राद्धविवेक—रुद्रधर झा २.५०
४०४ श्राद्ध विवेक अर्थात् श्राद्ध संग्रह अथवा श्राद्ध पद्धति भाषा टीका ५·००
४०५ श्राद्ध विश्राम—सम्पादक रुद्र प्रसाद अवस्थी २·५०
४०६ श्रावणी उपाकर्मपद्धति प्रयोग (यजुर्वेदीय) मूल २·००
४०७ श्रुति सार समुद्धरणम्—सच्चिदानन्द योगीन्द्र कृत "तत्त्वदीपिका" व्याख्यायुतम् १·२५
४०८ षडशीतिः – पं० "शुद्धि चन्द्रिका" व्याख्यायुता ४·००
४०९ षोडश संस्कार विधि —भाषा टीका (सनातन धर्मी) ४·००
४१० सकामशिवपूजन विधान—हिन्दी टीका सहित ·६०
४११ सत्यार्थप्रकाश—स्वामी दयानन्द सरस्वती २·००
४१२ सत्यार्थप्रकाश (अजिल्द) ४·००
४१३ सत्यार्थप्रकाश (सजिल्द बढ़िया) ६·००
४१४ सनातन धर्म शिक्षा—रामस्वरूप शर्मा ०·१५
४१५ सनातनधर्मोद्धार—४ भाग २०·००
४१६ सन्ध्याभाष्य समुच्चयः—षड्भाष्य सहितः ३·००
४१७ सन्ध्याविधि (यजुर्वेदीय) हिन्दी टीका सहित ·३७
४१८ सन्ध्यावन्दनम् (कृष्णयजुर्वेदीय) सभाष्यम् ·८०
४१९ सन्ध्योपासनाविधि—मन्त्रानुवाद सहित ·८०
४२० सन्ध्योपासनविधि—अर्थ सहित ·०८
४२१ संन्यासग्रहण पद्धति—शिवदत्त मिश्र शास्त्री ·४०
४२२ संन्यासग्रहण पद्धति—भाषा टीका १·५०
४२३ सब धर्मों की बुनियादी एकता—डा० भगवान दास १२·००
४२४ समय मयूख—मूल २·००

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

४२५	सम्बन्ध निर्णय—गोपाल पंचानन	१·२५
४२६	सरयूपारीण ब्राह्मण वंशावली—वेणी माधव शास्त्री	१·८०
४२७	सरयूपारीण ब्राह्मण वंशावली---कृष्ण विहारी पाण्डेय	१·२५
४२८	सरस्वती पूजा पद्धति–मूर्तिपूजा विधान सहित	·२५
४२९	सर्वदेव पूजा भाषा टीका	·१९
४३०	सर्वदेव प्रतिष्ठा प्रकाश (मूल)-पं० चतुर्थी लाल	४·५०
४३१	सर्वदेव सामान्य पूजा	·५०
४३२	संक्षिप्त दीक्षापद्धति–तुलादान पद्धति सहित	०·१९
४३३	सर्व पूजा	.३१
४३४	संक्षिप्त दीक्षा पद्धति तुलादान पद्धतिश्च	.२०
४३५	संक्षिप्त मनुस्मृति—देवदत्त शास्त्री	३.५०
४३६	संस्कारगणपति–रामकृष्ण प्रणीत	१५.००
४३७	संस्कार दीपक—म० म० पं० श्री नित्यानन्द पर्वतीय विरचित १–३ भाग	१८.००
४३८	संस्कार दीपक—हर्षनाथ झा विरचित	७.००
४३९	संस्कार पद्धति–पूना	३.७५
४४०	संस्कार पद्धतिः	४.००, ५.००
४४१	संस्कार मयूखः—मूल	१.५०
४४२	संस्कार रत्नमाला–गोपीनाथभट्ट कृत खण्ड १–२	३.०८
४४३	संस्कार रत्नमाला, २ भाग, पूना	१८.५०
४४४	संस्कार विधि—महर्षि दयानन्द जी कृत	१.१२, १.२५
४४५	सापिण्ड्यकल्प लतिका—आपोदेवेन विरचिता नारायणदेव कृत टीका सहित	१.२५
४४६	सामवेद श्राद्ध प्रयोगः दर्शतर्पण सहित	१.२५
४४७	सामवेद सन्ध्यावन्दनम्	.४०
४४८	सामवेदीय आह्निकम् उपाकर्म पद्धति (श्रावणी) सहितम्—	१.७५
५४९	सामवेदीय सुबोधिनी पद्धति—शिवराम	७.५०
४५०	सामवेदोपाकर्म प्रयोगः	१.४०
451	Similes in Manusmriti–By Dr. M. D. Paradkar	6.00
452	Studies in Some Aspects of Hindu Samskaras in Ancient India–By Heramba Chatterjee	12.00
४५३	स्मार्तप्रभु–प्रथम भाग, म० म० पं० विद्याधर शर्मा गौड़	१.२५

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

४५४ स्मार्तोल्लास—शिवप्रसाद विरचित, ३ भाग ५.१२
455 Sacred Laws of the Aryas-2 Vols. Buhler 40.00
456 Studies in Dharmashastra-Bhattacharya 8.00
457 Sudras in Manu-C. Tiwari 10.00
४५८ स्मृति चन्द्रिका—देवणभट्ट प्रणीत ६ भाग में (आशौच, श्राद्ध, संस्कार, आह्निक तथा व्यवहार काण्ड) १३.७५
४५९ स्मृतिप्रकाश—वासुदेव प्रणीत ० ७५
४६० स्मृतिसारोद्धार-श्री विश्वम्भर त्रिपाठी सङ्कलित: १०.००
४६१ स्मृतीनां समुच्चयः (२७ स्मृतियों का संग्रह) ७.५०
४६२ स्मृत्यर्थसार—श्रीधराचार्य प्रणीत २.५०
४६३ स्वस्त्ययन कलश पूजा .१२
४६४ हवनमंत्र, बड़ा (आर्य समाज) .०६
465 Hindu Judicial System-by Varadachari 10.00
४६६ हिन्दू देव परिवार का विकास—डा० सम्पूर्णानन्द ६.५०
467 Hindu Dharma-M. K. Gandhi 4.00
४६८ हिन्दू धर्म और आचार—अम्बिका दत्त उपाध्याय ३.७५
४६९ हिन्दू धर्म की समीक्षा—लक्ष्मण शास्त्री जोशी २.००
४७० हिन्दू धार्मिक कथाओं के भौतिक अर्थ–त्रिवेणी प्रसाद सिंह ३.००
४७१ हिन्दू धर्म–एनीबेसेन्ट ३.००
472 Hindu Law in its Sources-Dr. Ganga Natha Jha 1.75
473 Hindu Law of Evidence-Amareswar Thakur 5.00
474 Hindu Law-Past and Present-Dr. J. D. M. Derrett 12.00
475 Hindu Woman's Right to Property-Past And Present R. L. Chowdhury 10.00
४७६ हिन्दू विवाह में कन्यादान का स्थान—सम्पूर्णानन्द १.००
४७७ हिन्दू संस्कार (सामाजिक तथा धार्मिक अध्ययन)– डा० राजबली पाण्डेय १६.००
478 History of Dharmasastra Vol III, IV & V Part I & II by MM. P. V Kane 145.00
४७९ हेमाद्रि–दानखण्ड, २ भाग १५.००
४८० होम पद्धति–गणपति पूजा सहित .१३

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

वेदान्त

Spinoza in The Light of The Vedanta

By

Dr. R. K. Tripathi, Demy Octavo : Cloth bound : Price Rs. 12.00

The present volume is a study of Spinoza from a predominantly Indian, Vedanta, point of view. Dr. Tripathi does indeed correct at many places, the errors and shortcomings in previous interpretations of Spinozistic doctrines and succeeds in presenting a more consistent and pleasing picture.

Vaisnavism of Sankaradeva And Ramanuja

A comparative study

By DR. H. V. SREENIVASA MURTHY (in the press)

The Vedanta Sutras

With the commentary of Sankaracarya, *English translation by* GEORGE THIBAUT *Demy Octavo* : 2 *Vols.PP.* 1184 *Rexin bound & Gold embossed. Rs.* 40.00 *Paper bound 2 pt. Rs.* 24-00

Vedanta Sutras is the second great division of the Mimamsa School and represents the religion of Hindu Philosophy, or perhaps, the religion of Philosophers. From age to age the Vedanta has maintained its stronghold over noble Hindu intellects. The oldest work on this subject is attributed to Badarayana or Vyasa in Sutra style. These Sutras hold the central position. summarising, on the one hand, a series of early literary essays extending to the remotest times, and forming, on the other hand, the head-spring of the ever broadening activity of the commentators. They are highly condensed and scarcely a Sutra is intelligible without a commentary,

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

as at times, even the subject along with its predicate is missing and thus rendering them absolutely vague and obscure.

The Commentary here selected for translation, together with Badarayana Sutra, is the one composed by the celebrated theologian Acharya Sankara for the simple reasons that Sankara Acharya represents the orthodox side of Brahmanical Theology, is the oldest of the extant commentators, and is the authority most generally deferred to in India as to the right understanding of the Vedanta Sutras. Mr. Thibaut has submitted the interpretations given of the Vedanta Sutras and the Upanishads, by Sankara and his school, to a critical investigation as other interpretations too, more or less differing, also exist and most important of them is Sri Bhashya by Ramanuja, for comparison of interpretations with those given by Sankara.

On account of importance of the Sankara Bhashya as the fundamental work of the most influential Hindu School of Philosophy, a number of topics had been discussed and the translater has ascertained as to how far the teaching of Sankara agrees with that of Badarayana, and further, how far either of these represents the true doctrine of the Upanishads. A comparison has been made of Sankara's system with the teachings of Upanishads and by the comparison of the purport of the Sutras,-independently of the comment aries—with the interpretations given of them by Sankara. It has also been considered as to the unbroken uniformity of Vedantic tradition by enquiring whether or not the Sutras themselves, and the Sankara Bhashya, furnish any indication whether there existed already at early times essentially different Vedantic systems on lines of Vedantic speculation. He has also compared the interpretations given by the two Bhashyakaras of those Sutras, which more than other, touch on the essential points of the Vedanta System, with a succint but full review of the topic discussed in the Adhikaranas of the Vedanta Sutras, according to Sankara, a review which—apart from the side-glances of Ramanuja's comments—will be useful as a guide through the Sutras and the Sankara Bhashya.

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

The Vedanta Sutras

With the commentary of Ramanuja Acharya. *English translation by* GEORGE THIBAUT, *Demy Octavo* : *Pages* 812 : *Rexin bound* : *Gold embossed*, **Rs. 20.00**

Mimamsa attributes implicit authority to Vedic writings and refer to them as absolute Revelation. The Uttara-Mimamsa or the investigation of the latter part of the Vedas' i. e. Aranyakas and Upanishads, is of more universal interest and is known as Vedanta. At the head of this extensive literature, stand collections of Sutras of Badarayana or Vyasa, known for their conciseness and obscurity and that is clearly the reason to which the whole species of literary composition owes its existence. The Vedanta Sutras combine the two tasks of concisely stating the teaching of the Vedas, and of argumentatively establishing the special interpretation of the same. Ramanujia or, as it is often called, the Sribhashya appears to be the oldest commentary extant next to Sankara and reveal the struggle of the Vaishnava Hindu mind to reach the comprehehension of one Supreme Being to discover the means of putting a stop to further transmigration.

The present volume is an English translation of Sribhashya and treats of the nature of God and the soul as taught in the Aranyakas and Upanishads. The intrinsic value of the Sribhashya is, a very high one; it strikes one throughout as a very solid performance due to a writer of extensive learning and great power of argumentation, and in its polemic parts directed chiefly against the school of Sankara, it not infrequently deserves to be called brilliant even. And in addition to all this it shows evident traces of being not the mere outcome of Ramanuja's individual views but of resting on an old and weighty tradition. The special interpretation of the Vedanta-Sutras with which the Sribhashya makes us acquainted is not due to innovating views on the part of Ramanuja, but had authoritative representatives already at a period anterior to Sankara.

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

An Introduction to Sankara's Theory of Knowledge

by

DR. N. K. DEVARAJA, M. A., D. PHIL., D. LITT.

Demy Octav : *PP.* 244 : *Cloth bound & Jacketed* *Rs.* 12.00

Physiologically the West may be credited with the secrets of life more, but it is an undisputable fact that the East has made a probe into consciousness, unknown to the philosophy of any other country in the world. In this volume the learned author introduces in a rigorously Objective, Critical and Comprehensive way, Sankara's Theory of Knowledge, and of Metaphysical Doctrines mainly from the Acaryas' own writings. The Vedanta of San.-kara, 'The Seer Sees the Self in the Seen' is characterised by spiritual seriousness and empirical temper unlike doctrinal details and dialectical controversies of the later period. The relationship, positive or negative, of the Doctrinal Teachings of Sankara with Sunyavada, has been clearly elaborated. It brings together in a connected and coherent form a large number of Sankara's significant philosophical utterances and in doing so a spirit of earnestness, boldness and thoroughness comparably unequalled in any other philosophic tradition, has been displayed.

After the Introductory phase, the author discusses the Method of Sankara, The Metaphysics of Liberation, Sankara's Analysis of Knowledge, The Criterion as The Law of Contradiction. The criterion and its Application, Sankara's treatment of Appearances and the Final criticism estimating Sankara's Treatment of the Phenomenal World. The Vitality of the Ideal of Moksha along with the meaning of Self-Realization, Brahmajnana. has also been treated equally well and a Critical Estimate of Theological Conception and Empirical Knowledge and World-Process, have been vehemently taken into account with an Index in the end. The work will be found particularly useful to the students making a special study of the Acarya's Philosophy and to the general reader interested in philosophy and culture of the Indian People.

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain, Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

The Integral Advaitism of Sri Aurobindo

By

DR. R. S. MISRA, M. A., Ph. D.

Demyo Octav Pages 425, Price Rs 14.00

Opinion may conceivably differ with regard to the exact place of Sri Aurobindo in world thought. There can be no doubt regarding the extent and value of his contribution. Equally great as Poet, Philosopher and Saint, Sri Aurobindo has reinterpreted and recreated Indian religious thought to an extent seldom excelled before. Dr. R. S. Misra gives in this volume a systematic exposition of the many facts of Sri Aurobindo's philosophy and religion. He has spared no effort to make the exposition as authentic and thorough as possible. Useful comparisns have been drawn between Sri Aurobindo's thought and that of Western and Indian systems.

ब्रह्मसूत्र शांकर भाष्यम्

परमहंस परिव्राजकाचार्य श्री सत्यानन्दसरस्वती कृत
भाषानुवाद तथा सत्यानन्दी दीपिका सहित

भगवत्पाद शंकराचार्य जी के प्रसन्न गम्भोर शारीरकभाष्य पर प. प. श्री स्वामी सत्यानन्द सरस्वती जी कृत हिन्दी अनुवाद प्रस्तुत है : भाष्य का प्राञ्जल और सुबोध भाषा में प्रत्यक्षर अनुवाद के साथ दुरुह स्थलों में स्पष्टीकरण के लिये स्वामी जी ने सत्यानन्द दीपिका नाम से स्वतंत्र व्याख्या भी की है, जिसमें विस्तार पूर्वक कठिन स्थलों का सुन्दर विवेचन किया है। इस दीपिका में पञ्चपादिका, भामिनी ,कल्पतरु, परिमल, न्यायनिर्णय आदि विविध ग्रंथों का सार यथास्थान संगृहीत किया है। टीका और अनुवाद दोनों इतने सरल और सुबोध भाषा में लिखे गये हैं कि सामान्य शिक्षित व्यक्ति भी अनायास इन्हें हृदयंगम करके ब्रह्मात्मैक्य ज्ञान का लाभ अर्जित कर सकता है। आज के छात्र संस्कृत टीकाओं की अपेक्षा भाषानुवाद द्वारा संस्कृत ग्रन्थों के अवगमन में विशेष रुचि रखते हैं। उनके लिये तो यह एक निधि ही है। विद्वानों के

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

लिए भी अनेक ग्रन्थों की सामग्री एकत्र सुलभ हो गई है। इस प्रकार यह ग्रन्थ साधारण वेदान्तरसिक जनता, विद्यार्थिवर्ग एवं विद्वद्वृन्द का समान रूप से उपकारक हो गया है।

इस प्रकार सर्वोपयोगी अत्यन्त सुन्दर छपाई, पक्की कपड़े की जिल्द सहित रायल साइज के ६०० पृष्ठों के इस ग्रन्थ का मूल्य केवल १६ रुपये .

शांकर ग्रन्थावली

[ईशादि दशोपनिषद्, भगवद्गीता तथा ब्रह्मसूत्र पर शांकर भाष्यों का संग्रह पृथक्-पृथक् तीन भागों में]

भारतीय दर्शन साहित्य में प्रस्थानत्रयी का अत्यन्त महत्त्व है, जिसमें ईश, केन, कठ, प्रश्न, मुंडक, माण्डूक्य, ऐतरेय, तैत्तिरीय, छान्दोग्य और बृहदारण्यक इन १० उपनिषदों का एक प्रस्थान, श्री मद्भगवद्गीता का द्वितीत और ब्रह्मसूत्र का तृतीय प्रस्थान माना जाता है। इन ग्रन्थों का रहस्य सम्यक्तया समझने के लिये भगवान् शंकराचार्य का भाष्य ही सर्वोपयोगी है। तीनों प्रस्थानों पर शांकरभाष्य का एकत्र संग्रह नहीं था, पृथक् पृथक् भी जो भाष्य उपलब्ध थे प्रचुर व्ययसाध्य होने से साधारण व्यक्ति उनका उपयोग नहीं कर पाते थे, इसलिये हमने भारत सरकार की सहायता से अत्यन्त स्वल्पमूल्य में तीन भागों में इस समग्र साहित्य को उपलब्ध कर दिया है। वेदान्त दर्शन एवं प्रस्थानत्रयी का स्वाध्याय करने वालों तथा अनुसंधाताओं के लिये यह अत्यन्त ही उपयोगी संस्करण है जो हाथों हाथ निकल रहा है। ६०० पृष्ठों में उपनिषद् भाष्य, ४५० पृष्ठों में ब्रह्मसूत्र भाष्य, तथा ३२५ पृष्ठों में भगवद्गीता भाष्य, इस प्रकार अत्यन्त शुद्ध एवं स्वच्छ छपाई के साथ १६७५ पृष्ठों के तीनों भागों का मूल्य केवल ११·७५ रु०। प्रत्येक भाग पृथक भी प्राप्य है। मूल्य उपनिषद् भाष्य, गीता भाष्य, ब्रह्मसूत्रभाष्य, ८.२५, २.२५, ३.५०।

शीघ्रता करें, संस्करण शीघ्र ही समाप्त हो रहा है

भक्तिरस की विमलमन्दाकिनी का अनुपम प्रवाह

श्रीकृष्ण चरित

भक्तिभावपूर्ण रचनाओं के रसिक और मासिक 'कल्याण' के पाठक श्रीसुदर्शन की चमत्कारपूर्ण लेखनी से पूर्ण परिचित हैं और उनकी रचनायें बड़े आदर के साथ पढ़ते हैं। वृन्दावनविहारी आनन्दकन्द भगवान् श्रीकृष्णचन्द्र के इस चरित में 'सुदर्शन' जी ने

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

उनकी ललित लीलाओं का ऐसी मनोहर रसभरी और प्रवाहपूर्ण भाषा में वर्णन किया है कि पाठक आनन्दविह्वल होकर अपने चारों ओर नवजलधर श्याम की मोरमुकुट वाली बाँकी छबि देखने लगता है और भाव विभोर हो जाता है। (पूर्वार्द्ध प्रकाशित हुआ है) मूल्य १०.००

सर्वतंत्रस्वतंत्र श्री मधुसूदन सरस्वती प्रणीत

भगवद्भक्ति रसायन

हिन्दी में विस्तृत व्याख्या और विवेचना सहित

व्याख्याकार—साहित्याचार्य पं० जनार्दन शास्त्री पाण्डेय, एम० ए०

संस्कृत साहित्य में आचार्य मधुसूदन सरस्वती का नाम मूर्द्धन्यों में लिया जाता है। उनकी जिन रचनाओं ने इस वाङ्मय के भण्डार को पूर्ण किया है उनमें भक्तिरसायन अपने ढंग का विलक्षण ग्रन्थ है। इसके प्रथम उल्लास की टीका स्वयं ग्रंथकार ने की है जो मूल से भी अधिक महत्त्वपूर्ण हैं। परीक्षाओं में तो यह ग्रन्थ पढ़ाया ही जाता है सामान्य पाठकों के लिये भी इसका उतना ही महत्त्व है। ऐसे अनुपम ग्रन्थ का हिन्दी अनुवाद न होने से इसे समझने में कठिनता हो रही थी, अब उक्त व्याख्या से यह समस्या हल हो गई है। मूल तथा भाष्य का हिन्दी अनुवाद एवं विशेष विवृति सहित मूल्य ३.००

Samkara And Bradley

A comparative and critical study

by : S.N.L. SHRIVASTAVA M.A, D.LITT. (in the press)

ब्रह्म सिद्धान्त

रचयिता—म० म० विद्यावाचस्पति पं० मधुसूदनजी ओझा

स्वर्गीय म० म० ओझा जी का प्रकाण्ड पाण्डित्य विश्वविश्रुत है। उनके सिद्धान्त स्वतन्त्र और विद्वत्समाज के लिये विचारणीय हैं। इस ग्रन्थ में ब्रह्मविषयक सिद्धान्त का उन्होंने जिस रूप में उल्लेख किया है वह दर्शनीय है। म० म० पं० गिरिधर शर्मा चतुर्वेदी रचित सिद्धान्त प्रकाशिनी टीका सहित पुस्तक का मूल्य १२.००

———

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

अच्युत ग्रन्थमाला काशी के प्रकाशन

भगवन्नाम कौमुदी—श्रीलक्ष्मीधर रचित, अनन्तदेवकृत संस्कृत टीका	०.७५
शुल्बसूत्र—(कात्यायनश्रौतसूत्र का परिशिष्ट अंश) संस्कृत वृत्ति स०	०.३७
प्रत्यक्तत्त्वचिन्तामणि—सं० व्याख्यासहित, दो भाग	५.००
तिथ्यर्क—तिथियों के निर्णय पर अपूर्व ग्रन्थ: श्री दिवाकर विरचित	२.००
परमार्थसार-सटीक—श्रीपतञ्जलि कृत	०.५०
प्रेमपत्तन—भक्तवर श्री रसिकोत्तम कृत तथा अद्भुत प्रणीत टीका सहित	१.२५
शतपथब्राह्मण—माध्यन्दिन केवल अनुक्रमणिका	१.००
काशीकेदार माहात्म्य—ब्रह्मवैवर्तपुराणान्तर्गत, हिन्दी टीका सहित	३.००
सिद्धान्तबिन्दु—श्रीमधुसूदन सरस्वती विरचित भाषानुवाद सहित	२.७५
प्रकरणपञ्चक—श्रीशंकराचार्य के पाँच ग्रन्थ, हिन्दी अनुवाद सहित	०.७५
ब्रह्मसूत्र—शांकरभाष्य रत्नप्रभा भाषानुवाद, केवल तीसरा भाग	५.५०
विवरणप्रमेयसंग्रह—श्रीविद्यारण्यमुनि विरचित तथा हिन्दी अनुवाद सहित	६.५०
वेदान्तसिद्धान्तकल्पवल्ली—श्रीसदाशिवेन्द्र सरस्वती विरचित (भा० टी०)	०.७५
बृहदारण्यकवार्तिकसार-दो भागों में—श्रीविद्यारण्यमुनि विरचित (भा० टी०)	१२.००
परीक्षार्थियों की सुविधा के लिए केवल प्रमेयपरीक्षान्त भाग पृथक्	३.००
अच्युतलेखमाला—महात्माओं तथा विद्वानों के सुन्दर लेख हिन्दी में	२.००
भगवद्गीता—श्रीशंकरानन्द विरचित शंकरानन्दी संस्कृत टीका सहित तथा श्रीभोलेबाबा कृत हिन्दी अनुवाद सहित नया संस्करण	यंत्रस्थ
षट्सन्दर्भतत्त्वसन्दर्भ—वैद्यभूषणी, राधामोहिनी संस्कृत व्याख्या सहित	१.५०
ब्रह्मसूत्र की भूमिका-केवल हिन्दी में-म० म० डा० गोपीनाथजी कविराज कृत	१.००
कात्यायन श्रौतसूत्र की भूमिका—पं० विद्याधर कृत	०.५०
योगवासिष्ठ—४, ५ भाग सरल हिन्दी अनुवाद सहित	१८.००
भागवत-एकादशस्कन्ध-प्रत्येक पद का हिन्दी अनुवाद तथा भाषानुवाद	६.५०
शिवस्तुति—श्री गोकुलनाथ विरचित संस्कृत तथा हिन्दी अनुवाद सहित	०.६२
सिद्धान्तलेशसंग्रह—हिन्दी अनुवाद सहित	६.००
खण्डनखण्डखाद्य—श्री चण्डीप्रसाद शुक्ल कृत हिन्दी अनुवाद सहित	८.००
स्तुति कुसुमाञ्जलि—जगद्धरभट्ट भा० टी०	१५.००

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

अन्य महत्त्वपूर्ण ग्रन्थ

१	अच्युतलेखमाला–विद्वानों के लेख–(हिन्दी)	२.००
२	अणुभाष्य–वल्लभाचार्य (सटीक) श्रीधरकृत टीका सहित, २ भाग	६.२५
३	अणुभाष्य–प्रकाश व्याख्या	३७.५०
४	अद्वय प्रबोधानन्द मार्तण्ड विहार–स्वामी रामानन्द सरस्वती	१.५०
5	Advaita and Neoplatonism by J. F. Stall	7.88
6	Advaita Grantha Kosha	11.25
७	अद्वैत चिन्तामणि–रंगोजी भट्ट	१.७५
८	अद्वैततत्त्व शुद्धि–अनन्तकृष्ण शास्त्री	१५.००
९	अद्वैततत्त्व सुधा–प्रथम भाग, अनन्तकृष्ण शास्त्री	२०.००
१०	अद्वैततत्त्व सुधा–द्वितीय भाग (प्रथम, द्वितीय सम्पुट) अनन्तकृष्ण शास्त्री	२५.००
११	अद्वैत दर्शन या एकसत्तावाद–गोविन्दानन्द स्वामी	२.५०
१२	अद्वैत दीपिका–सटीक (२ भाग) श्री नृसिंहाश्रम रचित	२५.००
13	Advaita Navanitam by K. T. Pandurang	3.00
१४	अद्वैत पञ्चरत्नम्	०.५६
15	Advaita Bodha Deepika with English Translation	1.50
१६	अद्वैत मकरन्द–लक्ष्मीधर	०.५६
१७	अद्वैतरत्नरक्षण (मधुसूदन सरस्वती)	०.७५
१८	अद्वैत रत्नाकर–रत्नप्रभा व्याख्या, भा० टी०	०.६०
१९	अद्वैत रसमञ्जरी–सदाशिव–लघुविवरण	०.६२
२०	अद्वैतवाद—गंगाप्रसाद उपाध्याय	५.००
२१	अद्वैत विद्या तिलकम्–सटीक, प्रथम भाग	१.२५
22	Advaita Vedanta by M. K. Venkatarama Iyer	18.00
23	Advaita Vedanta—Swami Vivekananda	0.62
२४	अद्वैत सिद्धांत वैजयन्ती	०.७५
२५	अद्वैतसिद्धांतसार संग्रह–नारायण आश्रम प्रणीत	०.७५
२६	अद्वैत सिद्धि (मधुसूदन), गौड़ ब्रह्मानन्दी, विट्ठलेशीयापाध्यायी, सिद्धि व अनन्तकृष्ण शास्त्री संग्रहीत न्यायामृताद्वैतसिद्धि तरंगिणी लघुचन्द्रिका सहित	२८.००

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

२७ अद्वैतसिद्धिसिद्धांत सार—सदानन्द व्यासकृत सव्याख्या ७.५०
२८ अद्वैतामोद—वासुदेव शास्त्री प्रणीत ३.००
29 Adhyatma Darshan by Swami Krishnanand 4.00
३० अध्यात्म भागवत संग्रह—भा० टी० पं० नित्यानन्द पाण्डेय २.५०
३१ अध्यात्म प्रकाश—कवि शुकदेव ०.३७
३२ अध्यात्म विचारण—सुखलाल जी संघवी २.००
३३ अध्यात्म विद्योपदेश विधि—शंकराचार्य कृत ०.३७
३४ अध्यात्म विकास—विष्णु तीर्थ स्वामी १.५०
३५ आध्यात्मिक जीवन—कौशल्या देवी ४.५०
३६ अनुभव प्रकाश (बनानाथ कृत) हिन्दी पद्यो में १.७५
३७ अपरोक्षानुभव दर्पणम् १.२५
३८ अपरोक्षानुभूति—भा० टी० १.२५
३९ अपरोक्षानुभूति—श्रीशंकराचार्य कृत—सटीक ०.७५
40 Aparokshanubhuti or Self Realization of Sankaracharya Translated into English by Swami Vimuktananda 1.37
41 Aphorisms of Sandilya—English Translation by E. B. Cowell 8.00
४२ अभिलाख सागर—भाषा ४.००
४३ अभ्यास योग—सान्याल २.२५
44 Amritanubhava—Gyandeva 1.00
४५ अष्टाक्षर टीका ०.२५
46 Ashtavakra Samhita-Text with English Translation by Swami Nitya Swarupananda 3.50
४७ आत्मज्ञान और विज्ञान—विनोवा १.५०
48 Atma Darshan-Swami Atmanand 3.50
49 Atma Path-by Swami Krishnanand Saraswati 2.50
५० आत्मप्रबोध—विष्णुतीर्थ स्वामी १.००
५१ आत्मबोध—भा० टी० ०.२५, ०.५०
52 Atmabodha-Text with English Translation by S. Nikhilananda 4.00
53 Atmabodha-With English Translation by P. N. Menon 4.50
५४ आत्मबोध प्रकरण—सम्पादक दिनेशचन्द्र शास्त्री ५.६२

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

५५ आत्मविज्ञान—स्वामी व्यासदेव १०.००
५६ आत्मविद्या–माधव राव सप्रे ४.००
५७ आत्मविद्याविलास (सदाशिवेन्द्र) ०.२०
५८ आत्मविलास—स्वामी आत्मानन्द मुनि २.५०
५९ आत्मानुसन्धान और आत्मानुभूति–भूपेन्द्रनाथ सान्याल ०.७५
60 Atman and Brahman in Vedic Religion by J. C. Wadiar 1.00
६१ आनन्दामृतवर्षिणी–आनन्दगिरि स्वामी कृत २.००
६२ आभोग : कल्पतरु व्याख्या (लक्ष्मी नृसिंह प्रणीत) २०.००
६३ आश्रम चतुष्टम–सान्याल १.२५
६४ आस्तिकवाद–गंगाप्रसाद उपाध्याय ५.००
65 Aspects of Advaita—Sundaram 2.50
66 Attitude of Vedanta towards Religion–
Swami Abhedananda 6.50
67 Is Vedanta the future Religion–Swami Vivekananda 0.50
68 Integral Advaitism of Sri Aurobindo– R. S. Misra 14.00
69 Introduction to Shankara's Theory of Knowledge
Dr. N. K. Dev Raj 12.00
70 Introduction to Vedanta–P. Nagaraja Rao 2.50
71 Introduction to the Philosophy of Panchadasi
S. Abhedananda 1.00
72 Upadesha of Sri Sadguru Omkara 3.75
७३ उपदेश मञ्जरी—स्वामी दयानन्द के १५ उपदेश २.५०
७४ उपदेश रत्नाकर १.१०
75 Upadesa Saram—Narasimha Swami 1.00
७६ उपदेश साहस्री–भा० टी० २.००
७७ उपदेश साहस्री—रामतीर्थ कृत पदयोजनिका टीका सहित ३.००
78 Upadesha Sahasri of Sankaracharya with
English Translation 3.00
७९ उपाधि खण्डनम्–टिप्पणी सहित १.८०
८० उपासना–योगानन्दसरस्वती (आलू बाबा) ०.७५
८१ ओङ्कार निर्णय १.५०
८२ ओङ्कार महिमा प्रकाश १.५०

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

83	Outlines of Madhva Philosophy— K. Narain	30.00
84	Outlines of Vedanta—R. K. Aiyar	4.50
85	Ontology of Advaita—K. B. Rama Krishna	5.00
८६	कल्याण का मार्ग—श्रीयोगानन्द	२.२५
८७	काय परिशुद्धि—वासुदेव शास्त्री	२.००
88	Call of the Jagadguru—R. Krishna Swami Aiyar	4.00
89	Call of the Jagadguru—P. Sankaranarayan	4.00
90	Cult of Brahma—T. Bhattacharya	8.00
91	Cult of Vithoba—G. A. Debury	15.00
92	Cult of Siva—K. Pillai	5.00
93	Concept of Mukti—A. G Krishna Warrier	11.25
94	Christian Science and Vedanta—Swami Abhedananda	0.75
95	Compromises in the History of Advaitic Thought—Kuppu Swami Sastri	1.40
९६	क्रियासार–नीलकंठ शिवाचार्य रचित, ३ भाग	१७.४७
97	Critique of Madhva Refutation of the Samkhya School of Vedanta—K. Narain	35.00
98	Critique of Vivarana School—B. K. Sen Gupta	12.00
९९	कुण्डलिया–गिरिधरदास कृत	१.००
100	Quintessence of Vedanta—Swami Tattwananda	3.50
१०१	खण्डनखण्डखाद्य–श्रीचण्डीप्रसाद शुक्ल कृत हिन्दी अनुवाद सहित	८.००
१०२	खण्डनखण्डखाद्य—भाव प्रकाशिका, शाङ्करी, खण्डन रत्नमालिका टीका आदि युक्त १, २ खण्ड	४.००
१०३	खण्डन परिशिष्टम्–ताराशरण शर्मा रचित	०.५०
१०४	गुरु कृपा—श्रीनिवासाचार्य विरचित	२.२५
१०५	गुरु परम्परा—विष्णु तीर्थ स्वामी	१.५०
१०६	गूढार्थ दीपिका–धनपतिसूरि कृत–सटीक	८.००
107	Great Equation—R. K. Aiyar	3.50
१०८	गोविन्दाष्टक–संस्कृत टीका	०.२५
109	Gospel of Advaita—D. Greenless	9.00
110	Gospel of Narada — D. Greenless	6.50
111	Gaudapada—T. M. P. Mahadevan	11.25
112	Gaudapada Karika — R. D. Karmarkar	5.00

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

113	Gaudapada Krika—J. L. Majumdar	4.00
११४	चन्द्रकान्त (वेदान्त) भाषा, इच्छाराम सूर्यराम देसाई, ३ भाग	३०.००
११५	चर्पट पंजरिका--भाषानुवाद सहित	१.५०
११६	चित्सुखी—(तत्त्वप्रदीपिका)–हिन्दी अनुवाद सहित	१२.००
११७	चिद्विलास—डा० सम्पूर्णानन्द	३.००
118	Chaitanya Charitamrita—English Translation in 6 vols	60.00
११९	चैतन्य चरितामृत–भा० टी०, ३ भाग	३०.००
१२०	चैतन्य चरितावली–५ भाग, सचित्र	५.६५
121	Jagat Guru Sankardev — D. Neog	4.00
122	Japa—M. P. Pandit	2.00
123	Japa Sutram—S. Pratyagatmananda	4.00
१२४	जप सूत्र (वंगला अनुवाद) स्वामी प्रत्यज्ञात्मानन्द	३०.००
१२४क	जपसूत्र (हिन्दी) स्वामी प्रत्यज्ञात्मानन्द	१५.००
१२५	जीवन चक्र—गंगाप्रसाद उपाध्याय	४.००
126	Jivana—yajna–a concept of life	2.50
१२७	जीवन दर्शन—मुंशीराम शर्मा	३.००
१२८	जीवनचक्र–गंगाप्रसाद उपाध्याय	४.००
१२९	जीवन विज्ञान–कुण्डलिनी योग तत्त्व	१.००
१३०	जीवात्मा–गंगाप्रसाद उपाध्याय	४.००
१३१	ज्ञानमाला (हिन्दी गद्य में कृष्ण अर्जुन का संवाद)	०.३५
१३२	ज्ञानवैराग्य प्रकाश–स्वामी परमानन्द जी कृत	२.००
१३३	ज्ञानामृतसार (सूक्ति संकलन)–श्रीमती कमला अग्रवाल	१.५०
134	The Traditional Age of Sankaracharya and his Maths by N. Ayer	3·00
135	Dialogues with the Guru—R. Krishna Swami Aiyer	5·00
136	Doctrine of Karma—Swami Abhedanand	3·00
137	Doctrine of Maya—A. K. Roy	5·75
138	Doctrine of Sri Kantha—2 Vols by R. Chaudhary	52.00
१३९	ढाई हजार अनमोल बोल–हिन्दी	०·७५
१४०	तत्त्व चिन्तामणि–भा० टी० ७ भाग	६.७०
१४१	तत्त्वज्ञान—आनन्दस्वामी सरस्वती	३.००
१४२	तत्त्वचन्द्रिका—(तामिल, संस्कृत)	१·००
१४३	तत्त्वदीपनम्–(पञ्चपादिका) अखण्डानन्द मुनिकृत	१५.००
१४४	तत्त्वप्रकाशिका व्याख्या भावबोध–रघूत्तम यति कृत	१५.००

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

१४५ तत्त्वप्रदीपिका (चित्सुखी) नयनप्रसादिनी व्याख्या तथा
स्वा० योगीन्द्रानन्द कृत, सटिप्पण सरल हिन्दी अनुवाद १२.००
146 La Tattvabindu de Vacaspati Misra—Biardeau 4·00
१४७ तत्त्वबिन्दु–श्रीवाचस्पति मिश्र ०.४८
१४८ तत्त्वबोध–भा० टी० ०.३२, ०.४०
१४९ तत्त्वमुक्ताकलाप—सर्वार्थसिद्धि वृत्ति तथा आनन्ददायिनी भाव प्रकाश
व्याख्या १–४ भाग २४.७५
१५० तत्त्वानुसन्धान अर्थात् अद्वैत चिन्ताकौस्तुभ (हिन्दी) ७.००
१५१ तत्त्वशेखर १.००
१५२ तत्त्वसन्दर्भ–भा० टी० १.५०
१५३ तत्त्वसार–रत्नसारिणी व्याख्या सहित ६.००
१५४ तर्कताण्डव–व्यास तीर्थ विरचित श्रीराघवेन्द्र कृत न्यायदीप व्याख्या
सहित ४ भाग ६.२५
155 Thoughts on Vedanta—Swami Vivekananda 1.25
156 Thoughts from the Vedanta—by R. Krishna Swami Aiyer 1·69
१५७ दरिया विचार मुक्तावलि–(दरिया साहब बिहार वाले)–
महन्त बृजनन्दनदास जी साहब सम्पादित ४.५०
१५८ दहरविद्या प्रकाशिका–(शिवेन्द्र सरस्वती) ०.५०
१५९ दासबोध–भाषा ३.५०
१६० दिनचर्या—श्रीभूपेन्द्रनाथ सान्याल २.७५
१६१ दीक्षा और गुरुत्व—श्रीभूपेन्द्रनाथ सान्याल ०.७५
१६२ दृष्टान्त दर्पण अर्थात दृष्टान्त का सागर २.००
१६३ दृष्टान्त दीपक–भाषा २.००
१६४ दृष्टान्त प्रकाश–२ रा भाग २.००
१६५ दृष्टान्त महासागर–बड़ा २.५०
१३६ दृष्टान्त मञ्जरी–जगत्कुमार शास्त्री २.००
१६७ दृष्टान्त मञ्जूषा–भाषा—स्वामी परमानन्द २.००
१६८ दृष्टान्त सागर (पाँचो भाग) १०.५०
169 Drg Drsya Viveka—Swami Nikhlananda 1.00
१७० देशिकेन्द्र स्तवांजलि ०.५०
171 Dhyana—M. P. Pandit 2.00
१७२ नयद्युमणि–मेघनादारि सूरि विरचित ६.१२

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

१७३ नयमंजरी–श्रीमदप्पय दीक्षित २.२५
१७४ नारदभक्ति सूत्र–शिवाजी भावे १.५०
175 Narda Bhakti Sutra—with English Translation by Swami Jyogishanand 3·00
१७६ नारदीय भक्ति सूत्र–भा० टी० ०.२०
177 Naradas Aphorism on Bhakti 0.50
178 Narada Sutra (Philosphy of Love) by H. P. Shastri 7·88
179 Nimbarka School of Vedanta by Dr. Umesh Mishra 10·00
१८० निर्भय विलास–भाषा पद्य २.५०
181 Nature of Man according to Vedanta by J. Levy 13·12
१८२ नृसिंह विज्ञापनम्—नृसिंहाश्रम विरचित १.७५
१८३ नैष्कर्म्य सिद्धि–सुरेश्वराचार्य ज्ञानोत्तम कृत चन्द्रिका, हरियाना कृत अंग्रेजी भूमिका ३.००
184 Naishkarmya Siddhi--English Translation by H. P. Shastri 37·50
१८५ न्यायचन्द्रिका–केशव भट्ट ०.५६
१८६ न्यायचन्द्रिका–आनन्दपूर्ण मुनीन्द्रप्रणीत–सटीक १८.७५
१८७ न्यायपरिशुद्धि (सटीक)—वेदान्ताचार्य १०.००
१८८ न्यायभास्कर खण्डनम्–मध्वचन्द्रिका खण्डन ३.००
१८९ न्यायमकरन्द—आनन्द बोध व्याख्या १०·००
१९० न्यायामृतलहरी १.१५
१९०क न्यायसिद्धाञ्जनम् (वेदान्त देशिक), भा० टी० २५.००
१९१ पक्षपात-रहित अनुभव प्रकाश—स्वामी विशुद्धानन्द जी ८.००
१९२ पंचकोश विवेक—आलू बाबा १.५०
१९३ पंचदशी—पं० मिहिरचन्द्र कृत हिन्दी टीका सहित ६.००
१९४ पंचदशी—रामकृष्ण विरचित "तत्त्व विवेक" संस्कृत टीका सहित ४.००
१९५ पंचदशी (विद्यारण्य) रामकृष्ण व्याख्या, टिप्पणी पाठान्तर, श्रुतिकोश तथा आनन्दगिरि कृत, भूमिका सहित ६.५०
१९६ पंचदशी—(विद्यारण्य) पीताम्बरी भाष्य, भा० टी० सहित ८.००
१९७ पंचदशी—रामकृष्ण कृत व्याख्या सहित, गुटका ३.००
198 Panchadashi—English Translation by H. P. Shastri 68·75
199 Pancapadika—English Translation by D. Venkataramiah 22·00
२०० पंचपादिका-पञ्चपादिका विवरण–सटीक २८.७५

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

२०१ पञ्चप्रक्रिया (सर्वज्ञात्म विरचित) आनन्दज्ञान प्रणीत पूर्ण टीका विद्यामुनि व्याख्या २.८७
२०२ पंचरत्नकारिका ०.८५
२०३ पञ्चीकरण--भाषा—सद्गुरु श्रीराम ३.००
२०४ पञ्चीकरण–छः संस्कृत टीका, बम्बई ३.००
२०५ पञ्चीकरण--भाषा ३.००
२०६ पंचीकरण–पंचीकृतम् साधन चतुष्टयं च ०.२५
207 Panchi Karna—Text with English Translation & Comm. 1·00
२०८ परतत्त्वमय निरासन नक्षत्रमाला १.१५
२०९ परमार्थ प्रकाशिका—(अद्वैतामोद परिशीलन) ५.००
210 Parmartha Prasanga—Swami Virjananda 4·00
२११ परमार्थ भूषणम्—(शतभूषणी खण्डन) वीर राघवाचार्य विरचित २५.००
२१२ परमार्थ सार–आदिशेष विरचित–स० टीका ०.५०
२१३ पारसमणि–वैराग्य को जागृत करने वाला अपूर्व ग्रंथ ६.००
२१४ पूजातत्त्व—म० म० श्रीगोपीनाथ जी कविराज ४.००
२१५ पूर्वोत्तर मीमांसावाद नक्षत्रमाला—अप्पय दीक्षित ३.५०
२१६ प्रकटार्थविवरण–द्वितीय भाग ८.००
२१७ प्रकरणपंचक— श्रीशंकराचार्य, भा० टी० ०.७५
२१८ प्रज्ञानन्दप्रकाश–"भावार्थ कौमुदी" टीका भाषानुवाद सहित ३.००
२१९ प्रकरणग्रन्थसंग्रह—शङ्कराचार्य १२.५०
२२० प्रणवकल्प (स्कन्दपुराणान्तर्गत) प्रकाश भाष्य २.५०
२२१ प्रत्यक्तत्व चिन्तामणि–सदानन्द व्यास कृत तथा स्वोपज्ञव्याख्या सहित–दो भाग ५.००
२२२ प्रपन्नपारिजात--भा० टी० ३.००
२२३ प्रस्थान भेद—मधुसूदन सरस्वती कृत ०.२५, ०.३१
२२४ प्रस्थान रत्नाकर (पुरुषोत्तम जी) ५·००
२२५ प्राण तत्त्व—श्री विष्णु तीर्थ, भाषा १·००
२२६ प्राण सगंली—श्री गुरुनानक साहिब—सटीक, ३ भाग ८·००
२२७ प्रेम पत्तन—चैतन्य सम्प्रदाय सव्याख्या १·२५
२२८ प्रेम योग—वियोगीहरि, भाषा १·५०
२२९ प्रेम सत्संग सुधा माला ०·६५

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

230 Practical Vedanta—Swami Vivekananda 1·25
231 Fundamentals of Vedant Philosphy—Swami Pratyagatmananda Saraswati 15·00
232 Philosophy of Jnanadeva by B. P. Bohirat 7-50
233 Philosophy of Bhedabheda by P. N. Shrinivasachari 9·00
234 Philosophy of Sri Madhavacharya by B. N. K. Sharma 15·00
235 Philosophy of Ramanuja by K. D. Bhardwaj 16·00
236 Philosophy of Visistadvaita by P. N. Srinivasachari O.P.
237 Philosophy of Vedanta and Vedantasara by Paul Deussen 6.00
२३८ विल्वदल—भूपेन्द्रनाथ सान्याल (हिन्दी) २ भाग ५·००
२३९ बोधसार—नरहरि दिवाकर कृत स० टी० २०·००
२४० बौधैक्य सिद्धि—अच्युतराय—सटीक ६·००
२४१ बृहदारण्यक वार्तिकसार—श्री विद्यारण्य मुनि विरचित, भा० टी० सहित २ भाग १२·००
२४२ बृहदारण्यक वार्तिकसार—लघु संग्रह १५.००
२४३ ब्रह्मज्ञान—आत्मदेव की ६·००
२४४ ब्रह्मतर्कस्तव—पञ्चरत्न स्तुतिश्च १·२५
245 Brahma Bindue edited by L. Suale 3·25
२४६ ब्रह्म मीमांसा भाष्य—वेदान्त पारिजात सौरभ नामक व्याख्यान २·५०
247 Brahmarshi Gospel--Aprabhudha 4·00
२४८ ब्रह्मवादसंग्रह—शुद्धाद्वैत परिष्कार (बल्लभाचार्य सम्मत) १·५०
249 Brhma Vidya—Swami Krishnanand 6·00
२५० ब्रह्मविज्ञान १०·००
२५१ ब्रह्मशुद्धि—भाव शुद्धि—अभिप्राय प्रकाशिका २४·००
२५२ ब्रह्मसिद्धांत—प० मधुसूदन ओझा १२·००
२५३ ब्रह्मसिद्धि—आचार्य मण्डन मिश्र कृत, शंखमणि व्याख्या ७·७५
२५४ ब्रह्मसंकीर्तन (डोगरी वेदान्त) ८·२५
२५५ ब्रह्मसूत्र—शांकरभाष्य मूल ३·५०, ८·००
२५६ ब्रह्मसूत्र—शाङ्कर भाष्यम्—भामती—कल्पतरु—परिमल व्याख्या सहित ३०·००
२५७ ब्रह्मसूत्र—शांकर भाष्य—हिन्दी अनुवाद सहित—स्वामी सत्यानन्द जी १६·००
२५८ ब्रह्मसूत्र—"विद्योदय" भाष्य—उदयवीर शास्त्री २०·००
२५९ ब्रह्मसूत्र—शांकर भाष्य का हिन्दी अनुवाद—आलूबाबा (दो भाग) ९·००

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

२६० ब्रह्मसूत्र–शांकर भाष्य, चतुःसूत्र्यन्त "पूर्णानन्दीय" व्याख्या द्वितीय अध्याय द्वितीय पाद तक ८·००

२६१ ब्रह्मसूत्र–शांकरभाष्य "ब्रह्मतत्त्व विमर्शिनी" हिन्दीव्याख्या चतुःसूत्र्यन्त भाग ३·५० प्रथम भाग (१–२ अध्याय) १५·००

२६२ ब्रह्मसूत्र (शारीरक) शांकर भाष्य, रत्नप्रभा, भामती २०·००

२६३ ब्रह्मसूत्र-रत्नप्रभा, भोलेबाबा कृत हिन्दीअनुवाद सहित केवल तीसराभाग ५·५०

२६४ ब्रह्मसूत्रम्–श्री देवाचार्य प्रणीत "सिद्धात जाह्नवी", सुन्दर भट्ट विरचित "सिद्धात सेतु" व्याख्या सहित ७·५०

२६५ ब्रह्मसूत्र —सुषमा हिन्दी व्याख्या सहित—हनुमान दास ४·००

२६६ ब्रह्मसूत्र–चतुःसूत्री, "प्रकाश", विकाश व्याख्या —लक्ष्मी नाथ झा ५·००

२६७ ब्रह्मसूत्र–शांकर भाष्य (चतुःसूत्री) भामती कल्पतरु परिमल सहित ४·५०

२६८ ब्रह्मसूत्र–तात्पर्य विवरण–प० भैरव शर्मा तिलक २·२५

२६९ ब्रह्मसूत्र दीपिका—शंकरानन्द ५·००

२७० ब्रह्मसूत्र पाठः साधिकरणः प्रकाशानुसारी मतमतान्तर पाठ सहित ०·२५

२७१ ब्रह्मसूत्र–भाष्यम्, आनन्द तीर्थकृतम्–तत्त्व प्रकाशिका–चन्द्रिका–प्रकाश युक्त २ भाग ७·५०

२७२ ब्रह्मसूत्रभाष्यम्—भगवत्पाद व्याख्या युक्त ५·००

२७३ ब्रह्मसूत्र भाष्यनिर्णय—श्री चिद्घनानन्दपुरी विरचित, तृतीय पाद तक ५·००

२७४ ब्रह्मसूत्रभाष्यसिद्धांतसंग्रह २·००

२७५ ब्रह्मसूत्र शांकर भाष्य —मराठी टीका सहित ३ भाग ३६·००

२७६ ब्रह्मसूत्र–विज्ञान भिक्षु भाष्यम् (विज्ञानामृत व्याख्या) २५·००

२७७ ब्रह्मसूत्र II—१–२, डा० बेलवलकर ८·००

२७८ ब्रह्मसूत्र और वैष्णव भाष्य–रामकृष्ण आचार्य १·२५

२७९ ब्रह्मसूत्रोंके वैष्णवभाष्योंका तुलनात्मक अध्ययन —डा० रामकृष्ण आचार्य १०·००

२८० ब्रह्मसूत्र की भूमिका (हिन्दी) म० म० श्री गोपीनाथ जी कविराज १·००

२८१ ब्रह्मसूत्रवृति—शंकर शिष्य प्रणीत अद्वैत मञ्जरी १·००

२८२ ब्रह्मसूत्रवृति (ब्रह्म तत्त्व प्रकाशिका)—सदाशिवेन्द्र ३·५०

२८३ ब्रह्मसूत्रवृति–हरिदीक्षित कृत ३·७५

२८४ ब्रह्मसूत्र–मरीचिकावृत्ति ५·००

२८५ ब्रह्मसूत्र (वेदान्त दर्शन) सटिप्पण –श्री सूर्य नारायण शुक्ल ०·३२

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

२८६ ब्रह्मसूत्र (शारीरक) "वेदान्त दर्शन—प० माधवाचार्य २·००
२८७ ब्रह्मसूत्र सिद्धात मुक्तावली–वनमालो विरचित ३·७५
२८८ ब्रह्मसूत्राणि—ब्रह्मामृतवर्षिणो ६·७५
२८९ ब्रह्मसूत्राणि—शांकरभाष्य, आनन्दगिरि–द्वितोय भाग ९·००
290 Brahmasutra Bhashya of Sankaracharya & English Translation by Swami Gambhirananda 20·00
291 Brahmasutra Shankar Bhasya & English Translation by V. M. Apte 45·00
292 Brahmasutra–with word for word Meanings and Notes based on Sankara Comm. by Swami Vireswarananda 6·00
293 Brahmasutras of Badarayana, Ed. by Gajendragadkar 5·00
294 Brahmasutra—English Translation by S. Radhakrishnan 44·10
295 Brief account of Advaitic system of Thought–Malkani 2·50
२९६ ब्रह्मामृत–जयकृष्ण ब्रह्म तीर्थ विरचित १·५०
२९७ भक्ति का विकास–डा० मुंशी राम शर्मा २०·००
298 Bhakti Cult in Ancient India by Bhagwat Kumar Goswami 25·00
२९९ भक्ति चन्द्रिका—स्वामी विशुद्धानन्द परिव्राजक १·००
३०० भक्ति तरङ्गिणी—मुंशीराम शर्मा ३·००
३०१ भक्तिदर्शन–महर्षि शाण्डिल्य कृत १·२५
३०२ भक्तिनिर्णय–(अनन्त देव) तथा नाम माहात्म्य ०·६२
३०३ भक्तिप्रकाश–(१० मयूखों में) २·००
३०४ भक्तिप्रकाश–सत्यानन्द ३·७५
305 Bhakti yoga—A. K. Datta 2·50
306 Bhakti yoga—Swami Vivekanand 1.25
307 Bhakti Renaissance—A. K. Majumdar 5·00
३०८ भक्तिसागर—श्रो नारायण भट्ट रचित ३·००
३०९ भक्तिसागरादि–स्वामी चरण दास जी कृत ६·००
३१० भक्त्यधिकरणमाला–(नारायण तीर्थ कृत)–प्रथम भाग १·२५
३११ भगवत्पदो—हरदत्तशर्मा १·००
३१२ भगवच्चर्चा ६ भाग ४·८५
३१३ भगवद्भक्तिरसायन–मधुसूदनसरस्वतीकृत, अनु०पं०जनार्दनशास्त्रो पाण्डेय ३·००

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

३१४	भगवत्चर्चा—हनुमानदास पोद्दार, ६ भाग	४.८५
३१५	भगवद्रामानुज ग्रंथमाला (भगवान रामानुज के ग्रंथों का संग्रह)	२०.००
३१६	भगवन्नाम कौमुदी-श्रीलक्ष्मीधर रचित, अनन्तदेव कृत संस्कृत टीका सहित	०.७५
३१७	भगवन्नाम माहात्म्य संग्रह—रघुनाथेन्द्र यति विरचित, सटीक	२.७५
३१८	भगवान पर विश्वास, भाषा	०.३०
३१९	भवरोग की रामबाण दवा, भाषा	०.३५
३२०	भागवत स्तुति–५ संस्कृत टीकाओं सहित	२.००
३२१	भामती–(ब्रह्म सूत्र शाङ्कर भाष्य व्याख्या) वाचस्पति मिश्र, ढुण्ढिराज शास्त्री सङ्कलित	४.००
३२२	भावरसामृत—स्वामी गुलाब सिंह	०.५५
३२३	भाष्यार्थ रत्नमाला—सुब्रह्मण्य कृत	६.२५
324	Bhaskara School of Vedanta—Umesh Mishra	5 00
३२५	भेदजयश्री—भट्ट वेणीदत्ताचार्य विरचित	१.२५
३२६	भेदरत्न–शङ्कर मिश्र विरचित	१.५०
३२७	मध्वतन्त्र मुखमर्दन–अप्पय्यजी दीक्षित कृत	२.२५
३२८	मध्वतन्त्र मुखमर्दन–व्याख्या	१.००
३२९	मध्वमंत्र रत्नाकर–टी० आ० कृष्णाचार्य	५.५०
३३०	मध्वमुखालंकार–वनमालि मिश्र विरचित	१.५०
३३१	मध्वाध्व कण्टकोद्धार	२.००
३३२	मणिरत्नमाला–स्वामी योगानन्द कृत भाषा विवेचन	३.००
३३३	मनीषा पाञ्चकम्	१.५६
३३४	महावाक्य, भाषा–आलू बाबा	१.५०
३३५	महावाक्य रत्नावली–दशोपनिषत्सार भूत	०.२५
३३६	महावाक्य रत्नावली–अष्टोत्तरशतोपनिषत्सार	०.३७
३३७	महावाक्य विवरण, भा० टी०	१.१०
३३७क	महिष शतकम्	१.६०
338	Maharshi Gospel	1·00
339	Madhavas Teaching in his own words—B. N. K. Sharma	2·50
३४०	मानमाला–रामानन्द व्याख्या	२.५०
३४१	मानसोल्लास माधुरी–महेशानन्द गिरि	५.५०
३४२	मायावादखण्डनम्–श्रीनिवास तीर्थीय टिप्पणी सहित	१.००
३४३	मिताक्षरा (श्रीगौड़पादाचार्य कृत माण्डूक्य कारिका व्याख्या)	१.२५
३४४	मुक्तिवाद विचार—हरिराम तर्कवागीश कृत	१०.२५

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

३४५ मुमुक्षु का मनन–हिन्दी २.००
३४६ मूल विद्या निरास–अथवा शंकर हृदयम् २.५०
347 Metaphysics of Advaita Vedanta—G. R, Malkani 10·00
348 Methodology of the Major Bhasyas on the Brahmasutra
P. D. Chandratre 6·50
349 Methods of Knowledge According to Advaita Vedanta
Swami Satya Prakashanand 50.00
३५० मोक्ष प्राप्ति के दो विभिन्न मार्गों की भूमस्नपता–स्वामी सनातनदेव ०.५०
३५१ मोक्ष साधन और योगाभ्यास—सान्याल ०.५०
३५२ यतीन्द्रमत दीपिका–श्रीनिवास दास, प्रकाश व्याख्या २.००
३५३ यतीन्द्रमत दीपिका–सटिप्पण १.००
354 Yatinder Mata Deepika—with English Translation
S. Das 5·00
३५५ योग रसायन--भाषा १.२५
३५६ योगवासिष्ठ--भा० टी० स्थूलाक्षर--चौथा, पाचवाँ भाग १८.००
३५७ योगवासिष्ठ–दो भाग--भाषा लखनऊ २२.००
३५८ योगवासिष्ठ--भाषा–पं० हरदत्त शर्मा २५.००
३५९ योगवासिष्ठ और उसके सिद्धांत–भीखनलाल आत्रेय १०.००
३६० योगवासिष्ठ कथा–रघुनाथ सिंह १२.००
361 Yoga Vasistha and Modern Thought—B. L. Atray 3·75
362 Yoga Vasistha Ramayane Vol I—English Translation
D. N. Bose 10·00
३६३ योगानन्द सत्संग--भाषा पद्य--सरलानुवाद सहित २.५०
३६४ युक्ति प्रकाश–साधु निश्चलदास २.००
३६५ रत्नपञ्चक–शंकराचार्य प्रणीत–सभाष्य ०·३७
366 Ramakrishna Lives Vedanta—Swami Chidbhavananda 7.00
367 Ramanuja and Bowne—F. K. Lazarus 25·00
368 Ramanujas Teachings in his own words—M.
Yamunacharya 2·50
३६९ रामानुज ग्रथावली–(भगवानरामानुज के ९ ग्रंथों का संग्रह) २०·००
३७० रामानुज वेदान्त सार–सटिप्पणी २·५०
371 Ramanuja Vedartha Sangraha—J. A. B. Van Buitenen 20.00
372 Readings from Sankara—2 vols, T. M. P. Mahadevan 3·50

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

373 Rambles in Advaita—Swami Vimalanand Narsingh Bharthi 3·50

374 Revelation and Reason in Advaita Vedanta K. Satchidanand Murty 25.00

३७५ लघुप्रकरणानि ०·२५

३७६ लघुयोगवासिष्ठम्—आत्मसुख कृत, वसिष्ठ चन्द्रिका सहित ८·००

३७७ लघुवासुदेवमननम्—कृष्ण स्वामी अय्यर कृत विवेचात्मक अंग्रेजी भूमिका १·६९

378 Lights on Vedanta—V. P. Upadhyaya 15·00

379 La Voie Vers la Connaissance de Diou (Brahma—Jajnansa) selon Annuvyakhyana de Madhava—Sizanne Siauve 4.00

३८० लोक परलोक का सुधार—भाग १–२ २·७०

380a Vakya Vritti of Sankaracharya—with English Translation—S. Jagadanand 1.00

३८१ वाक्यवृति—स्वामी योगानन्द कृत भाषा विवेचन १·५०

३८२ वाक्यसुधा--स्वामी योगानन्द कृत भाषा १·५०

383 Vadavali of Jayatirtha with English Translation P. N. Rao. 15·00

384 Vacaspati Misra on Advaita Vedanta—S. S. Hasurkar 15·00

३८५ वासिष्ठ दर्शनम्—डा० आत्रेय ५·००

386 World Within the Mind (Yoga Vasishtha) H. P. Sastri 10·62

३८७ विचारचन्द्रोदय—पीताम्बरी भाषा २·००, ३·००

३८८ विचारचन्द्रोदय—स्वामी निगमानन्द जी २·००

३८९ विचारमाला--स्वामी गोविन्द दास जी कृत हिन्दी टीका २·००

३९० विचारमाला—अनाथ दास जी कृत ०:३७

३९१ विचार सागर—(निश्चलदास) पीताम्बर टीका १०·००

३९२ विचार सागर—निश्चल दास प्रणीत, निगमानन्द परमहंस कृत सरल हिन्दी व्याख्या ३·५०

३९३ विचार सागर—हनुमान दास कृत हिन्दी भाषा सहित ३·००

३९४ विचार सागर—वासुदेव ब्रह्मेन्द्र सरस्वती कृत टीका सहित १५·००

३९५ विचार सागर दर्पण—स्वामी मनोहर दास ४·००

३९६ विज्ञान दीपिका—पद्मपादाचार्य प्रणीता ५·००

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

३९७ विद्वन्मण्डनम्—विट्ठलनाथ दीक्षित कृत—सटीक ५·००
३९८ विवरणप्रमेय संग्रह (विद्यारण्य) भाषा टीका ६·५०
399 Vivaranaprameya Sangraha--English Translation
S. S. Suryanarayan Sastri 7·50
४०० विवरणप्रमेय संग्रह—सूर्य नारायण शास्त्री सम्पादिता ७·५०
४०१ विवरणादिप्रस्थान विमर्श—प० वीरमणि प्रसाद १·००
४०२ विवरणोपन्यास—रामानन्द सरस्वती विरचित व्याख्या ५·००
४०३ विवेक चूड़ामणि—भाषा टीका ०·४०
404 Viveka Cudamani of Sri Sankaracarya with English
Translation--Swami Madhavananda 3·00
405 Viveka Cudamani with English Translation M. M.
Chatterji 4·50
४०६ विष्णुतत्त्वदीपिका—तिम्मणाचार्य वरक्केडि २·२५
407 Vishnu Tattvanirnaya of Madhavacarya 3·00
४०८ विषयवाक्य दीपिका—श्री रंगरामानुज मुनि ५·००
४०९ विशिष्टाद्वैतमत विजयवाद: ०·२५
४१० विशिष्टाद्वैतांधिकरण माला—प० सुदर्शनाचार्य १·००
४११ वृत्तिप्रभाकर—स्वामी निश्चलदास जी, बंबई ७·००
४१२ वृत्तिप्रभाकर—स्वामी आत्मानन्द कृत सरल हिन्दी ६·००
४१३ वृन्दावली—हिन्दी टीका सहित ०·५०
414 Vedanta—Ghate 5·50
415 Vedanta—C. Rajagopalachari 1·00
416 Vedanta—its Doctrine of Divine Personality 1·75
417 Vedanta—its Ethical Aspect—S. Iyer 2·00
418 Vedanta or the Science of Reality--K. A. Krishna Swami
Aiyer 20.00
419 Vedanta Explained, 2 Vols--V. H. Date 45·00
४२० वेदान्त और अद्वैतवाद—स्व० गणेश दास १·५०
421 Vedanta Kalpalatika of Madhusudan 5.00
422 Vedanta Karikavali of Venkatacharya—Translated
into English—V. Krishnamchari 8·00
४२३ वेदान्त कौमुदी—रामाद्वयाचार्य प्रणीत १३·५०
४२४ वेदान्त छन्दावली, ५ भाग, भोले बाबा कृत हिन्दी २·५०

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

४२५ वेदान्त डिण्डिम ०'२०
४२६ वेदान्त डिण्डिम—"भाव बोधिनी" व्याख्या १'००
४२७ वेदान्त तत्त्व विवेक (श्री नृसिंहाश्रम) "तत्त्व विवेक दीपन तथा पूरणी व्याख्या १५'००
४२८ वेदान्त दर्शन–विद्योदय भाष्य २० ००
४२९ वेदान्त दर्शन—व्यास हिन्दी टीका सहित ४'००
४३० वेदान्त दर्शन—श्री रामानन्द सरस्वती कृत "ब्रह्ममृत वर्षिणो" टीका सहित ७'५०
४३१ वेदान्त (सूत्रपाठ) दर्शन–व्यास मुनि रचिता ०'१०
४३२ वेदान्त दर्शन—भाषा टीका स्वामी दर्शनानन्द जी सरस्वती ४'५०
४३३ वेदान्त दर्शन (ब्रह्मसूत्र)—भाषा टीका गोरख पुर २'५०
४३४ वेदान्त दर्शन (माधवाचार्य) भाषा टीका २'५०
435 Vedanta Deepa–with English & Tamil Translation, 2 Vols 15·00
४३६ वेदान्त दीप (ब्रह्मसूत्र व्याख्या) रामानुजाचार्य विरचित ७'५०
४३७ वेदान्त दीपिका—योगानन्द जी कृत–भाषा २'५०
438 Vedanta Desika – Satya Vrata Singh 20·00
४३९ वेदान्तदेशिक ग्रन्थ माला—द्वितीय भाग (मीमांसा पादुका सेश्दीमीमांसा, न्याय परिशुद्धि, न्याय सिद्धाजंन) ६'००
४४० वेदान्तदेशिक ग्रंथ माला—तृतीय खण्ड—स्तोत्रावली, नाटक ६'००
441 Vedanta Parijata Saurabh or Vedanta Kaustubha of Srinivasa. Translated into English—Roma Bose 3 Vols. 17·50
442 Vedanta Paribasa of Dharma Raj—Translated into English—S. Suryanarain Sastri 12·00
443 Vedanta Paribhasa—English Translation Swami Madhavanand 3·00
४४४ वेदान्त परिभाषा—आनन्द झा कृत संस्कृत टीका युक्त १४'५०
४४५ वेदान्त परिभाषा (हिन्दी) आचार्य गजानन शास्त्री कृत हिन्दी व्याख्या १०'००
४४६ वेदान्त परिभाषा—सटिप्पण "अर्थ दीपिका" टीका सहित २'५०
४४७ वेदान्तप्रक्रिया प्रत्यभिज्ञा १६'००
४४८ वेदान्त प्रदीपिका—स्वामी लक्षानन्द विरचित २'००
449 Vedanta Philosophy—Max Muller. 4·00
450 Vedanta Philosophy—Swami Abhedanand 3·00
451 Vedanta Philosophy—S. K. Belvelkar 5·00

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

453 Vedanta Philosophy—Swami Vivekanand 0·75
454 Vedanta for Modern Man-Isherwood 11.25
455 Vedanta for Western World—Isherwood 9.98
४५६ वेदान्त बालबोधिनी ०·७५
४५७ वेदान्त रत्न मञ्जूषा—पुरुषोत्तमाचार्य ५·००
४५८ वेदान्त रत्नावली—स्वामी भोले बाबा-भाषा ०·५०
४५९ वेदान्त रहस्यम्—वागीश भट्टाचार्य विरचित ०·२५
४६० वेदान्त रहस्य (भाषा) श्रालू बाबा १·००
461 Vedanta Light—H. P. Shastri 1·87
४६२ वेदान्त विद्वद्गोष्ठी २·७५
४६३ वेदान्त संज्ञा-भाषा टीका ०·८५
४६४ वेदान्त संज्ञावली १·००
४६५ वेदान्त सार-हिन्दी टीका सहित-गुरुशान्त स्वामी २·००
४६६ वेदान्त सार—रामानुज टीका २·५०
४६७ वेदान्त सार—संस्कृत, हिन्दी टीका १·३५
४६८ वेदान्त सार "भावबोधिनी" संस्कृत हिन्दी व्याख्या सहित २.५०
469 Vedanta Sara of Ramanuja, Translated into English M. B. N. Iyengar 20·00
470 Vedanta Sara of Sadananda with English Translation Nikhlananda 2·00
४७१ वेदान्त सार—सटीक १·७५
472 Vedanta Sara of Sadanand—with English Notes & Translation-Hariyana 5·00
४७३ वेदान्तसारवार्तिक-राजसंग्रह पञ्चीकरण वार्तिक-सुरेश्वराचार्य ०.२५
४७४ वेदान्त सिद्धान्त कल्पवल्ली-हिन्दी टीका सहित ०.७५
४७५ वेदान्त सिद्धान्त मुक्तावली-भा० टी० १०.००
४७६ वेदान्त सिद्धान्त संग्रह-सटीक ७.५०
४७७ वेदान्त सूत्र मुक्तावली-ब्रह्मानन्द सरस्वती कृत ३.५०
478 Vedanta Sutras of Ramanuja, Translated into English George Thibaut 20.00
479 Vedanta Sutra-Shankar Bhashya, Translated in to English-George Thibaut-2 Vols 40.00
479a Vedantic Education – C. Chatterjee 20-00
४८० वैराग्य संदीपिनी-टीका युक्त ०.१९, ०.५०

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

४८१ श्रीवैष्णव पूर्वाचार्यानुग्रहीत सकल स्तोत्रमाला ३.००
४८२ वैराग्य शतक–भा० टी० मिहिरचन्द्र ०.५०
४८३ वैराग्यशतक–साधुहरदयाल कृत टीका १.५०
४८४ वैराग्यशतक (भर्तृहरि) हिन्दी व्याख्या, पद्यानुवाद सहित १.००
485 Vairagya Shataka of Bhartrihari–with English Translation 1.00
४८६ वैराग्यशतक–वैद्य हरिदास टीका ७.००
४८७ व्याख्यानमाला—स्वामी अच्युतानन्द २.५०
४८८ शतदूषणी—वेङ्कटनाथ १.५०
४८९ शतश्लोकी—महाकवि पूर्णानन्द प्रणीत १.२५
490 Sankara–a Psycholagical study–S. K. Ramchandra Rao 3.00
491 Sankara and Bradley–S. N. L. Srivastava Shortly
492 Sankara Teaching in his own Words–Swami AtmaNand 2.50
४९३ शांकरभाष्यलोचन—गंगाप्रसाद उपाध्याय ५.००
४९४ शंकर ग्रन्थावलि—दशोपनिषद्, ब्रह्मसूत्र, भगवद्गीता, शांकर भाष्य सहित तीन भाग में ११.७५
४९५ शंकर ग्रंथावलि--(प्रकरण, लघुभाष्य, स्तोत्र, भगवद्गीता, उपनिषद्, छान्दोग्य उपनिषद् भाष्य) प्रत्येक भाग का मूल्य ६.५०
४९६ शङ्कराचार्य प्रकरण ग्रंथ (संग्रह) ७० ग्रन्थ १२.५०
497 Sankaracharya–P. Sheshadri 3.37
498 Sankaradeva, Vaisnava Saint of Assam–B. k. Barua 8.00
४९९ शङ्कराचार्य—बलदेव उपाध्याय १०.००
५०० शङ्कराचार्य का मायावाद खण्डन—राममूर्ति शर्मा १२.५०
५०१ शङ्कराचार्य का आचार दर्शन—रामानन्द तिवारी ५.००
502 Shankaras Brabmavada–Dr. R. S. S. Naulakha 25.00
५०३ शांकरपाद भूषणम्—रघुनाथ सूरि, २ भाग १२.५०
५०४ शांडिल्य भक्ति सूत्र ०.१२
५०५ शांडिल्य संहिता—अनन्त शास्त्री फड़के, सम्पादिता--२ भाग ४.२५
५०६ शारीरक मीमांसा भाष्यवार्तिक–सम्पा० अनन्तकृष्ण शास्त्री ६.२५
५०७ शास्त्र दर्पण–अमलानन्द ३.००
५०८ शास्त्रसिद्धांतलेश संग्रह ३.५०
५०९ शिवकेशादिपादान्त स्तुति–रामकृष्ण सूरि ०.७५

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

५११ श्रीभाष्य चतुःसूत्री—"समासोक्ति" टीका, वासुदेव अभ्यंकर ६.००
५१२ श्रीभाष्य—देवनागरी रसिकानुवाद, प्रथमाध्याय मात्र ४.००
५१३ शिवस्तुति–श्रीगोकुलनाथ कृत, सं० हि०, टीका ०.६२
५१४ शुद्धशांकर प्रक्रिया भास्कर--वेदान्त सिद्धांत निर्णय १.०६
५१५ शुद्धाद्वैतमार्तण्ड—(श्रीगिरधरजी विरचित) प्रकाश व्याख्या तथा प्रमेय रत्नार्णव २.५०
५१६ श्रीभाष्य प्रकाशिका--श्रीनिवासाचार्य विरचित ६.५०
५१७ श्रीभाष्यवार्तिक यतीन्द्रमतदीपिका–निवासाचार्य ५.००
518 Sribhashya of Ramanuja–English translation by George Thibaut 20.00
519 Sribhashya of Ramanuja–text with English translation R. D. Karmarkar–3 Vols. 48.00
520 Sribhashya (English translation)—M. Rangacharya & M. Aiyangar Vol I & II 35.00
५२१ श्रीमत्सनत्सुजातीयम्--शांकरभाष्य नीलकण्ठी टीका सहित २.००
५२२ श्रीराधामाधव चिन्तन ५.००
523 Sri Sankaracharya--N. Rame Sane 3.50
५२४ श्रीशांकरपीठतत्त्वदर्शनम्–स्वामी रामानन्द सम्पादितः २.५०
५२५ श्रुतिमतोद्योत–त्र्यम्बक सूरि ०.७५
५२६ श्रुत्यन्तकल्पवल्ली–पुरुषोत्तमदास विरचित ५.००
५२७ श्रुत्यन्तसुरद्रुम--पुरुषोत्तम ७.५०
५२८ श्रुतिकल्पलता--वामन कृत वेदस्तुति व्याख्या ३.५०
५२९ षट्सन्दर्भतत्त्वसन्दर्भ--सटीक १.५०
५३० सत्यदर्शन--स्वामी कालिकानन्द ६.००
५३१ सत्संग के बिखरे मोती--भाषा ०.९०
५३२ सनत्सुजातीय शांकरभाष्य--हिन्दी अनुवाद सहित २.५०
५३३ सन्मार्गदर्शन—स्वामी सर्वानन्द जी ४.००
५३४ संक्षेपशारीरकम्–स्वामी रामानन्द, स्वामी योगीन्द्रानन्द कृत स०, हिन्दी टीका १०.००
५३५ संक्षेपशारीरकम्—सुबोधिनी, अन्वयार्थ बोधिनी व्याख्या, पूना १३.५०
५३६ संक्षेपशारीरकम्—नृसिंहाश्रम कृत तत्त्वबोधिनी व्याख्या, ३,४,५ भाग ४.०६
५३७ संक्षेपशारीरक–रामतीर्थ स्वामीकृत "अन्वयार्थ प्रकाशिका" टीकासहित १०.००
५३८ संक्षेपशारीरक—"मधुसूदनी" टीका सहित १०.००

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

539 Spinoza in the Light of the Vedanta-R. K. Tripathi 12.00
५४० सारसंग्रह—रूपकविराज ६.००
५४१ सर्ववेदान्तसारसंग्रह (संस्कृत)—श्याम सुन्दर झा २.००
५४२ सारुक्तावली (हिन्दी पद्य)-हरदयाल कृत ०.३०, १.२५
५४३ सिद्धांतकल्पवल्ली—श्री सदाशिव ०.७५
544 Siddhanta Traya Sangraha—English Translation
M. R. R. Iyenger 2.00
५४५ सिद्धांतदर्शनम्—विश्वदेवाचार्य कृत निरजन भाष्य २.००
५४६ सिद्धांतबिन्दु—श्रीमधुसूदन सरस्वती विरचित, भाषानुवाद सहित २.७५
५४७ सिद्धांतबिन्दु-सटीक, वासुदेव आभ्यंकर सम्पादित ७.००
५४८ सिद्धांतरत्न—बलदेव विद्याभूषण विरचित २ भाग ४.००
५४९ सिद्धांतलेशसंग्रह--भा० टी० ६.००
550 Synthetic View of Vedanta-P. N. Srinivasachari 5.00
५५१ सुगमा—शांकरीयाध्यासभाष्य व्याख्या १.५०
५५२ सुन्दर विलास--भाषा २.५०
५५३ सूक्तावलि—सारुक्तावली--भा० टी० १.५०, ०.५०
५५४ सूतसंहिता--तात्पर्य दीपिका सहित ८.००
५५५ सूतसंहिता—सटीक ३ भाग, पूना १७.२५
५५६ सूत्रभाष्यार्थतत्त्व विवेचनी-२ भाग ३.७५
५५७ सूत्रार्थामृतलहरी—कृष्णावधूत विरचित ३.२५
558 Self and Falsity in Advaita Vedanta-A.K. Raychaudhury 7.50
559 Studies in Vedanta-J. Kirtikar Vasudeo 15.00
560 Studies in the Philosophy of Madhusudan Saraswati
S. Gupta 22.50
561 Stories from Yoga Vasishtha-Swami Sivanand 3.00
562 Self Knowledge-Swami Abhedananda 4.00
563 Century of life (Vairagyasatak)-Sri Aurobindo 2.50
५६४ स्वर्ग का विमान—भाषा ५.००
५६५ स्वरूपानुभव—क्षितीशचन्द्र चक्रवर्ती ५.००
५६६ स्वानुभावादर्श—माधवाश्रम विरचित, सटीक ५.००
५६७ स्वरूपानुसन्धान-गौरीशङ्कर उदयशङ्कर, हिन्दी ५.००
५६८ हिन्दी भक्तिरसामृतसिन्धु-आचार्य विश्वेश्वर २५.००

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

५६९ हरिभक्ति रसामृत सिन्धु (रूपगोस्वामी) भा० टी०—व्याख्याकार श्यामनारायण पाण्डेय ९.५०
570 HariBhakti Rasamrita Sindhu (Rupagoswami) English Translation—Hrdaya Bon Maharaj Vol I 32.00
५७१ हरिहराद्वैत भूषणम्--कारिका सहित ६.६२
572 How to Recognize the Method of Vedanta 2.25
573 Heritage of Sankara—S. S. Roy 25.00
574 History of Dvaita School of Vedanta & its Literature 2 Vols-B. H. K. Sharma 45.00
575 History of Indian Epistemology—Jwala Prasad 25.00
576 Homage to Sankara–T. M. P.Mahadevan 1.50

श्रीरामानन्दवेदान्त ग्रन्थाः

१ अर्थपंचक—स्वामि श्री वैष्णवाचार्य कृत .७५
२ अधिकरण रत्नमाला तथा श्रीरामानन्दसिद्धान्तसार स्वामी श्री वैष्णवाचार्य कृत १.७५
३ आचार्य निबन्धमञ्जूषा—मूल .५०
४ आनन्दभाष्य (ईक्षत्यधिकरणान्त) हिन्दी अनुवाद सहित ५.००
५ आनन्दभाष्य (मूल) भगवदरामानन्दाचार्य विरचित शीघ्र छपेगा
६ गीतार्थसुधा—ज० गु० अनुभवानन्दाचार्यकृता हिन्दी अनुवाद .३०
७ छान्दोग्योपनिषद् का आनन्दभाष्य शीघ्र छपेगा
८ प्रमेय परिशोधिनी—स्वामी श्रीवैष्णवाचार्यकृत .८०
९ प्रश्नोत्तरमाला—स्वामी श्रीवज्रांगाचार्य कृत १.५०
१० भगवद्गुणदर्पण—ज० गु० श्रीमधुराचार्य कृत १.५०
११ भगवन्नामकौमुदी—पंडितवर्य श्रीलक्ष्मीधर कृत १.७५
१२ भक्तमाल (मूल) ज० गु० श्रीनाभाचार्य कृत .७५
१३ भक्तिवाद (सटीक) स्वामी श्रीवैष्णवाचार्य कृत १.७५
१४ भगवद्गीता का आनन्दभाष्य तथा महामहोपाध्याय स्वामी श्रीरघुवराचार्य अर्थचन्द्रिका टीका ७.००
१५ मानरत्नावली (मयूख टीका) स्वामी श्रीवैष्णवाचार्य कृत १.५०
१६ मन्त्रराजमीमांसा—म० म० स्वामी श्रीरघुवराचार्य कृत तथा स्वामी श्रीबालकृष्णाचार्य कृत हिन्दी टीका १.७५

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

१७	मैथिली महिम्नस्तोत्र–ज० गु० श्री सुरसुरानन्दाचार्य कृत तथा स्वामी श्री कपिलदेवाचार्यकृत हिन्दी टीका	.७५
१८	मंगलशिक्षाम्बुधि–ज० गु० श्री मंगलाचार्यकृत	२.००
१९	रामपद्धति–म० म० स्वामी श्री रघुवराचार्यकृत हिन्दी टीका	०.७५
२०	शिक्षाभागीरथी–ज० गु० श्री मंगला चार्यकृत	३.००
२१	शिक्षा सुधा–ज० गु० श्री टीलाचार्यकृत	०.७५
२२	श्रौतसिद्धान्तचालीसा (सटीक) स्वामी श्री वैष्णवाचार्य कृत	.४०
२३	श्वेताश्वतरोपनिषद् का आनन्दभाष्य	यन्त्रस्थ
२४	स्तोत्र कुसुमाञ्जलि–स्वामी श्री वैष्णवाचार्यकृत	यन्त्रस्थ

न्याय–वैशेषिक–मीमांसा–सांख्य–योग

Prakaran Pancika of Salikanatha Misra

with NYAYA-SIDDHI commentary of JAYAPURI NARAYANA BHATTA, Edited with Introduction & Notes *by* MIMAMSA RATNAM PT. A. SUBRAHMANYA SASTRI, *Royal Octavo : Pages* 632 : *Cloth Bound* : *Price Rs.* 25.00

The volume is also referred to by Bhavanatha as Prakarana or Pancika-prakarana and by Ramanujacharya in his Nayakaratna as Prakaranasalika. PRAKARAN PANCIKA IS THE MOST CELEBRATED NAME & is concerned with 14 Prakaranas.

NYAYASIDDHI is the commentary by Jayapuri Narayana and is published for the first time with the text. This commences from the beginning of the text and extends upto the definition of ANUMANA. The author explains the text very accurately avoiding deviations and at times he gives fresh interpretations for the Vedic Text taken by Salikanatha in his support, and above all he has devoted a chapter to the explanation of the categories accepted by the Prabhakaras. Narayan accepts krama (sequence) as a distinct category not accepted as such by anyone else.

Purva Mimansa in its Sources

by DR. GANGANATHA JHA. *Royal Octavo* : *Pages* 508 : *Bound Price Rs.* 15.00

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

Mimansa deals entirely with spiritual truths, which are not amenable to any ordinary means of knowledge—being cognisable only through the Revelation. Pure Mimansa is termed as Purva Mimansa while the Vedanta as Uttara Mimansa but both of them are inter-related and inter-dependent.

For the enquiry into **Brahman—Brahmajijnasa,**—which can be carried on only on the basis of Vedic Texts,—it is essential (a) that the authority and reliability of the Veda should be established beyond doubt,—and (b) that certain methods of interpreting those texts should be elaborated, in order to avoid confusion in the course of the study of the vast mass of Vedic material. Both these requirements have been met by Mimansa Proper; and it is on the basis of the Purva, Preliminary, Mimansa that the Vedantin has raised the edifice of Vedanta proper.

Critique of Indian Realism

A study of the conflict between the Nyaya-Vaisesika & The Buddhist Dignaga School. by Dr. D. N. Shastri.

Demy Octavo pp 594 : Full cloth bound Price Rs. 36.00

The basic contention of the author that, for an adequate understanding of the Nyaya-Vaisesika philosophy, it is essential to consider it in relation with its conflict with the Buddhistic school of Dignaga and Dharmakirti is fully established. Following this method, Sri Shastri has been able to throw great light upon most of the basic Nyaya-Vaisesika conceptions, such as substance, the universal (*samanya*), *samavaya*, causation and perception. He has shown not only what these conceptions and their full implications are, but also how they came to be formulated, step by step, under the impact of the revolutionary Buddhist logic. *As a result, our understanding of the Nyaya-Vaisesika would be considerably modified and improved.* This in itself constitutes a brilliant achievement.

An Outline of Critique of Indian Realism

A study of the Conflict Between the Nyaya-Vaisesika and the Buddhist Dignaga School. by Dr. D. N. Shastri.

Demy Octavo :: pp 215 :: Full Cloth Bound Price Rs 18.00

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

Problems of the Conflict
Between
The Nyaya-Vaisesika & The Buddhist
Dignaga School

The first Chapter of the main book Separately published.

Price Rs. 1.00

सांख्यकारिका

अन्वय, अर्थ, गौड़पादभाष्य, भाष्य का अनुवाद और टिप्पणी सहित

इसमें कारिका तथा भाष्य का अन्य संस्करणों से मिलाकर संशोधन कर दिया गया है। साथ ही कारिकाओं तथा भाष्य का विस्तृत हिन्दी अनुवाद भी कर दिया गया है। इस तरह यह संस्करण छात्रोंके लिए अत्यन्त उपयोगी बन गया है। मू. २.००

सांख्यतत्त्वकौमुदी

विस्तृत टिप्पणी तथा भाषानुवाद सहित

आचार्य डा० रामशंकर भट्टाचार्य एम. ए., पी. एच. डी.

डा० भट्टाचार्य का सांख्य योग पर जो गम्भीर अध्ययन है वह इस पुस्तक में उडेल कर रख दिया गया है। वाचस्पति जैसे उद्भट विद्वान् की प्रौढ़ शब्दावली को इस अनुवाद में अत्यन्त सरल और सर्वसाधारण के लिये सुलभ कर दिया है। सांख्यदर्शन की महत्त्वपूर्ण गुत्थियों को टिप्पणी मे सुलझा दिया है विस्तृत एव गवेषणापूर्ण भूमिका में प्रायः सभी उपयोगी ज्ञातव्य बातें दे दी गई हैं। ऐसा उत्तम संस्करण आजतक कोई प्रकाशित नहीं हुआ। मूल्य १०.००

तर्क-संग्रह

पं० ज्वालाप्रसाद गोड न्यायाचार्यकृत छात्रोपयोगी 'कृष्णाख्या' अत्यन्त सरल सुबोध हिन्दी टीका तथा टिप्पणी सहित। मूल्य ०.४०

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

न्यायसिद्धान्तमुक्तावली

(हिन्दी अनुवाद और व्याख्या)

दार्शनिक आलोचना और विवेचना सहित

(प्रो० धर्मेन्द्रनाथ शास्त्री, तर्कशिरोमणि कृत)

न्यायसिद्धान्तमुक्तावली को भारतीय दर्शन के किसी भी सम्प्रदाय की दुरूह और जटिल पारिभाषिक भाषा और सिद्धान्तों में प्रवेश पाने के लिए द्वार समझा जाता है। परन्तु दर्शनशास्त्र का प्रथम प्राइमर होने पर भी यह ग्रन्थ नव्यन्याय की जटिल शब्दावली और प्रक्रिया से युक्त होने के कारण पर्याप्त कठिन है। इसका प्रथम भाग यों तो प्रत्यक्षखण्ड कहलाता है परन्तु उसमें प्रत्यक्ष प्रमाण निरूपण के साथ २ प्रारम्भ की प्रस्तावना में न्यायवैशेषिक का लगभग सारा ही विषय संक्षिप्त रूप से आ जाता है। इस प्रकार न्यायसिद्धान्तमुक्तावली के प्रथमखण्ड को भारतीय दर्शन का द्वार समझना चाहिए। प्राचीन पद्धति से पढ़नेवाले छात्र विशेषकर प्रारम्भ में दर्शन शास्त्र जैसे विषय का भी अध्ययन रटकर ही करते पाये जाते हैं, परन्तु इस व्याख्या में दार्शनिक तत्त्वों को इस प्रकार सुलझाकर समझाया गया है कि जिससे पढ़ने वालों के अन्दर दार्शनिक बुद्धि का विकास हो। उत्तम छपाई एवं कपड़े की जिल्द सहित—

मूल्य ५.२५

न्यायसिद्धान्तमुक्तावली प्रश्नोत्तरी

विद्वान् लेखक ने इस प्रश्नोत्तरी को लिखकर मुक्तावली को मानो वास्तव में छात्रों के लिए 'मुक्तावली' बना दिया है। छात्रोपयोगी हर एक प्रश्न जो परीक्षा में पूछे जा सकते हैं सब उत्तर सहित सुबोध और सरल भाषा में दिये गये हैं। मूल्य १.२५

न्यायसिद्धान्तमुक्तावली

(न्यायाचार्य पं० श्रीज्वालाप्रसाद गौड़)

विरचित छात्रोपयोगिनी

अति विस्तृत तथा सरल विलासिनी नामक संस्कृत तथा हिन्दी दो टीकाओं सहित

इस ग्रन्थ की प्रसिद्धि संस्कृत साहित्य में कितनी है, यह किसी से छिपा नहीं है। साथ ही इसकी दर्जनों टीकाएँ हो चुकी हैं किन्तु फिर भी छात्रों के लिए यह ग्रन्थ

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

दुरूह ही प्रतीत होता था। पं० श्रीज्वालाप्रसाद गौड ने विलासिनी नामक संस्कृत टीका एवं हिन्दी टीका द्वारा इसे इतना सुगम बना दिया है कि आसानी से छात्रों के हृदयंगम हो सके। इसकी अधिक प्रशंसा करना सूर्य को दीपक दिखाना है, स्वयं देखकर अनुभव करें। मूल्य प्रत्यक्ष खण्ड ५), अनुमान खण्ड २॥), शब्द खण्ड २), गुण निरूपण ५), सम्पूर्ण पक्की कपड़े की जिल्द में १५)

श्रीगङ्गेशोपाध्यायविरचितम्

केवलान्वयि-प्रकरणम्

रघुनाथशिरोमणिकृत दीधिति और श्रीजगदीशभट्टविरचित जागदीशी समन्वित

श्रीन्यायाचार्य केशवदेव कृत नारायणी और शक्ति टीकाओं से युक्त न्याय शास्त्र के इस अनुपम ग्रन्थ का मूल्य केवल ४.००

भारतीय दर्शन शास्त्र (न्याय वैशेषिक)

(ले०-प्रो० धर्मेन्द्रनाथ शास्त्री तर्कशिरोमणि)

यह ग्रन्थ ऐसे अनुभवी विद्वान् द्वारा लिखा गया है जिन्होंने अपना जन्म भारतीय दर्शन के अध्ययन में ही लगा दिया है और पाश्चात्य दर्शन शास्त्र में भी निष्णात हैं। २५ वर्ष से अधिक समय तक एम० ए० श्रेणी के छात्रों को भारतीय दर्शन का अध्ययन करानेवाले प्रौढ़ दार्शनिक द्वारा लिखा गया यह ग्रन्थ अपने ढंग का अनूठा है। हिन्दी भाषा में तो इस प्रकार की यह पहिली रचना है।

सारे वैदिक दार्शनिक सम्प्रदायों के विवरण के साथ २ इसमें बौद्ध दर्शन के साहित्य और सिद्धान्तों का प्रामाणिक विवेचन विशेष रूप से किया गया है। दार्शनिक विवेचन संक्षिप्त होने पर भी आलोचनात्मक है। न्याय वैशेषिक शास्त्र ही भारतीय दर्शन का द्वार है, जो इस ग्रन्थ का मुख्य विषय है। उसका संक्षिप्त परन्तु पूर्ण इतिहास और सिद्धान्तों का विशद तथा आलोचनात्मक विवेचन इस पुस्तक में प्रस्तुत किया गया है। भारतीय दर्शन शास्त्र में प्रवेश चाहनेवाले पाठकों के लिए यह ग्रन्थ बहुत लाभदायक और उपयोगी है। ग्रन्थ पर डालमिया पुरस्कार मिला हैं! मूल्य ३.००

पूर्वी और पश्चिमी दर्शन

लेखक—डाक्टर एन्० के० देवराज

ऐसे तो दर्शनों पर अनेक विद्वानों ने अपने विचारों को प्रकट कर सरस्वती के

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

भण्डार को समृद्धिशाली बनाया है किन्तु प्रस्तुत पुस्तक के प्रस्तोता डा० देवराज को प्रतिभा का प्रमाण स्वरूप यह पुस्तक दर्शनीय है। मूल्य ३.५०

The Yoga System of Patanjali

Embracing the Mnemonic Rules, called *Yoga*–Sutras, of Patanjali, and the Commentary, called *Yoga*–Bhashya, attributed to Veda–Vyasa, and the Explanation, called Tattva–Vaisaradi, of Vachaspati–Misra. Translated from the original Sanskrit by J. H. Woods, page 422 Royal 8, Price app. Rs. 15

Three works in one pair of covers. The Rules are a set of mental pegs on which to hang the principles and precepts of a system which you must learn from the living teacher of your 'school'. The Comment is a reinvestiture of the skeleton of the Rules with the flesh and blood of comprehensible details. And the Explanation is of course a commentary on the Comment. The Comment is the oldest written systematic exposition of *Yoga*–doctrine in Sanskrit that we possess.

Of the Hindu philosophies, by far the most important are the ancient dualism called Sankhya, the monism of the Vedanta and the *Yoga*-system. Kautilya, prime minister of Chandragupta (300 B. C.) mentions Sankhya and *Yoga* as current in his day. But the elements of *Yoga*, rigorous austerities and control of the senses, are indefinitely antique, and are one of the oldest and most striking products of the Hindu mind and character.

When one considers the floods of pseudo scientific writing with which the propagandists of Indian "isms" in America have deluged us, one is the better prepared to appreciate the self restraint of Dr. Woods in keeping all that pertains to miracle mongering and sensetionalism In the background, and in devoting himself to the exposition of the spiritual and intellectual aspects of *Yoga*. His work "continues the tradition of austere-scholarship" which has, from the beginning characterized the Harvard Oriental series.

——

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

न्याय-वैशेषिक के अन्य महत्त्वपूर्ण ग्रन्थ

१	अनुमानदीधितिप्रसारिणी—३ भाग	२.२५
२	अनुमितेर्मानसरिविचाररहस्यम्—हरिराम तर्क वागीश	६.००
३	अवच्छेदकत्वनिरुक्ति (जागदीशी) मूल	०.२४
४	अवच्छेदकत्वनिरुक्ति—जागदीशी सटीक, श्री वामाचरण	४.००
५	अवयवप्रकरणम्—ज्वालाप्रसाद गौड़	८.००
६	आत्मतत्त्वविवेक—उदयनाचार्य, नारायणी व्याख्या सहित	१२.५०
७	आत्मतत्त्वविवेक (बौद्धन्यायखण्डनम्)—उदयनाचार्य रचित, रामतर्कालंकार भट्टाचार्य कृत टिप्पणी, १–६ खण्ड	१५.००
8	Advanced Studies in Indian Logic & Metaphysics Sukhlal Sanghvi	12.50
9	Inductive Reasoning—A study of Tarka & its Role in Indian Logic—Bagchi	16·00
१०	उपेन्द्र विज्ञानसूत्र (सटीक)	१.००
11	Outline of Critique of Indian Realism–D. N. Shastri	18·00
१२	कणादगौतमीयम्—विश्वनाथ शास्त्री	१.५०
१३	कारिकावली अनुमान खण्ड—पं० राजनारायण शास्त्री सं. टी. भा. टी.	१.००
१४	कारिकावली अनुमानखण्ड तथा शब्दखण्ड—पं० राजनारायण शास्त्री कृत सं. टी. भा. टी.	१.२४
१५	कारिकावली—देवीसहाय मिश्र कृत मुक्तावली-कण्ठाभरण व्याख्या सहित	०.७५
१६	कारिकावली—मुक्तावली प्रभा-मञ्जूषा-दिनकरीय-रामरुद्रीय—गंगाराम टीकया सहिता	१२.००
१७	कारिकावली-मुक्तावली-दिनकरी-रामरुद्री सहिता	६.००
१८	कारिकावली-मुक्तावली "न्याय चन्द्रिका" टीका सहित	१.२५
१९	कारिकावली मुक्तावली—"मयूख प्रकाश" संस्कृत हिन्दी व्याख्या सहित शब्द खण्ड १.२५ प्रत्यक्ष खण्डान्त	१.२५
	सम्पूर्ण	२.५०
२०	कारिकावली मुक्तावली तत्वालोकः मुक्तावली प्रश्नोत्तरी—श्रीरुद्रधर झा	१·२५
२१	कारिकावली सिद्धान्त मुक्तावली सहित	१·००
२२	कारिकावली सिद्धान्त मुक्तावली सहिता—सटिप्पण	१·२५
२३	कारिकावली—शब्द खण्ड सटीक पं० हरिहर शास्त्री कृत प्रभा टीका	०·४८
२४	कारिकावली—न्यायसिद्धान्त मुक्तावली, पं० छज्जूरामविवृति	२·४८

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

२५ किरणावली—उदयनाचार्य, अपूर्ण ३ खण्ड २१.५०
२६ किरणावलीप्रकाश (गुण प्रकरणम्) २ भाग ३.००
२७ कुसुमाञ्जलिकारिका कुसुमावलीकारिका व्याख्या—उदयनाचार्य ३·००
28 Critique of Indian Realism—D. N. Shastri 35.00
२९ केवलान्वयिप्रकरण–जगदीशी चार टीका सहित ०·४०
३० केवलान्वयि प्रकरण रघुनाथ शिरोमणि कृत दीधिति, जागदीशी
पं० केशवदेव द्विवेदी कृत 'नारायणी' 'शक्ति' ४ व्याख्या ४·००
३१ क्रोडपत्र संग्रह—कालीशङ्कर प्रणीतानि अनुमान जागदीशी यन्त्रस्थ
अनुमान गदाधरी क्रोडपत्राणि १०.००

32 Conception of Matter according to Nyaya Vaisesika
Philosophy–Umesh Mishra 20.00
३३ गदाधरी सव्यभिचारप्रकरण—पं० वामाचरण भट्टाचार्य ५·४८
३४ गदाधरीसामान्यनिरुक्ति—गूढार्थ तत्वालोक २·५०
३५ गुरुसम्मत पदार्थ तथा कौमारिल मतोपन्यास ०·८७
३६ चतुर्दशलक्षणी–द्वितीय लक्षणान्त, ३ सं० टी० १०·००
३७ जागदीशी अवच्छेदकत्वनिरुक्ति "गङ्गा" व्याख्या सहित २·५०
३८ जागदीशी पक्षता—पं० शिवदत्त मिश्र कृत "गङ्गा" व्याख्या सहित ४·००
३९ जागदीशी पञ्चलक्षणी सिह व्याघ्र लक्षणयोश्च क्रोडपत्रम् ०·२०
४० जागदीशी व्यधिकरण धर्मावच्छिन्नाभावस्य कालीशङ्करी ०·५०
४१ जागदीशी सिद्धान्त लक्षणस्य क्रोडपत्रम् ०·६५
४२ जागदीशी सिंहव्याघ्रलक्षण–पं० वामाचरणभट्टाचार्य २·४८
४३ जागदीशी–व्यधिकरण–पं० शिवदत्त कृत व्याख्या ४·५०
४४ जागदीशी–सामान्यलक्षणप्रकरण, "काशिकानन्दी व्याख्या" ४.५०
४५ ज्ञानलक्षणविचाररहस्य—पं० हरिराम १०·१२
४६ तत्वचिन्तामणि-आलोक, आलोकदर्पण कण्टकोद्धार प्रगल्मीत
टीकाभिःसहितः सम्पा०–पं० सूर्यनारायण शुक्ल १·२५

४७ तत्त्वचिन्तामणि–गंगेशोपाध्याय,–'आलोक' 'दर्पण' टीकासहित, भाग १ १२·००
४८ तत्वचिन्तामणि—दीधिति प्रकाश, द्वितीय खण्ड २०.००
४९ तत्त्वसार—राखालदास न्यायरत्न विरचित १·००
५० तर्कपद्यरत्नावली—सुन्दराचार्य विरचित १·१३
५१ तर्कभाषा–केशव मिश्र प्रणीत, मूल ·६५

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

५२ तर्कभाषा "तत्त्वालोक" संस्कृत हिन्दी टीका सहित सुलभ संस्करण १·५०
उत्तम संस्करण २·००
५३ तर्कभाषा—डा० सत्यनारायण पाण्डे कृत हिन्दी टीका २·००
५४ तर्कभाषा—प्रभा प्रसारिणी, सं० टी० भाषा टीका १·००
५५ तर्कभाषा (केशव मिश्र)—चिन्नम्भट प्रकाशिका २·२५
56 Tarka Bhasha-Text with English Translation–G. Jha 5.00
५७ तर्कभाषा (केशव)—सुरेन्द्रनाथ कृत, चिदानन्दी सं० हि० व्याख्या १·५०
५८ तर्कभाषा—विश्वेश्वर कृत तर्करहस्यदीपिका सहित (हिन्दी) ६·००
५९ तर्कभाषा रहस्यम् (प्रश्नोत्तरी) ·४०
६० तर्कसंग्रह—सुख प्रवेशिनी टीका १·००
६१ तर्कसंग्रह (अन्नंभट्ट)—टीकाकार क्षमाकल्याणमणि ३·००
६२ तर्कसंग्रह—लक्षण टिप्पणी सहित ·२५
६३ तर्कसंग्रह—सटीक, मद्रास २·२५
६४ तर्कसंग्रह—सिद्धान्तचन्द्रोदय टीका सहित १·००
६५ तर्कसंग्रह—अन्नंभट्ट कृत दीपिका तथा गोवर्द्धन कृत न्याय बोधिनी
सहित—भूमिका टिप्पणी तथा अंग्रेजी अनुवाद बोडस संपादित १५·००
६६ तर्कसंग्रह—न्यायबोधिनी सहित, भाषानुवाद १·७५
६७ तर्कसंग्रह—न्यायबोधिनी पद कृत्य (संस्कृत) टीका सहित ·६०
६८ तर्कसंग्रह—वि० वा० पं० शिव नारायण जी रचित टीका १·७५
६९ तर्कसंग्रह सटीक, राजनारायण शास्त्री ·४०
७० तर्कसंग्रह—दीपिका ०.५०, १·००
७१ तर्कसंग्रह—म० म० माधवशास्त्री भांडारी १·५०
७२ तर्कसंग्रह—हिन्दी टीका, गौरीनाथ पाठक ०·२५
७३ तर्कसंग्रह—पं० ज्वाला प्रसाद कृत छात्रोपयोगी 'कृष्णाख्य' सरल
हिन्दी टीका सहित ·४०
७४ तर्कसंग्रह—शिशुहिता व्याख्या सहित—हरिशंकर झा ·१९
७५ तर्कसंग्रह—तत्त्वबोधिनी, विस्तृत हिन्दी व्याख्या सहित १·१३
७६ तर्कसंग्रह—सटिप्पण दिनकर विष्णु गोखले, पूना ·७५
७७ तर्कसंग्रह "दीपिका" "न्यायबोधिनी" टीका और टिप्पणी के साथ ·६५
७८ तर्कसंग्रह "दीपिका" तथा लक्षण टिप्पणी सहित हि० भा० टी० ·५०
79 Tarka Sangraha—with English Translation–K. Ray 2.50
८० तर्कसंग्रह—न्यायबोधिनी, पदकृत्य १·२५

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

८१ तर्कसंग्रह रहस्यम् (प्रश्नोत्तरी) ·७५
८२ तर्कसंग्रह—न्यायबोधिनी–पदकृत्य विरला इन्दुमती हिन्दी टीका सहित १·००
८३ तर्कसंग्रह–पद कृत्य, हिन्दी टीका ०·६०
८४ तर्कामृत–भाषा टीका ०·६३
८५ तर्कामृतम्–"प्रकाश" संस्कृत हिन्दी व्याख्या सहितम् ·७५
८६ त्रितलावच्छेदकतावाद—शशिनाथ प्रणीत ४·५०
८७ दर्शनसर्वस्व—शङ्करचैतन्य २·२५
८८ ध्वंसजन्यभावयोः कार्यकारणभावरहस्यम्–हरिराम तर्कवागीश ५·६२
८९ न्यायकुसुमाञ्जलि भाग १—शङ्कर मिश्र और गुणानन्द
विद्यावगीश कृत व्याख्या ३·००
९० न्यायकुसुमाञ्जलि–उदयनाचार्य प्रणीत, "अर्थ प्रकाशिका" (जलद)
मकरन्द, प्रकाश, बोधिनी आदि ४ व्याख्या सहित १८·००
९१ न्यायकुसुमाञ्जलि (हिन्दी) हरिदासी टीका सहित,
व्याख्याकार आचार्य विश्वेश्वर ९·००
९२ न्यायकौस्तुभ (प्रत्यक्ष खंड) महादेव पुणताम्बेकर विरचित ३·२५
९३ न्यायदर्शन-हिन्दी टीका सहित, श्री रामशर्मा ४·००
९४ न्यायदर्शन—भाषा भाष्य, स्वामी दर्शनानन्द २·००
९५ न्यायदर्शन–वात्स्यायन भाष्य तथा डा० उदय नारायण सिंह भाषानुवाद ३·५०
९६ न्याय (सूत्र पाठ) दर्शनम् —गौतम महामुनि प्रणीतम् ०.२०
97 Nyaya Theory of Knowledge–Satish Chandra Chatterji 12.00
९८ न्यायप्रकाश—हरिपुष्पाचार्य ०.६५
९९ न्यायप्रकाश—स्वामी चिदघनानन्द (हिन्दी) १२·००
१०० न्यायप्रदीप—स्व० पं० गंगासहाय कृत, मूल १·७५
१०१ न्यायरत्नम्—मणिकण्ठ मिश्र कृतम्, नृसिंहयज्व कृता
"द्युति मालिका" टीका १०.००
१०२ न्यायरत्नदीपावली–टी० चन्द्रशेखर सम्पादित ११.२५
१०३ न्यायलीलावती—वल्लभाचार्य कृत मूल १.२५
१०४ न्यायलीलावती—श्रीभगीरथ ठक्कुर, श्रीवर्धमानोपाध्याय श्रीशङ्कर मिश्र
रचित विवृतिप्रकाश कण्ठाभरणेन च समन्विता २२.५०
१०५ न्यायसार—श्रीभासर्वज्ञ वासुदेवसूरिकृत न्यायसारपदपञ्चिका
व्याख्या सहित ४.००

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

१०६ न्यायसार—भासर्वज्ञ विरचित, न्याय मुक्तावल्या, न्यायकला निधिता १८.००
१०७ न्यायसिद्धान्ततत्त्वामृत—श्रीनिवास कृत २.५०
१०८ न्यायसिद्धान्तमञ्जरी—जानकीनाथ कृत व्याख्या ३.००
१०९ न्यायसिद्धान्तमाला—जयराम न्यायपञ्चानन भट्टाचार्य २ भाग ३.१२
११० न्यायसिद्धान्तमुक्तावली, हिन्दी व्याख्या प्रत्यक्ष खण्ड
डा० धर्मेन्द्र नाथ शास्त्री ५.२५
१११ न्यायसिद्धान्तमुक्तावली—प्रभा सरस्वती सं० हि० टीका (अनुमान खण्ड) १ ००
११२ न्यायसिद्धान्त मुक्तावली—प्रभा सरस्वती सं० हि० टीका (शब्द खण्ड) ०.८०
११३ न्यायसिद्धान्त मुक्तावली (प्रत्यक्ष खण्ड) पं० ज्वालाप्रसाद गौड़ ५.००
११४ न्यायसिद्धान्तमुक्तावली (अनुमान खण्ड)–पं० ज्वालाप्रसाद गौड़ २.५०
११५ न्यायसिद्धान्तमुक्तावली (शब्द खण्ड)–पं० ज्वालाप्रसाद गौड़ २.००
११६ न्यायसिद्धान्तमुक्तावली (सम्पूर्ण)–पं० ज्वालाप्रसाद गौड़ सं०हि०टीका १५.००
११७ न्यायसिद्धान्तमुक्तावली (भूमिका)—पं० ज्वालाप्रसाद गौड़ ,, २.५०
११८ न्यायसिद्धान्तमुक्तावली (गुणनिरूपण)—ज्वालाप्रसाद गौड़ ,, ५.००
११९ न्यायसिद्धान्तमुक्तावली प्रश्नोत्तरी—पं० विश्वनाथ १.२५
१२० न्यायसिद्धान्तमुक्तावली–भा० टी०, निर्मल पं० गोविन्द सिंह ५.००
१२१ न्यायसूत्रम्—वात्स्यायन भाष्य सहित ६.७५
१२२ न्यायेन्दुशेखर—लक्ष्मीनृसिंह शास्त्री .२५
123 Padarthatattvanirupanam of Raghunatha Siromani
with English translation–Karl. H. Potter 40.00
१२४ पदार्थमण्डनम्—वेणीदत्त रचित ०.८७
१२५ पदार्थरत्नमंजूषा—कृष्णमिश्र ३.७५
१२६ पदार्थशास्त्र–(वैशेषिक दर्शन के सिद्धान्तानुसार) २.५०
१२७ पदार्थीयदिव चक्षु—उमापति २.५०
१२८ पाशुपतसूत्र—कौंडन्य भाष्य सहित २.२५
१२९ प्रमाणमञ्जरी—सर्वदेव सूरि (प्राचीन न्याय ग्रन्थ) ०.२५
१३० प्रमाणमञ्जरी—डा० प्रियबाला शाह सम्पादित २.५०
१३१ प्रमाणमञ्जरी—अद्वयारण्य, बलभद्र एवं वामनभट्ट कृत टीका त्रयोपेता ६.००
१३२ प्रशस्तपादभाष्य टीकासंग्रह–कणादरहस्यं प्रशस्तपादभाष्यं समालोचनम् ५.००
133 Problems of Conflict between the Nyaya Vaisesika
& Buddhist Dignaga School—D. N. Shastri 1.00
१३४ प्रामाण्यवाद—विश्वबन्धु भट्टाचार्य ५.६२

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

१३५	प्रामाण्यवाद–सटीक, पं० राजनारायण शास्त्री	४.००
१३६	प्रामाण्यवाद दीपिकाकार—श्रीवामाचरण भट्टाचार्य	०.८०
137	Fundamentals of Logic—T. M. P. Mahadevan	5.00
138	Philosophy of logical Construction—N. K. Ganguly	20.00
१३९	भारतीय दर्शन परिचय–प्रथम खण्ड (न्याय दर्शन), हरिमोहन झा	७.५०
१४०	भारतीय दर्शन परिचय–द्वितीय खण्ड (वैशेषिक दर्शन)–हरिमोहन झा	७.५०
१४१	भारतीय दर्शन शास्त्र (न्याय वैशेषिक)—डा० धर्मेन्द्र नाथ शास्त्री	३.००
१४२	भाषापरिच्छेद—मुकुन्द झा "कारिकावली" और अर्थदीपिका सहित	१·००
143	Bhasha Pariccheda with Siddanta Muktavali Teut with English Translation—Swami Madhava Nanda	4.00
१४४	भाषापरिच्छेद—पंचानन भट्टाचार्य, सटीक	५.००
१४५	भास्करोदय— "तर्क-संग्रह" दीपिका प्रकाशिकी व्याख्या	२.००
१४६	भेदसिद्धि—विश्वनाथ पंचानन	१.७५
१४७	मणिकण—श्रीकृष्ण शर्मा सम्पादित तथा अंग्रेजी अनुवाद	१०.००
१४८	मथुरानाथीय व्याप्तिपञ्चक टीकायाः क्रोडपत्रम्	.२०
१४९	माथुरीतर्कप्रकरण—श्रीवामाचरण भट्टाचार्य रचित विवृति सहितम्	१.००
१५०	माथुरीपंचलक्षणी–सटीक	०.५०
१५१	माथुरीव्याप्तिपंचकरहस्य, सिंह व्याघ्र लक्षण रहस्यं "गंगानिर्झरिणी" व्याख्या सहितम्	२.००
१५२	मुक्तिवादः चन्द्रिकाख्यविवृत्या समलंकृतः	.५०
१५३	मुक्तिवादरहस्य—पं० हरिराम	११.२५
154	Materials for the Study of Navya Nyaya Logic David H. H. Ingalls	48.00
155	Modern Introduction to Indian Logic–S. S. Barlinge	10·00
१५६	रससार—भट्टवादीन्द्र	१.१२
१५७	लक्षणमाला—उदयनाचार्य, व्याख्याकार–शशीनाथ	३.००
१५८	लक्षणावती—उदयनाचार्य, व्याख्याकार केशवभट्ट	२.७५
१५९	वादवारिधिः—श्रीगदाधर भट्टाचार्यादि विरचित, खंड १–३	७.५०
१६०	विषमतावादः—ढुण्ढिराज शास्त्री कृत टिप्पणी सहित	.२५
१६१	वैशेषिकदर्शन–कणाद मुनि, अनु०–स्वामी दर्शनानन्द सरस्वती	४.००
१६२	वैशेषिकदर्शनम्–वैशेषिक रसायनाख्य, सरल व्याख्या समेतम्	७.००
१६३	वैशेषिकदर्शन हिन्दी टीका सहित–श्रीराम शर्मा	४.००

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

१६४	वैशेषिकदर्शन—अज्ञात कर्तृक टीका सहित	६.५०
१६५	वैशेषिकदर्शनम्—मद्रास, वीरराघवाचार्य टीका	८.००
१६६	वैशेषिक दर्शन विमर्शः	०.५०
167	Vaiseshika Philosophy—Translation & Notes—H. Ui, F. W. Thomas	16·00
१६८	वैशेषिकसूत्र—मुनिजाम्बूविजय जो सम्पादित	२५.००
१६९	व्याप्तिपंचक—सिंहव्याघ्रलक्षण, माथुरी, दीधिति, जागदीशी युक्त चन्द्रिका. शुद्धाद्वैत (पदार्थ) मणिमाला सहित	२.००
१७०	व्युत्पत्तिवाद—गदाधर भट्टाचार्य विरचित तथा जया टीका	५.००
१७१	व्युत्पत्तिवादकुञ्चिका—गौरीनाथ पाठक	०.७५
१७२	व्युत्पत्तिवादतरणि (व्युत्पत्तिवाद प्रश्नोत्तरी)—उग्रानन्द झा कृत	.८७
१७३	व्युत्पत्तिवाद प्रश्नोत्तरावली—वेणीमाधवशास्त्री	१.४८
१७४	व्युत्पत्तिवाद—लकारार्थ विचार (गदाधर)—सुवह्मण्य शास्त्री कृत विवरण सहित	७.४०
१७५	व्युत्पत्तिवर्द्धिनी कुलानन्द	०.५०
१७६	शक्तिवाद—"आदर्शख्य" व्याख्या सहित	४.५०
१७७	शक्तिवाद—हरिनाथो "विवृति" सहित	४.००
१७८	शक्तिवाद—"मञ्जूषा" तथा विनोदिनी सहित	४.००
१७९	शब्दशक्ति प्रकाशिका—जगदोश तर्कालंकार कृत प्रथम भाग	१.७५
१८०	सङ्गमेश्वरक्रोडम्—जागदीशो सिद्धांतलक्षए	१.००
१८१	सत्प्रतिपक्ष ग्रंथ—ज्वालाप्रसाद गौड़	७.००
182	Saptapadarthi of Sivaditya with English Notes and Translation—D. Gurumurti	2.00
183	Studies in Nyaya Vaisesika Theism—Dr.G.Bhattacharya	16.88
१८४	सिद्धान्तमुक्तावली—ढुंढिराज शास्त्री	२.००
१८५	सर्वतंत्र सिद्धान्तपदार्थ लक्षणसंग्रह—भिक्षु गौरीशङ्कर संग्रहीत	०.७५
186	History of Navya Nyaya in Mithila—D.C. Bhattacharya	13.50

मीमांसा के अन्य महत्त्वपूर्ण ग्रन्थ

१	अधिकरण कौमुदो—देवनाथ ठक्कुर	१.५०
२	अध्वरमीमांसा कुतूहलवृत्ति, वासुदेव, प्रथम भ०	११.२५

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

३ अर्थसंग्रह "दीपिका" हिन्दी टीका सहित १.२५
4 Arthasangraha of Laugakshi Bhaskara with English Translation & Notes—Gajendragadkar 2.50
५ अर्थसंग्रह–सं० टी०, भा० टी०, टीकाकार—पं राजनारायण शास्त्री १.००
6 Arthasangraha of Laugakshi Bhaskara with Sanskrit Commentary, Critically Edited and Translated into English—D. V. Gokhale 5.00
७ अर्थसंग्रह—लौगाक्षि भास्कर प्रणीत "मीमांसार्थ कौमुदी" व्याख्यायुत १.५०
8 Epistemology of the Bhatta School of Purva Mimansa G. P. Bhatta 20.00
९ जैमिनीयसूत्रार्थसंग्रह—परमेश्वर प्रणीत–प्रथम भाग ७.८७
० जैमिनीय न्यायमाला–तृतीयाध्यायान्त ४.००
११ तन्त्ररत्नम्–पार्थसारभिमिश्र रचित, ३ रा भाग ५.५०
१२ तन्त्ररहस्य–रामानुजाचार्य १०.००
१३ तन्त्रसिद्धान्तरत्नावली—चिन्नस्वामी ३.००
१४ तौतातिकमततिलक—भवदेवमिश्र रचित, ३ भागों में ६.१२
१५ न्यायबिन्दु : पूर्व मीमांसाया अधिकरणार्थ संग्राहकोदय ग्रन्थः २.००
१६ न्यायसुधा (तन्त्रवार्तिक व्याख्या)—सोमेश्वर भट्ट ३२.००
१७ पूर्वमीमांसाधिकरण कौमुदी—रामकृष्ण भट्टाचार्य २.५०
१८ पूर्वमीमांसा सूत्रवृत्तिः (भावबोधिनी) १२.५०
19 Purva Mimansa in its Sources–Dr. Ganga Natha Jha 15.00
२० प्रकरणपञ्चिका–शालिकनाथ मिश्र विरचित, सुब्रह्मण्य शास्त्री सम्पादिता २५.००
२१ प्रभाकरविजय—नन्दीश्वर (पूर्वमीमांसा ग्रंथ) २.५०
२२ बृहती–"ऋजु विमला" दो व्याख्या. काशी ४.५०
२३ बृहती (प्रभाकर मिश्र)—शाबर भाष्य व्याख्या ऋजु, विमला पंचिका सहित २, ३, ४ भाग ४७.७५
२४ भाट्टचिन्तामणि—गागाभट्ट विरचित–भाट्टदीपिका व्याख्या ७.५०
२५ भाट्टदीपिका–खण्डदेव, शम्भूभट्ट रचित "प्रभावलि" व्याख्या युत, अध्याय ३ के चतुर्थपाद से समाप्ति पर्यन्त, ४ भाग में ६८.००
२६ भाट्टदीपिका–खण्डदेव प्रणीत, शम्भुभट्ट कृत "प्रभावली" व्याख्या नीवीतान्तो भाग १ ८.००

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

२७ भाट्टभाषा प्रकाश—नारायण तीर्थ मुनि रचित .६५

28 Manameyodaya of Narayan with English Translation
C. Kunhanraja 4.00

29 Mimansa : The Vakya Sastra of Ancient India Vol I
Dr. G. V. Devasthali 17.50

३० मीमांसा कोष—केवलानन्द सरस्वती सम्पादित, १—७ भाग २३५.००

३१ मीमांसा कौस्तुभ (मीमांसा सूत्रपरिकाचन विस्तृत टीका)—खण्डदेव ३०.००

३२ मीमांसा दर्शन (जैमिनी) हिन्दी टीका सहित—टीकाकार श्रीराम शर्मा ४.००

३३ मीमांसा दर्शनम्—तन्त्र वार्तिक, शाबर भाष्य सहित ५ भागों में, पूना २४.२५

३४ मीमांसा दर्शन–भाषाभाष्य (हिन्दी) सहित, देवदत्त शर्मा १—३ अध्याय ५.००

३५ मीमांसानुक्रमणिका—मण्डनमिश्र कृत, म० म० पं० गंगानाथ झा
रचित "मीमांसा मण्डन" १२.५०

36 Mimansa Jurisprudence : The Sources of Hindu Law
A. S. N. Aiyyar 4.00

37 Mimansa–Translated along with intro. text and comm.
N. V. Thadani 30.00

३८ मीमांसा न्यायप्रकाश—पूर्वार्द्ध २.००

३९ मीमांसा न्यायप्रकाश (मूलमात्रम्)—आपदेव .७५, .५०

४० मीमांसा न्यायप्रकाश—"सारविवेचिनी" व्याख्या सहित ५.००

४१ मीमांसा न्यायप्रकाश—सटीक (पूर्वार्द्ध) १.००

४२ मीमांसा न्यायप्रकाश—अनन्तदेव, "भाट्टालंकार" व्याख्यायुत ५.००

43 Mimansa Paribhasa of Krishnayajvan–Translated and
annotated—Swami Madhavananda 2.00

४४ मीमांसा परिभाषा—कृष्णयज्व प्रणीत, पाठान्तर, टिप्पणी .५६

४५ मीमांसा परिभाषा—भा० टी०, डा० हरिदत्त शास्त्री २.००

४६ मीमांसा परिभाषा—सं० हि० टीका–गौरीनाथ पाठक १.००

४७ मीमांसा प्रकाश—डा० अशोक चटर्जी २.००

४८ मीमांसा बालप्रकाश—भट्टशंकर रचित ५.००

४९ मीमांसा शास्त्रसार (मीमांसा सिद्धान्ततत्त्वार्थ प्रकाश) निवितान्त १.५०

५० मीमांसा श्लोकवार्त्तिकम्—"न्याय रत्नाकर" व्याख्या सहित
प्रथम अध्याय प्रथमपाद के ५ वें सूत्र तक ७.५०

५१ मीमांसा श्लोकवार्त्तिकम्—सुचरितामृत व्याख्या तृतीय भाग ३.३७

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

५२ वाक्यार्थरत्नम्—सुवर्णमुद्रिका सहित, अहोवल सूरि १.२५
५३ विभ्रम विवेक—(मण्डन मिश्र) कुप्पुस्वामी शास्त्री सम्पादित, अंग्रेजी भूमिका १.००
५४ विधिरसायनम्–अप्पयदीक्षित रचित ५.००
५५ शास्त्र दीपिका–पार्थसारथि मिश्र, "युक्ति स्नेह प्रपूरिणी" व्याख्या सहित तर्कपाद १०.००
५६ शास्त्रार्थ रत्नावली—जयदेव शर्मा १.५०
57 Sankarsa Kanda Sutras of Jaimini, Ed.–K. V. Sharma 5.00
58 Citations in Sabarabhasya (Study of the Bhasya of Sabara on Purva Mimansa Sutras of Jaimini)–D. V. Garge 16.00

सांख्य–योग के अन्य महत्त्वपूर्ण ग्रंथ

१ अभ्यास योग—भूपेन्द्रनाथ सान्याल २.२५
2 About Yoga–Harvey Day 8.92
3 Early Samkhya—E. H. Johnston 10.62
4 Autobiography of a Yogi–Yogananda 5.00
५ आत्मविज्ञान—स्वामी व्यासदेव १०.००
6 Asanas–Swami Kuvalayananda 10.00
7 Evolution of the Sankhya School of Thought-A.Sengupta 6.00
8 Integral Yoga—Hari Das Chaudhary 26.25
9 Integral Yoga—Swami Venkateshananda 2.00
10 Integral Yoga—Sri Aurobindo 2.50
11 Integral Yoga of Sri Aurobindo–Rishabh Chand 9·00
12 Introduction to Yoga–Annie Besant 3.00
13 In Search of a Yogi—Rutledge 4.00
14 In the Hours of Meditation—F. J. Alexander 2.00
१५ उमेश योग दर्शन (हिन्दी) १५.००
16 Umesh Yoga Darshan—English 15.00
17 Karma Aur Yoga—Swami Krishnananda 2.50
18 Karma Yoga—Swami Vivekananda 1.25
१९ कर्मयोग साधना—शिवानन्द स्वामी ५.००
20 Keep young Through Yoga—E. D. Chrishop 9.97
21 Kundalini—G. S. Arundale 3.50

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

22	Kundalini Yoga—Swami Shivananda	5.00
23	Kundalini Yoga—M. P. Pandit	6.00
24	Conquest of Mind—Sivananda Swami	6.00
24a	Concentration—Mauni Sadhu	15.75
25	Concentration and Meditation—Swami Sivananda	6.00
26	Common Sense About Yoga—Swami Pavitrananda	1·50
27	Quintessence of Yoga Philosophy—D. V. Athalye	3.50
28	Quest after Infinite (Indian Yoga Philosophy) A. D. Roy	12.00
29	Critique of Madhva Refutation of the Samkhya School of Vedanta—K. Narain	35.00
30	Critical Study of Samkhya System—V. V. Sovani	2.50
३१	गोरक्ष पद्धति—भा० टी०	१.००
३२	गोरक्षयोग मंजरी—सिद्धचिड़ियानाथ	१.००
33	Goraksha Satakam—Swami Kuvalayananda	3.00
34	Great Systems of Yoga (Jnana, Hatha, Raja, Laya and Mantra Yoga) Ernest Wood	5.50
३५	घेरण्ड संहिता—भा० टी०	१.००
३६	घेरंड संहिता—भा० टी०	२.००
37	Jnana Yoga—Swami Vivekananda	3.25
३८	ज्ञानस्वरोदय	.१६, .१२
३९	ज्ञानस्वरोदय—श्रीस्वामी चरणदास जी कृत	.३०
40	Japa Yoga—Swami Sivananda	3.50
41	Training the Mind Through Yoga—Hari Prasad Shastri	15.00
42	Thought Power—Swami Sivananda	2.50
43	Devatma Shakti—Swami Vishnutirtha	10.00
44	Dhyana—M. P. Pandit	2.00
४५	ध्यानयोग प्रकाश—स्वामी लक्ष्मणानन्द जी	३.२५
46	New Dimensions of Yoga—Roshan Nath	15.00
४७	परामनोविज्ञान और योग—डा रामनाथ शर्मा	
48	Para Psychology and Yoga—Ram Nath Sharma	10.00
४९	पातञ्जल योगदर्शन—व्यास भाष्य, स्वामी ब्रह्मलीन मुनि विरचित हिन्दी विवृति	१०.००
५०	पातञ्जल दर्शन—पदचन्द्रिका व्याख्या	.६२

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

५१	पातंजल योगदर्शन–मूल सूत्र तथा हि टो	१.२५
५२	पातञ्जल योगदर्शन–व्यासभाष्य, भोजवृत्ति, सहित विज्ञानाश्रम जी	५.००
५३	पातञ्जल योगदर्शन—मूल	०.०८
५४	पातञ्जल योगदर्शन—राजमार्तण्ड वृत्ति	३.००
५५	पातञ्जल योगदर्शन–भा० टी० श्रीराम शर्मा	४.००
५६	पातञ्जल योगदर्शन—भा० टी० गोरखपुर	.६०
५७	पातञ्जल योगदर्शन—विष्णुतीर्थ स्वामी	१.५०
५८	पातञ्जल योगदर्शन—व्यासभाष्य सहित, रुद्रदत्त शर्मा	६.५०
५९	पातञ्जल योगदर्शनम्–तत्ववैशारदी संवलित व्यासभाष्योपेतम्. सम्पा० डा० रामशंकर भट्टाचार्य	१०.००
६०	पातञ्जल योग प्रदीप–भा० टी०	७.५०
६१	पातञ्जल योगसूत्रम्—भोजराज कृत मार्तण्ड वृत्ति सहित, सम्पा०—डा० रामशंकर भट्टाचार्य	२.००
62	Patanjal Yoga Sutra–Vyasbhasya, Bengali Baba	5.00
६३	पातञ्जल योगसूत्र—व्यासभाष्य सहित बंगाली बाबा कृत अंग्रेजी अनुवाद का हिन्दी रुपान्तर	५.००
६४	पातञ्जल योगसूत्रभाष्यविवरण—शंकरभगवत्पाद	१२.७५
65	Patanjal Yoga Sutra—S. V. Ganpati	3.50
66	Practical Guide to Integral Yoga	5.00
67	Practical Guide to Samadhi–S. Narayananad	4.00
68	Practical Lessons in Yoga—Sivanand	4.00
६९	प्राणायाम—स्वामी रामचारक	२.५०
70	Primal Power in Man or the Kundalini Shakti S. Narayanananda	7.00
७१	प्रेमयोग—वियोगी हरि	१.६०
72	Philosophy of Hindu Sadhana—N. K. Brahma	15.62
73	Philosophy of Meditatian --H. C. Chaudhury	28.12
74	From Darkness to Light —Raushan Nath	7.50
७५	बिन्दुयोग (हि० टी०)–राजयोग का प्रारम्भिक ग्रंथ	.६०
७६	बृहद्योगसोपान–मूल पाठ, हि० टी०—पं० रामनरेश मिश्र	१.७५
77	Bases of yoga --Sri Aurobindo	2.00
78	Bhaktii yoga–Kumar Datta	2.50
79	Bhakt yoga–Vivekanand	1.25

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

80	Maha Yoga–K. Lakshman Sarma	4.00
८१	महायोग विज्ञान	
82	Mahayogi Aurobindo– R. R. Diwakar	2.50
८३	मातृ तत्त्वप्रकाश—अरविन्द	१.००
84	Mysteries of Man, Mind and Mind Functions—S. Narayananand	12.00
85	Mysterious Kundalini (Hatha yoga) –N. G. Rele	3.75
86	Mind–its Mysteries & Control–Swami Sivananda	6.00
87	Meditation on the occult Life –Hudson	4.00
88	Meditation its Practice & Results–Clara M. Codd	2.25
89	Meditation–its Theory and Practice–by Hari Prasad Shastri	3.12
90	Meditation on Savitri, 3 Vols—Sri Aurobindo	135.00
91	Meditation—Beechey	2.00
92	Meditation—The Inward Art–B. Smith	22.05
९३	मोक्ष साधन य योगाभ्यास–सान्याल	.३७
94	Yoga System of Patanjali–Vyas Bhashy & Tattva Vaicaradi Enplanation, Translated by J. H. Wood	7.50
95	Yoga (Foyles Hand Book Series)—Hari Prasad Shastri	5.00
96	Yoga Asanas Simplified—Yogendra	2.50
९७	योग आसन	२.००
98	Yoga of Light—G. Hodson	1.00
99	Yoga in Modern Life—Yogendra	20.00
100	Yoga Over Forty–Michael Volin & N. Phelan.	22.05
१०१	योगकर्णिका—गौरीनाथ पाठक	१.५०
१०२	योग की कुछ विभूतियाँ–स्वामी रामचारक	३.००
१०३	योगदर्शन—डा० सम्पूर्णानन्द	६.००
१०४	योगदर्शन समीक्षा–श्रीकृष्ण मणि त्रिपाठी	.७५
१०५	योगदर्शनविवेक–विवेकानन्द जी	१.३७
106	Yoga Personal Hygiene–Smt. Sita Devi–2 Vols	8.00
१०७	योगप्रदीपिका (पातञ्जल आर्य) व्यासभाष्य सहित सरलसार गर्भित भाषानुवाद, ब्रह्ममुनि	३.५०
108	Yoga Practice–Swami Sivananda	3.95
१०९	योगप्रवाह—पीताम्बरदत्त	३.२५
110	Yoga Physical Education–Yogendra–Vols. I & II-	8.00

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

111 Yoga Philosophy of Patanjali
Swami Hariharanand Aranya 20.00
112 Yoga for Women–Smt Sita Devi 2.50
११३ योगरहस्य–योगिराज गंभीरनाथ २.००
114 Yoga Way of Self Fulfilment—J. Vijayatung 1.75
११५ योगसन्ध्या–भा० टी०–श्रीसदाशिवनारायण ब्रह्मचारी २.००
११६ योग साधन की तैयारी–सातवेलकर १.००
११७ योगसार संग्रह–विज्ञानभिक्षु .५०
११८ योगसार संग्रह–विज्ञान भिक्षु कृत मूल तथा सरल हिन्दी अनुवाद
सहित, स्वामी सनातनदेव कृत २.००
११९ योगसूत्रम्–'योगसूत्र प्रदीपिका'–व्याख्या टीका सहित १.००
120 Yoga Sutra of Patanjli–J. R. Ballantyne 7.00
121 Yoga Hygine Simplified--Yogendra. 2.50
122 Yogic Asanas for Health & Vigour—V. G. Rele 3.75
123 Yogic Powers & God Realization—V. M. Bhat 2.50
124 Yogic Home Execises for Men &Women–Swami Sivananda 3.75
१२५ योगियाज्ञवल्क्य १.२५
126 Raja Yoga—Swami Vivekananda 2.75
127 Light on Yoga—B. K. S. Iyengar 75.00
128 Vivekananda : Yogas & other Works–Compiled by Swami
Nikhilanand 50.00
१२९ बहिरंग योग—स्वामी व्यासदेव १०.००
१३० वैदिक योग परिचय–विष्णुतीर्थ स्वामी ३.५०
१३१ शिवसंहिता–भा० टी० २.५०
१३२ शिवस्वरोदय–मिहिरचन्द्र कृत हि० टी० १.००
१३३ शिवस्वरोदय–भा० टी० .५०, १.२५
१३४ सहज प्रकाश—सहजोबाई कृत .७५
135 Samadhi Yoga–Swami Sivanand 5.00
१३६ सरलयोग साधना–योगेन्द्र २.५०
137 Science of Yoga–I. K. Taimni 17.50
१३८ साधनपथ—शिवेमप्रकाश १.००
१३९ साधनसम्पदा—विष्णुतीर्थ २.००
140 Sadhana–S. Pratyagtmanand 6.00
141 Sadhana in Sri Aurobindos Yoga–M. P. pandit 5.00

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

142 Samadhi–Mauni Sadhu 22.05
१४३ साधन संकेत–विष्णुतीर्थ स्वामी -५०
१४४ साधना–स्वामी शिवानन्द ६-००
145 Sadhana–Swami Sivananda press
146 Samkhya Aphorisms of Kapil.
English Translation–J. R. Ballantyne 20.00
१४७ सांख्यकारिका—गौड़पाद भाष्य हिन्दी अनुवाद सहित,
सम्पा० पं० जनार्दन शास्त्री पाण्डेय १-५०
१४८ साख्यकारिका—गौड़पाद भाष्य, हिन्दी अनुवाद और विस्तृत
भूमिका सहित–जगन्नाथ शास्त्री सम्पादित २.००
149 Samkhya Karika with Gaudapada Bhasya and English
Translation–T. G. Manikar 12.50
१५० सांख्यकारिका-सांख्यतत्त्व कौमुदी—श्रीबलराम उदासीन ४.००
१५१ सांख्यकारिका—गौड़पादभाष्य सहित, गुरुप्रसाद शास्त्री २.००
१५२ सांख्यकारिका—ईश्वरकृष्ण कृत, हिन्दी-अंग्रेजी अनुवाद १.००
१५३ सांख्यकारिका (गौडपाद भाष्य)—श्री ढुण्ढिराज शास्त्री विरचित
टिप्पणी व हिन्दी अनुवाद १.२५
१५४ सांख्यकारिका—गौड़पाद भाष्यानुसारी, ज्वालाप्रसाद गौड़ १.२५
१५५ सांख्य कारिका–भा० टी०, डा०हरिदत्त शास्त्री १.२५
156 Sankhya Karika (Iswara Krishna) John Davies 6.50
157 Sankhya Karika (Iswara Krishna)
Dr. C. Kunhanraja 10.00
158 Sankhya Karika (Iswara Krishna) with English Trans.
R. N. Phukan 5.00
१५९ सांख्यतत्त्व कौमुदी—रमेशचन्द्र तर्कतीर्थ २.५०
१६० सांख्यतत्त्व कौमुदी, सारबोधिनी टीका सहित ६.००
१६१ सांख्यतत्त्व कौमुदी दीपिका—लक्ष्मणप्रसाद १.५०
१६२ सांख्यतत्त्व कौमुदी–भा० टी०, विस्तृत भूमिका, डा० रामशंकर भट्टाचार्य १०.००
१६३ सांख्यतत्त्व कौमुदी प्रभा–भा० टी०, आद्याप्रसाद मिश्र ७.५०
164 Samkhya Tattva Kaumadi with English Translation
–G. Jha 16.00
१६५ सांख्यतत्त्वलोक—हरिहरानन्द रचित १.३७
१६६ सांख्यदर्शन–भा० टी०, स्वामी दर्शनानन्द २.००

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

१६७	सांख्यदर्शन (भाषाभाष्य) स्वामी ब्रह्ममुनि रचित	३.००
१६८	सांख्यदर्शन (कपिलदेव जी कृत) श्रीप्रभुदयाल कृत हिन्दी टीका	२.५०
१६९	सांख्यदर्शन—हिन्दी टीका सहित—श्रीराम शर्मा	४.००
१७०	सांख्यदर्शन का इतिहास—पं० उदयवीर शास्त्री	३०.००
१७१	सांख्यदर्शनभाष्य—पं० उदयवीर शास्त्री	८.००
१७२	सांख्यप्रभावव्यायोग—हरिहर कृत, संडेसर सम्पादित	४.००
173	Samkhya Pravacana Bhasya–Viwjnanabhikshu Richard Garbe	48.00
१७४	सांख्ययोग दर्शन—डा० उमेश मिश्रा	४.००
१७५	सांख्ययोग दर्शन का जीर्णोद्धार-आचार्य हरिशंकर जोशी	१५.००
१७६	सांख्यवसन्त	०-५०
१७७	सांख्य संग्रह (समास सूत्रानुसारिणा निबन्ध)	१०.००
१७८	सांख्य सिद्धान्त—पं० उदयवीर शास्त्री	१६.००
179	Samkhya System–Critical Study–Sovani	2.50
180	Samkhya System—A. B- Keith	3.00
१८१	सांख्यसार—विज्ञान भिक्षु कृत	०.५०
१८२	सांख्यसूत्र—विज्ञान भिक्षु भाष्य (तत्व समास सूत्र और सांख्यसार सहित) भाष्य का हिन्दी सार भी है	१०.००
१८३	साख्यसूत्र–अनिरुद्ध वृत्ति, सम्पा०–डा० रामशङ्कर भट्टाचार्य	२.५०
१८४	सिद्ध सिद्धान्त पद्धति–कल्याणी मल्लिक सम्पादित	१०.००
१८५	सिद्ध सिद्धान्त पद्धति–हिन्दी राजस्थानी, गोर्खा भाषानुवाद	१०.००
186	Secrets of Mind Control–Swami Narayanananda	7.00
187	Secrets of Prana pranayama and Yoga Asanas –Swami Narayaṇananda	4.50
१८८	सुगमसाधन मार्ग—स्वामी शिवानन्द	१०.००
१८९	सूर्य नमस्कार—मजूमदार	२.५०
190	Surya Namaskar--Satwalakar	2.00
१९१	सूर्य नमस्कार–औंधनरेश कृत	१.००
१९२	सूर्यभेदन व्यायाम	०.७५
१९३	स्वाध्याय और प्रवचन–रामेश्वर शास्त्री	१.५०
१९४	हठयोग—स्वामी रामचारक	४.००
१९५	हठयोग प्रदीपिका—भा० टी०	४.००

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

१९६	हठयोग प्रदीपिका–संस्कृत हिन्दी व्याख्या	३.००
197	Hatha Yoga Simplified–Yogendra	2.50
198	Healthy Middle Age through Yoga–Majumdar	2.50
199	Heyapaksha of Yoga--P. U. Pathak	20.00
200	Highest Yoga as lived--Mauni Sadhu	18.90

शैव (Saiva)

Pratyabhijinahrdayam

by

Thakur Jayadeva Singh

With Samskrita Text, Introduction, Analysis of contents, English Translation, Notes, Glossory of Technical Terms, Samskrta Index and English Index.

Demy Octavo : PP 180 : Cloth Bound & Jacketed : Price Rs. 10.00

Pratyabhijnahrdayam serves as the best introduction to the Advaita Saiva philosophy of Kashmir. The author studied the text with Swami Laksmana Joo, the solc surviving exponent of Saiva Philosophy in Kashmir and has given an excellent translation in English. The Introduction gives in a net-shell a very lucid exposition of Pratyabhijna philosophy, and the notes throw considerable light on the difficult points of the text. The author has also provided an illuminating analysis of contents, a glossory of technical terms and two indices of Samskrta and English words.

Extracts from some opinions on the book—

I congratulate the learned translater on his brilliant exposition the usefulness of which has been greatly enhanced by his copious notes throwing clear light on many difficult points connected with the text and the system. The translation of a technical work like this is by no means an easy task, and I am glad to find that Mr. Singh has acquitted himself much creditably. Exponents of Kashmir Shaivism in its philosophical bearings are very few and I am sure the present translation, much better than those available in the

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

market, will find among scholars a wide publicity which it richly deserves.

Padmavibhushan MM. Dr. Gopinath Kaviraj

"I was really interested in perusing your little book which gives a very clear translation accompanied with Sanskrit original as well as a good introduction and useful notes.

Louis Renou

"It shows a fine grasp of the Fundamental principles of the system and of its technique of Sadhana. The author is an adept in Western and Indian philosophy and well-versed in Sanskrit. He has couched the translation in a language which is intelligible to the western readers.

Dr. J. N. Sinha

Saiva Cults in Northern India

by DR. V. S. PATHAK. *Royal Octavo : Pages 74 : Price* Rs. 5.00

The book is on Saivism in early mediaeval India, based mainly on epigraphic records. It reveals the history of some of the important schools of Saivism, including Pasupata with all its sub-divisions, Kapalika & others. The author with some degree of certainty has shown that Srikantha was the founder of Pasupata and not Nakulisa, as is usually supposed.

शैव के अन्य महत्वपूर्ण ग्रन्थ

1	Abhinavagupta—K. C. Pandeya	40.00
२	आह्निक पद्धति—नवचण्डीदास अंग्रेजी भूमिका	१.००
3	Indian aesthetics—K. C. Pandeya	25.00
४	ईश्वरप्रत्यभिज्ञाविवृति विमर्शिनी—अभिनव गुप्त विरचित ३ भाग	८.००; ९.००
५	ईश्वर प्रत्यभिज्ञाविमर्शिनी—उत्पलदेव कृत, अभिनव गुप्त व्याख्या २ भाग	७.००, ८००
६	उड्डामरेश्वरतंत्र—मूल पाठ	१.७५
7	Collected lectures on Saiva Siddhanta Endowment lectures 1947 1954	8.00

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

८	क्रमकाण्ड क्रमावली—सोमशम्भु विरचित	१.५०
9	Kashmir Saivism—J. C. Chatterji	5.00
१०	कामकलाविलास—पुण्यानन्दराम शास्त्री स्पा०	१.२५
11	Kam Kalavilas with English translation by Woodroffe	10.00
१२	क्रमदीपिका–अंग्रेजी भूमिका सहित, श्रीकृष्ण	१.५०
१३	क्रियासार—नीलकण्ठ शिवाचार्य कृत	१३.००
१४	गिलगित मैनुस्क्रप्ट—Vol I., Vol II., Vol III. Part 1, II & III	20.50
१५	घटकर्परकाव्य (कालिदास) अभिनव गुप्त	०.५०
१६	जन्ममरण विचार—अमरौघानुशासन तन्त्रवट धानिका	१.२५
१७	तंत्रसार–अभिनवगुप्त विरचित	२.५०
१८	तंत्रालोक—अभिनव गुप्त विरचित राजानक जयरथ व्याख्या सहित १२ भाग में	३९.००
19	Theory of Knowledge of Saiva Siddhanta–V. Ponnjah	5.31
२०	देवीनाम विलास–कौलकृत	२.५०
२१	देशोपदेशनर्ममाला—क्षेमेन्द्र कृत	१.५०
२२	नरेश्वर परीक्षा—षड्ज्योति प्रणीत राम व्याख्या	२.००
२३	नेत्रतन्त्र–क्षेमराज कृत व्याख्या, २ भाग	६.५०
24	Non Dualism in Saiva and Sakta Philosophy N. L. Kundu	15.00
२५	पञ्चस्तवी टीका, तृतीय भाग–हरिभट्ट शास्त्री	४.५०
२६	परमार्थसार–योगराज कृत विवृति	२.५०
27	Paramarthasara–sam krit stext Edited by L. Silburn	20.00
२८	परात्रिशिका–आगम शास्त्र, अभिनव गुप्त व्याख्या	३.३७
२९	परात्रिशिका-लघुवृति (अभिनव गुप्त) तथा परात्रिशिका लक्ष्मीराम कृत विवृति	१.००
३०	परात्रिशिका तात्पर्य दीपिका	१.००
३१	पूर्णताप्रत्यभिज्ञा–रामेश्वरझा	५.००
३२	प्रसादमण्डन (सूत्रधार मण्डन)	१.००
33	Pratyabhijnyahridaya–English Translation and Notes by Thakur Jaidev Singh	10.00
34	Pratyabhijnyahridaya–English Translation K. F. Leidecker	10.00

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

३५	प्रत्यभिज्ञाहृदय–भा० टी०	१.००
३६	बोधपञ्चदशिका–परमार्थचर्चा—हरिभट्टशास्त्री कृत विवरण सहित	०.५०
३७	भगवद्गीता—रामकंठ कृत सर्वतोभद्र व्याख्या सहित	२.५०
38	Bhaskari—Vol III English translation by K. C. Pandeya	7.94
३९	महानयप्रकाश–राजानक शितिकण्ठ प्रणीत	१.७५
४०	महार्थमञ्जरी–महेश्वरानन्द कृत स्वोपज्ञा व्याख्या	१.७५
४१	मालिनीविजयोत्तरतन्त्र–(शैवयोग शास्त्र)	३.५०
४२	मालिनीविजयवार्तिक–(मालिनी विजयोत्तर व्याख्या) अभिनव गुप्त	३.००
४३	मृगेन्द्रतंत्र (विद्यापाद तथा योगपाद) नारायणकण्ठ व्याख्या सहित	३.००
४४	लल्लेश्वरी वाक्यानि—राजानक संस्कृत भाष्य	०.३७
45	La Legende des geux de Civa a Madurai d'apres les texes et les peintures–R. Dessigaue & others	29.00
46	Special Lectures on Saiva Siddhanta K. M. Balsubramaniam	5.00
47	Lectures on Savia Siddhanta—V. A. Devasenapathi	1.50
48	Les legends Civaites de kancipuram–R. Dessigane	25.00
४९	लोक प्रकाश–क्षेमेन्द्र कृत	१.००
५०	लौगाक्षिगृह्यसूत्र — देवपाल कृत भाष्य २ भाग	५.५०
५१	वातुलनाथसूत्र–अनन्तशक्ति कृत वृति	१.००
52	Vatulanatha Sutra with comm of Ananta Saktipada & French introduction by Silburn	24.00
५३	वामकेश्वरीमतसंग्रह–राजानकजयरथ कृत विवरण	०.५०
54	La Vijnana Bhairava–Kshemraja comm. and French Introduction by Silburn	48.00
५५	विज्ञानभैरव–क्षेमराज तथा व्याख्या सहित	२.५०
56	Vaisnava Sects, Saiva Sects and Mother Worship–Swami Tattwanand	7.50
57	Vaisnavism–Saivsm–R. G. Bhandarkar	10.00
58	Western Aesthetics–K. C. Pandey	25.00
५९	शक्तिपाद तथा शिवसूत्र प्रबोधिनी—विष्णुतीर्थ स्वामी	१.५०
60	Edudes Sur Le Sivaisme due kashmir–Vol by L. Silburn	40.00
६१	शिवकवच	०.२५
६२	शिवताण्डव	०.१५, ०.२५

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

६३	शिवदृष्टि-सोमानन्द रचित उत्पल वृति	२.५०
६४	शिवमहिम्न स्तोत्र-मूल	०.२०
६५	शिवसूत्र भक्तिसूत्रञ्च	०.५०
६६	शिवमहिम्नस्तोत्र-मधुसूदन कृत व्याख्या	०.६२
६७	शिवमहिम्नस्तोत्र-भा० टी०	०.२५, ०.५०
६८	शिवसहस्त्रनामावलि	०.५०
69	Siva Mahimnah Stotra–English translation by Swami Pavitrananda	0.75
70	Siva Sahasranama Stotra–English Translation by A. Sastri	2.25
71	Siva the Prophet of the New Age–A. B. N. Sinha	3.00
72	Siva Jnana Bodham—G. Mathews	15.63
73	Siva Vaibhavam–V. P. Bokil	3.00
74	Siva Mahadevan –V. S. Agarwal	45.00
75	Saiva Cults in Northern India–V. S. Pathak	5.00
७६	शिवस्तोत्रवली-भा० टी०	१०.००
७७	शिवस्तुति-गोकुलनाथ विरचित-स० हि० अनुवाद	०.६२
७८	शिवस्तोत्र	०.१०
७९	शिवसूत्रवार्तिक-वरदराज	१.००
८०	शिवसूत्रवार्तिक-राजानक भास्कर प्रणीत वृति सहित	२.५०
८१	शिवसूत्रविमर्शिनी-वासुगुप्त टीका	शीघ्र
८२	शैवपरिभाषा—शिवाचार्य	३.३७
८३	शैवमत-डा० यदुवंशी	८.००
८४	शैवमनोरंजनी-देवीसहाय कृत	३.००
85	Saiva Religian-Kataresu	2.50
86	Saiva Siddhanta—S. S. Pillai	2.00
87	Saiva Siddhanta-V. A. Devasenapati	13.50
88	Saiva Siddhanta-V. Paranjoti	13.15
89	Saiva Siddhanta Philosophy-J. Piet	6.75
९०	षट्त्रिंशतत्त्वसदोंह-राजानक आनन्दकृत व्याख्या भावोपहार (चक्रपाणिनाथ) रम्यदेवाचार्य व्याख्या-बोधपंचदशिका (अभिनव गुप्त) तथा पराप्रवेशिका (क्षेमराज)	१.४४
९१	सिद्धित्रयी-ईश्वरप्रत्यभिज्ञाकारिका वृति	३.००
९२	स्तवचिन्तामणि (भट्टनारायण) क्षेमराज	२.२५

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

९३ स्पन्दकारिका—रामकण्ठाचार्य कृत विवृति २.७५
९४ स्पन्दनिर्णय—(वसुगुप्त विरचित सपन्दकारिका, चेमराज कृत निर्णय सहित) ३.५०
९५ स्पन्दसन्दोह—चेमराज, सटिप्पण ०.५०
९६ स्वच्छन्दतन्त्र—आगमशास्त्र क्षेमराज कृत व्याख्या, ७ भाग में १६.५०
९७ हरिहरस्तोत्र—वासुदेव २.२०

तन्त्र (Tantar)

Tantars--Studies on their Religiou & Literature

by CHINTAHARAN CHAKRAVARTI M. P. *Royal Octavo*: *Pages* 142 *Full cloth bonud* : *Price Rs.* 16.50

Tantras—the much maligned and neglected branch of Indian Culture—occupies a very important place in the religious life of India and is regarded as TOP SECRET to be expounded by the preceptor to the disciple who had been properly initiated.

The author's aim in the present book is to give in broad outlines a general idea of the subject with special refrence to the literature and practices known in Bengal. It is intended to serve as an introduction to and inducement for wider and more detailed study.

तन्त्र के अन्य महत्वपूर्ण ग्रन्थ

१ अक्षयबट ०.५०
२ अजितागम, भाग १,—एन० आर भट्ट सम्पादित २५.००
3 Advayasiddhi—M. J. Shendge 4.00
४ अनुष्ठानप्रकाश—चतुर्थीलाल विरचित १२.००
५ अष्टसिद्धि—हिन्दी टीका सहित १.३५
६ आगम प्रामाण्य—श्री यमुनाचार्य स्वामी कृत १.४८
७ आनन्दलहरी स्तोत्र—शंकराचार्य विरचित १.२५
८ आनन्दलहरी—श्री श्यामानन्द कृत टीका २.२५

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

६	आनन्दलहरी—श्रीशंकर विरचित तथा कैवल्याश्रम विरचित सौभाग्य-वर्धिनी टीका तथा आंगलानुवाद	३.००
१०	आरती माला	०.७५
11	Introduction to Tantra Sastra-Sir John Woodraffe	5.00
12	Introduction to the Pancaratra & the Ahirbudhnya Sambita-Dr. F. Otto Schrader	10.00
१३	इन्द्रजाल (बृहत्) संस्कृत और भाषा	४.००
१४	इन्द्रजाल-कौतुक रत्न भन्डागार, बड़ा	३.००
१५	उच्छव गीतांजलि	२.५०
१६	उच्छिष्टगणपति पञ्चाङ्ग-मूलमात्र, सजिल्द	१.७५
१७	उड्डामरेश्वरतंत्र-मूल	१.७५
१८	उड्डीशतंत्र—भाषा टीका	१.००
१९	उड्डीशतंत्र—वंशीधर शर्मा कृत हिन्दी टीका	१.००
२०	उपदेश मुक्तावली-४ भाग, भाषा	७.५०
२१	कर्पूरादिस्तोत्र-विमलानन्द स्वामी कृत भूमिका टिप्पणी तथा आ० एवलन कृत अंग्रेजी	४.५०
२२	कर्पूरस्तवराजस्य-श्रीसदाशिव दीक्षित	६.००
२३	काथबोध-साजनी कृत टीकोपेत	१.५०
24	Kamakalavilasa with English Translation Sir John Woodraffe	10.00
२५	कामकला विलास-पुण्यानन्द विरचित, सटीक	१.२५
२६	कामधेनुतंत्र	२.५०
२७	कामरत्न-हिन्दी भाषा	५.००
२८	कार्तवीर्यार्जुनोपासनाध्याय	३.५०
२९	कालीतंत्र-भाषा	२.००
३०	कालीविलासतंत्र	४.५०
३१	कालीस्वरूपतत्व	२.००
३२	कालोपनिषद-सीताराम शास्त्री	४.५०
३३	क्रियोड्डीशतन्त्र	१.२५
34	Kulacudamani Nigam-Text & English translation Sir John Woodraffe	3.00
३५	कुलार्णव तन्त्र-प्रथम उल्लास, सानुवाद	०.५०

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

३६	कुलार्णव तन्त्र—भाषा	३.५०
37	Kularnava Tantra–English Translation Sir John Woodroffe	25.00
३८	कौलकीर्तन	१.२५
३९	कौलावली निर्णय (हिन्दी)	३.२५
४०	कौलावली निर्णय—ज्ञानानन्द परमहंस विरचित	५.६२
४१	क्रमदीपिका—केशवभट्टाचार्य प्रणीता, गोविन्द भट्टकृत विवरणोपेता "गुरुभक्ति मन्दाकिनी व्याख्या सहित, लघुस्तवराज स्तोत्र विभूषिता च	७.५०
42	Gayatri–– I. K. Taimni	4.00
४३	गायत्रीतत्त्वविमर्श	२.००
४४	गायत्रीतन्त्र—भाषा टीका	.८५
४५	गायत्री पुरश्चरण	.२०
४६	गायत्री पुरश्चरण विधि-मूलमात्र	.२०
४७	गायत्री पूजा पद्धति—विमाकराचार्य संग्रहीता	.२५
४८	गायत्री महाविज्ञान–३ भाग, श्रीराम शर्मा	१०.२०
49	Gayatri Rahasya–Prabhu Ashrit Swamiji	4.75
50	Garland of Letters—Sir John Woodroffe	15.00
५१	गौड़पादीयम् आगमशास्त्रम्–विधुशेखर भट्टाचार्य	८.५०
52	Great Liberation —Sir John Woodroffe	25.00
53	Greatness of Siva -Sanskrit Text and English Translation Sir John Woodroffe	3.00
५४	चक्रपूजा के स्तोत्र	१.००
५५	चतुर्विंशतिगायत्री	.५०
५६	चन्द्रिकामाहात्म्य	१.००
५७	चण्डीचरितावली	.७५
५८	चिद्गगनचन्द्रिका–त्रिविक्रमतीर्थ सम्पादित	३.३७
५९	चौबीस गायत्री—पं० ज्वालाप्रसाद जी मिश्र (हि० टीका)	.५०
६०	ज्ञान संङ्कलिनी तन्त्र	१.५०
६१	ज्ञानार्णवतन्त्र–मूल	२.००
62	Devotional Songs–the Cult of Sakti–Ram Prasad	10.00
63	Tantra Raj Tantra–Sir John Woodroffe	6.00
64	Tantras–Their Philosophy and Occult Sects Bose and Halder	10.00

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

६५	तंत्राभिधान—बीजनिघन्टु, मुद्रानिघन्टु सहित	५.६२
६६	तन्त्रसार-कृष्णानन्द वागीश भट्टाचार्य	२.००
६७	तन्त्रसार-अभिनव गुप्त कृत	२.५०
६८	तन्त्रसार-हिन्दी	८.००
६९	तन्त्रसारसंग्रह सव्याख्यः—संपा० वैद्यरत्न पं० दुरे स्वामी अयंगार	१५.२५
70	Tantra o Agama Sastrer Digdarshan Vol-I Gopinath Kaviraj (in Bengali)	5.62
७१	तंत्रसमुच्चय (नारायण प्रणीत) विमर्शिनी तथा विवरण व्याख्या सहित ३ भाग	१३.५०
७२	तंत्रालोक-अभिनवगुप्त कृत १२ भाग में, जयरथ कृत, व्याख्या सहित	३९.००
73	Tantras-Studies on Their Religion and Literature Chintaharan Chakravarti	16.50
74	Tantric Traditions-Agehanand Bharati	52.50
७५	ताराभक्ति सुधार्णव	११ २५
७६	तांत्रिकबौद्ध साधना और साहित्य-नागेन्द्रनाथ उपाध्याय	५.००
७७	तान्त्रिक वाङ्मय में शाक्त दृष्टि—म० म० गोपीनाथ कविराज	७.५०
७८	तान्त्रिकसाधना—एम० पी० पंडित	१.५०
७९	तारिणीपारिजात-विद्दुपाध्याय	४.००
८०	तोड़ल तन्त्र	१.५०
८१	त्रिकाण्डश्राद्धबोधिनी (श्रीविद्यामन्त्रभाष्य)	३.००
८२	त्रिपुरामहोपनिषद्	१.५०
83	Tripura Rahasya-English Translation	5.00
84	Tripura Rahasya—A Psychological Commentary Aravinda Vasavada	15.00
८५	त्रिपुरारहस्यम् (ज्ञान खण्डः)	९.००
८६	त्रिपुरारहस्य-माहात्म्यखण्ड-भूमिकाध्याय अनुक्रमणिकाभ्यां च सहितम्	१०.००
87	Thoughts of a Sakta—M. P. Pandit	2.00
८८	दकारादि श्रीदुर्गानाम साहस्त्रम्	.७५
८९	दत्तात्रेयतन्त्रम्-भा० टी०	१.००
९०	दहरविद्याप्रकाशिका-परमशिवेन्द्र सरस्वती	·८०
९१	दुर्गापंचाग-मूल, मातृप्रसाद पाण्डे	१.२५
९२	दुर्गापाठ-मूल, बड़ा अक्षर	२.५०

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

93 Durga Puja Viveka--M. M. Ulapani 1.00
९४ दुर्गापूजा-श्यामापूजा पद्धति ०.७५
९५ दुर्गारामायण ०.६२
९६ दुर्गासप्तशती–मूल २.२५
९७ दुर्गासप्तशती मूल (सचित्र पत्रात्मक) पं० वायुनन्दन मिश्र २.७६, ३.००
९८ दुर्गासप्तशती (सादा कागज मध्यमाक्षर) २.२५
९९ दुर्गासप्तशती (कपड़े की जिल्द) मध्यमाक्षर २.७५
१०० दुर्गासप्तशती (खुला पत्रा) निर्णयसागर ३.५०
१०१ दुर्गासप्तशती (चण्डी पाठ) बड़ा अक्षर कपड़े की जिल्द ४.००
१०२ दुर्गासप्तशती–मूल, (मोटा टाइप) गोताप्रेस १.२५, १.६५
१०३ दुर्गासप्तशती–मूल, (गीता प्रेस) अजिल्द, सजिल्द .६५, १.००
१०४ दुर्गासप्तशती–मूल, बम्बई २.७५
१०५ दुर्गा-भा० टी० रफ मोटा अक्षर २.००
१०६ ग्लेज ,, ३.००
१०७ दुर्गासप्तशती (सटीक) अजिल्द, सजिल्द १.००, १.२५
१०८ दुर्गासप्तशती (सूक्ष्म अक्षर) १.००
१०९ दुर्गासप्तशती (शब्दशः पद्यानुवादः) १.५०
११० दुर्गासप्तशती का आध्यात्मिक रहस्य २.५०
१११ दुर्गोपासना कल्पद्रुम–मूलमात्र ११.००
112 Devi Mahatmyam-with English Translation
S. Jagdishwaranand 2.00
113 Devi Mahatmyam-text with English Translation
V. S. Agrawal 10.00
११४ धन प्राप्ति के प्रयोग १.००
११५ धन्वन्तरितन्त्र शिक्षा (हिन्दी टीका सहित) २.५०
११६ निरुत्तरतन्त्र २.५०
११७ निर्वाणतंत्र २.००
११८ नीलतन्त्र २.००
११९ निष्पन्नयोगावलि (भयाकर गुप्त) बौद्ध तंत्र
१२० नेत्रतंत्र–क्षेमराज कृत व्याख्या, दो भाग ६.००
121 Pancaratra Prasadaprasadhan-H. D. Smith 3.50
१२२ परशुरामतन्त्र १.००

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

१२३	परातन्त्रम्	१.५०
१२४	पञ्चदशीतन्त्र–हिन्दी टीका सहित	०.२०
१२५	पञ्चमकार तथा भावत्रय	३.००
१२६	पुरश्चरण पद्धति	१.५०
१२७	पूर्णताप्रत्यभिज्ञा–आचार्य रामेश्वरझा	५.००
१२८	पूतनाशान्ति "शिशुतोषिणी" हिन्दी टीका सहित	०.२५
१२९	प्रतीक शास्त्र–परिपूर्णानन्द वर्मा	१०.००
१३०	प्रपञ्चसारसारसग्रह–गीर्वाणेन्द्र सरस्वती २ भाग	४४.१२
131	Principles of Tantra–Sir John Woodroffe	30.0
132	Philosophy of Hindu Sadhana–N. K Brahma	13.12
१३३	बंगलातंत्र–मूल	०.५०
१३४	बंगलामुखीरहस्य	४.५०
१३५	बंगलाराध्यसरणि अर्थात् बंगलासर्वाङ्ग	०.५०
१३६	बंगलोपासनापद्धति अर्थात् बंगलापूजापद्धति, भा० टी०	१.००
१३७	बटुकभैरवोपासनाध्याय–मूल मात्र	३.००
१३८	बृहद्ब्रह्मसंहिता	२.७५
१३९	ब्रह्मसंहिता–(कलकत्ता)	४.५०
१४०	भगवतीगीता	३.२५
१४१	भुवनेश्वरीरहस्य	३.००
१४२	भैरवीचक्र पूजन	१.००
१४३	भैरवोपदेश	२.७५
१४४	महात्रिपुरासुन्दरी पूजा कल्प	१.१३
१४५	महानिर्वाणतन्त्र–भा० टीका	८.५०
146	Mahamaya–Sir John Woodroffe	10.00
१४७	महामृत्युञ्जयजपविधि–भाषा टीका	०.२०
१४८	महामृत्युंजयपञ्चाङ्गम्	१.२५
१४९	मध्यकालीन हिन्दी साहित्य की तांत्रिक पृष्ठ भूमि–विश्वम्भरनाथ उपाध्याय	१०.००
१५०	मन्त्र और मातृकाओं का रहस्य (तन्त्रानुसार) शिवशङ्कर अवस्थी	१०.००
१५१	मन्त्रकोष	२.००
१५२	मन्त्रकौमुदी–देवनाथठाकुर	६.००
१५३	मन्त्र दीपिका–लक्ष्मीनारायण त्रिपाठी	०.६२

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

१५४	मन्त्रमहोदधि–संस्कृत टीका, पत्राकार	६.००
१५५	मन्त्र मुक्तावलो	?
१५६	मंत्ररामायण—वेद के मन्त्रों से रामायण की रोचक कथा का वर्णन	१.७५
१५७	मंत्रीविद्या–श्री महादेव प्रणीत	१.५०
१५८	मंत्रसिद्धि का उपाय	२.००
१५९	मातृ उपासना	२.५०
१६०	मातृकाभेद तन्त्र	२.५०
१६१	मालिनविजयतन्त्र–आगम शास्त्र	३.५०
१६२	माहेश्वरतन्त्रम्–श्री कृष्णप्रियाचार्य	७.५०
१६३	माहेश्वरीतन्त्र–भाषा टीका, पं० रामेश्वरदत्त शर्मा	.३२
१६४	मुमुक्षुमार्ग–३ भाग	६.००
१६५	मृगेन्द्रतंत्र–विद्यापाद योगपाद व्याख्या	३.००
१६६	मृगेन्द्रागम (क्रियापाद तथा चर्मापाद) एन० आर. भट्ट सम्पादित	१८.००
१६७	यन्त्रचिन्तामणि—हिन्दी टीका सहित	१.३५
168	Yantras or Mechanical Contrivances in Ancient India V. Raghavan	2.00
१६९	योगिनीतन्त्र—हिन्दी टीका सहित	७.००
१७०	योगिनीहृदयम्–अमृतानन्दनाथ विरचितया दीपिकया, भास्करराय विरचितेन सेतुबन्धेन च सहितम्	१०.००
१७१	रुद्रयामलतन्त्र (हिन्दी टीका सहित)	१.००
172	Rauravagama—Ed. by N R. Bhatt Vol I	18.00
१७३	लक्ष्मीतन्त्रम्–संपा० पं० वी० कृष्णमाचार्य	२५.००
174	Lights on the Tantra—M. P. Pandit	3.00
175	Le Gitalamkara—Ed.by Alin Danielou and N. R. Bhatta	14.00
176	Le Rituel Quotidieh—Helene Brunner	25.00
177	Wit of Sakti	2.00
१७८	वन्देमातरम्–आद्या प्रसाद	२.००
१७९	वन्ध्यातन्त्र –हिन्दी टीका	०.४५
१८०	वरिवस्यरहस्य–भास्कररायमखि कृतं, अंग्रेजी अनुवाद सहित	१०.००
181	World as Power—Sir John Woodroffe	15.00
१८२	वाममार्ग	३.००
१८३	वामकेश्वरीमतविवरण–जयरथ कृत	०.५०

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

१८४	विनय सुधा (सत्यान्वेषी)	१.२५
185	Wave of Bliss (Sanskrit text and English translation) Sir John Woodroffe	3.00
१८६	वैदिकबगलामुखी पूजापद्धति	२.००
187	Sakta Pithas—D. C. Sircar	10.00
188	Sakti and Sakta—Sir John Woodroffe	25.00
१८९	शतचण्डीविधान–भाषा	२.७५
१९०	शतरत्नसंग्रह	३.३८
१९१	शाक्तानन्दतरंगिणी–हिन्दी	२.७५
१९२	शारदातिलक–पदार्थादर्श टीका सहित (कलकत्ता) २ भाग	२८.१२
१९३	शारदातिलकम्—लक्ष्मण देशिकेन्द्ररचितम् राघवभट्ट कृत पदार्थादर्शटीका सहितम्	१५.००
१९४	शावरचिन्तामणि	१.२५
195	Sivanand Lahari—Sri Sankar Bhagvatpad	.20
१९६	शैवमनोरंजिनी–चार भाग	१.००
१९७	षटचक्रनिरूपण	.७५
198	Sri Sri Chandi—Swami Tattwanand	6.50
१९९	श्रीकमलास्तव मंजरी	२.००
२००	श्रीकल्पद्रुम–बाबा मोतीलाल जी, भाग १-२	५.५०
२०१	श्रीकालीनित्यार्चन	३.००
२०२	श्रीकालीस्तवमंजरी	२.००
२०३	श्रीछिन्नमस्तानित्यार्चन	२.००
२०४	श्रीतारानित्यार्चन	२.५०
२०५	श्रीतारास्तवमञ्जरी	२.२५
२०६	श्रीतारास्वरूपतत्व	२.००
२०७	श्रीदुर्गास्तवमञ्जरी	२.५०
२०८	श्रीबगलानित्यार्चन	२.००
२०९	श्रीबालानित्यार्चन	३.००
२१०	श्रीबालास्तवमञ्जरी	२.५०
२११	श्रीभुवनेश्वरीनित्यार्चन	३.००
२१२	श्रीभुवनेश्वरीस्तवमंजरी	३.००
२१३	श्रीमहालक्ष्मीपूजापद्धति (हिन्दी टीका सहित)	१.२५

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

२१४ श्रीवनदुर्गा–पं० रामाशंकर उपाध्याय १.००
२१५ श्रीविद्याखड्गमाला १.००
२१६ श्रीविद्यानित्यार्चन—भा० सहित ३.५०
२१७ श्रीविद्यानित्याह्निकम् ६.२५
२१८ श्रीविद्यासपर्यापद्धति ६.२५
२१९ श्रीविद्यास्तवमंजरी ३.५०
२२० श्रीविद्यार्णवतन्त्र (चार भाग) पहला भाग १२.००
२२१ श्रीश्यामापूजापद्धति ३००
२२२ श्रीश्यामासपर्यावासना ३.५०
२२३ सन्तानसुख प्राप्ति के प्रयोग १.००
२२४ सप्तशतीमीमांसा १.७५
२२५ सप्तशतीरहस्य—श्यामानन्द ३.५०
२२६ सविधिश्रापदुद्धारकबटुकभैरव स्तोत्रम् .७५
227 Serpent Power—Sir John Woodroffe 30.00
२२८ सर्वोल्लासतंत्र–मूलमात्र ५.००
२२९ सविधिकालीकर्पूरस्तव १.००
२३० सांगसप्तशति–गुटका १.२५
231 Sanskrit Bijas and Mantra's in Japan
Raghuvira & Lokesh Chandra 30.00
२३२ सांख्यानतंत्र ३.००
२३३ सात्वततन्त्रम् (वैष्णवतंत्रम्) २.५०
२३४ साधक का संवाद –भाषा सत्यान्वेषी कृत ३.७५
235 Sadhana—M. P. Pandit 5.00
236 Sadhana for Self-Realisation—Swami Pratyagatmanand 6.00
२३७ सार्थसौन्दर्यलहरी ३.५०
238 Secret of the Kaula Circle—Sharpe 3.50
239 Sivanandalahari—T. M. P. Mahadevan 4.00
२४० सेवड़े का जादू (सावड़ी तंत्र) ३.००
२४१ सिद्धविश्वेश्वर तंत्र (विश्वेश्वर दयालु वैद्य) १.२५
२४२ सौन्दर्यलहरी –शंकराचार्य कृत लक्ष्मीधर व्याख्या, भास्कर भाष्य ३.७५
२४३ सौंदर्यलहरी–डिण्डिम टीका २.२५
244 Saundarya Lahari of Shri Sankarbhagvatpad .20

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

245 Saundarya Lahari—English Translation by A. Avalon 25.00
२४६ सौन्दर्यलहरी—विष्णुतीर्थ कृत हिन्दी ५.००
247 Saundarya Lahari or Flood of Beauty–Text and Translation by William N. Brown 60.00
248 Saundarya Lahari—Sankaracharya, English Translation 7.30
२४९ सौभाग्यलक्ष्मी–हिन्दी टीका १.००
२५० स्वच्छन्दतन्त्र–क्षेमराज कृत व्याख्या ७ भाग १६.५०
251 Studies in the Tantras and the Vedas–M. P. Pandit 6.00
२५२ हनुमदुपासनां–मूलमात्र ३.५०
२५३ हंसविलास—हंसमिटङ्कृत १२.००
२५४ हिन्दुओं की पोथी ३.००
255 Hymn to Kali–Sanskrit text and English translation by Sir John Woodroffe 6.00
256 Hymns to the Goddess—Sir John Woodroffe 6.00

Epics & Puranas
इतिहास-पुराण

An Index to the Names in the Mahabharat

BY DR. S. SORENSEN, Ph. D.,

Royal Quarto : pp 850 : *Rexin bound & Gold embossed*
Antique Paper : *Rs.* 73.20

The Present Volume is a Photo-Offset Reprint of the original edition and is an indispensable reference book to Indologists throughout the world, who are to study this subject with special reference to Mahabharat. The Late Dr. Sorensen labouring strenuously throughout his life, in compiling the book, has gone to the keenest detail of *every name* occuring in the Epic. He had taken as a model, Bombay and Calcutta Editions of Mahabharat & P. C. Roy's Translation. The Volume represents two phases beginning with Concordance followed by Index to names contained in all the Eighteen Parvas to facilitate Cross-References. A chapter on

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

Corrections & Additions in the List of Abbreviations, Concordance & Index, is in addition. In the Concordance it will be noticed that the mutual relationship between the Two Divisions in paragraphs & chapters, has been indicated in various ways with the aim to save Space, Time & Inconvenience.

Highly useful to the students of Indology, Archaeology, History, Philosophy, Ancient Indian Culture & Sociology.

Ancient Indian Historical Tradition

by F. E. PARGITER, M. A. ; *Demy Octavo : PP 372 :: Cloth bound:*
price Rs. 20.00

Indian Historical Tradition belongs to the hoary past of which no chronological order can be given. But, Mr. Pargiter takes us along with his general survey of Ancient Indian Historical Tradition, its preservers and the origin of Puranas with their contents, with Genealogical Texts of the Puranas Brahmanical and Kshatriya traditions are laid bare. He makes a general survey of the genealogies and acquaints us to Solar & Lunar Races. Table of Royal genealogies are synchronised and major & minor synchronisms established. The four ages [yugas] and date of Bharat battle are reckoned and chronological table of Brahman Families & Rishis are given. We are acquainted with the Bhargavas, the Angiras & Kanvas, the Atreyas and Kashyapas, the Vishvamitras, Agastas, Paulastyas, Paulahas and Kratus & Kshatrian Brahmanas. Thus the ancient History from Tradition & suggested inferences by traditional History duly supported by map and the ancient Brahmanas, the Vedas, the Vedic schools Teachers are exposed.

श्रीमद्गोस्वामी तुलसीदास कृत

रामायण पर विजया-व्याख्या

मानस-राजहंस पं० विजयानन्दजी त्रिपाठी को जीवनव्यापी
साधना का मधुर फल

कविकुल-कमल दिवाकर गोस्वामी तुलसीदासजी की रामायण इतनी सरल है कि साधारण मति का एक बालक भी उसे आनन्द के साथ पढ़ सकता है। परन्तु उसका

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

मार्मिक रहस्य इतना गम्भीर है कि उनका सही अर्थ समझने में बड़ों-बड़ों की बुद्धि चकरा जाती है। प्राचीन एवं नवीन शास्त्र और विद्याओं के दिग्गज विद्वान्, काशी-वासी मानस-राजहंस पं० विजयानन्दजी त्रिपाठी ने ५० वर्ष के गम्भीर मनन और अध्ययन के उपरान्त मानस के सब रहस्यों को अपनी टीका और विजया-व्याख्या में स्पष्ट कर दिया है। माने हुए संतों और पण्डितों ने 'मानस-राजहंस' जी की इस व्याख्या को देखकर कहा है कि रामायण की ऐसी मार्मिक, गहरी और सही व्याख्या आज तक नहीं हुई—ऐसी व्याख्या मानस-राजहंस जैसा कोई अवतारी पुरुष ही कर सकता था।

ग्रन्थ में मानस-राजहंसजी ने प्रत्येक चौपाई और प्रत्येक दोहे का गद्य में अर्थ करने के उपरान्त अपनी मार्मिक व्याख्या दी है। व्याख्या की भाषा इतनी सरल और सुबोध है कि साधारण ज्ञान रखने वाला व्यक्ति भी उसे आसानी से समझ सकता है और भारतीय ज्ञान का ज्ञाता हो सकता है।

ग्रन्थ बड़े साइज के २००० पृष्ठों में सुन्दर अक्षरों में छपा है परन्तु सुविधा के लिए तीन खंडों में बाँटा गया है। ऊपर कपड़े की पक्की जिल्दें बांधी गई हैं। सातों काण्डों पर सात मनोरम तिरंगे चित्र हैं। गोस्वामीजी का प्रामाणिक चित्र भी बड़ी खोज के साथ छापा गया है। ग्रन्थ इतना लोकप्रिय हुआ है कि कई उत्सुक सज्जन तो जिल्द बँधने की प्रतीक्षा भी नहीं कर सके, खुले फरमे ही उठा ले गये हैं।

रामचरितमानस के प्रेमी पाठक, प्रचारक और कथावाचक महानुभाव इस दुर्लभ ग्रन्थ को जितनी जल्दी हो सके प्राप्त कर लें।

मूल्य प्रचार की दृष्टि केवल ३० रु० है।

अष्टादश पुराण परिचय

ले०—श्रीकृष्णमणि त्रिपाठी

पुस्तक सरल संस्कृत भाषा में लिखी गई है। इसका विषय नाम से ही प्रकट है। संक्षेप में कहा जा सकता है कि पुस्तक में १८ हों पुराणों की विशद सूची आ जाती है साथ ही पुराणों विषयक बड़ी जानकारी से पुस्तक पूर्ण है। मूल्य २.००

Sankshipt Valmiki Ramayana
Bal Kanda

With Notes, English & Hindi Translation.

क्राउन आठ पेजी : पृष्ठ १८६ : सजिल्द : मूल्य ३.००

वाल्मीकीय रामायण के बाल काण्ड का संक्षिप्त आलोचनात्मक संस्करण बी. ए., बी. ए. (आनर्स) तथा तत्समकक्ष विद्यार्थियों की आवश्यकतापूर्ति को लक्ष्य में रख

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

कर लिखा गया है। अभी तक 'संक्षिप्त बाल काण्ड' का ऐसा कोई भी संस्करण उपलब्ध नहीं था, जो कि विद्यार्थियों की समस्त आवश्यकताओं की पूर्ति कर सके। साथ ही साथ ही इस पुस्तक में अनावश्यक विस्तार भी नहीं होने दिया गया है। और न ही संक्षेप केलिये आवश्यक विवरण का परित्याग ही किया है।

Dates and Dynasties in the Puranas

by Prof. Ronald M. Smith.

Part I The Kings— (in the Press).

पुराण–विषयानुक्रमणी–प्रथम भाग (राजनीतिक)

ले०–डा० राजबली पाण्डेय

डबल क्राऊन आठ पेजी : पृष्ठ ५२० : पूर्ण वस्त्रावेष्ठित जिल्द : मू० १५.००

भारतीय वाङ्मय में पुराण साहित्य का एक बहुत ही महत्त्वपूर्ण और ऊँचा स्थान है और भारतीय परम्परा का यह दावा है कि पुराण वैदिक साहित्य के ऊपर व्याख्यान और उपाख्यान हैं। उसी पुराण ने कालक्रम से सम्पूर्ण वैदिक साहित्य के साथ अन्य नवोदित शास्त्रों को भी अपने विशाल प्राङ्गण में स्थान दिया और उनमें सर्ग, प्रतिसर्ग, वंश, मन्वन्तर तथा वंशानुचरित विषय प्रविष्ट हुये और श्री वेदव्यास ने उन्हें वर्तमान रूप दिया। उन्हीं पुराणों की विषयानुक्रमणो का प्रस्तुत पुस्तक प्रथम भाग है जिसमें राजनीतिक अर्थात् पुराणों के 'वंशानुचरित' अंश से सामग्री ली गई है। इसमें प्रधानतया राजवंश, व्यक्तिगत राजा, राज्याब्धि, जनपद, राज्य, नगर आदि दिये हैं और उनके काल की महत्त्वपूर्ण घटनाओं का उल्लेख किया गया है। राजनीति से सम्बन्धित कतिपय अन्य शब्द भी इस भाग में आ गये हैं और वंश चरित अथवा राजवंशावलियाँ लगभग ६ हजार वर्ष पूर्व अयोध्या में मानव वंश की स्थापना से लेकर चौथी शती के प्रारम्भ में गुप्त साम्राज्य के प्रारम्भ तक दे दी गई हैं।

इतिहास-पुराण के अन्य महत्वपूर्ण ग्रंथ

१	अग्निपुराण—मूलमात्र, बलदेव उपाध्याय सम्पादित	२०.००
२	अग्निपुराणम्—मूल	१०.००
3	Agnipurana—A Study—S. D. Gyani	25.00
४	अग्निपुराण का काव्य शास्त्रीय अध्ययन—रामलालवर्मा शास्त्री	३.००
५	अग्निपुराणविषयानुक्रमणी—सम्पा० डा० रामशंकर भट्टाचार्य	८.००

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

६ अद्भुतरामायण, भा० टी०—स्व० वि० वा० पं० श्रीज्वालाप्रसाद मिश्र २.००
७ अध्यात्मरामायण, भा० टी० गोरखपुर ४.००
८ अध्यात्मरामायण, भा० टी०–खुलापत्रा १०.००
९ अध्यात्मरामायण–भाषा, अनु०–पं० रामेश्वरभट्ट ५.००
१० अष्टादशपुराण परिचय–श्रीकृष्णमणि त्रिपाठी २.००
११ आत्मरामायण, हिन्दी में (सातकाण्ड), रामायण का वेदान्त पक्ष में वर्णन .६५
१२ आदिपुराण, भा० टी० ४.५०
१३ आनन्दरामायण, भा० टी० १६.००
१४ इतिहास पुराण का अनुशीलन—डा० रामशंकरभट्टाचार्य १०.००
15 Epics Myths and Legends of India—P. Thomas 33.00
16 Evolution of Morals in the Epics—P. Vora Dhair Yabala 18.00
17 Elude Surles Sources et la composition du Ramayan de Tulsidas—Charlotlevaudeville Fasc I & II 24.00
18 Epic Sources of Sanskrit Literature by J. Ghosh 16.88
19 Immortals of the Bhagwata—D. K. Ray 5.00
20 Index to the Names in the Mahabharata—Sorensen 73.20
21 Ancient Indian Historical Tradition by Pargiter 20.00
22 On the Meaning of Mahabharta—Sukhtankar 10.00
२३ कम्बरामायण—एन० बी० राजगोपालन ९.७५
24 Kamba Ramayan—V. V. S. Aiyar 2.50
२५ कल्किपुराण—भा० टी० २.००
26 Cultural History from the Matsya Purana S. G. Kantawala 20.00
27 Kashmiri Ramayan–Translation by Sir George A. Grierson 2.50
२८ काशीखण्ड भा० टी०, खुला पत्रा २०.००
२९ काशीखण्ड–केवल भाषा वार्तिक १०.००
३० काशीखण्ड–संस्कृत टीका सहित १५.००
३१ काशीयात्रा .५०
३२ कृष्णचरित—सुदर्शन सिंह १०.००
33 Krishnavatar—K. M. Munshi, Part I, II & III 41.50
३४ कृष्णास्यशान्तिप्रयास (संस्कृत)—कपिलदेव त्रिपाठी १.७५
३५ केदारस्कल्प—रुद्रयामलान्तर्गत (सदेह कैलाशशिवलोक गमन) ३.५०
३६ केदारखण्ड–भाषा ९.००

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

३७	केदारखण्ड, मूल–खुलापत्रा	१०.००
38	Concept of Dharma in Itihasa and Puranas--N. Raghunathan	1.00
39	Concept of Dharma in Valmiki Ramayan	20.00
40	Gaya Mahatmya--Claude Jacques	25.00
४१	गर्गसंहिता, मूल–खुलापत्रा	११.००
४२	गर्गसंहिता, भा० टी० पत्राकार	२०.००
४३	गर्गसंहिता–मूल, प्रथम भाग	१०.००
४४	गरुड़पुराणम—सम्पा० रामशंकर भट्टाचार्य	१०.००
४५	गरुड़पुराण (प्रेतकल्प) हिन्दी टीका सहित	२.५०
४६	गरुड़पुराण–सारोद्धार	२.७५
४७	गरुड़महापुराण, मूल (सम्पूर्ण)	४.००
48	Grandeur of Ramayan, Ramayan for the Modern World by S. L. N. Sinha	2.50
49	Glorious Thoughts of Mahabharta—N. B. Sen	15.00
50	Glorious Thoughts of Ramayan--N. B. Sen	15.00
51	Gems from Ramayana—Shri Nivasa Raghavacharya	2.50
५२	जैमिनीयाश्वमेध–सटीक	६.००
५३	जैमिनीयाश्वमेध–हिन्दी टीका सहित	११.००
५४	जैमिनीयाश्वमेध, मूल पत्राकार	४.२५
55	Tales of Hindu Gods and Heroes–Besurick	3.00
56	Date of the Bharat War–T. Bhattacharya	5.00
५७	देवी भागवत, मूल गुटका	८.००, ७.००
५८	देवी भागवत–भा० टी०, ज्वालाप्रसाद मिश्र (खुला पत्रा)	४०.००
५९	देवी भागवत–भा० टी०, काशी	३२.००
६०	देवी भागवत–भाषा	२०.००
६१	धर्माकूतम—त्र्यम्बकराम मखि कृत [सुन्दरकाण्ड]	५.०६
६२	,, ,, अरण्यकाण्ड	४.५०
६३	,, ,, किष्किन्धाकाण्ड	१६.००
६४	,, ,, युद्धकाण्ड	३०.००
६५	,, ,, बालकाण्ड	२.७५
६६	,, ,, अयोध्याकाण्ड	५.५०

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

67	Nilamata or teaching of Nala—Sanskrit text in Roman by K. D. Vreese	30.00
68	Narayaneem—M. Narayana	15.00
६९	नूतन सुखसागर	१२.००
70	New Approach to Ramayan by N. R. Navalekar	10.00
७१	पद्मपुराण–४ खण्ड [मूल]	३०.००
72	Purana Index Vol III—V. R. R. Dikshitar	22.50
७३	पुराणगत वेदविषयक सामग्री का अनुशीलन—डा० रामशंकर भट्टाचार्य	१२.५०
74	Puran Text of the Dynasties of the Kaliage -F.E. Pargiter	20.00
७५	पुराण की कथाएँ	१.००
७६	पुराणदिग्दर्शन—माधवाचार्य, २ भाग	९.००
77	Puran Panca Laksana (German)--W. Kirfel	180.00
७८	पुराणपारिजात-संस्कृत—पं० गिरिधर शर्मा चतुर्वेदी	२.००
७९	पुराणरहस्य—श्रीआनन्दचरण शर्मा	१.५०
८०	पुराणविमर्श—आचार्य बलदेव उपाध्याय	२०.००
८१	पुराणविषयानुक्रमणी–प्रथम भाग [राजनैतिक] ले० राजबली पांडेय	१५.००
८२	पुराणविषयसमनुक्रमणिका	७.००
८३	पुराणसंहिता [आलमन्दार वृहत्सदाशिव-सनत्कुमार संहितात्रय संवलिता]—व्यास विरचिता	१०.००
८४	पुराणों की अमर कहानियां [भाग १–५]–रामप्रताप त्रिपाठी,	१२.५०
85	Puranetihasa Sangraha (an anthology of epics and purans) by S. K. De & R. C. Hazra	7.50
86	Puranic Chronology—Mankad	20.00
87	Princes of Ayodhya—Sarma	4.00
८८	पुराणों में गंगा—रामप्रताप त्रिपाठी शास्त्री	३.५०
८९	पुराणशास्त्र एवम् जनकथाएँ—मूल लेखक मैक्समूलर अनुवादक रमेश तिवारी	१२.००
९०	पुराणों में गुजरात—[गुजराती]	४.५०
९१	पौराणिक कथाएँ—सम्पा० श्रीहृदयराम शर्मा	२.५०
92	Polity in the Agni Purana--Banbahadur Mishra	37.00
९३	प्रेमसागर [सचित्र]	५.००
94	Prem Sagara—English translation	4.00
९५	प्रेमसागर—पं० लल्लूलाल जी कृत	३.००

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

९६	प्रेमसुधासागर [दशमस्कन्ध]	४.५०
97	Philosophy of Srimad Bhagavata Vol. I & II S. Bhattacharya	42.00
९८	बालमहाभारत—कृष्णचन्द्र बेरी	२.००
९९	बालरामायण—रघुनन्दन मिश्र	१.२५
१००	बालरामायण	१.००
१०१	बालरामायण—टी० एस० राघवन	१.५०
१०२	ब्रजविलास [सचित्र गुटका], संशोधक—पं० रामेश्वरभट्ट	२.५०
१०३	ब्रजविलास बड़ा	७.००
१०४	ब्रजविलास सजिल्द सचित्र	९.००
105	Biographical Dictionary of Puranic Personags A. K. Devi	1.5o
१०६	ब्रह्मवैवर्त पुराण–मूल [बुकसाइज] २ भाग	१४.२५
१०७	ब्रह्माण्डपुराण, मूल–खुलापत्रा	१४.००
१०८	ब्रह्मोत्तरखण्ड–भा० टी०, पं० बाबूराम शर्मा कृत	३.५०
१०९	भक्तमाल—राघोदास कृत, चतुर्दास कृत टीकासहित	६.७५
११०	भक्तमाल–संस्कृत, पत्राकार	५.००
१११	भक्तमाल—नाभाजी कृत	३.५०
११२	भक्तमाल-सटीक—सीतारामशरण भगवानदास	१६.००
११३	भक्तमाल–रामरसिकावली	१२.००
११४	भक्तमाल एक अध्ययन–नाभादास, प्रकाशनारायण दीक्षित	५.००
११५	भक्तमाल–भाषावार्तिक	६.००
११६	भविष्यपुराण–मूल, सजिल्द	२५.००
117	Bhagavat—Wisdom of God—S. Prabhavananda	3.50
118	Bhagavat—complete English Translation in prose by J. M. Sanyal—5 Vols	40.00
119	Bhagavat–text with English Translation by Bhaktivedanta Swami (3 Vols)	48.00
१२०	भागवत—मूल मोटाटाइप, गोरखपुर	७.५०
१२१	भागवत—मूल, गुटका	४.००
१२२	भागवत्—मूल (बड़ा टाइप) बम्बई	९.००
१२३	भागवत्—मूल गुटका, काशी	६.००

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

१२४	भागवत–भा० टी०, शालिगराम, खुलापत्रा बम्बई	४०.००
१२५	भागवत–अन्वितार्थ प्रकाशिका सहित	४८.००
१२६	भागवत—चूर्णिका टीका पत्राकार, काशी	२४.००
१२७	भागवत "श्रीधरी" टीका पत्राकार	२४.००
१२८	भागवत "सामयिकी" भा. टी. सजिल्द	१५.००
१२९	भागवत सरस्वती–भा० टी०, दृष्टांत और प्रकाश टिप्पणी अलंकृत	२४.००
१३०	भागवत "सामायिकी" भा. टी. पत्राकार	२४.००
१३१	भागवत दशमस्कन्ध–हिन्दी टीका सहित	१०.००
१३२	भागवत–चूर्णिका–बम्बई, पत्राकार	२५.००
१३३	भागवत–मूल गुटका (बारहों स्कन्ध)	५.००
१३४	भागवत–भा० टी० दो खण्डोंमें ग्लेज कागज–गोरखपुर	२०.००
१३५	भागवत कथा [साप्ताहिक]—श्रीराममूर्ति शास्त्री	१०.००, ११.००
१३६	भागवत–हिन्दी पद्यात्मक, रघुनन्दन प्रसाद शुक्ल	१५.००
१३७	भागवत–एकादशस्कन्ध	१.२५, १.६५
१३८	भागवत एकादशस्कन्ध—दो भाग, प्रत्येक पद का हिन्दी अनुवाद	६.५०
१३९	भागवत दशमस्कन्ध—भा० टी०, पत्राकार	८.००
१४०	भागवतखण्डनम् [अनुवाद सहित] स्वामी दयानन्द	१.००
१४१	भागवतामृत–भा० टी०	२.००
१४२	भागवत दर्शन–डा० हरिवंश लाल शर्मा	१२.००
१४३	भागवत धर्म–हरिभाऊ उपाध्याय	७.००
१४४	भागवत वेद स्तुति–राममूर्ति पौराणिक	२.२५
१४५	भागवत सम्प्रदाय—ले० श्री बलदेव उपाध्याय	७.५०
१४६	भागवतसुधासागर (केवल भाषा) गोरखपुर	१०.००
१४७	भारतकथा—जगन्नाथ शास्त्री	१.२५
१४८	भारतसार—मूल (संस्कृत) सम्पूर्ण महाभारत की कथा संक्षेप में	३.५०
१४९	भारत संग्रहे—एम० लक्षमण सूरि	२.५०
150	Bharata Sangraha of M. M. lakshmana Suri–English Notes and translation by S. R. Shastri Drona Parva	2.00
151	,, Sabha ,,	1.25
152	,, Udyoga ,,	1.00
153	,, Adi Parva ,,	1.25
154	,, Virata Parva and Van Parva	1.50

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

१५५ मत्स्यपुराण–अनुवादक श्री रामप्रताप त्रिपाठी शास्त्री २०.००
156 Matsya Purana—A Study (An Exposition of the ancient Purana Vidya) by V. S. Agrawal 30.00
१५७ मल्लपुराणम–अज्ञातकर्तृकं १२.००
१५८ महाभागवतम्—देवीमाहात्म्य, देवीभागवतम्—देवीपुराण पत्रात्मकं ३.००
१५९ महाभारत–मूल, ४ भाग गीता प्रेस २६.५०
१६० महाभारत मूल—१८ भाग, मद्रास ८०.००
१६१ महाभारत–नीलकंठी संस्कृत टीका संपूर्ण, बुक साइज,पूना–(दुष्प्राप्य) ३००.००
१६२ महाभारत–भाषा टीका ६ खण्ड सम्पूर्ण, गीता प्रेस ९०.००
१६३ महाभारत–हिन्दी अनुवाद १० भाग, द्वारिकाप्रसाद २०.००
१६४ महाभारत—भाषा, सम्पूर्ण, मोटा अक्षर, ८ बड़ी जिल्द (लखनऊ) ४५.००
१६५ महाभारत–सबलसिंह चौहान कृत दोहा चौपाई ८.००
१६६ महाभारत–विराटपर्व अष्टटीकोपेतम् १०.००
१६७ ,, उद्योगपर्व, पञ्चटीकोपेतम् १०.००
१६८ महाभारत–विराटपर्व, रामस्वरूप शर्मा ५.५०
१६९ महाभारत शान्तिपर्व (पूर्वार्द्ध)—भा० टी०, सातवलेकर १०.००
१७० महाभारत सचित्र (सभापर्व)–सातवलेकर ३.५०
१७१ महाभारत—आर्यसंगीत, सरदार यशवन्तसिंह ४.००
१७२ महाभारत तर्ज राधेश्याम १०.७५
१७३ महाभारत तात्पर्यटीका, ज्ञान दीपिका (देवबोधकृत सभापर्व) २.००
१७४ ,, भीष्मपर्व व्याख्यान २.००
175 Mahabharata—C. V. Narsimhan 40.00
176 Mahabharata—condensed into English Verse–R. C. Dutt 3.00
177 Mahabharata condensed with English translation V. Raghavan 3.00
178 Mahabharata (Abridged) in 3 Vols by C. V. Shrinivasa 24.00
179 Mahabharata–C. Rajagopalachari 2.50
180 Mahabharata—English translation into Prose by P. C. Roy in 12 Vols 162.00
181 Mahabharata–K. Subramaniam 30.00
182 Mahabharata–Critical and Illustrated, Edited by V. S. Sukthankar and others in 24 big Vols 649.00
१८३ महाभारत का परिचय १.७५

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

१८४	महाभारत की कहानियाँ—देवदत्तशास्त्री	१.००
१८५	महाभारत की नामानुक्रमणी	२.५०
१८६	मानसशंका समाधान	.६०
१८७	मार्कण्डेयपुराण–हिन्दी टीका सहित (खुला पत्रा)	१५.००
१८८	मार्कण्डेयपुराण एक अध्ययन-आचार्य बद्रीनाथ शुल्क	४.५०
१८९	मार्कण्डेयपुराण–एक सांस्कृतिक अध्ययन, वासुदेवशरण अग्रवाल	८.५०
१९०	मूलरामायण "सुधा" संस्कृत हिन्दी टीका सहित	.४०
१९१	मूलरामायण व महाभारत शीलनिरूपणाध्याय "अभिनवराज लक्ष्मी" टीका	.७५
१९२	मूलरामायण शीलनिरूपणाध्याय–श्रीकृष्णमणि त्रिपाठी	.६२
१९३	युगपुराणम्	२.००
१९४	रंगनाथ रामायण—अनु०, कामाक्षिराव	६.५५
१९५	राधेश्याम रामायण (ग्लेज) सचित्र	१०.००
१९६	रामकथा–डा० कामिल बुल्के	२०.००
१९७	रामचरितमानस मूल, काशीराज संस्करण	६.५०
१९८	रामचरितमानस–मूल मोटा टाइप,	५.००
१९९	रामचरितमानस–मूलपाठ भेद	३.७५
२००	रामचरितमानस—मूल गुटका	.९०
२०१	रामचरितमानस—सटीक, मझला	४.००
२०२	रामचरितमानस—मूल, मझला	२.००
२०३	रामचरितमानस–मोटा टाइप सटीक	८.५०
२०४	रामचरितमानस—मोटा टाइप वृहदाकार	१८.००
२०५	रामचरितमानस—३ भाग हिन्दी, विजयानन्द त्रिपाठी	३०.००
२०६	रामचरितमानस (बालकाण्ड), रामचन्द्र शास्त्री	३.००
२०७	रामचरितमानस—तुलसीकृत हिन्दी महाकाव्य	१५.००
२०८	रामचरितमानस—श्री माताप्रसादगुप्त	१.००
२०९	रामचरितमानस का काव्यशास्त्रीय अनुशीलन	१६.००
२१०	रामचरितमानस का तुलनात्मक अध्ययन	१५.००
२११	रामचरितमानस का मनोवैज्ञानिक अध्ययन—डा० शर्मा	१०.००
२१२	रामवनगमनम् (वाल्मीकिरामायणान्तर्गत)—पं० नारायणराम आचार्य कृत "सरला" संस्कृतटीका	१.७५
२१३	रामाभ्युदययात्रा—भा० टी०, श्यामाचरण पाण्डेय	२.५०

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

२१४ रामायण—मूल (रायल साइज) सचित्र १०.००
२१५ रामायण–तुलसीकृत, मूल बम्बई ८.००
२१६ रामायण–तुलसीकृत (लवकुश काण्ड सहित) पं० ज्वाला प्रसाद जी मिश्र कृत संजीवनी "सरल हिन्दी टीका सहित २५.००
२१७ रामायण—तुलसी कृत भा० टी० सहित सचित्र बम्बई १६.००
२१८ रामायण—भा० टी० तुलसीकृत (वृहद) सचित्र, गोरखपुर २५.००
२१९ रामायण तुलसीकृत भा० टी० सचित्र-टीका-श्री लक्ष्मण प्रसाद भारद्वाज १४.००
२२० रामायण–तुलसीकृत (रफ कागज भी) २.००
२२१ रामायण—बालकाण्ड मूल .६२
222 Ramayan as told by Kamban–C. Rajagopalachari 20.00
223 Ramayan of Tulsidas–English Tr., Atkin, 2 Vols 40.00
224 Ramayan of Tulsidas—English translation by F. S. Growse 5.00
225 Ramayan of Tulsidas—Ch. Vaudeville 12.00
226 Ramayan–C. Rajagopalachari 2.50
227 Ramayan : 2 Vols –Sudha Majumdar 5.00
228 Ramayan of Valmiki–English translation by M. L. Sen 3 Vols 30.00
229 Ramayan of Valmiki English translation by H. P. Shastri, 3 Vols 94.50
230 Ramayan : A Linguistic Study–Dr. Satya Vrata 25.00
231 Das Ramayana of Dr. Herman Jacobi (translated by S. N. Ghosal) 6.00
२३२ रामायण तुलसीकृत—लवकुश काण्ड सहित–स्व० विद्यावारिधि पं० ज्वालाप्रसादजी मिश्र कृत "संजीवनी" टीका–सम्पूर्ण १६.००
२३३ रामायणकथा–रघुनाथसिंह ४.५०
२३४ रामायणदर्पण–ले. श्री स्वामी ब्रह्ममुनि जी १.२५
२३५ रामायणमंजरी (सुन्दरकाण्ड) क्षेमेन्द्र कृत–सम्पा०–सत्यनारायण पाण्डेय १.२५
२३६ रामायणमंजरी—क्षेमेन्द्र–टीकाकार–श्यामबिहारी शुक्ल १.७५
२३७ रामायणसंग्रह–नी. वरदाचारी १.५०
२३८ रामायणसंग्रहः भारतसार संग्रहश्च १.००
२३९ रामाश्वमेघ–मूल (पत्राकार) ४.२५
२४० रामाश्वमेघ–केवल भाषावार्तिक (सजिल्द) ४.५०

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

२४१ रामाश्वमेध–हिन्दी टीका सहित (पत्राकार) ११.००
२४२ रामायणकालीन समाज—नानूराम व्यास ६.००
२४३ रामायणकालीन संस्कृति—नानूराम व्यास ६.००
२४४ रासपञ्चाध्यायी भक्तिरसायनोपेता, भा० टी० ६.००
२४५ रासपञ्चाध्यायी–एक संस्कृतिक अध्ययन–रसिकविहारी जोशी १०.००
246 Lectures on Ramayana–by V. S. Shrinivasa Shastri 10.00
247 Legends in the Mahabbharta—S. A. Dange Shortly
248 Le Retuel la Denotion Krsnite–Rasikbihari Joshi 5.00
249 Vamana Purana : A Study of the ancient Scripture of the Dwarf and the Gita by V. S. Agrawal 25.00
२५० वायुपुराण–मूल, खुलापत्रा १३.००
२५१ वायुमहापुराण–हिन्दी अनु० श्री रामप्रतापत्रिपाठी शास्त्री १२.००
२५२ वाल्मीकीयरामायण—मूल, विश्वबन्धु सम्पादित ७ भाग १०५.००
२५३ वाल्मीकीयरामायण--मूल, गुटका, बम्बई ८.००
२५४ वाल्मीकीयरामायण—मूल खुला पत्रा, मोटा अक्षर १७.००
२५५ वाल्मीकिरामायण—मूल म० म० चिन्नस्वामि सम्पादित, स्थूलाक्षर १३.००
२५६ वाल्मीकिरामायण—मूल गुटका, काशी ८.००
२५७ वाल्मीकिरामायण—मूल, गोरखपुर ६.००
२५८ वाल्मीकिरामायण–गोविन्दराजीय, (भूषण), रामानुजी-तीनश्लोकी महेश्वर तीर्थीयाख्या व्याख्या चतुष्टयसहित खुला पत्रा ६०.००
२५९ वाल्मीकिरामायण–बुक साइज, व्याख्याचतुष्टय (३ जिल्दों में) ६०.००
२६० वाल्मीकिरामायण–तिलक, शिरोमणि, भूषण, तीन संस्कृत टोका ७खं. में ५०.००
२६१ वाल्मीकीयरामायण–भा० टी० ३ खण्ड—चन्द्रमणि विद्यालंकार २३.००
२६२ वाल्मीकिरामायण—भा. टी. खुलापत्रा पं० ज्वालाप्रसाद मिश्रजी कृत ५०.००
२६३ वाल्मीकिरामायण—(प्रथम सम्पुट), बालकाण्ड मैसूर ६.००
२६४ वाल्मीकिरामायण (द्वितीय, तृतीय, चतुर्थ संपुटम्), मैसूर ३०.३२
२६५ वाल्मीकिरामायण–मूल (अयोध्या, आरण्यक, किष्किन्धा, सुन्दर और युद्ध काण्ड) ६.००
२६६ वाल्मीकिरामायण भा० टी० बालकाण्ड–सातवलेकर ६.००
२६७ वाल्मीकिरामायण भा० टी० युद्धकाण्ड, पूर्वार्ध एवं उत्तरार्द्ध–सातवलेकर १२.००
२६८ बाल्मीकिरामायण-युद्धकाण्ड और उत्तरकाण्ड की समालोचना २.००
२६९ वाल्मीकिरामायण—भा० टी० (उत्तरकाण्ड)-सातवलेकर ६.००

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

२७०	वाल्मीकिरामायण भा० टी० किष्किन्धाकाण्ड–सातवलेकर	६.००
२७१	वाल्मीकिरामायण–हिन्दी भाषानुवाद सहित–१० भाग में प० द्वारका प्रसाद चतुर्वेदी	२४.००
२७२	वाल्मीकीयरामायण (हिन्दी अनुवाद मात्र) पं. ज्वाला प्रसाद मिश्रजी कृत	२५.००
२७३	वाल्मीकीयरामायण पादसूची–प्रथम भाग श्री हरगोविन्द भट्ट	८.००
२७४	वाल्मीकिरामायण—सुन्दरकाण्ड–मूल-गुटका	१.३५, २.५०
२७५	वाल्मीकिरामायण—सुन्दरकाण्ड हिन्दी टीका सहित (पत्राकार)	४.५०
२७६	वाल्मीकिरामायण सुन्दरकाण्ड–मूल (बड़ा आकार)	३.५०
२७७	वाल्मीकिरामायण—भा० टी० सुन्दरकाण्ड–सातवलेकर	६.००
२७८	वाल्मीकिरामायण—सुन्दरकाण्ड, भा० टी० रामतेज पाण्डेय	३.००
२७९	वाल्मीकि रामायण (बाल काण्ड) भाग १—के. एम. वरदाचार्य	६.००
२८०	वाल्मीकीय रामायण–सुन्दर काण्ड मूल	१.००
२८१	वाल्मीकीय रामायण भा० टी० दो खण्डों में, गोरखपुर	२०.००
282	Valmiki Ramayana–Complete in 8 Vols	13.00
२८३	वाल्मीकीय रामायण—भा० टी०, काशी	२४.००
२८४	वाल्मीकिरामायण व रामचरितमानस का तुलनात्मक अध्ययन— डा. विद्यामिश्र	१६.००
285	Valmiki Ramayana (English translation)–Griffith	25.00
286	Valmiki Ramayana, Critical Edition Edited by G. H. Bhatt & others Vol I (Balkanda)	55.00
287	,, Vol II (Ayodhyakanda)	110.00
283	,, Vol III (Aranyakanda)	55.00
289	,, Vol IV (Kiskindhakanda)	55.00
290	Valmiki Ramayan—N. Chandra Shekhara Aiyar	2.50
२९१	वाल्मीकिरामायण—भाषा, गोरखपुर	१३.००
२९२	वाल्मीकीयरामायण—भाषा रफ ग्लेज	१२.००
२९३	विनायकमाहात्म्य	१.००
२९४	विष्णुधर्मोत्तरपुराण–मूल खुला पत्रा	१८.००
२९५	विष्णुधर्मोत्तरपुराण–(तृतीय काण्ड) २ भाग, सम्पादित–डा. प्रियबाला	५०.००
296	Vishnu Purana—English Translation by H. H. Wilson	60.00
297	Vyas and Valmiki by Sri Aurobindo	2.50
298	Voice of Valmiki—P. Pandey	1.50
२९९	शिवपुराण—मूल, खुलापत्रा बम्बई	१८.००

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Narla, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

३००	शिवपुराण—भाषा ग्लेज तथा गुटका	२०.००
३०१	शिवपुराण–मूल, काशी	१०.००
३०२	शिवपुराण–पं. ज्वालाप्रसादजी मिश्र कृत सरल हिन्दी टीका सहित	५०.००
३०३	शिवपुराण भाषा–बड़ा रफ, ग्लेज १२.००,	१४.००
३०४	शिवपुराण भाषा सचित्र	५.००
३०५	शिवपुराण—भाषानुवाद सहित, श्रीरामशर्मा आचार्य	१२.७५
३०६	शिवभारतम्	२.००
३०७	श्रीरामायण प्रदीप–श्री स्वामी सच्चिदानन्द	१.००
३०८	शुकसुधासागर (मोटा टाइप, केवल भाषा)	२५.००
३०९	श्रीसुबोधिनी–वल्लभाचार्य रचित, श्री विठ्ठलनाथ दीक्षित कृत टिप्पणी तथा मंत्री पुरुशोत्तम जी रचित प्रकाश व्याख्या समेत	६.००
310	Samkshipta Balkanda (Valmiki) with Eng & Hindi Trans. by Sudhanshu Chaturuedi	3.00
३११	सुखसागर—(लखनऊ)	१४.००
३१२	सौरपुराणम्–मूल, पूना	४.५०
३१३	स्कन्दपुराण–मूल ६ भागों में	६०.००
314	Studies in Epics and Puranas of India—A. D. Pusalkar	2.50
315	Studies in the Upapuranas—Dr. R. C. Hazra Vol I & II	61.87
316	Story of Rama—M. Bhootalingam	12.00
317	Stories of Nala Damayanti & Savitri C. V. Srinivas Rao	1.00
318	Solar Symbolism of the Boar—V. S. Agrawal	10.00
319	Study of the Bhagvat Purana–Purnendu Naraya Sinha	12.00
३२०	हरिवंश पुराण–भा. टी. खुला पत्रा बंबई	३२.००
३२१	हरिवंशपुराण- भा० टी० गोरखपुर	१०.००
३२२	हरिवंशपुराण–नीलकंठी टीका सहित	४०.००
३२३	हरिवंशपुराण–भाषा, लखनऊ	१६.००
३२४	हरिवंशपुराण का संस्कृतिक विवेचन–डा० वीणापाणि पाण्डेय	४.५०
३२५	हरिवंशपुराण भा० टी० पत्राकार	४०.००
३२६	हरिवंशपुराण (केवल भाषा) पं० ज्वाला प्रसाद जी मिश्र	१२.००
३२७	हरिवंशपुराण—भा० टी०, पत्राकार काशी	२८.००

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

ज्योतिष--शास्त्र

अर्घ-मार्तण्ड

(तेजी-मन्दी का अनुपम ग्रन्थ)

नया संशोधित, परिवर्धित संस्करण राजज्योतिषी पं० मुकुन्दवल्लभजी कृत

इस ग्रन्थरत्न में रुई, सूत, वस्त्र. शेयर, ऊन, सोना, चाँदी, ताँबा, लोहा आदि धातु तथा गुड़, खांड़, रसकस, इलायची, कालीमिर्च, मसाला, मूँगफली, करयाना, जवाहरात, घृत, तिल, तेल, सरसों, बाजारा, अलसी, गेहूँ, चावल, खल्ली, बिनौला, लकड़ी, रंग आदि प्रत्येक वस्तु की तेजी-मन्दी के उत्तम अचूक सुनहरे चांसों के योग जो वायदा और हाजर माल भरने वालों के लिए बराबर लाभदायक हैं, सरल हिन्दी भाषा में दिल खोलकर लिखे गये हैं। जिन योगों को हजारों रुपए खर्च करने पर भी ज्योतिषी लोग नहीं बतलाते थे वे सब तेजी-मन्दी के अनुभवसिद्ध गुप्तभेद ४० वर्ष की जाँच के बाद लिखे गए हैं। जैसे हमको किसी वस्तु के व्यापार से लाभ होगा, इसका विचार तथा अगले मास में कितनी तेजी या मन्दी होगी, ऐसे ही दिन-दिन तथा घंटे-घंटे की तेजी मंदी निकालने का गुप्त रहस्यादि। ऐसा ग्रन्थ अन्यत्र संसार की किसी भाषा में नहीं मिलेगा। यदि आप धन कमाकर लक्षाधीश बनना चाहे तो इसे मँगा कर देखने में देरी न करें। ग्रन्थ के अन्त में सर्वोपकारार्थ लक्ष्मी प्राप्ति के सिद्ध प्रयोग भी लिख दिए हैं। जिनके करने से निर्भाग्य निर्धन भी लक्ष्मीयुक्त (धनी मानी) होकर सर्व-सुख ऐश्वर्य को जिन्दगी भोग सकता है। व्यापारियों का तो यह जीवन ही है। ऐसे अनुपम ग्रन्थ को अविश्वास करके न मँगाना दुर्भाग्य ही होता है। व्यापार में हानि उठाये हुए गरीब व्यापारी भी यदि इस ग्रन्थ को गौर से विचारेंगे तो वह भी कभी-न-कभी अपना घाटा पूरा कर ही लेंगे—इसमें सन्देह नहीं। यह सदैव काम आने वाली पुस्तक, बढ़िया कागज तथा कपड़े की जिल्द सहित तैयार हुई है और हिन्दी तथा उर्दू में छपी है। मूल्य प्रत्येक का १२ रुपये। यह पृष्ठों का मूल्य नहीं, गुण की भेंट मात्र है। इस पुस्तक से अनेकों व्यापारियों ने लाभ उठाकर धन्यवाद भेजे हैं और बहुत सज्जनों ने इनाम देकर ग्रन्थ लेखक को सम्मानित भी किया है। 'अर्घ मार्त्तण्ड' को खरीदते समय ध्यान से देख लीजिए कि इसके लेखक—रा० ज्यो० पं० मुकुन्द-वल्लभ जी हैं। 'अर्घ मार्त्तण्ड' के नाम से मिलते-जुलते नाम वाली किताबें भी कुछ धूर्त प्रकाशकों ने छापी हैं—उनसे सावधान रहें। मँगाने की शीघ्रता करें। देर करने से सम्भव है आगामी संस्करण की प्रतीक्षा करनी पड़े।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

सचित्र ज्योतिष शिक्षा

श्री बी० एल० ठाकुर ज्योतिषाचार्य कृत

सरल हिन्दी में ज्योतिष विषय की यह पुस्तक इतनी सरल है कि सर्वसाधारण व्यक्ति ज्योतिष विषय का ज्ञान हासिल कर सकता है। यह तीन खण्डों में विभक्त है प्रथम ज्ञानखण्ड, द्वितीय गणितखण्ड, तृतीय फलितखण्ड। प्रथमखण्ड छप रहा है। पुस्तक बहुत बड़ी है अतः अलग-अलग खण्ड छपेगा। लेखक ने पुस्तक के लिखने में इतना परिश्रम किया है कि एक बार पुस्तक देखते ही आप चकित हो जावेंगे। प्रतीक्षा करें। ग्राहक श्रेणी से अपना-अपना नाम लिखवाते जावें ताकि पुस्तक छपते ही सेवा में भेज दी जावे।। बड़ी पुस्तक होने के कारण थोड़ी प्रतियां ही छप रही हैं।

ज्योतिष-जगत

पं० दुर्गादत्त शर्मा

पद्मभूषण, श्री पं० सूर्यनारायण व्यास कृत—प्राक्कथन सहित

यह पुस्तक सुबोध भाषा में वैज्ञानिक ढंग से लिखी गई है। हर एक विषय को बड़े सरल तरीके से समझाया गया है जिससे साधारण से साधारण व्यक्ति भी ज्योतिषशास्त्र का अच्छा ज्ञान प्राप्त कर सकता है। विषय सूची इस प्रकार है—प्रथम परिच्छेद—१ नक्षत्र (स्थिति एवं नाम, मास कल्पना, चरण, आकारादि तारा समूह, लिंगदेवता आदि, कलोषकल, नक्षत्र पुरुष वीथी प्रकार, मूल संरक्षक नक्षत्र ज्ञान फल) २ योग—(नाम, स्वामी) ३ करण (नाम, स्वामी) द्वितीय परिच्छेद—राशिचक्र, स्थिति, प्राच्य एवं पाश्चात्य नाम तथा चिह्न, नक्षत्रों द्वारा राशिचक्र का विभाजन—१२ राशि परिचय में हरएक का चिह्न, पृथ्वी पर स्थिति, नाम, लिंग, आकार-प्रकार, धातु, निवास, स्वभाव, धर्म, लक्षण, अवस्था, तत्त्व, बल, जाति, पद, वास, स्वामी, वार, अंक, कालांगवास, द्रव्य, अधिष्ठातृत्व, लौकिकज्योतिषानुसार प्रतिनिधि देश आदि। तृतीय परिच्छेद—ग्रह-परिभाषा, नाम, प्राचीन एवं अर्वाचीन, जैन ग्रन्थों में दिये ८८ ग्रह, गुण स्वभाव के आधार पर प्रकार, मनुष्य पर प्रभाव, दस अवस्थाएं, निर्बल ग्रह का प्रभाव, दृष्टियां, जैमिनी एवं पाश्चात्य दृष्टि। ग्रह-परिचय में सूर्य, चन्द्रमा, मंगल, बुध, बृहस्पति; शुक्र, एवं शनि का खगोल विषयक ज्ञान, पौराणिक परिचय, ज्योतिषशास्त्रीय महत्व, प्रतीक, नाम, जाति, लिंग, आकार प्रकृति, स्वभाव, लिंग, धातु, देवता, अवस्था, निवास, प्रदेश, रस, वार, राशि, भाग्यांक स्वामी, दृष्टि, बल मित्र शत्रु, कारक, प्रतिनिधि वस्तुएँ, कालांगवास, सम्बन्धित रोग प्रतिनिधि द्रव्य, कर्म, शुभाशुभ फल कारक अवस्था प्रसन्नार्थ उपाय प्रतिनिधि रत्न

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

एवं नाडी, राशिगत प्रभाव। राहु एवं केतु का सामान्य परिचय, पौराणिक परिचय, ज्योतिषशास्त्रीय महत्त्व तथा राशिगत प्रभाव, प्रजापति तथा बरुण का खगोल विषयक ज्ञान, ऐतिहासिक परिचय, ज्योतिषशास्त्रीय महत्त्व और राशिगत प्रभाव। चतुर्थ परिच्छेद—द्वादशभाव, संज्ञा, विभिन्न नाम तथा उनके विचारणीय विषय। पंचम परिच्छेद—सूर्य आदि सभी ग्रहों का द्वादशभावस्थ फल पृथक् २। षष्ठ परिच्छेद—जन्म लग्न फल। १२ राशियों का पृथक् २ लग्न फल—जैसे जातक का स्वभाव एवं प्रकृति सम्भावित व्यवसाय, मित्र, पत्नी, लग्न, भाग्योन्नति कारक वर्ष एवं मारक ग्रह, संभावित रोग, उदाहरणार्थ कुण्डली। सप्तम परिच्छेद—द्वादशभाव फल विचार। सब विस्तार से संभावित फल जो हो सकते हैं पृथक् २ भाव के दिये हैं। पुस्तक अत्यन्त उपादेय है। मूल्य केवल २–५०

लघुपाराशरी–भाष्य

(कालचक्रदशासहित)

भाष्यकार—दीवान रामचन्द्रकपूर. सजिल्द मूल्य ८.००

"प्रस्तुत पुस्तक फलित-ज्योतिष के विख्यात ग्रन्थ लघुपाराशरी का, जिसको स्वयं मूल-लेखक ने उडुदायप्रदीप नाम दिया है, भाषान्तर है। भाषान्तर का अर्थ हिन्दी अनुवाद नहीं है। स्वयं भाषान्तरकार ने इसको लघुपाराशरीभाष्य कहा है और यह नाम सर्वथा उपयुक्त प्रतीत होता है। मूल ग्रन्थ के श्लोकों का अनुवाद तो है ही, इसके साथ बहुत-सी ऐसी सामग्री समाविष्ट की गई हैं, जिससे विषय को समझने में सहायता मिलती है। यथास्थान पाश्चात्य सूत्रों से प्राप्त अवतरण भी दिये गये हैं। मेरा विश्वास है कि जो लोग फलितज्योतिष से प्रेम रखते हैं और उस विषय का अध्ययन करना चाहते हैं उनको यह पुस्तक हर दृष्टि से उपादेय प्रतीत होगी।"

—सम्पूर्णानन्द, राज्यपाल, राजस्थान तथा भूतपूर्व मुख्य मंत्री, उत्तर प्रदेश

"मुझे पूर्ण आशा है कि इस भाष्य द्वारा ज्योतिष प्रेमियों को बहुत लाभ होगा।"

—पं० रामव्यास पाण्डेय, ज्योतिष विभागाध्यक्ष, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय।

"जिस प्रकार समस्त दर्शन और पुराणधर्मशास्त्रादि ग्रन्थों का सार श्रीमद्भगवद्गीता में निहित हैं जिसकी अनेक मनीषियों की टीकायें होने पर भी किसी में सर्वथा अर्थसम्पन्नता नहीं देखी जाती है—उसी प्रकार उडुदाय प्रदीप लघुपाराशरी में समस्त

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

ज्योतिष जातक दशाफल ग्रन्थों का सार भरा है जिसकी अनेक ज्योतिषियों की अनेक टीकायें हो चुकी किन्तु किसी में इयत्ता नहीं हो पाई। अतः काशी के सुप्रसिद्ध नागरिक विद्वद्वंशोद्भव सुप्रतिभासम्पन्न दीवान श्रीरामचन्द्रकपूर ने इस पर एक सविस्तार हिन्दी भाषा भाष्य लिखकर ज्योतिष जगत् का परम उपकार किया है। इस भाष्य में मूल श्लोकों के अन्वय अर्थ लिखकर युक्ति सहित उदाहरण द्वारा तत्त्वार्थ समझाने का सुप्रयास किया गया है।"

सीताराम झा—भाष्यकार ने पुस्तक के अंत में निम्नलिखित परिशिष्टों को जोड़कर ज्योतिषजगत की एक बहुत बड़ी कमी की पूर्ति कर दी है:—

'क'—विश्व की रचना, उसमें मनुष्य का स्थान; उनके पुरुषार्थ तथा भाग्य का ग्रहों से सम्बन्ध।

'ख'—जातक तथा दशाफलादेश में निरयन ग्रहों की मान्यता।

'ग'—बिशोत्तरी ग्रहदशा-क्रम का उनकी नक्षत्र कक्षा से सम्बन्ध।

'घ'—सूर्य तथा चन्द्र की गति से उत्पन्न विविध ज्योतिषिक पदार्थ।

'ङ'—विंशोत्तरी दशा आनयन तथा दशा प्रत्यन्तर सारणियां।

'च'—कपूरमध्यपाराशरी (मारक प्रकरण) तथा कालचक्र दशा एवं विंशोत्तरी के अरिष्टप्रद एवं मारक ग्रहों के निर्णय करने की अन्य रीतियां।

'छ'—लग्न, भाव, दृष्टि की विवेचना।

'ज'—कपूर जातक फलादेश (लेखक का अनुभव)।

'झ'—विंशोत्तरी महादशाधीश ग्रहों के शुभ-अशुभ फल की परमाण संख्या जानने की विधि और सारणी।

'ञ'—ग्रहों की भाव सम्बन्धी शुभाशुभ फल संख्या जानने की सारणियां।

'ट'—नक्षत्र भभोग भयात से चन्द्रस्पष्ट तथा चन्द्रस्पष्ट से विंशोत्तरी महादशा

वर्ष-चन्द्र-प्रकाश

लेखक—चन्द्रदत्त पन्त

प्रस्तुत पुस्तक में वर्षफल, ध्रुवक, वर्षेष्ट ध्रुवांक सारणी (दो प्रकार), महादशा, दशाओं के मास और दिवस, योगिनीदशा, योगिनीदशा के मास और दिवस, विंशोत्तरी की मुग्धदशा में सूर्यादि अन्तर दशा, हर्ष बल की किस्में तथा उसके बनाने की रीति, पंचवर्गीचक्रम्, त्रिपताकी चक्रम्, लग्न, वर्ष निसर्ग, मैत्री शत्रु चक्रम्, मुन्थाफलम्, वर्षप्रवेश के लिए शुभाशुभ तिथिवार नक्षत्र फल, बलाबलवर्षेशदशा फल, बला-

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

बल ग्रहदशा फल, ग्रन्था विशेषफल, नव-ग्रहों के शुभाशुभ फल तथा अन्य वर्षफल जानने तथा बनाने की विधियां दी गई हैं। मूल्य १.००

चन्द्र-हस्त-विग्यान

पृष्ठ संख्या १०००, चित्र संख्या ११७०, पक्की कपड़े की जिल्द, मूल्य २०)

उपर्युक्त हस्त रेखा पुस्तक जो कि चन्द्रदत्त पन्त द्वारा हिन्दी में लिखी गई है हिन्दी संसार में अपनी समानता नहीं रखती। इस पुस्तक में हस्तरेखा के साथ-साथ ग्रहयोगों की दृष्टि (माउन्टस) से पूर्ण जीवन वृत्तान्त आधुनिक ढंग पर नवग्रह (हर्षल नैपच्यून, प्लूटो) आदि रेखा युति द्वारा भाग्य, हृदय, मस्तिष्क, आयु, स्वास्थ्य, विवाह यश कीर्ति, सभी प्रेमसफलता, सन्तान, धन-सम्पत्ति तथा अकल्पित शुभाशुभ घटनाओं को जानने की सबसे सरल रीति इस प्रकार लिखी गई हैं कि साधारण हिन्दी जानने वाला व्यक्ति भी एक बार इस पुस्तक को आद्योपान्त पढ़कर, बिना किसी कठिनाई के एक हस्तरेखा विषेशज्ञ के समान सभी पूर्वोक्त घटनाओं का यथा समय वर्णन करने में पूर्ण रूप से समर्थ हो सकता है। क्योंकि इसमें ११७० हाथ चित्रों का अनुपम समूह प्रत्येक पैरे के साथ, अलग-अलग दिया गया है। जिससे निरीक्षक को एक ही पृष्ठ पर चित्रांकित रेखा वर्णन मिल सकेगा। प्रत्येक पैरे के कथनानुसार उसका चित्र होना ही इसकी विशेषता है। सभी प्रकार के हाथों के लक्षण, बनावट, आकृति, तथा गुण दो... बड़े ही अनुभव के साथ किया गया है जिसके पठन-पाठन से मनुष्य सहज है... होकर, अपना तथा दूसरों का परोपकार करके धन, कीर्ति और सुयश प्राप्त कर... है। यह ग्रन्थ ज्योतिषियों के लिये ही नहीं बल्कि सभी व्यक्तियों के लिये समान रू... उच्चकोटि फल देने वाला है। साथ ही रोचक भी इतना है कि एक बार प्रारंभ कर... पर आद्योपान्त कर लेने की गुदगुदी हर समय लगी रहती है। १०००पृष्ठ तथा ११७... चित्रों वाला कोई भी हस्त रेखा ग्रन्थ हिन्दी ही नहीं बल्कि अन्य भाषाओं में बनकर तैयार नहीं हो सका है। उंगली के पोरुओं से लेकर मणि कटिबन्ध तक आए प्रत्येक चिह्न का वर्णन बड़ी ही सावधानी से किया गया है जिससे प्रत्येक संकल्प विकल्प की पूर्ति तथा भावी घटना चक्र के जाल से बचने का पूर्ण समाधान किया गया है। जन्म तिथि ठीक होने पर किसी भी शुभाशुभ घटनाके घटने का वर्ष-मास तथा तारीख जानने का सहज उपाय विस्तारपूर्वक लिखा गया है। विशेष प्रशंसा से क्या लाभ, पाठक एक बार स्वयं ही पढ़ लेने पर मुक्त कंठ से प्रशंसा करने के लिए उत्सुक तथा बाध्य हुए बिना नहीं रह सकते।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

सुगम ज्योतिष प्रवेशिका

(श्रीगोपेशकुमार ओझा, एम० ए०, एल० एल० बी०)

डबल क्राउन सोलह पेजी, पृष्ठ सं. ३५०, पक्की कपड़े की जिल्द सहित मूल्य ६-००

आज-कल भारत में ही नहीं, अपितु विदेशों में भो ज्योतिष शास्त्र की ओर लोगों की रुचि बढ़ रही है और नित्य नवीन पुस्तकें सामने आ रही हैं। भारत की राष्ट्र-भाषा में ज्योतिषशास्त्र के समस्त विषयों पर सरल रूप से समझाने वाली पुस्तकों का नितान्त अभाव है पर प्रस्तुत पुस्तक से यह बड़ो कमी दूर हो सकी है।

इस अद्भुत पुस्तक में जन्म-कुंडली, वर्ष-फल, प्रश्न-विचार तथा मुहुर्त आदि विषयों का संग्रह किया गया है। इसके अध्ययन करने के बाद आप अपने इष्ट-मित्रों, परिवार तथा सगे-सम्बन्धियों की जन्मपत्रियाँ स्वयं बना सकते हैं और वर्षफल, फलादेश बता सकते हैं। इस पुस्तक के सम्बन्ध में लोगों का दावा है कि इससे कोई भी व्यक्ति अच्छा ज्योतिषी बन सकता है। यह एक उपहार देने के लिये भी अनुपम पुस्तक है।

अंकविद्या : (NUMEROLOGY)

लेखक—श्रीगोपेशकुमार ओझा

...ल क्राउन सोलह पेजी, पृष्ठ संख्या २००, कपड़े की पक्की जिल्द, मूल्य ४.००

'ज'—कप...

'झ'— ...भाषा में Numerology पर बहुत-सी पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी हैं। ... प्राचीन काल से ही अंकविद्या चली आ रही है पर इस विषय में हिन्दी में ...कों का नितान्त अभाव है। इस पुस्तक ने हिन्दी संसार में इस बड़ी कमी को पूरा ...या है।

अनेकों अंग्रेजी तथा संस्कृत ग्रन्थों के आधार पर यह पुस्तक तैयार की गई है। ...समें जन्म की अंग्रेजी तारीख से जीवन के अच्छे-बुरे वर्ष, दिन, घंटे आदि निकालने के सुगम उपाय बतलाए गए हैं जिससे एक साधारण पढ़ा-लिखा मनुष्य भी लाभान्वित हो सकता है।

जनवरी, फरवरी, मार्च आदि हर महीने में जन्म लेने वाले मनुष्यों के अच्छे-बुरे साल, महीने और भविष्य में होने वाली घटनाओं को सरल तरीके से निकालने के उपायबताए गये हैं। इसके अतिरिक्त फलादेश, हर महीने की किस तारीख से किस तारीख तक जन्म लेने वाले लोगों पर सूर्य का अच्छा अथवा बुरा प्रभाव, भविष्य में होने वालो घटनाओं का क्या प्रभाव पड़ेगा, पूर्णरूपेण समझाया गया है।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

ज्योतिष-शास्त्र के कुछ अन्य ग्रंथ

१	अङ्कविद्या—गोपेश ओझा	४.००
२	अखण्डत्रिकालज्योतिष (भाषा)—भगवानदास	४.००
३	अखण्डभाग्योदयदर्पण—श्रीभगवानदास मित्तल	३.००
४	अङ्गविजय, (प्राकृत)—मुनि पुण्यविजय संपादित	२१.००
५	अथर्ववेदीयज्योतिष—छोटेलालशर्मा	१.००
६	अध्यात्मज्योतिष विचार—ज्यौतिषी करवे	१०.००
७	अर्घप्रकाश-हिन्दी टीका	.६०
८	अर्घमार्तण्ड हिन्दी—पं० मुकुन्दबल्लभजी कुराली, द्वितीय संस्करण	१२.००
9	Astakavarga System of Prediction—B V Raman	7.50
१०	अहिबलचक्र (नरपतिजयचर्योक्त)—पं० सीताराम झा कृत	.३२
११	अहिबलचक्रम्—साचय "शिशुतोषिणी" हिन्दी टीका सहित—सम्पा०—श्रीविन्ध्येश्वरी प्रसाद	.२५
१२	आर्यभटीयम्-सभाष्य, तृतीयखण्ड	३.३७
१३	आर्यसप्तति—भट्टोत्पलाचार्य कृत, मुकुन्दराम कृत "आशुबोधिनी" टीका सहित	.३१
१४	आर्यसप्तति—दैवज्ञवाचस्पति वासुदेवगुप्ता	.३१
१५	आशुबोध ज्योतिष—श्रीमन्महादेवजी पाठक	.३८
16	Indian Eras—Kola Venkatacalam	1.50
16a	Indian Chronological Tables	1.12
१७	उत्तरकालामृत—कालिदास, सम्पा०-बी० सुब्रह्मण्य शास्त्री	५.००
१८	उपपत्तीन्दुशेखर—दुर्गाप्रसाद द्विवेदी	१०.००
19	Electional Astrology or Muhurtha—B V Raman	8.25
20	Ancient Indian Chronology by Sengupta	15.00
21	Everyday Astrology by V A. K. Ayer	3.50
22	Astrology for All by Leo Alam	9.95
२३	एक दिन में ज्योतिषी—विश्वेश्वर दयालुजी वैद्यराज	२.००
24	Astrology and Modern Thoughts--B V Raman	3.00
25	Astrology for Beginners--B V Raman	3.00
26	The Astrological Self Instructor–A. Suryanarain Rao	5.00
27	The Astronomical Method and its application to the Chronology of Ancient India—K L Daftari	2.25

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

२८	करणकौस्तुभ—कृष्णदैवज्ञ	.७५
२९	करणपद्धति—के० साम्बशिवशास्त्री	.३१
३०	करणप्रकाश—ब्रह्मदेव विरचित	२.५०
३१	करलक्खण—भा० टी०	.२५
३२	कर्मविपाकसंहिता (हिन्दी टीका)	४.००
३३	कर्मविपाक—नक्षत्र चरणगत (हिन्दी टीका सहित)	३.००
३४	कालचक्र—दीवान रामचन्द्रकपूर	४.००
३५	कुट्टाकारकशिरोमणि—देवराज, संस्कृत व्याख्या	१.००
३६	कुण्डलीदर्पण—भा० टी०	१.००
३७	केरलतत्त्वप्रश्नसंग्रह—भा० टी०	.५०
३८	केरलीयप्रश्नरत्न—हिन्दी टीका सहित	१.००
३९	केवलज्ञानप्रश्नचूडामणि—भा० टी०	४.००
४०	केशवीयजातकपद्धति—भा० टी०	२.८०
41	Concise General Astronomy—H. Subrahmanya Aiyar	3.12
४२	खण्डखाद्यकम्—सम्पा पं० बबुआ मिश्र	२.५०
43	The Khandakhadyaka with Prithudaka's commentary Ed. by P. C. Sengupta	3.12
४४	खेटकौतुक—भा० टी०	.२२
४५	खेटकौतुक—भा० टी० टीकाकार—पं० सीताराम झा	.४०
४६	खेटकौतुकम—भावबोधिनी भा० टी० सहितम्	.२५
४७	गणकतरंङ्गिणी—म: म. श्री सुधाकरद्विवेदी कृत	२.००
४८	गणपतिचन्द्रिका—प्रथमपरीक्षोपयोगी, पं० सीताराम झा	.६४
४९	गणित का इतिहास—म. म. पं० सुधाकरद्विवेदी	३.००
५०	गणित का इतिहास—डा० व्रजमोहन	६.५०
५१	गणितकौमुदी—नारायण पण्डित विरचिता प्रथमो भागः	१.६२
५२	,, ,, द्वितीयो भाग	२.५०
५३	गणितकौमुदी—गणपतिदेवशास्त्री	१.२५
५४	गणितचन्द्रिका—सीताराम	०.६४
५४क	गणितप्रवेशिका (प्रथमा परीक्षोपयोगी)—केदारनाथ जोशी	१.००
५५	गणितमुक्तावली—श्रीविशुद्धानन्द शर्मा गौड़, २ भाग	१.७६
५६	गणितसोपान	०.३७
५७	गणितीयकोष—डा० व्रजमोहन	६.००

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

५८	गणेशभविष्यफल	२.००
५९	गर्गजातक–हिन्दी टीका सहित	.३०
६०	गर्गमनोरमा–हिन्दी टीका सहित	.२०
६१	गर्गसंहिता–प्रथम भाग, मूल	१०.००
६२	गुरुविचार—ले० ज्योतिषी करवे	२.५०
६३	गृहनिर्माणव्यवस्था–भूमि शोधन प्रकार	.६४
६४	गृहरत्नभूषण वास्तुसंग्रह	१.२५
६५	गोलतत्वप्रकाशिका–हिन्दी टीका सहित	१.७५
६६	गोलदीपिका–परमेश्वर, सम्पा० के० वी० शर्मा तथा अंग्रेजी अनुवाद	३.००
६७	गोलपरिभाषा—शंकुज्याक्षेत्रविचार सहिता "तत्वप्रकाशिका" विवृति विभूषिता	.४०
६८	गोलपरिभाषा–ज्याक्षेत्रविचार सहित	.२४
६९	गोलाध्याय—भास्कराचार्य कृत "मरीचि" टीका २ भाग	८.७५
७०	गोलीयरेखागणित—पं० चन्द्रशेखर झा	१.४८
७१	गोलीयरेखागणित–मीठालालझा कृत	१.२४
७२	गौरीजातक–हिन्दी टीका सहित	.२५
73	Graha and Bhava Bolas—B. V Raman	3.75
७४	ग्रह और रत्न, ग्रह और रोग–पं० आर० एस० एस० राजस्थानी	२.००
७५	ग्रहगणिताध्याय:–भास्कराचार्य कृत, २ भाग	६.५०
७६	ग्रहगोचर–हिन्दी टीका सहित	.१२, .२५
७७	ग्रहगोचर–'शिशुतोषिणी' भाषा टीका सहित	.२५
78	Grahana Nyaya Dipika of Parmeswara-Ed. by K V Sarma	6.00
79	Grahanamandana of Parmeswara-Ed. by K V Sarma	5.00
८०	ग्रहनक्षत्र–त्रिवेणीप्रसादसिंह	४.२५
८१	ग्रहनक्षत्र—सम्पूर्णानन्द	१.२५
८२	ग्रहलाघव—भा० टीका, स्व० ज्योतिर्भूषण पं० बच्चू द्वारा परिशोधित	३.००
८३	ग्रहलाघव–सं० टी०, भा० टी०–पं० सीताराम झा कृत	३.४८
८४	ग्रहलाघव–"माधुरी" संस्कृत हिन्दी टीका सहित	३.५०
८५	ग्रहलाघवकरण–मल्लारी–विश्वनाथ-सुधाकरी	५.००
८६	ग्रहलाघवसारणी	१.७५
८७	चन्द्रविचार—ले० ज्यौतिषी करवे	२.००

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

८८	चन्द्रसारिणी–डा० गोरखप्रसाद	२.५०
८९	चन्द्रहस्तविज्ञान—चन्द्रदत्त पंत	२०.००
९०	चमत्कारचिन्तामणि–सटीक	.३७
९१	चमत्कारचिन्तामणि—हिन्दी टीका सहित	.५०
९२	चमत्कारचिन्तामणि—भा० टी०	.२५, .५०
९३	चमत्कारचिन्तामणि सान्वयम "भावबोधिनी" भा० टी० सहित	.७५
९४	चमत्कारज्यौतिष—ज्यो० पं० नारायणप्रसाद मिश्र	१.२५
९५	चलनकलन (१-६ अ०)–म० म० पं० सुधाकर द्विवेदी	२.४८
९६	चलनकलन–प्रश्नोत्तर विवरणम्–अच्युतानन्द झा	.७५
९७	चलनराशिकलनम्—सुधाकर द्विवेदी, २ भाग	२.६२
९८	चापीयत्रिकोण गणितम्-विविधवासना समलंकृतम् टीकाकार–अच्युतानन्द झा	१.५०
99	Cheiro's Guide to the Hand	2.80
100	Cheiro's Language of the Hand	7.75
101	Cheiro's Palmistry for All	2-95
१०२	जन्मपत्रदीपक–सोदाहरण सटिप्पणी हिन्दी टीका सहित सम्पा०—विन्ध्येश्वरीप्रसाद द्विवेदी	१.५०
१०३	जन्मपत्रफार्म–रंगीन	सैकड़ा ५.००
१०४	जन्मपत्रविधान—पं० सीताराम झा	१.५२
१०५	जन्माङ्गनक्षत्रदीपिका (भाग १)—लक्ष्मीनारायण त्रिपाठी	१.५०
१०६	जन्माङ्गपत्रावली	
१०७	जातकक्रोड—पं० शशिकान्त झा	१.२५
१०८	जातकचन्द्रिका–हिन्दी टीका	१.२५
१०९	जातकतत्व–महादेव रचित, सम्पा० बी० सुब्रह्मण्यशास्त्री	६.००
११०	जातकतत्त्व—श्रीनिवासमहादेव पाठक (भाषा टीका)	७.००
१११	जातकदीपक—बालमुकुन्द (प्रथम भाग)	१२.५०
११२	जातकदेशमार्ग—अंग्रेजी अनुवाद सहित	५.५०
११३	जातकपद्धत्युदाहरणम्–डा० जे० बी० चौधरी	१०.००
११४	जातकपारिजात (दो भाग)–वैद्यनाथदीक्षित सम्पा०–बी० सुब्रह्मण्यशास्त्री अंग्रेजी अनुवाद सहित	३२.००
११५	जातकपारिजात–सचित्र "सुधाशालिनी" टीकोपेता	१२.००, १०.००
११६	जातकयोगार्णव–शंकरदादा शास्त्री	१.५०

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

११७	जातकशिरोमणि–हिन्दी टीका	३.५०
११८	जातकसंग्रह–मूल	१.५०
११९	जातकसारदीप–नृसिंह कृत, लक्ष्मीनारायण उपाध्याय कृत व्याख्या	१४.००
१२०	जातकाभरण–भा० टी०, रफ	५.००
१२१	जातकाभरण—हिन्दी टीका सहित, पं० श्यामलाल	५.००
१२२	जातकाभरणम्–सपरिशिष्ट "विमला" हिन्दी टीका सहित	४.००
१२३	जातकालंकार–सं० टी०, भाषा टी०	.७२
१२४	जातकालंकार—गणेश, सम्पा० बी० सुब्रह्मण्य शास्त्री	१.५०
१२५	जातकालंकार—श्रीहरिभानु कृत संस्कृत टीका तथा भावबोधिनी हिन्दी टीका सहित	१.००
१२६	जातकालंकार—हिन्दी टीका सहित	.६५
१२७	जातकालंकार—सं० टीका सहित	.५०
१२८	जातकालंकार—भा० टी०	.७५
१२९	जैमिनिपद्यामृत—मूलकन्दली वृत्तिकारिका सहित	१.५०
१३०	जैमिनिसूत्र–हिन्दी टीका, शंकासमाधान सहित	१.२५
१३१	जैमिनीयसूत्र–"विमला" संस्कृत हिन्दी टीका सहितम्	२.००
१३२	ज्योतिनिर्बन्ध–शिवराज विरचित	६.००
१३३	ज्योतिर्विज्ञान-ब्रह्माण्डपरिचय–आचार्यभास्करानन्दलोहनी	१.५०
१३४	ज्योतिषकल्पद्रुम–भाषा, श्रीमहाराज शम्भुसिंह जी कृत	२.६०
१३५	ज्योतिष की पहुँच—डा० गोरखप्रसाद	१०.००
१३६	ज्योतिषजगत्—हिन्दी, दुर्गादत्त शर्मा	२.५०
१३७	ज्योतिषतत्त्व–२ भाग, आचार्यचक्रधर जोशी	५०.००
१३८	ज्योतिषतत्त्वविवेकनिबन्ध	२.५०
१३९	ज्योतिषप्रबोध–गणेशदत्त	०.४०
१४०	ज्योतिषप्रश्नफलगणना, "विमला" हिन्दी व्याख्या सहित व्याख्याकार–दयाशङ्कर उपाध्याय	१.००
१४१	ज्योतिषरत्नमाला—श्रीपतिभट्ट–सम्पा० एम० जी० पणसे	१२.००
१४२	ज्योतिषविज्ञान—पं० विशुद्धानन्द	६.००
१४३	ज्योतिषश्यामसंग्रह	६.००
१४४	ज्योतिषसर्वसंग्रह—भा० टी०, रामस्वरूपशर्मा	२.००
१४५	ज्योतिषसार–हिन्दी टीका सहित	३.००

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

१४६ ज्योतिषसार–भा० टी०, ग्लेज, रफ ५.००, ४.००
147 Directional Astrology of the Hindus by V. Rele 3.50
148 Dictionary of Palmistry–J. S. Bright 2.50
१४९ तत्त्वप्रदीपजातक–हिन्दी टीका सहित ०.२५
१५० ताजिकनीलकंठी, तीनों तन्त्रों सहित सटीक २.००
१५१ ताजिकनीलकंठी–भा० टी० २.००
१५२ ताजिकनीलकंठी–भा० टी० ६.००
१५३ ताजिकनीलकंठी—पं० महीधर कृत हिन्दी टीका ३.५०
१५४ ताजिकनीलकंठी—नीलकंठाचार्य, विश्वनाथदैवज्ञ कृत
संस्कृत हिन्दी टीका सहित, तन्त्रत्रयात्मक २.२५
१५५ ताजिकनीलकंठी—पं० गङ्गाधरमिश्र कृत "जलदगर्जना"
संस्कृत टीकया "गूढ़ग्रन्थि विमोचिनी" वासनया, "उदाहरण चन्द्रिका"
हिन्दी भाषा टीकया च सहिता ४.५०
१५६ तात्कालिकभृगु प्रश्न—पं० हरदेवसहाय २.००
१५७ तिथिचिन्तामणि—गणेशदैवज्ञ प्रणीत सोदाहरण "विजय लक्ष्मी"
भा० टी० सहित .५०
१५८ तेजीमन्दीविचार—श्रीनिवासपाठक १.५०
१५९ त्रिकालज्योतिष–स्वामी रामानन्द सरस्वती ६.००
160 Three Hundred Important Combinations–B. V. Raman 10.28
१६१ दयाविलास—महात्मा दयारामजी ४.००
१६२ दशाफलदर्पण—श्रीनिवास महादेवपाठक ४.००
१६३ दीपिका वा शुद्धिदीपिका—पं० कन्हैयालाल मिश्र कृत हिन्दी टीका ३.५०
164 Drgganitam of Parameswara–Ed. by K. V. Sharma 5.00
१६५ दृक्सिद्धपञ्चाङ्गनिर्माणपद्धति—गणपतिदेवशास्त्री ६.००
१६६ देवकेरलम् (चन्द्रकलानाड़ी अच्युतकृतम्), ३ भागः २३.७५
१६७ दैवज्ञकामधेनु–संस्कृत १२.००
१६८ दैवज्ञवल्लभ–हिन्दी टीका सहित .८५
१६९ दैवज्ञाभरणम्–सम्पा० श्रीलक्ष्मीनारायण उपाध्याय ६.२५
१७० दैवज्ञाभरणम्–केदारदत्त जोशी १.५०
१७१ द्वात्रिंशद्योगावली–श्रीनिवास महादेव पाठक ०.१२
१७२ द्विरागमनइष्टशोधन .२५
१७३ धराचक्र–भा० टी० टीकाकार–पं० सीताराम झा .३२

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

१७४	धराभ्रम (सटीक)—म० म० पं० सुधाकर द्विवेदी	.५२
१७५	नरपतिजयचर्या–सटीक	४.२५
१७६	नाडिदत्तपञ्चविंशतिका–भा० टी०, पं० सीताराम झा	.२०
१७७	नेपच्यून अथवा वरुण–श्रीनिवास महादेवपाठक	.५०
178	Notable Horoscope–B. V. Raman	8.50
१७९	पञ्चस्वरा	१.७५
१८०	पञ्चांगअयनांशनिर्णयः	३०.००
१८१	पञ्चांगपद्धति—टिप्पणी विभूषित	.४०
१८२	पञ्चांगमञ्जूषा (भा० टीकोदाहरण सहिता)	.७५
१८३	पञ्चाङ्गविज्ञान–भा० टी०	.५०
१८४	पत्रीमार्गप्रदीपिका और वर्षदीपिका (मूल)—पं० महादेव श्रीनिवास हिन्दी टीका	२.२५
१८५	पत्रीमार्गप्रदीपिका–वर्षदीपक—भा० टी०	२.२५
१८६	पद्मपञ्चाशिका तथा कन्याजातक—स्व० पं० श्रीबच्चू झा कृत हिन्दी टीका सहित	.५०
१८७	पद्मकोष–भा० टी० टीकाकार पं० सीताराम झा	.४०
१८८	परमसिद्धान्तज्योतिष (मूलमात्र)	७.००
१८९	पल्लीपतनकारिका–हिन्दी टीका	.२०
190	Palmistry–M. N. Gaafar	8.50
191	Palmistry for Pleasure and Profit–V. A. K. Ayer	4.50
192	Palmistry Made Easy	3.00
193	Palmistry Made Simple—J. S. Bright	3.00
१९४	प्रतिभावोधक–म० म० पं० श्रींसुधाकर द्विवेदी कृत	.७२
१९५	प्रश्नज्ञानप्रदीप–हिन्दी टीका सहित	१.५०
१९६	प्रश्नचण्डेश्वर (संस्कृत हिन्दी टीका सहित)	१.२५
२९७	प्रश्नतानम्–भट्टोत्पल रचितम्, सम्पा० वी० सुब्रह्मण्य शास्त्री अंग्रेजी अनुवाद सहित	२.००
१९८	प्रश्नभूषण–श्रीजीवननाथ झा	.८०
१९९	प्रश्नवैष्णव–हिन्दी टीका सहित	१.००
२००	प्रश्नशिरोमणि–हिन्दी टीका सहित	३.५०, ३.००
२०१	प्रश्नाङ्कचूड़ामणि	.१५
२०२	प्रस्तारचक्र–भा० टी०	.१५

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

203	Practical Astrology–Leo Alam	5.00
204	Practical Palmistry–Noet Jaquin	7.00
२०५	फलदीपिका–बी० सुब्रह्मण्यशास्त्री कृत अंग्रेजी अनुवाद सहित	१०.००
२०६	फलप्रकाशज्योतिष	.३७
२०७	फलित और आप—आनन्दस्वरूप अग्रवाल	१.००
२०८	फलितसंग्रह–भा० टी०	.७५
२०९	बालबोधज्योतिष–भा० टी०, काशी	१.५०
२१०	बालबोधज्योतिषसारसंग्रह–हिन्दी टीका	१.२५
२११	बीजगणित–सटीकम्	३.००
२१२	बीजगणित–भा० टी०	१२.००
२१३	बीजगणितज्योतिष	२.५०
२१४	बीजपल्लवम (बीजगणित व्याख्या)–कृष्ण	४,३७
२१५	बीजवासना (सोपपत्तिकबीजगणित)–श्रीगङ्गाधर मिश्र	.७५
२१६	बुद्धविचार–ले० ज्योतिषी काटवे	२.००
२१७	ब्राह्मस्फुटसिद्धांत–सटीक वासनाविज्ञान भाष्य–पं० रामस्वरूप सम्पादित ४ खण्ड	२६०.००
२१८	बृहज्जातक—पं० सीताराम झा	३.४८
२१९	बृहज्जातक–वराहमिहिर कृत–सम्पा० बी० सुब्रह्मन्यशास्त्री	८.५०
२२०	बृहज्जातक—वराहमिहिराचार्य कृत, महीधर शर्मा कृत हिन्दी टीका सहित	३.५०
२२१	बृहज्जातक–दशाध्यायी	२.५०
२२२	बृहज्जातकम्–'विमला" हिन्दी टीकोपेतम्	३.५०
२२३	बृहज्जोतिषसारः—वासुदेवगुप्त	४.५०
२२४	बृहत्पाराशरहोराशास्त्र—भा० टी०, बम्बई	१२.००
२२५	बृहत्संहिता–वाराहमिहिर–सम्पा०–बी० सुब्रह्मण्यशास्त्री अंग्रेजी अनुवाद सहित दो भाग	१४.००
२२६	बृहत्संहिता–सोदाहरण "विमला" हिन्दी व्याख्येपिता, व्याख्याकार–अच्युतानन्द झा	९.००
२२७	बृहत्सिद्धखेटी—राजारामज्योतिषाचार्य	१.७५
२२८	बृहत्होराचक्रविवरणम्–सम्पा० मुरलीधर ठक्कुर	.५०
२२९	बृहद्वकहोड़ाचक्रम् अर्थात् ज्योतिषशास्त्रसोपान	१.२५

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

२३०	बृहद्‌वकहोड़ाचक्र—हिन्दी टीका सहित, बड़ा	.५५
२३१	बृहद्यवनजातक—ज्वालाप्रसाद मिश्र कृत, हिन्दी टीका सहित	२.५०
२३२	बृहद्वास्तुमाला—पं० रामनिहोर द्विवेदी	३.००
२३३	भद्रबाहुसंहिता—(भद्रबाहु कृत) भा० टी०	८.००
२३४	भद्रबाहुसंहिता—मूल	५.७५
२३५	भविष्यफलभास्कर—हिन्दी टीका सहित—पं० लक्ष्मीनारायण ज्योतिषी	३.५०
२३६	भाग्यवानों की कुण्डलियाँ—भगवानदास	४.००
२३७	भाग्यरहस्य हिन्दी	१.००
२३८	भाभ्रमबोध--पं० दयानाथ झा	.५२
२३९	भाभ्रमरेखानिरूपण—म० म० पं० श्रीसुधाकर द्विवेदी	.५२
२४०	भारतीयकुण्डलीविज्ञान—मीठालाल ओझा	४.५०
२४१	भारतीयज्योतिष—नेमिचन्द्र जैन	८.००
२४२	भारतीयज्योतिष—शंकरबालकृष्ण दीक्षित	८.००
२४३	भारतीयज्योतिष का इतिहास—डा० गोरखप्रसाद झा	४.००
२४४	भार्गवनाड़िका—संस्कृत—डा०कुन्हनराज	६.००
२४५	भावकुतूहल—पं० महीधर शर्मा कृत भा० टी०	२.००
२४६	भावकुतूहल—भा० टी०	४.५०
२४७	भावकुतूहलजातकम्—हरिप्रसाद शर्मा	२.००
२४८	भावप्रकाश, भा० टी०—पं० सीताराम झा	१.२४
२४९	भावप्रकाश—जीवननाथ झा प्रणीत, भावबोधिनी भा० टी० प्रश्नपत्र सहिता	१.२५
२५०	भावफलाध्यायः (लोभशोक्त, भृगुसंहितोक्त युग्म संस्करणम् "सुबोधिनी"—विमला, हिन्दी टीका भूषित	.५०
२५१	भावफलाध्याय—भा० टी०, पं० सीताराम झा	.२४
२५२	भावफलाध्याय	.२५
२५३	भुवनदीपक—भा० टी०	.७५
२५४	भृगुसंहिता—खुलापत्रा (११ खण्डों में) सेट	५०.००
२५५	भृगुसंहितापद्धति—भगवानदास मित्तल	१०.००
२५६	भृगुसूक्त—भा० टी०	.७५
२५७	मंगलविचार—ले० ज्योतिषी काटवे	२.५०
२५८	मनुष्यजातक—सटीक	२.००

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

२५९	मयूरचित्रक—मूल	.४५
२६०	महाभास्करीयम्—भास्कराचार्यविरचितम्—गोविन्दस्वामी कृत भाष्येण परमेश्वरकृतया सिद्धान्तदीपिकाख्या व्याख्या चसमेतम् श्रीयुतकृष्णण शास्त्रिभिः सम्पादितम्	११.००
२६१	महाभास्करीयम्—भास्कराचार्यकृतं सव्याख्यानम्	२.००
२६२	मानसागरी "सुबोधिनी" हिन्दी व्याख्या सहिता व्याख्याकार—मधुकान्त झा	८.००
२६३	मानसागरी—पं० सीताराम झा, बालमनोरमा टीका	७.००
२६४	मानसागरीपद्धति—भा० टी०	६.००
२६५	मानसिकप्रश्नप्रकाश—लालजी मेहरोत्रा	.५०
२६६	मीमांसुकंठाभरण—भा० टी०	.३७
२६७	मुकुन्दपद्धति	.७५
२६८	मुहूर्तकल्पद्रुम—विट्ठलदीक्षित कृत	.७५
२६९	मुहूर्तगणपति—मूल—पं० रामदयालजी कृत	१.७५
२७०	मुहूर्तचिन्तामणि—सटीक	३.००
२७१	मुहूर्तचिन्तामणि—पं० महीधरशर्मा (हिन्दी टीका सहित)	२.५०
२७२	मुहूर्तचिन्तामणि—भा० टी०	३.००
२७३	मुहूर्तचिन्तामणि—मूल	.७५
२७४	मुहूर्तचिन्तामणि—"पीयूषधारा" संस्कृत टीका सहित	५.००
२७५	मुहूर्तचिन्तामणि—"पीयूषधारा" व्याख्या तथा पं० अनूपमिश्र कृत युक्तिमंजरी टिप्पणी सहित	५.००
२७६	मुहूर्तचिन्तामणि—"मणिप्रभा" हिन्दी टीका सहित	३.५०
२७७	मुहूर्तदीपक—पं० बालमुकुन्द त्रिपाठी	४.५०
२७८	मुहूर्तदीपक—सटीक, महादेवभट्ट रचित	.५५
२७९	मुहूर्तप्रकाश—हिन्दी टीका सहित—पं० चतुर्थीलाल	३.५०
२८०	मुहूर्तमंजरी—भा० टी०	.६०
२८१	मुहूर्तमार्तण्ड—मार्तण्डवल्लभ संस्कृत व्याख्या सहित	.५०
२८२	मुहूर्तमार्तण्ड—सान्वय "मार्तण्डप्रकाशिका" टीका सहित	३.००
२८३	मुहूर्तमार्तण्ड—पं० सीताराम झा भा० टी०	२.४८
२८४	मुहूर्तसंग्रहदर्पण—भा० टी०	३.५०
२८५	मूकप्रश्नशिरोमणि	

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

२८६ मेघमालाभडुली .५०
२८७ मेलापकव्यवस्था अर्थात गणनाविचार .२४
288 Manual of Hindu Astrology–B. V. Raman 8.25
289 Most Reliable Practical Astrology Part I–R. L. Vishnu 2.00
२९० यन्त्रराज और यन्त्रशिरोमणि (सटीक) महेन्द्ररचित २.००
२९१ यन्त्रराजरचना—महाराज सवाई जयसिंह १.७५
292 You and Your star – Cheiro 9.50
२९३ योगिनीजातकम्–सोदाहरण "विमला" भा० टी० सहितम् .५०
२९४ रत्नगर्भाचक्रम्–"हरिप्रिया" भा० टीकोदाहरण संवलितम् .२०
२९५ रत्नदीपिका—चण्डेश्वर कृत १.५०
२९६ रत्नदीपिका, रत्नशास्त्रं च—सं० श्रीराम शास्त्री २.२५
२९७ रत्नपरीक्षा–के० एस० सुब्रह्मण्य शास्त्री द्वारा सम्पादित १.००
२९८ रत्नपरीक्षादिसप्तग्रन्थसंग्रह—ठक्कुरफेरू रचित २.२५
२९९ रत्नविज्ञान—पुरुषोत्तमदासशास्त्री १५.००
३०० रत्नोद्योत—पं० रामेश्वरदत्त .७५
३०१ रत्नोद्योत–भा० टी० .६२
३०२ रमलगुलजार–भाषा ४.००
३०३ रमलदिवाकर—पं० बचानप्रसाद त्रिपाठी ६.००
३०४ रमलनवरत्न–"विमला" हिन्दी टीका सहितम् २.००
३०५ रमलनवरत्न–भा० टी० १.७५
३०६ रमलनवरत्न—भा० टी० पं० परमसुख उपाध्याय १.६५
३०७ रमलमार्तण्ड–भा० टी० .६०
३०८ रमलरहस्य–मूल ६.००
३०९ रमलशास्त्र–भा० टी० २.००
३१० रविविचार—ले० ज्योतिषी काटवे २.००
३११ रविसिद्धान्तमंजरी–मथुरानाथ .७५
312 Reconciliation of Contradictory–B. N. Acharya 5.00
३१३ रामाज्ञाप्रश्न १.२५
३१४ राशिगोलस्फुटानीति–अच्युतविरचित–के० वी० शर्माकृत
अंग्रेजी अनुवाद सहित २.००
३१५ राशिमाला बड़ा .१२
३१६ राहू-केतु-ग्रहण विचार—ले० ज्योतिषी काटवे ३.५०

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

317	Raphael's Almanac 1956	1.60
318	Raphaels Book of Dreams	2.80
319	Raphael's Mundane Astrology.	2.00
320	Rekha-The Science of Palmistry	3.00
३२१	रेखागणित—१–४ अध्याय	१.८०
३२२	रेखागणित—५–६ अध्याय—पं० सीताराम झा कृत	.४०
३२३	रेखागणित (एकादशद्वादशाध्यायो)	.७५
३२४	रेखागणितषष्ठाध्यायः—परिभाषा रूप पञ्चमाध्याय सहित, सम्पा० पं० मुरलीधर ठक्कुर	.४०
325	Road to the Stars-Yuri Gagarin	3.00
३२६	लग्नचन्द्रिका—काशीनाथ मिश्र	२.००
३२७	लग्नचन्द्रिका—हिन्दी टीका सहित	१.५०
३२८	लग्नजातक—स्व० पं० ज्वालाप्रसाद जी मिश्र कृत हिन्दी टीका सहित	
३२९	लग्नजातक–भा० टी०	.१२
३३०	लग्नपत्रिका (बड़ा रंगीन) स०	१०.००
३३१	लग्नप्रदीप—भा० टी० (प्रथम भाग)–पं० सीताराम झा	.३२
३३२	लग्नरत्नाकर (बृहद्लग्नजातकम्)–सान्वय "शिशुबोधिनी" हिन्दी टीका सहित	.४०
३३३	लग्नवाराही–भा० टी०, टीकाकार–पं० सीताराम झा	.२०
३३४	लग्नवाराही–वराहामहिराचार्य कृता "तत्वप्रकाशिका" भाषा टीका सहिता	.२०
३३५	लग्नविवेक—सीताराम झा	.२५
३३६	लघुजातक—सं० टी०, भा० टी०	१.४८
३३७	लघुजातक–सटीक	१.००
३३८	लघुपाराशरी–भा० टी०	.५०
३३९	लघुपराशरी–मध्यपाराशरी, सुबोधिनी टीका सहिता हिन्दी व्याख्यायुता च	१.२५
३४०	लघुपाराशरी–मध्यपाराशरी सहित—सं० टी०, भा० टी०	१.३६
३४१	लघुपाराशरी—पं० रामेश्वरभट्ट कृत, हिन्दी टीका	.५५
३४२	लघुपाराशरीभाष्य—दीवानरामचन्द्र कपूर	८.००
३४३	लघुभास्करीय—"विवरण" सहित	१,७५
३४४	लघुभास्करीयम्—भास्कराचार्य प्रणीतम्, सटीक	२.००
३४५	लघुमानस—परमेश्वरी व्याख्या सहितम्	.७५

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

३४६ लघुसंग्रह—गणेशदत्तपाठक २.००

347 Laws of Scientific Hand Reading–W. G. Benham 19.10

३४८ लीलावती—भास्कराचार्य, दामोदर मिश्र कृत व्याख्या १४.००

३४९ लीलावती—सं० टी०, भा० टी० ३.००

३५० लीलावती—विवरण सहित, २ भाग ४.७५,

३५१ लीलावती —सोपपत्तिक 'तत्त्वप्रकाशिका' सं० हि० टीका ४.००

३५२ लीलावतीवीथि .६२

३५३ लुप्तसंवत्सरादिनिर्णय .१२

३५४ वटेश्वरसिद्धान्त–आचार्य रामस्वरूप, भाग १ ३०.००

३५५ वनमाला—'अमृतधारा' हिन्दी व्याख्या, जीवनाथ झा .७५

३५६ वरवधूनक्षत्रनेलापक—श्रीनिवासशास्त्री ४.००

३५७ वराहमिहिर होराशास्त्रम्—ए० एम्० श्रीनिवासराघव आयंगार कृत व्याख्या सहित, प्रथम भाग २५.००

३५८ वर्षचन्द्रप्रकाश १.००

३५९ वर्षपद्धति २.००

360 Varshaphal or the Hindu Progressed Horoscope B. V. Raman 3.00

361 When Were You Born—Cheiro 2.80

362 What the Stars Foretell (Hindu Science of Prediction) by Jupiter 5.00

३६३ वर्षयोगसमूह–भा० टी०–स्व० पं० वि० वा०, पं० ज्वालाप्रसाद मिश्र १.२५

३६४ वाक्यकरणम्–सुन्दरराज कृत "लघुप्रकाशिका" व्याख्या १३.५०

३६५ वाराही (वृहत) संहिता–स्व० पं० बलदेवप्रसादमिश्रकृत हिन्दी टीका सहित ८.००

३६६ वाशिष्ठसंहिता ३.५०

३६७ वास्तवचन्द्रशृङ्गोन्नतिसाधनम् १.४८

३६८ वास्तुप्रबन्धनामपिण्डदर्पण–गृहरत्नभूषण, भा० टी० .८०

३६९ वास्तुमुक्तावली–भा० टी० १.००

३७० वास्तुरत्नाकर–विन्ध्येश्वरीप्रसाद द्विवेदी ३.००

३७१ वास्तुरत्नावली–सोदाहरण "सुबोधिनी" व्याख्या सहिता २.५०

३७२ विमण्डलवक्रविचार–दयानाथ प्रणीत २.००

३७३ विवाहपटल–विवाह विधि का सारसमुच्चय .५०

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

३७४	विवाहवृन्दावन–संस्कृत टीका सहित	१.२५
३७५	विवाहवृन्दावन–सं० टी०, भा० टी०	२.४८
३७६	विश्वकर्मप्रकाश—पं० मिहिरचन्द्रकृत भा० टी०	२.५०
३७७	विश्वकर्मविद्याप्रकाश–शिल्पशास्त्र (हिन्दी टीका सहित)	.४०
३७८	विश्व के भाग्यवानों की कुण्डलियाँ–भगवानदास मित्तल	४.००
३७९	विशोत्तरीदशा–रामनरेशप्रसाद	१.५०
३८०	वेङ्कटेश्वरशताब्दिपंचांग (सं० २००१-२१००)	नेट ३०.००
381	Vedanga Jyotish–R. S. Shastri	1.24
३८२	वेदों में ज्योतिष—पं० केदारदत्त जोशी	१.२५
३८३	व्यवहाररत्न–भा० टी०, पं० सीतारामझा	.८०
३८४	व्यापारचमत्कार–रतिराम	५.००
३८५	व्यापाररत्न	८.००
३८६	व्यावहारिकज्योतिषतत्त्व "तत्त्वप्रभा" हिन्दी व्याख्या–लषणलाल झा	यन्त्रस्थ
३८७	शकुनविचार	.१२
३८८	शनिदर्शन–गङ्गादत्त विनोदशास्त्री	१.००
३८९	शनिविचार–ले० ज्योतिषी काटवे	२.५०
३९०	शम्भुहोराप्रकाश–पं० पुंजराचार्य कृत	४.५०
३९१	शरीरसर्वांगलक्षणम्–भगवानदास मित्तल	१.५०
३९२	शारीरिकशासन–सम्पा० वी० अय्यर	६.००
३९३	शिवजातक–भा० टी०	.१२
३९४	शिशुबोधः–सान्वय "विमला" हिन्दी टीका सहित	.६५
३९५	शीघ्रबोध—भा० टी०	.६०
६९६	शीघ्रबोध, "सरला" हिन्दी टीका सहित, टीकाकार–अनूप मिश्र	१.००
३९७	शीघ्रबोध– रामेश्वरभट्ट कृत टीका सहित	१.२५
३९८	शुक्रविचार—ले० ह० ने० काटवे, अनु०—विद्याधर जोहरापुरकर	२.५०
३९९	श्रीपतिपद्धति—बी० सुब्रह्मण्य शास्त्री, अंग्रेजी अनुवाद सहित	४.५०
४००	षट्पंचाशिका—श्रीमद्भट्टोत्पल कृत संस्कृत टीकायुत "विमला" हिन्दी टीका सहित	.४५
४०१	षट्पञ्चाशिका—भा० टी०	.३०
४०२	षट्पञ्चाशिका—पृथुयशस कृत, सम्पा०–बी० सुब्रह्मण्यशास्त्री	१.२५
४०३	संग्रामविजयोदयः—के० साम्बशिवशास्त्री	२.५०

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

४०४ सचित्रसामुद्रिकरहस्य—पं० कालिकाप्रसाद ज्योतिषी ५.००
४०५ सन्ततिसमयविचार—ज्यो. श्रीनिवास महादेव पाठक १.००
४०६ समरसार १.००
४०७ समरसार—सं. टी. १.७५
४०८ सरलत्रिकोणमिति—पं. बलदेवमिश्र ३.००
४०९ सरलरेखागणितम्—विन्ध्येश्वरीप्रसादद्विवेदी १, २ अ. १.००
४१० सर्वतोभद्रम् १.००
४११ सर्वतोभद्रचक्र—भा. टी., दैवज्ञ भूषण पं. मीठालाल व्यास १.२५
४१२ सर्वाङ्गलक्षण—भगवानदास मित्तल
४१३ सर्वार्थचिन्तामणिः—पं. महीधर शर्मा कृत हिन्दी टीका ६.००
४१४ संकेतनिधि—रामदयालु कृत, सम्पा. बी, सुब्रह्मण्य शास्त्री ५.००
415 Science of Palmistry–Devacharya 8.00
416 Science of Sulba (A Study in Early Hindu Geometry) Vibhutibhushan Datta 3.75
४१७ सामुद्रिककुञ्चिका—पं. कालिका प्रसाद राजज्योतिषी .६२
४१८ सामुद्रिककुञ्चिका २.५०
४१९ सामुद्रिकदर्पण—भाषा १.००
४२० सामुद्रिकदीपिका ३ भाग—श्री लक्ष्मीनारायण त्रिपाठी १२.००
४२१ सामुद्रिकशास्त्र—भा. टी. ३.००
४२२ सामुद्रिकसोपान .२४
४२३ सारावली—भा० टी०, पं० सीताराम झा ८.००
४२४ सिद्धान्ततत्त्वविवेक—बिम्बाधिकारादि चन्द्रग्रहणाधिकारान्त ५.००
४२५ सिद्धान्ततत्त्वविवेक—सूर्यग्रहणादि महाप्रश्नाधिकारान्त ५.००
४२६ सिद्धान्ततत्त्वालोक—गोलपरिभाषा सहित .६२
४२७ सिद्धान्तदर्पण—नीलकण्ठ सोमयाजि, सम्पा०—के. वी. शर्मा अंग्रेजी अनुवाद सहित २.००
४२८ सिद्धान्तशिरोमणि—गोलाध्याय (हिन्दी टीका सहित) २.००
४२९ सिद्धान्तशिरोमणि—ग्रहगणिताध्याय ३.००
४३० सिद्धान्तशिरोमणि—गणिताध्याय २.५०
४३१ सिद्धान्तशिरोमणि—सोपपत्तिकप्रभाव्याख्या सहित व्याख्याकार—मुरलीधर ठक्कुर स्पष्टाधिकारान्त प्रथम भाग ५.००

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

४३२	सिद्धान्तशिरोमणि, ३ भाग—श्री केदारदत्त जोशी	४५.००
४३३	सिद्धान्तशेखर—मक्खिकृत टीका, सम्पा—पं. बबुआमिश्र, २ भाग	६.३०
४३४	सिद्धान्तसार्वभौम—मुनीश्वर रचित प्रथम भाग	३.००
४३५	,, द्वितीय भाग	२.००
४३६	सूर्यग्रहणगणितम्	३.००
४३७	सूर्यसारिणी—ले. डा. गोरख प्रसाद	.२५
४३८	सूर्यसिद्धान्त—भा० टी०	५.००
४३९	सूर्यसिद्धान्त—महावीरप्रसाद श्रीवास्तव	१.००
४४०	सूर्यसिद्धान्त—तत्वामृतभाष्यसहित, भाष्यकार कपिलेश्वर शास्त्री	४.००
441	Secrets of Hand Reading—Noel Joquin	7.00
442	Studies in Astrology—B. V. Raman	6.90
443	Study of Palmistry—Saint. Germain C. C. de	14.95
४४४	स्त्रीजातक—हिन्दी टीका सहित बड़ा	२.५०
४४५	स्त्रीजातक—भा. टी. टीकाकार—पं. सीताराम झा	१.२४
४४६	स्त्रीजातक वृद्धयवनोक्त—भा० टी०	.८५
४४७	स्वप्नविचार	.१२
४४८	स्वप्नाध्याय	.२०
४४९	स्वरज्योतिषचमत्कार—वागीश शास्त्री	१.५०
४५०	हनुमानज्योतिष—भा० टी०	,२५
४५१	हनुमानज्योतिष	.७५, .४०
४५२	हनुमानज्योतिष—प्रश्नग्रन्थ—भा० टी०	.४०
४५३	हरलता—अनिरुद्ध भट्ट	२.२५
४५४	हस्तपरीक्षा (हिन्दी पामिस्ट्री)—श्री निवास महादेवजी पाठक	६.५०
४५५	हस्तरेखाएँ—ले० प्रकाश दीक्षित	२.००
४५६	हस्तरेखाविज्ञान—हर गोविन्द त्रिवेदी	३.५०
४५७	हस्तरेखाविज्ञान—श्री गोपेश कुमार ओझा	८.००
४५८	हस्तरेखाविज्ञान पर नवीन विश्लेषण—श्री भीमसेन शर्मा	४.००
४५९	हस्तसामुद्रिकशास्त्र—के० सी० सेन	७.२५
४६०	हस्तसामुद्रिकशास्त्र—श्री पं. बाल भट्ट मालवीय	२.५०
461	Highways of Astrology-By Kumbha	2.00
462	How to Judge a Horoscope—B. V. Raman, Vol I	12.00
४६३	हायनचन्द्रोदय—हिन्दी टीका सहित	.५०

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

४६४	हायनबोध–भा० टी०	.६०
४६५	हायनरत्न	३.५०
४६६	हिन्दू गणित शास्त्र का इतिहास–डा० एन० एन० सिंह	३.००
467	Hindu Predictive Astrology-B. V. Raman	10.50
४६८	होराभिप्रायनिर्णय	२.२५
४६९	होरासारः—पृथुशसकृतत, सम्पा, वी. सुब्रह्मण्य शास्त्री	६.००

फलित–ज्योतिष में कालचक्र

(लेखक—दीवानरामचन्द्र कपूर, वाराणसी)

इस ग्रंथ में लेखक ने फलित ज्योतिष के प्रसिद्ध ग्रंथ पाराशरहोराशास्त्र तथा जातकपारिजात में वर्णित कालचक्रदशा पर सविस्तार उदाहरण सहित विवेचन किया है जिसके द्वारा किसी भी जातक की आयु तथा उसके जीवन में आनेवाले अरिष्टों का समय सरलता से जाना जा सकता है। नक्षत्र चरणों से चलनेवाली क्लिष्ट कालचक्र दशा का यह वास्तव में सरल हिंदी में एक भाष्य हैं जिसमें नक्षत्र चरण के भयात् भभोग से अथवा चन्द्रस्पष्ट से अथवा विंशोत्तरीदशा से कालचक्र में ग्रहो की दशा बनानें का प्रकार तथा दशा क्रम में देह जीव मंडूकी कर्कटी तथा सिंहावलोक राशियों का निर्णय करने तथा फलादेश जानने की रीति वर्णित है। इसके अतिरिक्त इसमें कालचक्र एवं विंशोत्तरीदशा, इन दोनों के समन्वय से फलादेश की भी विवेचना की गई हैं। अनेक उदाहरण, गणित तथा फलित सारणियों सहित लगभग सवासौ पृष्ठों का यह अनुपम ग्रंथ सभी ज्योतिष प्रेमियो के लिए संग्राहय है।

ग्रंथ का प्राक्कथन प्रकाण्ड विद्वान महामान्य डा० संपूर्णानन्द जी महोदय, राज्यपाल राजस्थान ने लिखकर ग्रंथ की उपादेयता सिद्ध की है। मूल्य केवल ४.००

लेखक की एक अन्य कृति 'लघुपाराशरीभाष्य' भी ज्योतिष जगत् के लिए एक अद्वितीय कृति है।

गणित–प्रवेशिका

(लेखक—पं० केदारदत्त जोशी)

(ज्योतिषशास्त्राचार्य (गणित, फलित)

प्रवक्ता—ज्योतिषविभाग, संस्कृत महाविद्यालय काशी हिन्दू विश्वविद्यालय

भारतीय वाङ्मय में गणित का अपना स्वतंत्र स्थान है। यह ऐसी विद्या है जिसके

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

बिना व्यवहार चल ही नहीं सकता। प्रस्तुत पुस्तक विशुद्ध भारतीय दृष्टिकोण से उन कोमलमति छात्रों के लिए लिखी गई है जो इस शास्त्र में सर्वप्रथम प्रवेश चाहते हैं। विशेषतः संस्कृत पाठशालाओं में प्रथमा या तत्समकक्ष परीक्षा के छात्रों के लिये प्राचीन गणित प्रणाली का बोध कराती हुई आधुनिक व्यवहार के योग्य गणित सीखने के लिये ऐसी अनुपम पुस्तक आज तक नहीं प्रकाशित हुई थी।

इसमें प्रारंभिक गिनती से लेकर दशमलव तक गणित बड़ी सरस और सरल रीति से समझाया गया है। उदाहरणों में आधुनिक मानों का ध्यान रखा गया है। लगभग १०० पृष्ठों के प्रथम भाग का मूल्य केवल १.००

इसके अग्रिम भाग शीघ्र ही छप रहे हैं।

नीति (Politics)

भारत में जनतन्त्र के नवीन आदर्श

(मूल ले०—बी० एम० डीन)

हिन्दी अनुवादक श्रीराधेश्याम, पृष्ठ २६०, कपड़े की जिल्द सहित ५.००

श्रीमती डीन के 'भारत में जन-तंत्र के नवीन आदर्श' के विवेचन में किसी भी मानवीय परिस्थिति को उसके काले अथवा सफेद पहलू में देखने के स्थान पर भूरे रंग के विभिन्न 'शेडों' से कैनवस पर चित्रित करने का प्रयास है। जैसा कि भारत के राष्ट्रपति सर्वपल्ली राधाकृष्णन् ने कहा है कि आप वस्तुओं को 'इस' अथवा 'उस' रूप में क्यों देखते हैं, 'इस' और 'उस' दोनों ही को देखने की चेष्टा क्यों नहीं करते। और प्रस्तुत पुस्तक में यही दृष्टिकोण व्याप्त है। दृष्टिकोण का परिणाम चाहे कुछ भी हो परंतु सारे विश्व की आँख इसी पर लगी है और यदि भारत इसमें सफल हुआ तो सारे पूर्वी संसार का पथ प्रदर्शक होगा। विदुषी लेखिका ने 'भारत की एक झांकी' दिखाकर 'जन-तंत्र के मूल तत्त्वों' (भूमि और साधन जनता और विचार) का कुशलता से विवेचन किया है। 'राष्ट्रनिर्माण का कार्य', 'शान्तिमय क्रान्ति', 'नये राजनीतिक आदर्श' (समझौते के द्वारा प्रशासन), 'नमे आर्थिक आदर्शों' (एक मिली-जुली ऐच्छिक अर्थ-व्यवस्था), 'नये सामाजिक आदर्शों' (ऐच्छिक सामुदायिक कार्रवाई), और 'राजनयिकता' के नये आदर्शों (तटस्थतावाद अथवा गठबंधन-विरोधी नीति) पर पर्याप्त प्रकाश डाला है। और अन्त में 'भारत किसे अपनायेगा' (जनतंत्र अथवा कम्युनिज्म) इस पर विशद विवेचन किया है।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

प्राचीन भारत में राज्य और न्यायपालिका

(ले० हरिहरनाथ त्रिपाठी)

डिमाई आकार ३७४ पृष्ठों में मूल्य १०.००

प्राचीन भारतीय, राजनीति पर जो विवेचना पूर्ण साहित्य उपलब्ध है उसमें प्रस्तुत प्रवन्ध एक महत्वपूर्ण देन है, क्योंकि वह इस सीमित क्षेत्र में एक कमी की आवश्यक पूर्ति करती है। प्रवन्ध के लिए आवश्यक सामग्री का संकलन चयन, एवं विभिन्न अध्यायों में ग्रंथन सुयोग्य रीति से किया गया है। अध्यायों की क्रमबद्ध रचना सहायक ग्रंथ सूची एवं याद टिप्पणियाँ लेखक के दीर्घ परिश्रम का परिचय देती है। प्रवन्ध की शैली यद्यपि सुगम नहीं है तथापि अत्यन्त अर्थविधेयक है इस विषय के पूर्ण स्रोत प्राचीन पारिभाषिक शब्द तथा आधुनिक पश्चिमात्य साहित्य से प्रभावित समाज-शास्त्रीय शब्दावली की समस्या सुलझाने में सुयोग्य चेष्टा की है। एतादृश प्रबन्धों की रचना में कालनिर्णय की समस्या भी जटिल होती है। किन्तु प्रबन्ध विषय के सैद्धान्तिक पक्षपर निर्भर होने के कारण इसमें इसका आडम्बर न करना ही उचित था। इस विशेषता के साथ लेखक ने न्यायपालिका पर पड़ने वाले आन्तरब्रह्म प्रभावों का समावेश सतुलित ढंग से किया है। (डा० दि० का० गर्दे, तिलक प्रोफेसर आफ पोलिटिकल सायंल एएड हेड ऑफ दी डिपार्टमेंट पूना यूनिवर्सिटी, पूना)

New Patterns of Democracy in India

BY VERA MICHALES DEAN, *Crown Octavo PP. 250, cloth bound, Rs. 6.00*

In this volume Mrs. Dean lucidly explains that India is a country which, throughout of its religious beliefs, the leadership of men like Asoka and Akbar, and the blending of India's ancient traditions with the ideas and practices of British liberalism, is absorbed in the development of a society in an uneconomically underdeveloped country still wrestling with the limitations on social mobility but intent on forging New Patterns of Democracy in Political, Economic and social relations. Thus the New Patterns India is evolving, is of paramount significance to all the world, both communist and noncommunist countries.

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

Some Aspects of Ancient Hindu Polity

by D. R. BHANDARKAR *Demy Octavo Pages* 204 *Bound*
Price Rs. 6.00

This SECOND edition of the thought-provoking material, is not merely a compilation but presents something new to the readers of Indology and Polity and contains intellectual and spiritual ancestry of India. It contains six lectures as—Hindu Science of Politics, Date of Kautilya, Hindu Conception of the State, Different Types of States, Origin of the States, Nature and End of the Hindu State.

State & Government in Ancient India

BY A. S. ALTEKAR, M. A., LL. B., D. LITT. *Demy Octavo ; PP.* 424 *: cloth bound & jacketed* : *Rs.* 15.00

This FOURTH, REVISED and ENLARGED edition is a comprehensive work, explaining succinctly the Hindu political ideas, theories and ideals and describing the different features and aspects of the ancient Indian administration in its numerous folds. Over and above the Smriti Books and Arthasastra works in Sanskrit, all the data bearing on the subject available in Vedic and Classical literature, Buddhist and Jain works, ancient books on history and and accounts of of foreign travellers and historians synchronising with Inscriptions and Archaeologicai Finds, are included. Where feasible the material has been arranged chronologically and province-wise. Not only an idea of the origin and development of the several concepts and institutions of the Ancient Indian Polity, but a concrete picture of the administration as a whole, as it was functioning and developing in the successive periods of Ancient Indian History from the Vedic age to 1000 A. D., has been painted. Numerous References in Footnotes and Original passages have been added to steer further studies in the field, by general readers, students and research workers. The book is mainly a RESEARCH WORK which DOCUMENTS all important statements contained in it and fresh light on several important and obscure points, has been flashed.

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

The author opens with a survey of the Literature on Polity i.e, Name, History and Source, gives Origin and Types of State and its Nature, Aims and Functions. The Relationship between State and Citizen, Kingship, Republics, Central Assembly. Ministry, Secretariat and Departments are discussed. Next he takes up Provincial, Divisional, District and Town Administrations, Village Administratian, Judicial Administration, Income and Expenditure and Inter-State Relations each subject from the remote past to 1000 A. D. Further a Historical Survey of Administration is dilated and Estimate of Ancient Indian Polity is made. The book is concluded with a smart Bibliography, Chronological Table of Authors, Kings, Periods etc. and exhaustive Index

Studies in Hindu Political Thought and its Metaphysical Foundations

by DR. VISHWANATH PRASAD VARMA, M. A. (Patna), M. A. Columbia PH. D, (Chicago). *Demy Octavo* : *PP.* 354 : *Cloth bound & Jacketed* : *Rs.* 15.00

This Doctoral Thesis for Chicago University, is the SECOND REVISED & ENLARGED EDITION of the original contribution to Political Science and perhaps is the first book of its kind. In this dissertation the Hindu Political Thought has been analysed on the basis of the Philosophical concepts of ancient India, from the Rg-veda to the Manusmriti distinguishing History from concept, as the profound moral seriousness and religious character of Hindu Political Thought symbolised in the notion of Dharma cannot be understood unless its metaphysical background is analysed.

Liberty is something infinite and to make it to be possessed of by Finite Beings, it has got to be brought into a framework,

According to Hindu theorists political power has been always conceived to be a means. Wealth and Power are important values but spiritual realisation and self-contemplation stand higher. Hindus have always stressed that force should not be the basis of political power but the latter should have its foundations in dis-

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

cipline, self-restraint and the performance of the function for which power has been instituted. The view that the ancient Hindu gave primacy to spiritual values over political goals, is demonstrated in the philosophy of Hindu social structure where the Brahmins; the people of knowledge and renunciation–are placed in a higher rank than the Kshatriyas—the political people and the fighters.

THIS WAS THE 'MIND' BEHIND THE HINDU POLITICAL THOUGHT and that is the reason why ancient Hindu Thinkers did not produce any magnificent work in the realm of the political thought proper except the Arthashastra of Kautilya having its basic importance in a systematic work on the theory of public administration only.

The learned author introduces us to the *Historical Background* and *Foundation of Hindu Political Philosophy* and gives its *Basic Concepts. Nature of the Concept of Dharma and its Influence on Hindu Political Philosophy*. The *Theory of Kingship in Ancient India* and The *Theory of the Divinity of the King*, have been elaborately brought out with references and counter-references arriving at the *Conclusion.* To strengthen the character of this in a book as a systematic work on the subject the author has incorporated in it *The Sociology of Early Buddhist Ethics,Theology & Ethics in Kautilyan Political Thought* and *Philosophy of History in the Bhagavadgita,* in three *Appendices.* A comprehensive *Bibliography* has been supplied with an *Index* in the end. The book serves to dispel the confusion responsible for mixing up of the detail of Institutional Development and Theoretical Propositions.

नीति के कुछ अन्य ग्रंथ

१	अक्षयनीतिसुधाकर	५.००
२	अपराध और दण्ड शास्त्र--कौशलकुमार राय	८.००
३	अभिलषितार्थचिन्तामणि--सोमेश्वर कृत	२.००
४	अर्थशास्त्र--(राजसिद्धांत) कौटिल्य	४.४०

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

५ अर्थशास्त्रव्याख्या--जयमंगला, हरिहर शास्त्री ३.५०
६ अरस्तू की राजनीति–भोलानाथ शर्मा ८.००
7 International Law and Inter State Relations in Ancient India—H. L. Chatterji 15.00
8 Indian Cameralism—K. V. Rangaswami Aiyangar 12.00
९ उद्योगप्रारब्धविचार (हिन्दी) २.५०
9a Aspects of Ancient Indian Polity—N. N. Law 16,00
१० कामन्दकीयनीतिसार–स० टी०, ३ भाग १६.००
११ कामन्दकीयनीतिसार—हिन्दा टीका सहित २.००
१२ कौटिल्यअर्थशास्त्र–भा० टी०. रामतेज पाण्डेय ८.००
१३ कौटिल्यअर्थशास्त्र—टिप्पणी विविधानुबन्धै–समलंकृत वेङ्कटनाथचार्य सम्पादिता १५.००
१४ कौटिल्यअर्थशास्त्र–भा० टी०, वाचस्पति गैरोला २५.००
१५ कौटिल्यअर्थशास्त्र—हिन्दीरूपान्तर, वाचस्पति गैरोला ८.००
16 Kautilya Arthashastra—English Translation R. Shamashastri 15.00
17 Kautilya Arthashastra–Vol II Complete English Trans. R. P. Kangle 20.00
18 Kautilya Arthashastra Vol III (A Study) R. P. Kangle 16.00
१९ कौटिल्य की शासनपद्धति—भगवानदास २.००
20 Glorious Thoughts of Kautilya— N. B. Sen 15.00
21 Chanakya and the Arthashastra — S. Dhar 1.50
22 Canakya's Aphorisms in the Hitopadesa—L. Sternbach 9.37
२३ चाणक्यनीति–शाखासम्प्रदाय–सम्पादक स्टर्नबैक, २ भाग ६०.००
२४ चाणक्यनीतिदर्पण—भा० टी० ०.५०, ०.७५
२५ चाणक्यनीति—भाषानुवाद सहित, सम्पादक ब्रिहारीलाल १.२५
२६ चाणक्यराजनीति–डा० लुडविक स्टर्नबेक सम्पादिता, अंग्रेजी अनुवाद १६.००
27 Chanakya Rajaniti Sastram—Suniti Kumar Pathak 5.00
२८ चाणक्यसप्तति–के० बी० शर्मा ४.००
२९ चाणक्यसूत्र प्रथमाध्याय: स० टी०, भा० टी० ०.२४, ०.४५
३० चाणक्यसूत्र—अनुवादक वाचस्पति गैरोला ०.७५
३१ चाणक्यसूत्राणि—भा० टी०, रामावतार १२.००

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

32 Juridical Studies in Ancient Indian Law Vol I-Sternbach 50.00
33 ,, ,, ,, Vol II ,, Shortly
34 Test of Man—Being the English Translation of Pursha-Pariksha —G. Grierson 18.75
३४क धौम्यनीति—भा० टी० ०.३०
३५ नीतिकल्पतरु–व्या० दास क्षेमेन्द्र ५.००
३६ नीतितत्वाविर्भाव–चिदानन्द ४.५०
३७ नीतिप्रकाशिका–वैशम्पायन कृत तथा विवृति ४.१३
३८ नीतिमञ्जरी—सभाष्य–ग्राद्याद्विवेद विरचित ४.५०
३९ नीतिवाक्यामृत–सोमदेव कृत, जनार्दनशास्त्री कृत हिन्दी अनुवाद प्रेस में
४० नीतिशतक–भा० टी०, स० टीका युक्त १.००
४१ नीतिशतक–सटीक २.००
४२ नीतिशतक—विस्तृत हिन्दी टीका, हरिदास ५.००
४३ नीति, शृंगार, वैराग्यशतक–भा० टी०, काशी १.००
44 Niti Satak—Text with English Translation—S. Rangacharya 2.00
45 Neeti Satak of Bhartrihari with English Notes and translation – P.P. Sharma 2.00
46 Neeti Shastra of Masuraksa—S. Pathak 4.00
४७ नीतिसंग्रह–गौरीनाथ पाठक ०.५०
४८ नीतिसूत्राणि—(कौटिल्यार्थसंग्रह) २.२५
४९ पंचतन्त्र–प्रथमतंत्र, भा० टी०, श्रीमन्नालाल अभिमन्यु २.००
५० पंचतन्त्र—भाषा, सत्यकाम विद्यालंकार ३.५०
५२ पंचतन्त्र–भा० टी०, रामतेज पाण्डेय ४.००
५३ पंचतन्त्र —सरला व्याख्या सहित ५.२५
54 Panchatantra—Text of Purnabhadra, Critical introduction in 2 Vols.– J. Hertel 64.00
५५ पंचतन्त्र–(अपरीक्षितकारक) स० हिन्दी व्याख्यायुक्त १.२५, ०.७५
५६ पञ्चतन्त्र—"सरला" हिन्दी टीका सहित ५.००
५७ पञ्चतन्त्र—मूल, काशी २.००
५८ पञ्चतन्त्र–भा० टी०, बम्बई ५.५०
५९ पञ्चतन्त्र–भाषा, मोतीचन्द्र कृत ४.५०
६० पञ्चतन्त्र—मूल, एजटन सम्पादित २.५०

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

६१	पञ्चतन्त्र—(मित्रभेद) भा० टी०	२.५०
६२	पञ्चतन्त्र–(मित्रसम्प्राप्ति) भा० टी०	१.००
63	Panchatantra–English Translation –Ryder	4.00
64	Panchatantra—English Translation,-Edgerton	29.40
६५	पञ्चतन्त्र—(काकोलूकीय) भा० टी०	१.२५
६६	पञ्चतन्त्र - तृतीयतंत्र (लब्धप्रणशम्) भा० टी०	०.७५
६७	पञ्चतन्त्र की कहानियाँ–शकुन्तला देवी	३.७५
68	Panchatantra and Hitopadesh Stories—A. S. P. Ayyar	6.50
६९	पुरुषपरीक्षा–भा० टी०	२.६०
70	Political Economy in Ancient India--Mudgal	7.50
71	Polity in Agni Puraṇa - B. B. Mishra	36.00
72	Political Theory of Ancient India--J. W. Speelman	26.00
74	Politische Polemiken in Staateslehrbuch Des Kautalya by Wilhelm	44.00
७५	प्राचीनभारत की दण्डनीति—जे० एन बागची	१०.००
७६	प्राचीनभारत में राज्य और न्यायपालिका—हरिहरनाथ त्रिपाठी	१०.००
७७	प्राचीनभारत के राजशास्त्र प्रणेता—श्यामलाल पाण्डेय	१०.००
७८	बालनीतिकथामाला	१.७५
७९	बुद्धभूषण–शम्भू विरचित	१.५०
80	Bhartrihari Three Satakas with English Translation Gopinath	7.00
८१	भर्तृहरिशतकत्रयम्–हिन्दी गद्य पद्यानुवाद सहित	३.००
८२	भर्तृहरिशतकत्रय–मूल	१.००
८३	भर्तृहरिशतकत्रय–भा० टी०, काशी	१.००
८४	भारतीयनीतिशास्त्र–भीखनलाल आत्रेय	२०.००
८५	रत्नसमुच्चय	०.३७
८६	राजनीतिरत्नाकर—चण्डेश्वर विरचित	५.००
८७	विदुरनीति–भा० टी०, गोरखपुर	०.७०
८८	विदुरनीति—स० टी०, हिन्दी टीका	२.००
८९	विदुरनीति–भा० टी०	१.००
९०	विदुरनीति–१-२ अध्याय (सचित्र)	०.७५
९१	विदुरनीति–भा० टी०, गौरीनाथ पाठक	१.२५

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

९२	विदुरप्रचागर–भाषा	०.६२
९३	व्यवहारविज्ञान "सुधा" हिन्दी व्याख्या	०.६०
९४	शतकत्रयम्–कोसाम्बी सम्पादितः	६.००
९५	शतकत्रयादिसुभाषितसंग्रह	१२.५०
९६	शुक्रनीति–भा० टी०	४.५०
९७	सरस्वतीविलास-व्यवहारकाण्ड—श्रीप्रतापरुद्र	२.५०
९८	संक्षिप्तचाणक्यनीति–देवदत्तशास्त्री	१.५०
९९	संक्षिप्तविदुरनीति—देवदत्तशास्त्री	१.५०
१००	संक्षिप्तशुक्रनीति–देवदत्तशास्त्री	१.५०
१०१	साम्राज्यलक्ष्मी–पीठिका, सम्पादक वासुदेव शास्त्री	८.५०
101a	Some Aspects of Ancient Hindu Polity–Bhandarkar	6.00
१०२	सुभाषितत्रिशती (भर्तृहरि कृत) सटीक	२.५०
103	Studies in Kautilya––M. V. Krishna Rao.	12.50
104	Substance of Hindu Polity—C. P. Bhaurihari	5.00
१०५	हितोपदेश–(मित्रलाभ), सं० हि० व्याख्या, विश्वनाथ झा	१.००
१०६	हरिहरचतुरङ्गम्—गोदावर मिश्र प्रणीत	६.५०
१०७	हितोपदेश–भा० टी०, काशी, बम्बई	१.५०, ३.७५
१०८	हितोपदेश–स० टी०, हिन्दी टीका सहित, गुरुप्रसाद शास्त्री	३.००
१०९	हितोपदेश—मूल	१.००, २.००
११०	हितोपदेश—"किरणावली" संस्कृत हिन्दी व्याख्या सहित	३.५०
१११	हितोपदेश सुहृदभेद—"किरणावली" हिन्दी टीका सहित	१.२५
११२	हितोपदेश–भाषा	२.५०
113	Hitopadesha and its Sources –L. Sternbach	21.00
११४	हितोपदेश मित्रलाभ (प्रथमतंत्र) स० हि० टीका गौरीनाथ पाठक	१.००

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

नाटक

—०—

महाकवि भास कृत

प्रतिज्ञायौगन्धरायण

संस्कृत टीका, हिन्दी-अंग्रेजी अनुवाद, विस्तृत विवेचनापूर्ण भूमिका आदि से युक्त सर्वोत्तम संस्करण

टीकाकार—प्रो० सुदर्शन शर्मा एम० ए०

संस्कृत साहित्य में भास का सर्वोच्च स्थान है। उन्हें कविताकामिनी का हास कहा गया है। उनके जो १३ नाटक उपलब्ध हुए हैं उनमें स्वप्नवासदत्तम् एवं प्रतिज्ञा-यौगन्धरायण ये दो अधिक विख्यात रहे हैं। साहित्यिक एवं चारित्रिक दृष्टि से प्रतिज्ञायौगन्धरायण का अपना स्वतंत्र स्थान है। इस नाटक पर प्रो० सुदर्शन शर्मा ने अत्यन्त सरल सुबोध संस्कृत टीका, हिन्दी अनुवाद, साथ ही अंग्रेजी विद्यालयों के छात्रों के लिये अंग्रेजी अनुवाद करके यह उत्तम संस्करण प्रस्तुत किया है। ७५ पृष्ठों की भूमिका में ग्रंथ, ग्रंथकार तथा वर्ण्य विषयों पर पर्याप्त उपयोगी सामग्री दे दी गई है। कथासरित्सागर का वह अंश भी, जहाँ से वासवदत्ता की कथा ली गई थी, भूमिका में दे दिया है। प्रतिज्ञायौगन्धरायण में सामाजिक, धार्मिक, राजनीतिक एवं सांस्कृतिक स्थितियों का पृथक् पर्यवेक्षण किया गया है। इस प्रकार सर्वाङ्गपूर्ण यह संस्करण अत्यन्त स्वच्छ, शुद्ध, एवं आकर्षक मुद्रण के साथ प्रस्तुत है। मूल्य ५-००

संस्कृत नाटक

मूल लेखक—डा. ए. बी. कीथ, अनुवादक—डा. उदयभानसिंह

आधुनिक समय में जब कि विश्वविद्यालयों की पाठ्य-प्रणालियों का माध्यम हिन्दी होता जा रहा है, प्रामाणिक पुस्तकों का अनुवाद साहित्य का एक आवश्यक अङ्ग बन गया है। इसी दृष्टिकोण के अन्तर्गत प्रोफेसर कीथ कृत 'संस्कृत ड्रामा' जो कि आंग्ल भाषा में यूनिवर्सिटियों की पाठ्य-प्रणालियों में सम्मिलित हैं, का हिन्दी अनुवाद प्रस्तुत है।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

पुस्तक चार भागों में विभक्त है। प्रथम भाग में संस्कृत नाटक का आरम्भ; द्वितीय भाग में उसका विकास तथा प्रसिद्ध नाटककार कालिदास, भास, शूद्रक, चन्द्र, हर्ष, महेन्द्र विक्रम, वर्मण, भवभूति, विशाखदत्त, भट्ट नारायण, मुरारि, राजशेखर व उनके पूर्ववर्ती एवं उत्तरकालीन नाटककार; तृतीय व चतुर्थ में संस्कृत नाटक के मूल भूत सिद्धान्त एवं नाटक-गृहों का वर्णन व विवेचन किया गया है। अपने विषय की सर्वांगीण पुस्तक है। अंग्रेजी में इसके कई संस्करण निकल चुके हैं इसी से इस पुस्तक की उपयोगिता का पता लगता है। मूल्य १४·००

Ghansyama's Anandsundri

(**A Sattak, or Drama in Prakrit**)—(with the Sanskrit Commentary by Bhattanatha) *by* DR. A.N. UPADHYE, M.A., D.LITT, *Demy Octavo: PP. 226 : Full Cloth bound Rs. 5.00*

The book is critically edited for the first time by Dr. Upadhye who has brought to light a number of Prakrit Works form South India, focussing the evolution of Prakrits and the last phases of Prakrit literature.

GHANASYAMA, was a gifted poet of the South belonging to the 18th century. The present play of 4 Acts, is sustained by light humour which is created by words of double meaning and is a comedy. His attempt to introduce Desi or Marathi words and expressions in Prakrit, is skilful and commendable. *He wanted himself to be understood by the society at large.*

Mahamahopadhyaya BHATTANATHA, in his Comm. into Sanskrit, explains obscure words, elucidating mythological allusions, dissolving out-of-the-way compounds and notes alternative readings and interpretations given by some of his predecessors. On the whole it is a good attempt to explain a Prakrit Play for those who know Sanskrit sufficiently well.

In the Contents, the Editor introduces Critical Apparatus, Constitution and Presentation of the Text, Ghanasyama, the Author & His Anandsundari & Bhattanatha's Commentary. He further gives Prakrit Text of Anandsundari, Sanskrit Commentary, Notes & Index of Verses.

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

Uttararama Charita of Bhavabhuti

Text with Ghansyam's Sanskrit Comm. and Notes and 44 pages introduction thoroughly revised *by* MAHAMAHOPADHYAYA DR. P. V. KANE and English translation *by* : C.N. JOSHI M.A, *Demy Octavo* : *PP. 478* : *Rs. 10.00*

The Uttar-Rama-Charita, or 'The Later Fortunes of Rama', is a romantic drama full of pathos seldom found in any other Indian Drama. The play begins with the banishment of Sita and ends with her restoration, after twelve years of grievous solitude. Her two sons born in exile and nourished in the wilderness by the sage Valmiki, little knew of their royal descent. It is a striking parallel to the two princes Guiderious and Arviragus brought up by the hermit Belarius in Shakespeare's Cymbaline. The present edition is a most authoritative one.

उत्तररामचरित (भवभूतिकृत)

(संस्कृत टीका, हिन्दी व्याख्या एवं विस्तृत टिप्पणी सहित)
व्याख्याकार—श्री आनन्द स्वरूप एम. ए.,
सम्पादक—श्री जनार्दन शास्त्री पाण्डेय एम. ए.,
डिमाई आठपेजी : पृष्ठ संख्या ५६० : सजिल्द : मूल्य ६.०० मात्र

उत्तर रामचरित महाकवि भवभूति की ऐसी सर्वोत्कृष्ट रचना है जिसके कारण वह कालिदास के समकक्ष नाटककार माने जाते हैं। प्राच्य तथा पाश्चात्य दोनों ही प्रकार के साहित्यज्ञों ने भवभूति के उत्तररामचरित की मुक्त कंठ से प्रशंसा की है। ऐसे उच्चतम नाटक की आज तक जितनी भी टीकाएँ हुई हैं वे या तो क्लिष्ट प्रतीत होती हैं या केवल अनुवाद मात्र।

प्रस्तुत ग्रंथ में व्याख्याकार ने प्रत्येक पद का हिन्दी में शब्दार्थ, भावानुवाद, संस्कृत टीका, व्याकरण के अनन्तर पर्याप्त विस्तृत टिप्पणी दे दी है। प्रारम्भिक विस्तृत भूमिका में भवभूति का खोजपूर्ण जीवन चरित्र, काल, रचनाएँ व व्यक्तित्व; कालिदास के साथ उनका तुलनात्मक विवेचन और भवभूति की रचनाओं की विशेषता पर प्रकाश डाला गया है। उत्तर रामचरित का सामान्य परिचय, कथावस्तु व उसका विकास-क्रम तथा आधार, प्रधान पात्रों का चरित्र-चित्रण और नाटक के गुण-दोषों का विश्लेषण और अन्त में श्लोकों की अकारादि क्रम से सूची तथा उनके छन्द भी दे दिये गये हैं।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

Rajacekhara's Karpur-Manjari

(A Drama by the Indian Poet Raja Cekhara) about 900 A.D. *Critically Edited in the Original Prakrit, with A Glossarial Index, and An Essay on the Life and Writings of the Poet. by* STEN KONOW and Translated into English with Notes *by* CHARLES ROCKWELL LANMAN, *Royal Octavo* : *Pages 314* : *Cloth Bound* : *Price Rs. 7.50*

RAJACEKHARA has been highly esteemed for his proficiency in the PRAKRITS. This volume presents the first critical edition of the only Prakrit Drama extant, for none of the characters speak Sanskrit, in the KARPUR MANJARI of RAJACEKHARA. The interest of the Play is largely Philological likely to throw light on the Linguistic History of India, though, not without its importance for the History of the Indian Drama. It abounds in material which may well engage the attention of the student of Antiquities and Folk lore.

The Sacred Scriptures of the Jaina Religion are written in Prakrit. And, considering the extreme dearth of books for students of that tongue, it is hoped that this volume in connection with Jacobi's Handbook, may prove highly serviceable as an introduction to the language of that very ancient religion. The chief aim of this edition is a linguistic one and the vocabulary is composed with the aim to serve students learning Prakrit.

The Karpur-manjari contains Four Acts called Javanikantara. It tells us how the king Candapala marries Karpur-manjari, the daughter of the Kuntala king, and thus becomes a paramount sovereign. The jealousy of the queen, and the machinations that bring the king and the heroine together, form the Plot of the Play. The *ADBHUTA RASA* is represented by the sorcerer Bhairavananda and his tricks. It is an earlier play of the poet and was not, like, his other plays, acted at the request of the king, but by the wish of the poet's wife Anantisundari.

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

भरत का नाट्यशास्त्र

लेखक—डा० रघुवंश

प्रथम भाग (१–७ अध्याय) : डिमाई आठ पेजी : पृष्ठ संख्या ५७२ : कपड़े की पक्की जिल्द।

मूल्य १५.००

भारतीय वाङ्मय में 'नाट्य-शास्त्र' का अनुपम स्थान है। इस अकेले ग्रंथ में 'नाट्य' का जितना साङ्गोपाङ्ग तथा सर्वाङ्गीण वर्णन है, उतना संसार के किसी ग्रंथ में नहीं मिलता। इसके अतिरिक्त इस एक ही ग्रंथ में अनेक शब्दों तथा शिल्पों का विवेचन मिलता है। शास्त्रकारों का कहना है कि न कोई ऐसा ज्ञान है, न शिल्प है, न विद्या है, न ऐसी कोई कला है, न कोई योग है जिसका उपयोग नाट्य में न होता हो। इसी दृष्टि से 'नाट्यशास्त्र में अनेक शास्त्रों का आधार लिया गया है, अनेक कलाओं का विवेचन किया गया है, अनेक शिल्पों की प्रयोग-विधि दी गयी है और अनेक विद्याओं की प्रासङ्गिक चर्चा भी मिलती है। प्राचीन भारत के तत्सम्बन्धी ज्ञान का इसको कोश माना जा सकता है।

अन्य अनेक महत्त्वपूर्ण तथा भारतीय गौरव की उन्नायक कृतियों के समान 'नाट्यशास्त्र' की ओर सर्वप्रथम पाश्चात्त्य तथा उसके बाद भारतीय विद्वानों का ध्यान आकृष्ट हुआ और इस पर बहुत ही खोज-बीन की गई।

विद्वान् लेखक ने इसके पाठान्तर तथा काल पर भी विशद व्याख्या की है। साथ ही इसके रचयिता के सम्बन्ध में शोध-पूर्ण कार्य किया है। प्रस्तुत पुस्तक की अपनी विशद भूमिका में लेखक ने भरत और अभिनवगुप्त की दृष्टि के अन्तर पर भी विद्वत्तापूर्ण विचार किया है।

महाकवि भास कृत

प्रतिमानाटक

संस्कृत टीका और हिन्दी अनुवाद सहित

टीकाकार—श्रीधरानन्दशास्त्री

महाकवि भास और उनके नाटकों के लिए कोई परिचय देना आवश्यक नहीं, प्रतिमा नाटक उनमें अनुपम है। यही कारण है कि इसे सर्वत्र परीक्षा-पाठ्यग्रन्थों में स्थान मिला है। इसकी प्रस्तुत संस्करण की टीका छात्रों को व्युत्पन्न करने के लिए अत्यन्त ही उपादेय है। छात्रों से हमारा अनुरोध है कि इसे एकबार अवश्य देखें।

मूल्य २-००

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

मध्यमव्यायोग

दृश्य काव्य के १० प्रमुख भागों में व्यायोग भी एक है। प्रसिद्ध एवं अत्यन्त प्राचीन नाटककार महाकवि भास का यह अनुपम व्यायोग है। हिन्दी टीका सहित इस सुन्दर संस्करण का मूल्य केवल १.००

Mudrarakshasa of Visakhadatta

by

M. R. Kale

With English & Hindi translation critical & Explanatory notes, introduction and various readings.

Size demy octavo Price Rs. 10 00

MUDRARAKSHASA is one of the great Sanskrit dramas. It is a drama of political intrigue, composed, moreover, with much dramatic talent, being full of life, action and sustained interest. The action of the piece takes place in the time of Chandragupta, who soon after Alexander's invasion of India, founded a new dynasty at Pataliputra by deposing the last king of the Nandas. It is centred in the person of Rakshasa, formerly minister of the Nandas, who is now sworn to revenge their destruction on Chanakya, the Brahmin who vowed to ruin them, and who, in pursuance of this end, secured an alliance between Chandragupta, their rival and Parvatesha and attacked Pataliputra. The plot turns on the efforts of Chanakya, the minister of Chandragupta to win over the noble Rakshasa to his master's cause. In this he is ultimately successful.

The Sanskrit of the Mudrarakshasa is classical, and the Prakrits number three, for, in addition to the normal Sauraseni and Maharastri, Magadhi is used by the Jain monk, by Siddhar—thaka and Samiddhartha as Candalas, by a servant and an envoy.

The present edition is most useful for the scholars and students as it contains the commentary of Dhundiraja, English and Hindi translations and introduction and Notes. All these peculiarities will make the Sanskrit text easily understandable.

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

महाकवि भास विरचित

स्वप्नवासदत्तम्

प्रो० श्री जगदीशलालशास्त्री एम.ए. एम.ओ. एल., पी.ई. एस. द्वारा हिन्दी भाषान्तर, प्रसंगसहित कठिनस्थल-विवेचन, टिप्पणी, विस्तृत भूमिका एवं उपयोगी परिशिष्ट सहित। छात्रोपयोगी संस्करण मूल्य १.७५.

अन्य महत्वपूर्ण ग्रन्थ

१	अद्भुत पञ्जर (नाटक) नारायण दीक्षित	४.५०
२	अद्भुत दर्पण—महादेव कवि	१.००
३	अनर्घराघव (मुरारिमिश्र विरचित)—रुचिपत्युपाध्याय कृत टीका सहित	३.००
४	अनर्घराघव—सं० हि० व्याख्या	८.००
५	अभिज्ञान शाकुन्तल—राघव भट्ट कृत अर्थद्योतनिका व्याख्या	४.२५
६	अभिज्ञान शाकुन्तल—"किशोर केलि" सं० हि० व्याख्या	६.००
७	अभिज्ञान शाकुन्तल—शंकर, नरहरि कृत व्याख्या सहित	१५.००
८	अभिज्ञान शाकुन्तल—विजय चन्द्र शास्त्री कृत अनुवाद सहित	७.५०
९	अभिज्ञान शाकुन्तल—"मनोरमा" भा० टी०	२.५०
१०	अभिज्ञान शाकुन्तल—अनुवादक इन्दुशेखर	३.००
११	अभिज्ञान शाकुन्तल—एस० के० बेल्वलकर सम्पादित	५.००
१२	अभिज्ञान शाकुन्तल—सं० टीका, हि० टीका—खिस्ते	६.००
१३	अभिज्ञान शाकुन्तल—सं० टीका—बागीश्वर विद्यालंकार	यन्त्रस्थ
१४	अभिज्ञान शाकुन्तल—भा० टी० गौरीनाथ पाठक	२.००
१५	अभिज्ञान शाकुन्तल—भा० टी० शिवराज शास्त्री	६.५०
१६	अभिज्ञान शाकुन्तल—भा० टी०, काशी	२.००
१७	अभिज्ञान शाकुन्तल—डा० पिशल सम्पादित	४०.००
१८	अभिज्ञान शाकुन्तल—भा० टी०, नोट्स, कपिलदेव द्विवेदी	६.००
१९	अभिज्ञान शाकुन्तल—सुबोधिनी सं० टी०	३.००
२०	अभिज्ञान शाकुन्तल—चतुर्थ अंक—जगदीशलाल शास्त्री	१.२५
20A	Abhijnanasakuntala—with English Translation & Notes by Devadhar	5.50
21	Abhijnanasakuntala—Text wih English Translation & Notes R. Bose	13.00

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

22 Abhijnanasakuntalam—Text with English Translation & Notes by M. R. Kale 9·90

23 Abhijnanasakuntalam—Text with English Notes & Translation by K. Ray 12·50

24 Abhijnanasakuntalam—Text with English translation by Gajendragadker 8·50

25 Abhijnanasakuntalam—with English Notes & translation by C. S. R. Sastri 7·00

26 Abhijnanasakuntala—with Sanskrit Comm. and English Translation by Srinivas Shastri 7·90

27 Abhijnanasakuntala—only English Translation by M. Williams 15·00

28 Abhijnanasakuntala—Text with English transalation by Monier William 15·00

२९ अभिज्ञान शाकुन्तल चर्चा २·२५

.0 Abhinaya Darpanam of Nandikeswara with English translation & Notes by M. M. Ghosh 10·00

31 Abhinaya Prakashika—N. Gopinath 10·50

३२ अभिनव नाट्य शास्त्र (हिन्दी)—सीताराम चतुर्वेदी २०·००

३३ अभिषेक नाटक—सं० हि० व्याख्या २ ५०

३४ अमृतोदय नाटक—गोकुलनाथ कृत ०·७५

३५ अमृतोदय नाटक (गोकुलनाथ) सं· हि० व्याख्या ५·५०

३६ अविमारक—'प्रकाश' सं० हि० व्याख्या २·००

३७ आदिकाव्योदयम्—महालिंग शास्त्री ६·७५

३८ आनन्दराघम्—जे० बी० चौधरी ४·००

३९ आनन्द सुन्दरी—घनश्याम विरचित, भट्टनाथ कृत व्याख्या ५ ००

40 Introduction to Bharata's Natyashastra by A. Rangacharya—9·50

४१ उत्तर रामचरित—सं० हिन्दी टीका सहित—आनन्द स्वरूप ६·००

४२ उत्तर रामचरित—भा० टी० विजय चन्द्र शास्त्री ६·५०

४३ उत्तर रामचरित—भा० टी० ४·५०

४४ उत्तर रामचरित—"चन्द्र कला" सं० हि० व्याख्या ४ ५०

४५ उत्तर रामचरित—सं० हि० टीका, ब्रह्मानन्द शुक्ल ८·००

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

४६ उत्तर रामचरित—मूल मात्र, वेलवलकर २·५०
४७ उत्तर रामचरित—वीरराघव संस्कृत व्याख्या, मद्रास २·८१
48 Uttara Rama Charita—Text with English Notes and Translation by P. V. Kane 10·00
49 Uttara Rama Charita—Text with English Notes & Translation by S. Ray 10·00
50 Uttara Rama Charita—English Translation only by T. K. B. Aiyar 0·56
51 Uttara Rama Charita—Text with Translation & Notes by C. S. R. Sastri 7·50
52 English Notes on Uttara Rama Charita—by C. S. R. Sastri 3·00
५३ उद्गातृदशाननम्—महालिंग शास्त्री ४·५०
५४ उन्मत्तराघवप्रेक्षाणक (भास्कर कवि) ०·५०
५५ उभयरूपकम्—महालिंग शास्त्री ३·३७
५६ ऊरुभङ्गम्—भा० टी० १·५०
57 Urubhangam—with English Transltion by S. Rangachar 3·00
58 Urubhangam—with English Translation by C. R. Devdhar 2·00
५९ उल्लाघराघव नाटकम्—सोमेश्वर १२·००
60 Ancient Indian Theatre—D. R. Mankad 2·50
61 Origin and Development of the Assamese drama and Stage by H. Bhattacharya 17·00
६२ कमलिनी कलहंस—नीलकण्ठ २·२५
६३ कमलिनी राजहंसम् १·१५
६४ कंसवध—(शेष कृष्ण) मूल मात्र ०·७५
६५ कर्णकुतूहल—भोलानाथ विरचित १·५०
६६ कर्णभारम्—(भास कृत) सं० हि० टीका सहित १.२५
67 Karnabharam—Text, English Notes & Translation by S. Rangachar 1·25
68 Karnabharam—Text with English Notes & Translation by C. R. Devdhar 2·50
६९ कर्णसुन्दरी—विल्हण १·२५
70 Karnatak Theatre—H. K. Rangnath 3·00
७१ कर्पूरमञ्जरी—(राजशेखर) वासुदेव कृत सं० टीका २·५०

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

७२ कर्पूरमञ्जरी—सं० हिन्दी व्याख्या ३·००
73 Karpura Manjari of Rajacekhar—Text with English Translation and Notes by Sten Konow & Lanman 7·50
74 Karpura Manjari—Text with English Translation by N. G. Suru 10·00
७५ कालिदास के नाटक—हि० -व्याख्याकार रामप्रताप शास्त्री ८·००
७६ कालिदासचरित नाटक—वेलणकर ३·००
७७ कालिदासीय नाटक कथा मञ्जरी २·२५
७८ कीचक वध— भवानी प्रसाद तिवारी २·००
७९ कुन्दमाला—(दिङ्नाग) सं० हि० व्याख्या सहित ३·५०
80 Kundamala of Dinnaga—Text with English Introduction & Notes by K. K. Datta 25·00
81 Kundamala—English Translation by A. C. Woolner 7·50
८२ कुवलयावली (रत्न पञ्चालिका) · सिंह भूपाल १·७५
८३ कृषकाणां नागपाशः (रूपकम्) ०·५०
८४ कृष्णाभ्युदयम् नरेन्द्रनाथ शर्मा कृत ३·००
85 Contribution to the History of Hindu Drama—its origin & Diffusion by M. M. Ghosh 6·00
86 Critiques on Sanskrit Drama—Dange 6·00
87 Classical Drama of India—H. W. Wells 16·00
88 Guide to Abhijnanasakuntala—Deshpande & Kulkarni 2·00
89 Guide to Malavikagnimitram 1·00
90 Guide to Swapnavasavadatta—Deshpande & Kulkarni 2·00
91 Guide to Nagananda—Deshpande & Kulkarni 2·00
९२ गाँधी विजय—मथुरा प्रसाद दीक्षित ०·५०
९३ गान्धर्व विवाह—(मिथिला भाषा) दामोदर झा १·००
९४ चण्डकौशिकम्—''प्रकाश' सं० हि० व्याख्या ४·००
९५ चन्द्रशेखरविलास नाटकम् ०·७५
९६ चारुदत्तम् (भास)—भा०टी० २·५०
97 Charudatta—with English Notes and Translation by S. Ray 5·00
९८ चारुदत्त—(भास)-हिन्दी अनुवाद, नोट्स सहित ३·००
99 Charudatta—Text with English Notes & Translation by C.R. Devadhar 4·00

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

१००	चैतन्य चन्द्रोदय—कवि कर्णपूर विरचित	३·५०
१०१	छाया शाकुन्तल—जीवन लाल पारिख	२·००
१०२	जीवन्मुक्तिकल्याण नाटकम् नलाध्वरि	१·५०
१०३	जीवानन्द नाटक—(आनन्द राय मखि) मूल	१·५०
१०४	जीवानन्द नाटक—अत्रिदेव गुप्त-भा०टी०	४·००
१०५	जीवानन्दम्—संस्कृत टीका, मद्रास	३०·००
१०५क	Types of Sanskrit Drama—D. R. Mankad	17.00
106	Two Plays of Bhasa—A. S P. Ayyar	3'37
१०७	डमरुक—घनश्याम पण्डित प्रणीत प्रहसन	०·५६
108	Dramas—H. H. Wilson	4 00
109	Drama in Ancient India—S C. Bhatt	4'00
110	Dramas of Sriharsha—B. Bose	5·25
१११	तापसवत्सराज नाटक—श्री मटरु प्रणीत	२·५०
112	Theatre of the Hindus—Wilson	8·00
113	Thiagaraja—a Screen Play	1·50
114	Theory of Rasa in Sanskrit Drama with a comparative study of General Dramatic Literature—Hari Ram Misra	44 00
११५	दीनदासरघुनाथ—जे०वी० चौधरी	३·००
११६	दूतघटोत्कचम्—सं०हि० व्याख्या	१·२५
117	Duta Ghatotkacham (Bhasa) with English Translation & Notes—C. R. Devadhar	2.50
११८	दूतवाक्य—सं०हि० व्याख्या	१·२५
११९	दूतवाक्य—हिन्दी व्याख्या सहित व्याख्याकार सुदर्शन	२·००
120	Dutavakya—Text with Translation by R. Saxena	1·25
121	Dutavakya—with English Notes and Translation by Devadhar	2·50
122	Dutavakya—Text with English Translation	2·00
१२३	दूताङ्गद छाया नाटक—सुभट कवि विरचित	०·३७
१२४	दूताङ्गद नाटकम्—सं० हिन्दी टीका	१·००
१२५	धनञ्जय विजय—(काञ्चनाचार्य) व्याख्या	०·३७
१२६	नरकासुरविजयव्यायोग (धर्मसूरि)	३·००
१२७	नलचरित नाटकम् (नीलकण्ठ दीक्षित प्रणीत)	१·००
१२८	नवग्रह चरितम्—घनश्याम कवि प्रणीत	०·७५

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

१२९ नागानन्द—(श्री हर्ष)—सटिप्पणी १·७५
१३० नागानन्द—सं० हिन्दी व्याख्या सहित पं० बलदेव उपाध्याय ३·००
१३१ नागानन्द—भा० टी०, संसार चन्द ३·००
१३२ नागानन्द—हिन्दी अनुवाद व्याकरण, कोष, अन्वयादि सहित—
ओमप्रकाश, कृष्ण कुमार ५·००
133 Nagananda—Text with Tibetan Translation 15·00
134 Nagananda—Text with English & Hindi Translation
by Sadhu Ram 5·00
135 Nagananda—Text with Translation & Notes by N. A. Deshpande & Toroskar 5 00
136 Nagananda—Text with English Notes & Translation by P. V. Ramanuja Swami 4 00
137 Nagananda—Text with English Translation by
Karandikar 5·00
138 Nagananda of Sriharsa—Text with Notes and English Translation by R. D. Karmarkar 5 00
१३९ नागानन्द का सरल अध्ययन—सुधीर कुमार गुप्त ३ ००
१४० नाटक-कला मीमांसा—गोविन्ददास ३ ५०
१४१ नाटक चन्द्रिका—(रूप गोस्वामी) सं० हि० व्याख्या सहित ७·५०
142 Natakalakshana Ratnakosha—M. Dillon 16·00
१४३ नाट्य दर्पण—एल०वी० गांधी सम्पादित १५ ००
१४४ नाट्यशास्त्र—डा० रघुवंश कृत हिन्दी अनुवाद सहित १–७ अध्याय १५·००
१४५ नाट्यशास्त्र—प्रथमाध्याय—हिन्दी टीका—गौरीनाथ पाठक ०·५०
१४६ नाट्यशास्त्र (१–२ अध्याय) भा० टी० ०·६५
१४७ नाट्य शास्त्र (१–३ अध्याय) हरिदत्त शास्त्री ३·००
१४८ नाट्य शास्त्र १–३ अध्याय, भोलानाथ शर्मा कृत हिन्दी अनुवाद २·७५
१४९ नाट्य शास्त्र—(भरत मुनि) अभिनव गुप्त विरचित विवृति,
चतुर्थ भाग २५·००
१५० नाट्यशास्त्र (२८—३६ अध्याय) सम्पादक मनमोहन घोष १५·००
151 Natya Sastra Vol II (Chapter 28 to 36) English Translation by M. Ghosh 15·00
152 Natya Sastra Sangraba—with English & Marathi Translation by Vasudeva Sastri vol I & II 20·50

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

१५३ निष्किञ्चन यशोधरम्—जे०वी० चौधरी ५·५०
१५४ पञ्चरात्र—(भास) सं० हिन्दी व्याख्या २·२५
155 Pancaratram—Text with English Translation by S. Rangachar 4·50
156 Pancaratram— with English Notes and Translation by Devdhar 3·75
१५७ पाणिनीय नाटक—भा०टी० २·००
१५८ पार्वतीपरिणयम् (बाणभट्ट) ०·८५
१५९ पारिजातनाटक—कुमारताताचार्य १·१०
160 Popular Approach to Natya Sastra—Rangacharya Shortly
१६१ पुरञ्जनचरित नाटक—स०ल० आत्रे सम्पादित ३·००
१६२ प्रतिज्ञायौगन्धरायणम्—सं०हि० टीका युक्त २·००
१६३ प्रतिज्ञायौगन्धरायणम् (भास) सं०, हिन्दी व्याख्या, आर शुक्ल १·५०
१६४ प्रतिज्ञायौगन्धरायण—भा०टी० संसार चन्द्र ३·७५
165 Pratijnayaugandharayan—Text with Hindi & English Notes and Translation by S. K Sharma 5·00
166 Pratijnayaugandharayana—Text with English Notes & Translation by C. R. Devadhar 4·00
१६७ प्रतिमा नाटक—विस्तृत सं०, हिन्दी टीका सहित, टीकाकार श्रीधरानन्दशास्त्री २·००
१६८ प्रतिमा नाटक—सं०हि० व्याख्या—सत्यव्रत सिंह २·००
169 Pratima Natak—Text with Hindi & English Translation by Kapildeva 3·50
170 Pratima Natak—Text with English Notes and Translation by S. Ray 8·50
171 Pratima Natak—Text with English Translation—S. Rangachar 4·00
172 Pratima Natak—Text with English Notes & Translation 6·00
१७३ प्रतिराजसूयम्नाटक—महालिङ्ग शास्त्री ६·००
१७४ प्रबोधचन्द्रिका—जगदीश लाल शास्त्री ३·००
१७५ प्रबोधचन्द्रोदय—चन्द्रिका, प्रकाश संस्कृत टीका युक्त २·५०

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

176 Prabodhachandrodaya—English Translation & Introduction by Sita Krishnan Shortly
१७७ प्रबोध चन्द्रोदय—सं० हिन्दी व्याख्या २·५०
१७८ प्रबोध चन्द्रोदय और उसकी हिन्दी परम्परा - सरोज अग्रवाल १०·००
१७९ प्रसन्न काश्यप जग्गु वकुल भूषण विरचित २·००
१८० प्रसन्नराघव—मूल १·२५
१८१ प्रसन्नराघव नाटक—सं० हिन्दी टीका ३·००
१८२ प्रसन्नराघवम्—"चन्द्रकला" सं० हिन्दी टीका ४·५०
१८३ प्रसन्नहनुमाननाटक—विश्वेश्वर दयाल २·००
१८४ प्राणाहुति वेलणकर २·००
१८५ प्रियदर्शिका—"प्रकाश" सं० हि० व्याख्या २·००
१८६ प्रियदर्शिका—सं० टी० १·१५
187 Priyadarsika with Sanskrit Comm. and English Translation by P. V. Ramanuja Swami 4·00
188 Priyadarsika—Text with English Translation by Suru 2·00
१८९ प्रियदर्शिका—हिन्दी रूपान्तर ०·६२
190 Prepare for Drama (A Hand book on Dramatic) 1·00
191 Preface to Mrcchakatika by G. K. Bhat 10·00
192 Plays Ascribed to Bhasa—C. R. Devadhar 2·00
१९३ बाल चरित—(भास) सं० हि० व्याख्या २·५०
194 Balacharitam—Text with English Notes & Translation by S. R. Sehgal 12·00
195 Bibliography of stageable plays in Indian Language—Mehta 2 Vols 27·50
१९६ भक्तसुदर्शन नाटक—म० म० मथुरा प्रसाद जी दीक्षित २·००
१९७ भगवदज्जुकम्—बोधायन ०·४५
१९८ भरत नाट्यशास्त्र में नाट्यशालाओं के रूप—राय गोविन्द चन्द्र ५·००
१९९ भर्तृहरिनिर्वेदनाटक—हरिहरोपाध्याय कृत टीका सहित ०·३१
२०० भारत विजय नाटक—भा० टी० म० म० मथुरा प्रसाद दीक्षित २·५०
२०१ भारत विवेकम्—जे० बी० चौधरी ३·००
२०२ भारत हृदयारविन्दम्—जे० बी० चौधरी ३·५०
203 Bharatarnava of Nandikeshwar with English Translation 16·00
२०४ भारतीय रंगमंच का इतिहास—सम्पादक देव दत्त शास्त्री ३२·००

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

205 Bhasa—Banerji Shastri 5'00
206 Bhasa—A. S. P. Ayyar 5'65
२०७ भासनाटकचक्रम्—सं० हिन्दी व्याख्या सहित—२ भाग २२'००
२०८ भासनाटकचक्रम्—मूल, पूना १६'००
209 Bhaskarodaya—Sanskrit Text with English Translation by J. B. Chaudhary 12'00
210 Bhaskarodaya—English Translation only 8'00
२११ भीम पराक्रम– शतानन्द १'१३
२१२ भीमविक्रमव्यायोग तथा धर्मोद्धरणं नाम नाटकं ७'००
२१३ भूमारोद्धारण—म० म० मथुरा प्रसाद जी दीक्षित ०'५०
२१४ भैरवविलास—ब्रह्म॰वैद्यनाथ प्रणीत ३'००
२१४क भ्रमर काहली—प्रभाकराचार्य ०'५६
२१५ मत्तविलासप्रहसन—"प्रकाश" हिन्दी व्याख्या सहित १'२५
216 Madhyamavyayoga—Urubhanga—with English Translation by G. K. Bhat 3'00
217 Madhyamavyayoga (Bhasa) with English Translation & Notes by C. R. Devadhar 2'50
२१८ मध्यमव्यायोग—मूल, हिन्दी टीका सहित—जगदीश लाल शास्त्री १'००
२१९ मध्यमव्यायोग—भा० टी० १'२५
२२० मध्यमव्यायोग (भास) अंग्रेजी भूमिका सहित १'१२
२२१ मदनकेतु चरित्र—रामपाणिवाद ०'७५
२२२ मनोऽनुरञ्जन नाटकम्—अनन्त देव विरचितम् १'००
२२३ महाकवि कालिदास और अभिज्ञान शाकुन्तल—कृष्णकान्त त्रिपाठी २'७५
२२४ महाकवि भवभूति और उनका उत्तर रामचरित—कृष्णकान्त त्रिपाठी २'७५
२२५ महाप्रभुहरिदास—जे० बी० चौधरी ३'००
२२६ महावीर चरितम्—"प्रकाश" संस्कृत-हिन्दी व्याख्या सहित ४'००
२२७ महिममय भारतम्—चौधरी १'००
२२८ मञ्जुल मञ्जीर नाटक—जग्गू वकुल भूषण विरचित २'५०
२२९ मालतीमाधव—त्रिपुरारि-जगद्धर टीका ५'५०
२३० मालतीमाधव—"चन्द्रकला" सं० हि व्याख्या ५'००
२३१ मालतीमाधव—(भवभूति) रस मञ्जरी व्याख्या ६'१५
२३२ मालविकाग्निमित्र नाटक - (कालिदास) कुमार गिरि व्याख्या १'२५

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

२३३ मालविकाग्निमित्रम्—"प्रकाश" सं० हि० व्याख्या ३'५०
२३४ मालविकाग्निमित्रम्—सं० टीका २'००
२३५ मालविकाग्निमित्रम्—भा० टी० मोहन देव पन्त ६'००
२३६ मालविकाग्निमित्रम्—(कालिदास) हिन्दी अनुवाद, नोट्स ३'५०
237 Malvikagnimitram with Notes and Introduction 2'00
238 Malvikagnimitram with Sanskrit comm & English Notes & Translation—A. S. Krishna Rao 5 65
239 Malvikagnimitram with English Notes & Translation by—P. S. Sane 5'50
240 Malavikagnimitram with English Notes & Translation by R. D. Karmarkar 3'40
241 Malvikagnimitra with English Notes and Translation by—C. S. R. Shastri 3'50
242 Malvikagnimitra—English Translation 1'15
243 Malvikagnimitra—with English Translation by S. Rangachar 4'25
244 Malvikagnimitra—Text and English Translation by C. H. Tawney 4 00
245 Malavikagnimitra—with Notes and English Translation by Parikh and Gaidhani 4'00
246 Maiivikagnimitra with English Notes and Translation by M. R. Kale Shortly
247 Malvikagnimitra—G. P. Stuart 3'50
२४८ मुकुन्दलीलामृतनाटक—विश्वेश्वरदयाल वैद्य २'००
249 Mudra Rakshasa—Sanskrit text with Notes, English & Hindi translation By M. R Kale 10'00
२५० मुद्राराक्षस——"शशिकला" सं० हि० व्याख्या ३'२५
२५१ मुद्राराक्षस—"प्रियम्बदा" संस्कृत हिन्दी व्याख्या—ब्रह्मानन्द शुक्ल ३'५०
२५२ मुद्राराक्षस—भा० टी०, निरूपण विद्यालंकार ७'००
२५३ मुद्राराक्षस—(गुजराती) केशव राम शास्त्री ३'२५
२५४ मुद्राराक्षस—हिन्दी व्याख्या, नोट्स ५'००
255 Mudra Rakshas—Edited and English Translation by K. H. Dhruva 8'00
256 Mudra Rakshas—with English Notes and translation by S. Rangachar 4'50

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

256a Malavikagnimitra — Text with English Notes and Translation by C. R. Devadhar. 4·50
257 MudraRakshas — with English Notes & Translation by Devdhar & Bedekar 4·50
258 MudraRakshas — with English Translation & Notes by S. Ray 10·00
259 MudraRakshas — English Translation by R. S. Pandit 13·00
260 MudraRakshas — Text with Englsh Notes and Translation by Deshpande 5·00
261 An Intoduction to the Study of MudraRakshas — H. V. Devasthali 3·00
262 MudraRakshas Natakakatha — V. Raghavan 2·75
२६३ मृगाङ्कलेखा नाटिका—विश्वनाथ देव विरचित १·००
२६४ मृच्छकटिकम् —(शुद्रक) पृथ्वीधर व्याख्या सहित ३·२५
२६५ मृच्छकटिकम् —"प्रबोधिनी" स० हिन्दी व्याख्या ६·००
266 Mrichchakatika — with Comm. & English Translation & Notes by M. R. Kale 12·50
२६७ मृच्छकटिकम्—भा० टी०, ब्रह्मानन्द शुक्ल ६·००
२६८ मृच्छकटिकम् —(शुद्रक) भा० टी०, श्री निवास शास्त्री ७·५०
२६९ रणश्रीरङ्ग—वेलणकर ५·००
२७० रघुनाथविलास—यज्ञनारायण दीक्षित २·२५
२७१ रतिविजयम्—रामस्वामिशास्त्री ०·३१
२७२ रत्नावली – हि० टीका, रामेश्वर भट्ट १·७५
273 Ratnavali — Text with Notes and Translaton by M.R. Kale 5·00
274 Ratnavali — with English Translation by S. Rangachar 3·00
275 Ratnavali of Sriharsha — Text with English Notes and Translation by S. Ray 7·00
२७६ रत्नावली (श्री हर्ष)—भाषा ०·६२
२७७ रत्नावली—"प्रकाश" संस्कृत हिन्दी व्याख्या ३·५०
278 Ratnavali with Sanskrit Comm. and English Translation by Ramanujaswami 3·00
२७९ रत्नावली (श्री हर्ष) हिन्दी अनुवाद, नोट्स सहित ४·००

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

२८० रत्नावली—भा० टी०, शिवराज शास्त्री ३·००
281 Ratnavali—with English Translation by Devdhar & Saran 3'20
२८२ रत्नेश्वरप्रसाद नाटकम्—गुरुरामकवि कृत १·२०
२८३ रूपकषट्कम्—महालिंग शास्त्री प्रेस में
284 Law and Practice of Sanskrit Drama Vol I by S. N. Sastri 25'00
२८५ लटकमेलकम् (प्रहसन)—"प्रकाश" व्याख्या सहित १·२५
२८६ लीलावतीविधि—रामपाणिवाद ०·६२
२८७ लीलाविलासप्रहसन के० वी० एल० शास्त्री ० ५६
२८८ विक्रमाङ्काभ्युदयम्—सोमेश्वरदेव ६·५०
२८९ विक्रमोर्वशीयम्—"प्रकाश" संस्कृत हिन्दी व्याख्या ३·५०
289a Vikramorvasiyam—Text with English Notes & Translation by C. R. Devadher 4'50
290 Vikramorvasiyam—Text & English Translation by S. Rangachar 5'00
291 Vikramorvasiyam—Text with Notes and English Translation by M. R. Kale 8'00
२९२ विक्रमोर्वशीयम्—अंग्रेजी नोट्स तथा संस्कृत व्याख्या २·००
२९३ विक्रमोर्वशीयम्—विस्तृत व्याख्या, तथा हिन्दी अनुवाद ३·००
२९४ विक्रमोर्वशीयम्—सम्पादक वेलन्कर ६·००
295 Guide to Vikramorvasiyam and Meghduta by Bedekar 1'87
296 Vikramorvasiyam Edited & Translated into English by H. R. Karnik & Desai 6'00
297 Vikramorvasiyam—Translation by Sri Aurobindo 3'00
२९८ विदग्धमाधव (रूपगोस्वामी) सटीक २·००
२९९ विद्धशालभञ्जिका—(राज शेखर) 'प्रकाश' हिन्दी व्याख्या सहित ३·००
300 Vidusaka—a Study in Theory and Practice by G. K. Bhat 35'00
३०१ विद्यापरिणय—आनन्दरामभखि विरचित ०·७५
३०२ विमलयतीन्द्रम्—जे० बी० चौधरी ४·००
३०३ विश्वमोहन नाटक—श्री० ना० ताडपत्रिकर ३·७५
३०४ वीर पृथ्वीराज नाटक—म० म० मथुराप्रसाद जी दीक्षित १·२५

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

३०५ वीरप्रताप—संस्कृत टीका, मथुरा प्रसाद जीं दीक्षित ३·००
३०६ वीरप्रताप नाटक – भा० टी०, मथुरा प्रसाद जी दीक्षित ३·००
३०७ वृषभानुजा (मथुरादास प्रणीत) ०·७५
३०८ वेणीसंहार नाटक – विस्तृत संस्कृत, हिन्दी टोका सहित
जगदीशलाल शास्त्री प्रेस
३०९ वेणीसंहार नाटक—भा० टी० शिवराज शास्त्री ४·००
३१० वेणीसंहार (भट्टनारायण) जगद्धर टिप्पणी सहित २·००
३११ वेणीसहार नाटक—स० टोका ३·००
३१२ वेणीसहार —"प्रवोधिनी" संस्कृत हिन्दी व्याख्या ३·५०
313 Veni Samhara—Edited and Translated into English
by G. V. Devasthali 6·88
३१४ वेणीसंहार नाटक - चूडामणया, जगद्धर व्याख्या सहित २·८१
315 Veni Samhara (Bhatta Narayana)—Text wlth English
Translation & Notes by C. S. R. Shastri 6 50
316 Women in Sanskrit Dramas—Ratnamayidevi Dikshit 40·00
317 Sri Harsha's Plays—Text with Translation by B. K. Bose 45·00
३१८ शङ्कर विजय – म० म० मथुरा प्रसाद जी दीक्षित १·००
३१९ शङ्खपराभवव्यायोग—हरिहर विरचित ४·००
३२० शृङ्गारनारदीय (प्रहसन)—महालिङ्ग शास्त्री २·००
३२१ शक्ति साधनम्—जे० वी० चौधरी १·००
३२२ शक्ति सारदम्—जे० बी० चौधरी ५·००
३२३ संकल्पसूर्योदय—वेङ्कटनाथ "प्रभाविलास" व्याख्या, २ भाग ४५·००
३२४ संगीत सौभद्रम—वेलणकर २·००
३२५ सत्यहरिश्चन्द्र नाटक ०·६५
३२६ सत्यहरिश्चन्द्र नाटक—वासुदेव १·६०
३२७ सरस्वती नाटिका— सदाशिव दीक्षित ०·५०
३२८ सामवत नाटक—अम्बिकादत्त व्यास २·५०
329 Sanskrit Drama—A. B. Keith 15·00
330 Sanskrit Drama—its Origin and Decline by Indu Shekhar 67·50
३३१ संस्कृत नाटक—ए० बी० कीथ का हिन्दी अनुवाद—अनुवादक डा०
उदयभानु सिंह १४·००
३३२ संस्कृत नाटक समीक्षा - इन्द्रपाल सिंह ४·००

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

३३३ संस्कृत नाटककार– कान्ति किशोर भरतिया ४·००
334 Some Old Lost Rama Plays—V. Raghavan 1.50
३३५ सावित्रीनाटकम्—कृष्णमणि त्रिपाठी ०·२१
३३६ सीताराघवम्—रामपाणिवाद २·२५
३३७ सुभद्रापरिणय नाटक—रामदेव विरचित ०·६२
३३८ सुभद्राहरण नाटक (माधव भट्ट) ०·५०
३३९ सुभद्राहरणम्—"प्रकाश" हिन्दी व्याख्या १·१५
३४० सेवन्तिकापरिणय नाटक— नारायण स्वामी २·५०
३४१ सौगन्धिकाहरण—विश्वनाथ कृत टिप्पणी सहित ०·५०
३४२ सौगन्धिका हरणम्—"प्रकाश" हिन्दी व्याख्या २·००
343 Social Play in Sanskrit—V.Raghavan 1·50
३४४ स्वप्ननवासवदत्तम्—(भास)—पुरुषोत्तम शास्त्री २·५०
३४५ स्वप्ननवासवदत्तम्—हि० व्याख्या सहित, जगदीश लाल शास्त्री १·७५
३४६ स्वप्ननवासवदत्तम् -"प्रबोधिनी" स० हि० व्याख्या २·५०
३४७ स्वप्ननवासवदत्तम्—भा० टी०, संसार चन्द ३·००
३४८ स्वप्ननवासवदत्तम्—हिन्दी टीका, नोट्स २·२५
३४९ स्वप्ननवासवदत्तम् का सरल अध्ययन—सुधीर कुमार गुप्त २·५०
350 Swapanvasavdatta—Text with English Notes & Translation by S. Ray 7·00
351 Swapnavasavdatta—with notes by C. R. Devdhar 4·00
352 Swapnavasavdatta—with English Translation by A. Shastri 4·00
353 Swapnavasavdatta—Text with Translation by H. R. Kernik 4·00
354 Swapnavasavdatta—Text with Translation by S. Rangachar 5·00
355 Swapnavasavdatta—with Notes & English Translation by M. R. Kale 5·00
356 Swapnavasavdatta—English Notes & Translation by P. S. Sane & S. A. Upadhyya 5·00
357 Swapnavasavdatta—with English Notes & Translation by G. K. Bhatt 4·70
357a Swapanvasavdatta—with English Notes and Translation by C. S. R. Shastri 6·00

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

358 Six Sanskrit Plays—English Translation by H. W. Wells 45.00
३५६ हनुमन्नाटक—भा० टी० २·५०
३६० हनुमन्नाटक—स० टीका २·५०
३६१ हनुमन्नाटक—स० हि० व्याख्या
३६२ हास्यार्णवप्रहसनम्—भा० टी० २·५०
363 Heroines of the Plays of Kalidasa—R. Rao 1.00
३६४ हिन्दी के पौराणिक नाटक—देवर्षि सनाढ्य १०·००
३६५ हिन्दी अभिनव भारती—डा० नागेन्द्र २५·०
३६६ हिन्दी नाट्यदर्पण—आचार्य विश्वेश्वर २२.००

Abhijnana-Sakuntalam

of

Kalidasa

Edited with an Exhaustive Introduction, Translation and Explanatory Notes by C. R. Devadhar. *Crawn Octavo*, pp 407

Price Rs. 5.50

The best representative of the romantic drama of India is Sakuntalam. Dealing with the love adventures of ancient epic legend it represents scenes in which heaven and earth are not separated and men, demigods, nymphs and saints are intermingled.

The plot of Sakuntalam is derived from the first book of the Mahabharat. The Hero is Dusyanta, a celebrated king of ancient days, the heroine, Sakuntala, the daughter of a celestial nymph, Menaka, and of the sage Visvamitra, while their son, Bharat, became the founder of a famous race. The piece consists of seven acts. This is written in elaborate style and with full of noble sentiments.

The translator has spared no pains in bringing together all the accessories to his enjoyment selecting the best of all possible variants, giving a rendering in English of the original which is as literal as the idioms allow and adding critical, exegtical and rhetorical notes to aid the readers' understanding of the text.

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

Malavikagnimitram

of

Kalidasa

Edited with an Exhaustive Introduction, Translation and Explanatory Notes by C. R. Devadhar. *Crown Octavo*. pp : 308

Price Rs. 5.00

The Malavikagnimitra is a drama of court intrigue, the plot being derived from the ordinary palace life of Indian princes, and thus supplying a peculiarly good picture of the social conditions of the times. The plot has very skilfully utilized historical events for the purpose of this play. The hero is a historical king of the dynasty of Sungas. The play described the love of the King Agnimitra and Malavika, one of the attendants of the Queen Dharini, who jealously keeps her out of the King's sight on account of her great beauty. The various endeavours of the king to see and converse with Malavika give rise to numerous little intrigues. In the course of these Agnimitra nowhere appears as a despot but acts with much delicate consideration for the feelings of his spouses. At last in special circumstances Queen Dharini presents Malavika to the king. The play concludes with the king's expressing the hope that he may ever retain his queen's regard and that his subjects may never suffer any calamity while Agnimitra is the King.

This edition is the first which is infinitely more useful and handy than either having the translation on the same page just below the text, or at the end of the text. Further it has been the author's endeavour to make this work as critical and useful for the students as possible.

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

Vikramorvasiyam

of

Kalidasa

Edited with an Exhaustive Introduction, Translation and Explanatory Notes by C. R. Devadhar. *Crown Octavo.* PP : 326

Price Rs. 4 50

Vikramorvasi or Urvasi won by Valour's is a play in five acts, belonging to the class called Trotaka, which is described as representing events partly terrestrial and purely celestial. King Pururavas hearing from nymphs that their companion, Urvasi, has been carried off by demons, goes to rescue and brings her back. He is enraptured by the beauty of the nymph, no less than she is captivated by her deliverer. Urvasi being summoned before the throne of Indra, the lovers are soon obliged to part. Finally under the influence of a magic stone he clasps a creeper which is transformed into Urvasi in his arms.

The Text of the present edition is the same as that of Mr. S. P. Pandit with a few variations of reading, obvious corrections and the substitution of a correct orthographic representation of Prakrit words. The notes are copious enough and give every thing that is essential not only to a student reading for an Arts course but also to the general reader. The translation has been given side by side with the text.

काव्य, सुभाषित, गद्य-काव्य अलंकार, चम्पू

अलंकारप्रभा

ले०—जनार्दनशास्त्री पाण्डेय एम. ए., साहित्याचार्य

इस पुस्तक में प्रायः सभी परीक्षाओं में पूछे जानेवाले प्रसिद्ध १६ अलंकारों का चन्द्रालोक तथा साहित्यदर्पण के अनुसार लक्षण उदाहरण सहित विवेचन किया गया है। उपयुक्त स्थलों पर हिन्दी के उदाहरण भी दे दिये हैं। प्रत्येक अलंकार की व्युत्पत्ति भी साथ में दी है और जहाँ जो विशेष ज्ञातव्य है दिया गया है। छात्रों के लिये अत्युपादेय संस्करण है। मूल्य ०-४०

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

राजानकरुय्यक कृत

अलङ्कार सर्वस्व

श्री विद्या चक्रवर्त्ति प्रणीत संजीविनी व्याख्या सहित

अनुवादक तथा संपादक—डा० रामचन्द्र द्विवेदी

राजानकरुय्यक का अलङ्कारसर्वस्व अलङ्कारशास्त्र का प्राचीन ग्रन्थ है जिसका परवर्ती आलङ्कारिकों ने पर्याप्त सम्मान किया है। इस पर श्री विद्याचकवर्ती की प्रौढ़ एवं विद्वत्तापूर्ण सम्पादन, हिन्दी अनुवाद तथा विशेष टिप्पणी द्वारा इस पुस्तक को समलंकृत कर संस्कृत साहित्य का महान् उपकार किया है, पुस्तक की छपाई शुद्ध एवं आकर्षक है। पक्की कपड़े की जिल्द सहित डबलडिमाई १६ पेजी आकार के ४०० पृष्ठों की पुस्तक का मूल्य १५-००

आर्यविद्यासुधाकर

प्राचीन और अर्वाचीन आर्यजनों द्वारा संपादित विविध विद्याओं, नीतियों, धार्मिक विचारों तथा वैज्ञानिक विवेचनाओं का प्रकाशक यह ग्रन्थ भट्टयज्ञेश्वर द्वारा निर्मित हुआ था, महामहोपाध्याय पं० शिवदत्त जी ने इस पर नवीन ढंग से टिप्पणी की। इसीको ख्यातिप्राप्त विद्वान् डा० मंगलदेव शास्त्री एम. ए० डी. फिल् ने अत्यन्त परिश्रम पूर्वक संपादित किया है। तृतीय संस्करण, मूल्य १०.००

Katha Sarit Sagara
or
The Ocean of Stories

Translated from The Original Sanskrit *by* : C. H. Tawney M. A. Thoroughly revised and re-edited with Introduction, fresh Notes & Terminal Essay *by* : N. H. Penzer (in press)

This biggest collection of stories in Sanskrit, were written in the 11th century by Somadeva of Kashmir, and is based on a still earlier and bigger but now extinct book of Brihat-Katha by Gunadhya of the 1st or 2nd century A. D.

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

In this valuable & voluminous publication, the Realities of Life have been picked up in a symbolic way in didactic manner, to bring home the wit and wisdom to the reader. The book is of psycho-therapeutic nature and keeps the reader poised while facing any oddities of life under any circumstances.

This revised edition by N. H. Penzer is more improved than C. H. Tawney's old edition. It contains several additional very important notes.

Kavya Tattva Samiksha

(Philosophy of Poetry)

by N. N. Choudhuri. M. A., D. Litt.,

Demy Octavo : pp. 460 : *Full Cloth binding* & *Jacketed* : *Rs* 20.00

The subject of the present volume is the Logic or Philosophy of poetry i. e. its Science of Literary Criticism and indicates that the existing orthodox traditional School of Sanskrit Culture may have an opportunity to be acquainted with the modern methods of research based on comparative evolution of the materials scattered in a vast literature. The oldest attempt to analyse the several elements of Dramaturgy, we come across in the Natya-Sastra of Bharata who declared that it affords such Aesthetic Delight as otherwise is not derived from the senses and that *delight* he expresses as a satisfaction & calls it Rasa. We know from Abhinava Gupta's commentary on the said Natya-Sastra that the history about the speculations on the merits of poetry is a chequered one. The author has concentrated on the evolution of the problems and topic of Alankar-Sastra from Anandavardhana to Jagannatha with the guidance of Mammata and at times may not have seen eye to eye with his predecessors, but, he is more of an original expositor than a critic.

The Text is in simple Sanskrit with English Synopsis.

"...product of enviable scholarship and matured thought"

—*Satkari Mookerji, Nalanda,*

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

"exhaustive and lucid exposition of the several topics whith come under Alankara Sastra."

—*M. M. Dr. P. V. Kane*

"Very valuable and well written."

M. M. Dr. Giridhar Sharma Chaturvedi.

किरातार्जुनीयम् (सर्ग १-६)

"घण्टापथ" "विवृति" सहित

व्या०—जनार्दनशास्त्री पाण्डेय साहित्याचार्य, एम. ए.

महाकवि भारवि के इस अनुपम ग्रन्थ की जितनी भी व्याख्याएँ हुई हैं उनसे कोमलमति छात्रों की जटिलता की समस्या हल नहीं हो पाती और प्रत्येक टीकाकार ने मल्लिनाथी टीका के रहते हुए उसी के शब्दों को अपनी टीकाओं में देकर व्यर्थ ही ग्रन्थ का कलेवर बढ़ा दिया है। अतः हमने इसका ऐसे ढंग से सम्पादन कराया है जिससे छात्रों को अत्यन्त सरलता से ग्रन्थ का पूर्ण बोध हो जाता है। श्लोक, अन्वय, प्रत्येक पद का हिन्दी में अर्थ तब मल्लिनाथी (जिसमें प्रत्येक मूलोक्त पद मोटे टाइप में देकर उसके आगे पर्याय आदि का चिह्न दिया गया है, जिन पदों को मल्लिनाथ ने सरल समझ कर छोड़ दिया है उनका भी पर्याय अथवा आवश्यक व्याख्या कोष्ठ के अन्दर कर दी है) वाच्य-परिवर्तन, संस्कृत और हिन्दी में भावार्थ और प्रत्येक श्लोक पर विशेष वक्तव्य—जिससे छात्रों को कई नवीन पदार्थों का ज्ञान होगा, यह क्रम रखा गया है। इस प्रकार पुस्तक छात्रों के लिए अत्यन्त उपयोगी हो गयी है। पृथक्-पृथक् सर्गों को पुस्तकाकार बनाकर छात्रों के लिये और भी सुविधा कर दी गयी है।

मूल्य प्रतिसर्ग ००.७५, १ से २ सर्ग १.५०, ३ से ६ सर्ग २.५०, १ से ६ सर्ग ४.००

कादम्बरी-कथामुख

"भानुचन्द्र सिद्धचन्द्र" कृत संस्कृत टीका और हिन्दी अनुवाद सहित

अनुवादक पं० रतिनाथ झा

महाकवि बाणभट्ट की कादम्बरी पर कुछ लिखना सूर्य को दीपक दिखाना है। इसका कथामुखान्त भाग प्रायः सभी परीक्षाओं में निर्धारित है. जिसका यह अनुपम संस्करण तैयार है! इसकी भाषा बड़ी प्रांजल और सुबोध है। इससे छात्रों को अध्ययन में बड़ी सुविधा हो रही है।

मूल्य ३.७५

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

Kiratarjuniyam Cantos I to III

By

M R. Kale

Text with Mallinatha's Comm; Prose order of the Slokas, Notes, Translation into English.

The subject-matter of the *Kiratarjuniya* of Bharavi is derived from one of the episodes of Arjuna's career described in the Vana-Parvan of the *Mahabharata*. It is a Mahakavya and is named after its chief incident, viz. the fight between Siva under the guise of a Kirata or Mountaineer and Arjuna. The *Kiratarjuniya*, has for its theme, the journey of Arjuna to the mountain Inprakila, part of the Himalayas for the propitiation of the gods Indra and Siva and the final obtainment of divine weapons, Pasupata and others from the gods. The hero is Arjuna. To magnify his greatness Siva is represented as coming in the garb of a *Kirata* and fighting with him on terms of equality. The heroic is the chief sentiment in the poem, the sentiment of love &c. being subsidiary to it. Descriptions of mountains, rivers, seasons, sunrise and sunset, sporting of women &c. are found in their proper places in the poem.

This edition is revised and enlarged by the addition of Hindi translation, of Prose order and English translation. This edition will be of more convenience to the students studying either with English or Hindi medium. Price *Rs.* 5.00

कुमारसम्भव महाकाव्य (१-५ सर्ग)

टीकाकार—श्री जगदीशलाल शास्त्री एम. ए , एम. ओ. एल.

कुमारसम्भव महाकविकालिदास की प्रथम रचना मानी जाती है, इस पर मल्लिनाथ कृत सञ्जिवनी टीका विख्यात है। किन्तु आज शिक्षा का स्तर इतना निम्न हो चुका है और पाठ्य-प्रणाली इस प्रकार की हो गई है कि कोमलमति छात्रों को

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

सञ्जीविनी टीका भी दुरूह प्रतीत होती है। उक्त शास्त्रीजी ने सञ्जीविनी के साथ ही प्रत्येक श्लोक का अन्वय, शब्दार्थ, समास, रचना, भाषार्थ तथा विशेष टिप्पणी देकर इसे अत्यन्त सरल कर दिया है। इससे उत्तम, सरल और सुबोध संस्करण दूसरा नहीं हो सकता। २०×३०।१६ लगभग ४०० पेज की पुस्तक का मूल्य केवल ३-५०

क्षेमेन्द्र की औचित्य दृष्टि

औचित्य हमारे क्रिया कलाप का, दैनिक जीवनका अविभाज्य अंग है। औचित्य न हो तो कोई लोकव्यवहार सरता नहीं। फिर काव्य में तो इसके बिना सारा आनन्द ही क्षीण हो जाता है। सभी शास्त्रकारों ने औचित्य की गरिमा गाई है। आचार्य क्षेमेन्द्र की 'औचित्य विचारचर्चा' में इसी औचित्य का दिग्दर्शन है। इस ग्रन्थ पर टीकाएँ तो और भी हैं, किन्तु श्री रामपाल विद्यालंकार ने जो समीक्षात्मक स्पष्टीकरण किया है वह आधुनिक दृष्टि से अत्यन्त उपादेय हैं। मूल्य ४ ००

कृष्णस्य शान्तिप्रयासः

भारतीय साहित्य में रामायण औ महाभारत ये दो प्रसिद्ध ग्रन्थ हैं। महाभारत का जिसमें भगवान् कृष्ण, संसार को युद्ध की विभीषिका से बचाने के लिए दूत बन कर पाण्डवों की ओर से दुर्योधन के पास गए और शान्ति की चेष्टा की, उद्योग पर्व के ८१ अध्याय से ९३ अध्याय तक का वह अंश वाराणसेय संस्कृत विश्वविद्यालय की शास्त्री परीक्षा में अनिवार्य रूपसे रखा गया है। अतः छात्रों के अनुरोध पर हमने यह अंश सरल सुबोध संस्कृत एवं हिन्दी व्याख्या सहित प्रकाशित करवाया है। विस्तृत भूमिका एवं कथासार आदि देकर तथा विषम स्थलों को छात्रों के लिए बोधगम्य बनाकर पुस्तक को यथासम्भव सुन्दर बनाने की चेष्टा की गई है।

छात्रों के हित की दृष्टि से १७५ पृष्ठ की पुस्तक का मूल्य केवल १.७५ पैसा रखा गया है।

चन्द्रालोक

संस्कृत-हिन्दी व्याख्या सहित

व्याख्याकार—श्रीसुबोधचन्द्र पन्त एम. ए.

अलंकारशास्त्र के प्रतिपादक ग्रन्थों में चन्द्रालोक का पर्याप्त महत्त्व है। इस ग्रन्थ की विभिन्न टीकाओं के रहते हुए भी श्री पन्तजी ने जो संस्कृत और हिन्दी में

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

आधुनिक शैली से अत्यन्त रुचिर, सरल तथा व्युत्पत्तिवर्द्धिनी टीका की है उससे छात्रों को पूरे ग्रन्थ का आशय आसानी से हृदयंगम हो जाता है। संस्कृत एवं अंग्रेजी विद्यालयों के अध्येता इस व्याख्या से समान रूप से उपकृत होते हैं। आज तक ऐसी उत्तम व्याख्या दूसरी हो नहीं पाई।

आकर्षक छपाई, डवल क्राउन साइज की पुस्तक का मूल्य केवल ३.५०

चित्रकाव्यकौतुकम्

रचयिता—पं० श्रीरामस्वरूप पाठक

सम्पादिका

—श्री प्रेमलता शर्मा

(डीन आफ फैकल्टी आफ म्यूजिक ऐंड फाइन आर्टस)

यह कृतिरत्न प्रत्येक साहित्य विद्वान् को एक प्रकार से आश्चर्य में डालेगा। चित्रकाव्य को जो तृतीय श्रेणी में रखा गया है, विद्वान् रचयिता ने सरल ललित पदों से इतनी स्पष्टता से चित्रकाव्य के कूट-भाग को समझा दिया है कि उसकी गूढ़ता अब सही रह नहीं गई। राष्ट्रभाषा में इस गूढ़ साहित्य भाग को आकर्षक ढंग से हृदयङ्गम कराया गया है जिसे बड़े बड़े महापण्डित 'अलभ्य' कहकर जिज्ञासुओं को निराश कर देते थे। मूल्य १२.००

छन्दःप्रभा

वाराणसेय सं० वि० वि० की नवीन नियमावली में जो १९ छन्द प्रथमा परीक्षा में रखे गये हैं उन्हीं को लक्षणों-उदाहरणों द्वारा विस्तृत रूपसे इस पुस्तक में समझाया गया है। साथ ही लघु, गुरु आदि की पहिचान व मात्रा, वर्ण आदि के भेद भी स्पष्टतः दिये गये हैं। जिससे यह पुस्तक बालकों के लिये अत्युपयोगी हो गई है। ग्लेज कागज, मूल्य ००.३० पैसे।

The Dasakumaracharita

of

Dandin

With Various Readings, A literal English Translation, Explanatory critical Notes and an Exhaustive Introduction by M. R. Kale : *Demy Octavo* : PP, 512 *Price Rs.* 15.00

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

The DASA-KUMARA-CHARITA, or 'Adventures of the Ten Princes', contains stories of common life and reflects a corrupt state of society.

The Dasakumaracharita consists of three parts Viz., Purvapithika, Dasakumaracarita proper and Uttarapithika. Purvapithika consists of five Ucchhvasas of which the first chapter deals with the birth of the ten boys. The second deals with the Digvigaya of Rajavahana in the course of which he renders assistance to a Brahman in becoming the emperor of the Nether-world. The third relates the adventures of Somadutta and his marriage with Princes Vamalcchana, the fourth narrates the adventures of Pushpodbhava and his wedlock with Balachandrika and the fifth and last chapter deals with the marriage of Rajavahana with Avantisundari. Then begins Dasakumaracharita proper which consists of Eight Ucchhvasas on the whole which respectively deal with the adventures of (1) Rajavahana, (2) Apaharavarman, (3) Upaharavarman, (4) Arthapala, (5) Pramati, (6) Mitragupta, (7) Mantragupta and (8) Visruta. The Uttarapithika which is a short chapter by way of supplement winds up the story which ends with the slaying of Manasara and the annexation of Malva to Pushpapura and division of the empire into several principalities.

In this edition Late Shri M. R. Kale has given several better readings. literal English translation, explanatory and critical notes and an exhaustive introduction to make it quite literal and better suited to the requirements of the university students.

महाकविदण्ड विरचित

दशकुमारचरित—(पूर्वपीठिका)

संस्कृत हिन्दी व्याख्या सहित, व्याख्याकार-विश्वनाथ झा

संस्कृत साहित्य, में महाकवि दण्डी का स्थान महत्त्वपूर्ण है और उनका दशकुमारचरित गद्यकाव्यों में अनुपम समझा जाता है। इसकी पूर्वपीठिका पर यह संस्कृत तथा हिन्दी व्याख्या प्रस्तुत है। व्याख्याकार ने चेष्टा की है कि परीक्षार्थी छात्रों

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

को मूल का अच्छी प्रकार बोध हो सके और प्रत्येक पद का पृथक्-पृथक् अर्थ वे समझ सकें। हमारा विचार है कि आज तक जितनी भी टीकाएँ इस पर हुई हैं उनमें सबसे अधिक सहायक छात्रों के लिए यही प्रस्तुत टीका होगी। छपाई-सफाई अत्यन्त सुन्दर है। २०×३०।१६ की २०० पृष्ठ की पुस्तक का मूल्य केवल १-५०, उत्तरपीठिका-(यन्त्रस्थ)

The Dasarupa of Dhananjaya

(A treatise on Hindu Dramaturgy)

by George G. O Haas, *Demy Octavo* : *PP* 214 : *Full Cloth bound Price Rs.* 7. 5

The present volume, an important treatise on the Canons of Dramatic Composition in Early India, is published for the FIRST TIME in an English Translation, with the text in Roman, explanatory notes, and an introductory account of the author & his work.

Unlike Bharatiya Natyasastra on which it is based, Dasarupa is extremely condensed and avoids all formulaic 'padding' except where it is absolutely required by the metre. The book is concluded by an Appendix containing classification of the Sixteen Types of Heroines, Addenda, Index of Sanskrit Technical Terms and General Index to show references in the book The notes include as a special feature, references to parallel passages in all available dramaturgic & rhetorical treatises.

ध्वन्यालोक

लोचन व्याख्या तथा हिन्दी सहित आनन्दवर्धनाचार्य कृत तथा हिन्दी रूपान्तर तारावती व्याख्या युक्त—व्याख्याकार डा. रामसागर त्रिपाठी, डिमाई आठ पेजी : पृष्ठ संख्या लगभग १४०० संपूर्ण पुस्तक कपड़े की दो जिल्दों में। मूल्य २५.००

ध्वन्यालोक आलङ्कारिक सारिणी है और इसका साहित्य शास्त्र में उतना ही महत्त्व है जितना व्याकरण में पाणिनि का अथवा वेदान्त में वेदान्तसूत्रों का; यह युगान्तरकारी रचना आलोचनाशास्त्र को नवीन दिशा प्रदान करती है और शास्त्रीय तत्वों को एक व्यवस्थित रूप देती है।

कारिका भाग और व्याख्या भाग ध्वन्यालोक के दो भाग हैं। इसमें ४ उद्योत हैं—प्रथम उद्योत में ध्वनिविरोधी सम्भावित पक्षों का उल्लेख कर उन पर पूरा विचार किया

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

गया है। द्वितीय उद्योत में व्यङ्ग्यार्थ की दृष्टि से ध्वनि भेदों का निरूपण किया गया है। तृतीय उद्योत में व्यञ्जक की दृष्टि से ध्वनिभेद किए गये हैं और इसी प्रसंग में रीतियों और वृत्तियों का विवेचन किया गया है। चतुर्थ उद्योत में ध्वनिसिद्धान्त की व्यापकता तथा उसके महत्त्व पर विचार किया गया है।

ध्वन्यालोक पर प्राचीनतम प्रामाणिक टीका 'लोचन' श्री अभिनवगुप्तपादाचार्य की लिखी हुई इतनी महत्त्वपूर्ण और सशक्त है कि इसे साहित्यशास्त्र का महाभाष्य कहा जा सकता है।

प्रस्तुत ग्रन्थ में ध्वन्यालोक मूल तथा लोचन व्याख्या और फिर मूल तथा लोचन का हिन्दी अनुवाद और फिर लोचन को पूरी तरह समझने के लिए तारावती नाम की विशद हिन्दी व्याख्या दी है। तारावती व्याख्या इतनी सुन्दर अर्थ को खोलने वाली बनी है कि हर छात्र तथा विद्वान इसे देखते ही तुरन्त इसे अपने पास सदा रखना चाहता है। इस व्याख्या में जहाँ इस वात पर ध्यान रखा गया है कि लोचन का आशय पूर्णतः प्रकट हो जावे वहाँ इस बात की भी चेष्टा की गई है कि इसमें मौलिक रचना जैसा आनन्द प्राप्त हो इसी लिए यह विद्वानों तथा छात्रों दोनों के लिए ही उपादेय है। यह व्याख्या एक ओर उन संस्कृतज्ञों के लिए लाभकर होगी जो लोचन का मन्तव्य समझना चाहते हैं और दूसरी ओर हिन्दी साहित्य के वे विद्वान भी इस में रुचि ले सकेंगे जो एक सहस्र वर्ष पूर्व की साहित्यशास्त्रीय अवस्था का पर्यवेक्षण करना चाहते हैं।

पुस्तक दो खण्डों में विभक्त है। प्रथम और द्वितीय उद्योत प्रथम खण्ड में तथा तृतीय व चतुर्थ उद्योत द्वितीय खण्ड में संनिहित है।

नैषधीयचरित (१-३)

टीकाकार श्री मन्नालाल अभिमन्यु एम० ए०

वाराणसेय संस्कृत विश्वविद्यालय की शास्त्री परीक्षा में नैषधमहाकाव्य के सर्वाधिक उपयुक्त अंश का समावेश अधिकारियों ने किया है। उपर्युक्त अंश पृथक् उपलब्ध न होने के कारण छात्रों को अत्यन्त कठिनाई का सामना करना पड़ता था। छात्रों की असुविधा से प्रेरित हो उक्त अंश को परीक्षोपयोगी बनाकर प्रकाशित किया गया है। इस संस्करण की विशेषता यह है कि मूल श्लोकों के नीचे अन्वय और पर्याय के साथ ही मल्लिनाथ की 'जीवातु' टीका दी गई है और बाद में प्राञ्जल हिन्दी भाषा में विशद अर्थ दिया गया है। कागज छपाई की अनेक विशेषताओं के रहते हुए भी छात्रों की हित की दृष्टि से पुस्तक का मूल्य केवल १-७५

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

Kamsavaho

(A Prakrit Poem in classical style.)

Text and Chaya critically edited for the first time with various Readings, Introduction, Translation, notes etc. by Dr. A. N. Upadhye. Crown Octavo pp 284. : Price Rs. 4·50

Rama Panivada has composed Kamsavaho (in 233 Prakrit verses divided into four cantos) to celebrate the incident of the slaying of Kamsa by Krsna. The author has practically given the biography of Krsna up to his slaying of Kamsa. Taking into consideration the able delineation of the subject, the successful handling of the language and the well-decorated presentation of poetry seen in the Kamsavaho it can be said that Rama Panivada deserves a respectable seat in the gallery of his predecessors like Pravarsena, Vakpati, Rajasekhara and Gunacandra.. The author has himself added the Chaya to make his work intelligible even to those who do not possess the first hand knowledge of Prakrit.

The inclusion of the Chaya and the addition of the Englsh Translation of the critical and explanatory notes would go a long way to facilitate the understanding of the text. The introduction is occupied with a critical study of the various aspects of Kamsavaho after describing the material and the method of text constitution. The details about Rama Panivada are critically set forth and the source, model, the Prakrit dialect and style of Kamsavaho are thoroughly scrutinised.

Kavyaprakasa (Poetic Light)

of

Mammata

Text with English translation & Sampradaya Prakasini of Sri Vidrtyacakravartin by Dr. R. C. Dwivedi. Demy Octavo : Full Cloth Bound & Jacketed.

Price : Vol I 12·00, Vol II & III (in the press)

The Poetic Light or Kavyaprakasa of Mammata is a classic

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

text of legislative criticism in Sanskrit. It deals with the various and varied problems of Aesthetics and Poetics and is acclaimed to be the authority in matters of literary criticism in Sanskrit. The first volume contains the text and translation, together with the Sanskrit commentary by Sri Vidyacakravartin of the first six Ullasas. To the second volume containing the remaining portion in the usual form, will be appended the celebrated commentary of Ruyyaka also. The third volume will present a comparative and critical study of the contribution and contents of the Kavya Prakasa.

The three-volume edition of the Kavya Prakasa together with translation, two ancient and celebrated commentaries and a study by Dr. R. C. Dwivedi will be an outstanding contribution to Indology, particularly the Alankarsastra.

भारतकथा

लें० श्री म० म० पं० गङ्गाधर शास्त्री तैलङ्ग
'बालतोषिणी' संस्कृत हिन्दी व्याख्या सहित
व्याख्याकार—पं० श्रीजगन्नाथ शास्त्री तैलङ्ग

(वाराणसेय संस्कृत विश्वविद्यालय की प्रथमा परीक्षा में निर्धारित)

प्रत्येक श्लोक का अन्वय, पदच्छेद, व्याख्या, वाच्यपरिवर्तन, भावार्थ, हिन्दी अनुवाद देकर पुस्तक को प्रथमा के छात्रों के लिए पूर्ण उपयोगी बना दिया गया है।

मूल्य १.२५.

Bhoja-prabandha of Ballalasena

The book has been exhaustively edited with Sanskrit commentary and purport, Hindi English translation & Prose order with vocabulary *by* Jagdish Lal Shastri, M. A., M. O. L. *Crown Octavo. PP.* 451 : *Paper bound Rs.* 3. 75

This is the SECOND EDITION of the narrative of the times of Raja Bhoja. The period is a marvellous combination of knowledge and wisdom and the preferential protection afforded to it by the State. Here you will find the un-excelled similes of Kalidasa, wise

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

sayings and witty retorts but within limits of decency and the encouraging treatment of Raja Bhoja to the learned scholars and poets.

मेघदूत

(विस्तृत हिन्दी व्याख्या सहित)

प्रो० संसारचन्द्र तथा पं० मोहनदेव पन्त

इसमें मूल, अन्वय, पदार्थ, भाषानुवाद, व्याकरण, विशेष टिप्पणी प्रत्येक श्लोक में दी गई हैं। विभिन्न टीकाओं में आये हुए पाठों का भी विश्लेषण किया गया है। प्रत्येक पद का इस प्रकार व्युत्पत्तिलभ्य अर्थ व जानकारी दे दी गयी है कि कुछ जानना शेष नहीं रह जाता। इससे उत्तम संस्करण मेघदूत का हिन्दी टीका युक्त दूसरा मिल नहीं सकता। छपाई सफाई अत्युत्तम। मूल्य ५)

मेघदूत

(मल्लिनाथकृत सञ्जीविनी तथा हिन्दी में पदार्थ एवं विशेष वक्तव्य में कुछ नवीन उद्भावनाओं सहित)

सं०–पं० जनार्दनशास्त्री पाण्डेय एम० ए०

मेघदूत की सैकड़ों टीकाएँ हो चुकी हैं, किन्तु फिर भी कई स्थल ऐसे है जिनमें कवि का आशय न समझकर टीकाकार आपस में ही उलझते रह गये हैं। ऐसे कितने ही स्थलों की गुत्थियाँ आपको इस पुस्तक में सुलझाई मिलेंगी। संस्कृत टीका के साथ प्रत्येक पद का हिन्दी में अर्थ, पूरे श्लोक का भावार्थ और विशेष वक्तव्य में प्रायः श्लोकों में आई सभी विशेष बातों के स्पष्टीकरण के साथ ही भूमिका में कालिदास का जीवनवृत्त, उनकी शैली और रचनाओं का मूल्यांकन, मेघदूत की विशेषता, मेघ का मार्ग, मेघ का सन्देश आदि विशद वर्णन हैं। इस ग्रन्थ का प्राक्कथन हिन्दी के प्रतिष्ठित विद्वान् आचार्य शिवपूजन सहायजी ने लिखा है। मूल्य केवल १.२५

The Mirror of Composition

A Treatise on Poetical Criticism being an English Translation of the Sahitya Darpana of Viswanath Kaviraj by J. R.

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

Ballantyne & Pramada Dass Mitra, *Demy Octavo : PP: 464 : Cloth bound : Rs. 15.00*

The '*MIRROR* of *COMPOSITION*'—The '*SAHITYA DARPANA*', besides memorial verses as its text, contains the rules frequently illustrated by the same examples as those employed in the Kavya Prakasa. Both Sanskrit Texts are held in high esteem : but the former—the more recent and the more copious of the two—is generally admitted as the standard of taste among the learned ones. The Present Volume is the English Translation and is a *REPRINT* of *BIBLIOTHECA INDICA EDITION* of 1865 which remained out of print till now.

The Treatise is divided into Ten sections and after saluting the Deity, begins with the Declaration of the Nature of Poetry. The Declaration of the Nature of a Sentence, the Declaration of Flavour, Incomplete Flavour etc, the Declaration of the Divisions of Poetry, the Establishment of the Function of Suggestion, the Declaration of 'Poetry Visible' and 'Poetry Audible', the Declaration of Blemishes, the Declaration of Merits, the Discrimination of Styles and concludes with the Declaration of Ornaments.

रघुवंश-महाकाव्य

मल्लिनाथकृत संजीविनी तथा

पं श्रीधारादत्तशास्त्रिकृत–'छात्रोपयोगिनी' सरल संस्कृत व्याख्या

हिन्दी अनुवाद, अन्वय, वाच्यपरिवर्तन, समास, प्रतिशब्द व्याख्या तथा कथासार आदि देकर टीकाकार ने छात्रों के लिए इसे अतीव उपयोगी बना दिया है। ग्लेज कागज पर छपा है। प्रत्येक सर्ग अलग २ भी मिलता है। मूल्य १ से ५ सर्ग ३-००, ६ से १० सर्ग ४-०० और प्रतिसर्ग ०-६२ पै०।

रघुवंश (१३-१४ सर्ग)

व्या०—जनार्दनशास्त्री पाण्डेय साहित्याचार्य, एम. ए.

रघुवंश सहस्त्रों वर्षों से संस्कृत साहित्य में पाठ्य ग्रन्थ के रूप में चला आ रहा है। इसकी कई टीकाएँ रहते हुए भी मल्लिनाथ कृत सञ्जीविनी प्रायः प्रचलित

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

रही है। किन्तु मल्लिनाथ ने कई शब्दों को सरल समझकर छोड़ दिया है जो आज के छात्रों के लिये प्रायः दुरूह हैं तथा कई जगहों पर उनकी व्याख्या में कुछ ऐसी उलझनें रह गई हैं जिनसे छात्रों को भ्रम होता है। अतः श्रीजनार्दनशास्त्री पाण्डेय ने प्रत्येक श्लोक का अन्वय, हिन्दी में प्रत्येक पद का अर्थ, वाच्यपरिवर्तन, संस्कृत और हिन्दी में भावार्थ तथा प्रत्येक श्लोक में आनेवाली विशेष बातों को टिप्पणी में देकर उन गुत्थियों को सुलझाया हैं तथा कई नवीन उद्भावनाएँ प्रकट की हैं। जिन पदों को सरल समझकर मल्लिनाथ ने छोड़ा था उन्हें भी सञ्जीविनी में ही कोष्ठ के अन्दर दे दिया है। छात्रों ही नहीं प्रत्येक साहित्यिक व्यक्ति को इसका अध्ययन अवश्य करना चाहिये। २०×३०×१६ के २२२ पृष्ठों की पुस्तक का मूल्य केवल १-५०

रसगंगाधर

पं० जगन्नाथ विरचित बालक्रीड़ा नामक विस्तृत हिन्दी व्याख्या तथा रसगंगाधर आलोचना सहित। रायल आठ पेजी पृष्ठ संख्या ६३० : पक्की कपड़े की जिल्द सहित मूल्य १५.००

महामहोपाध्याय नागेशभट्ट-कृत मर्मप्रकाश तथा साहित्याचार्य पं० मधुसूदन शास्त्री एम. ए. विरचित १७४ पृष्ठ की विस्तृत भूमिका, मधुसूदनी विस्तृत संस्कृत व्याख्या, सहित ग्रन्थ इतना उपादेय है कि विद्वानों तथा छात्रों का काम इसके बिना चलना कठिन है। पहली बार छपा हैं। अभी प्रथम आनन ही छपा है।

Kalhana's Rajatarangini

A CHRONICLE OF THE KINGS OF KASHMIR *by* Dr. M.A. STEIN, Ph. D., English trans. of the text with intro., comm & appendices' *Crown Quarto* : *FP* 1150 : 2 *Vols.* : *cloth bound, Gold embossed.* : *Rs.* 100.00

The importance of Kalhana's Chronicle and the ancient remains and traditions the Kashmir Valley has preserved, is the nucleus of the English version of the book. The natural attractions of the valley have won it fame far Beyond the frontiers of India ; thus too the interest attaching to its history far exceeds the narrow geographical limits. The favours with which nature has so lavishly endowed this land 'in the womb of Himalayas', are

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

not likely to fade or vanish. But those manifold remains of antiquity which the isolation of the country has preserved, and which help to resuscitate the life and condition of earlier times, are bound to disappear more and more with the ravages of time. Great are the changes brought over Kashmir, greater perhaps than any which the country has experienced since the close of the Hindu Period It is easy to foresee that much of what is of value to the historical student will before long be destroyed or obliterated. It is time to collect as carefully as possible the materials still left for the study of Old Kashmir and its earliest records. No efforts have been spared by Dr. Stein, to serve this end.

The interest of Kalhana's Rajatarangini for Indian history generally lies in the fact that it represents a class of composition which comes nearest in character to the Chronicles of Mediaeval Europe and of the Mohammedan East. Together with the later Kashmir chronicles which continue Kalhana's narrative it is practically the sole extant specimen of this class. Its author's object is not to offer a connected narrative of the various dynasties which ruled Kashmir from the earliest period down to his own time. He begins with the legends which represent the popular traditions of the country regarding its earliest history. These he follows up by a narrative of subsequent reigns taken from older written records and arranged in a strictly chronological order. The final portion of the work, considerable both in extent and historical interest, is devoted to an account of the events which the author knew by personal experience from the relation of living witnesses. These events are narrated from the point of view of a more or less independent chronicler.

Dr. Stein has translated the entire text into English language. In an introduction covering about 150 pages, he has gathered some instructive facts regarding Kalhana's personality and the time and surroundings in which he lived, from the indications scattered through the narrative. He has analysed Kalhana's sources, methods & style and has shown the aims & principles which guided Kalhana in his labours. He has made a critical

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

examination of Kalhana's narrative and chronology and has ascertained the value of the several portions of his work as sources of historical information. He lays bare the chronology of the Rajatarangini systematically along with the chronology of his first three books, chronology of the Karkota and later dynasties. He takes Rajatarangini as a historical source and accordingly discusses the Kings of the individual books separately. Dynastic & Chronolgical Tables and Genealogical Tables of Kashmir Dynasties have been elaborated in the Appendices. Further Dr. Stein points out the historical & religious places mentioned in the narrative and elucidates the Memoirs on the Ancient Geography of Kashmir from classical notices, Chinese records. Mohammedan notices, Indian notices, Kashmir chronicles, The Nilamata and Mahatmyas & Local Tradition. He further picks up General Geography of Kashmir including Ethnology and Political Topography duly supported by maps within the same limits to understand correctly, or to utilize fully, the historical contents of Kashmir chronicle. After adding Supplementary Notes regarding Mahatmyas of Kashmir, Tirthas and the Kashmir Parganas, the author concludes with an Index to facilitate reference.

The notes & explanations appended and given in foot-notes in the Text are more illuminating and show very deep study and a thorough grasp of the problem tackled.

Kalhana's Rajatarangini

कल्हण प्रणीत राजतरङ्गिणी

A CHRONICLE OF THE KINGS OF KASHMIR Sanskrit Text with critical notes *by* M. A. Stein, M. A., Ph. D., (Shortly)

रामाभ्युदययात्रा

संस्कृत हिन्दी व्याख्या सहित ।

भारतीय साहित्य का साधारण ज्ञान रखने वाला व्यक्ति भी वाल्मीकि रामायण से परिचित है। इसका एक भाग रामाभ्युदययात्रा कहा जाता है। जिसमें

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

राम-जन्म से लेकर सीता विवाह आदि अभ्युदय प्राप्ति के लिए अयोध्या से प्रस्थान तक का अंश वर्णित है। यह अंश वाराणसेय संस्कृत विश्वविद्यालय की शास्त्री परीक्षा में अनिवार्यरूप से रखा गया है। इसलिए छात्रों के अनुरोध पर हमने यह भाग रामायण से पृथक् प्रकाशित करवाया है। इसमें छात्रों को सुगमतापूर्वक बोध कराने के लिए संस्कृत और हिन्दी में सरल से सरल व्याख्या दी गई हैं। विस्तृत भूमिका में विषय और ग्रन्थ संबन्धी पूरी जानकारी दी गई हैं। इस प्रकार यह संस्करण अत्युत्तम एवं संग्राह्य बनाया गया हैं। परीक्षार्थी छात्रों के अतिरिक्त रामकथा में रस लेने वाले सामान्य पाठकों के लिए भी यह ग्रन्थ अत्युपयोगी है। डवलक्राउन के लगभग २७५ पृष्ठों की पुस्तक का मूल्य २-५०

रुक्मिणीहरणम्

महाकाव्यम्

सारस्वतपारावारपारदर्शी त्यागतपोमूर्ति पं० काशीनाथ शर्मा द्विवेदी 'सुधीसुधानिधि' कृत

प्रस्तुत इस संस्कृत महाकाव्य का उद्देश्य है--साहित्य के अनुपम आनन्दानुभूति के साथ-साथ नीति, धर्म, दार्शनिक सिद्धान्त, अभ्युदयसम्पादक समुचित सदाचारादि तथा उनके प्रतिपादक ग्रन्थों के प्रामाण्य के परिज्ञानपूर्वक उनके यथावदनुष्ठान एवं भगवच्चरणारविन्द के बार-बार अनुसन्धान के द्वारा लोगों को परिपूर्ण कल्याण की प्राप्ति।

यह महाकाव्य आजतक के सभी काव्यग्रन्थों का अतिक्रमण कर जाता है। भाषा सरल, प्राञ्जल एवं प्रवाहपूर्ण है। प्रत्येक श्लोक में वैशिष्ट्य है। सभी भाव मौलिक सर्वोत्कृष्ट और संवेद्य हैं। कवि की लेखनी स्वतंत्र और निःसंकोच है। दृष्टि पैनी है। हर उक्ति तर्कपूर्ण है। कल्पना में भी यथार्थ का दर्शन वह तर्क द्वारा करती है। विद्वानों का कहना है कि यदि यह महाकवि कालिदास के समकालीन होते तो कालिदास को यह ख्याति न मिलती।

मूल्य २५·००

Subandhu's Vasavadatta

A Sanskrit Romance translated by Dr. Louis H. Gray, Ph D.,

Demy Octavo : PP. 228: Cloth bound & Jacketed Rs. 7 50

The present volume is the reprint of the English translation of India's oldest formal romance of the artificial and ornate style in

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

Sanskrit Prose, which was first published in 1913 by the Columbia University.

Besides the translation, in the Introduction, the author has discussed the Title of the Romance, Sanskrit References to Subandhu, Subandhu's allusion to Sanskrit Literature, the Date of Subandhu, the Data concerning Subandhu's life, the Vasava datta—A Katha, The Style and Rhetorical Embellishments of the Vasavadatta., Outline of the plot of romance, Sanskrit '*Estilo Culto*' previous to Subandhu and in later Epigraphy, the commingling of Prose and Verse and Paronomasia outside the Vasavadatta. Later on Subandhu and Lyly have been weighed and the Sanskrit Romance has been compared with Greek Romance, the Double Recension of the Vasavadatta has been taken into account along with other Manuscripts & Editions and has been further considered in relation with other Sanskrit Prose Romances. Telugu-Recension in English script has been given along with Bibliography & Lexicographical Appendix.

Bilhana's Vikramankadeva Charita

Edited with Sanskrit Comm. and Hindi Translation by Pt. Vishwa Nath Shastri Bharadwaj *Demy Octavo : pages* 1270 *with a portrait & a Map : Bound :* *Rs. 22.00*

As this is a historical treatise, a map of India of the then period, is also given; nine appendices have been added i. e. Sukti Sangraha, Alphabetical Shlokanukramanika, Important places and Bibliography & Genealogical tree of Chalukya Dynasty etc. etc. An explicit Introduction explaining Kavya and its divisions, an Account of various recensions of the text published by different scholars is an addition. As the contents belong to the 11th century A. D. when Vikramankadeva of Chalukya dynasty reigned, the historical picture of those times comes before us. Later Bilhana has been discussed, his parentage, his country, his place in Sans-

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

krit Literaure and a comparative study of the Poet is made. Critical manifestation of the characters in the Kavya and Synopsis of individual Sargas conclude the introduction.

श्री भट्टकेदार विरचित

वृत्तरत्नाकर

"प्राज्ञतोषिणी" संस्कृत हिन्दी व्याख्या सहित

व्याख्याकार—श्रीधरानन्द शास्त्री, व्याकरण-साहित्याचार्य

छन्दःशास्त्र वेद का पादस्थानीय कहा गया है। इस विषय पर कई अन्य ग्रन्थों के रहते हुए भी वृत्तरत्नाकर ही अधिक प्रसिद्ध और प्रचलित रहा है। क्योंकि इसमें अत्यन्त संक्षेप में प्रायः सभी उपयोग में आने वाले छन्दों का वर्णन आ गया है। लक्षण में ही उदाहरण का रूप होने से छात्रों को याद करने में सरलता होती है। इसलिए यह प्रायः सभी परीक्षाओं में स्थान पा गया है इसकी यद्यपि "सेतु" तथा 'नारायणी" दो प्राचीन टीकाएँ थी किन्तु उससे छात्रों को सुगमतया बोध नहीं हो पाता, अतः श्रीधरानन्द शास्त्रीजी ने इन दोनों टीकाओं के उपादेय अंशों को लेकर अत्यन्त सरल और सुबोध संस्कृत टीका तथा हिन्दी में उसी का विशेष विवरण समझाकर ऐसी व्याख्या कर दी है, जिसके आधार पर बिना गुरु के भी छात्र इसे आसानी से तैयार कर सकते हैं। २०×३०×।१६ की २७५ पृष्ठों की पुस्तक का मूल्य ३-०० मात्र

शिशुपालवध महाकाव्य (१-२ सर्ग)

मल्लिनाथकृत सर्वङ्कषा, अन्वय, पदार्थ, वाच्य०, संस्कृत एवं
हिन्दी में भावार्थ तथा विशेष टिप्पणी सहित

व्याख्याकार—जनार्दनशास्त्री पाण्डेय, साहित्याचार्य, एम ए.

उपर्युक्त शास्त्रीजी द्वारा व्याख्यात ग्रन्थों को जिन्होंने देखा है वे समझते हैं कि उनकी व्याख्या कितनी सरल, सरस, हृदयग्राहिणी होती है। अत्यन्त प्रचलित तथा परिमार्जित भाषा में मूलोक्त कवि के भाव को स्पष्ट रूप से व्याख्या में समझाया गया है। माघ के लम्बे समासों का भी पदच्छेदपूर्वक प्रत्येक पद का पदार्थ इस प्रकार

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

दिया गया है कि छात्रों को अर्थ के साथ ही समास करने में भी सुविधा हो जाती है। मल्लिनाथ ने जिन पदों को सरल समझकर छोड़ दिया है या जिन पदों में वे स्वयं भ्रम में पड़ गये हैं ऐसे सभी पदों की गुत्थियाँ सुलझायी गई है। विशेष टिप्पणी में प्रत्येक श्लोक में नवीन उद्भावनाओं के साथ श्लोक का साहित्यिक मूल्यांकन भी किया गया है।

Suka Saptati

(Original Text in Sanskrit) *Royal Octavo: Page 152 : Cloth bound : Price 10 00*

This is a story of young & handsome Prabhavati whose husband was out on business-tour for an indefinite period and who yearned for a romance, Dusk over, she fashioned herself to move out but was discouraged by the bird Sarika whom she tried to kill. But the bird escaped.

The parrot handled the situation diplomatically and roused her interest & curiosity in a tale asking her to move only if she is wise enough as.........

Thus the parrot went on relating night after night interesting stories & detained her in her house for full 70 days when her husband returned.

Thus SUKA-SAPTATI brings to you a cycle of such stories in Sanskrit as representing the glorious heights to which the story-telling can ever ope to achieve.

This is an immortal work of Ancient Indian Culture produced for the first time from an old German edition.

Bhoja's Sringara Prakasa

by Dr. V. Raghavan, M. A., Ph. D. *Royal Octavo : Pages about 1000 : Cloth Binding with Gold Rs. 50.00, Board & Ink Rs. 45.00*

The present volume is a complete publication of the Author's exposition of Bhoja's MAGNUM OPUS and Dr. Raghavan's critical pen has moved through Bhoja's massive mind and work

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

and has produced a history of the development of literary criticism in Sanskrit, not merely of the period of Bhoja but from before and after too. It is an exhaustive Thesis full of valuable information, written in a simple and straight-forward style and though abounding in details, is quite interesting throughout. The publication is an indispensable companion to those who undertake research work in the subject and will also serve as an excellent reference book.

In the contents the learned author scans Manuscript Material and discusses various lacunae therein. Bhoja's authorship of Sr. Pra. with its Scheme, Scope and Contents with a topical analysis of the whole work with extracts has been considered. A Concordance of the two works S. K. A and Sr. Pra., Kavya & Natya, Sahitya, Ukti, Bhoja & Vakrokti with a compaative study of Bhoja and Kuntala, has been made. Light has been thrown on Bhoja & Svabhavokti, Bhoja, Dhvani and Ananda vardhana with the edition of texts on Dhvani & Tatparya from Sr. Pra., Dhvanyaloka, Dasarupaka and Avaloka. Bhoja and Aucitya, Riti, Vrtti and Pravrtti. Dosas and History of Gunas with a complete history of the concepts and Bhoja's conception of Alankaras, have been elucidated, A critical study has been made of Bhoja's conception of Rasa in the S. K. A. and Sr. Pra. and Bhoja's Rasa Theory & Sankhya and Western Parallels. Bhoja& Natya-Sastra, Types of Poetic composition with their historical account, Bhoja's Niruktis, Love Festivals, Sixty-four Arts, Bhoja's Similes, His Predecessors, and Successors, have been evaluated. Sastric discussions in the Sr. Pra. along with Authors and Works quoted therein, have been taken into account and concluded with Appendix, Bibliography and Indexes of works. Authors and Subjects,

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

संस्कृत काव्य शास्त्र का इतिहास

महामहोपाध्याय पी० वी० काणे

महामहोपाध्याय डा० पी० वी० काणे का संस्कृत काव्यशास्त्र का इतिहास महत्ता, उपयोगिता तथा प्रामाणिकता की दृष्टि से अत्यन्त प्रसिद्ध संदर्भ ग्रन्थ हैं। इस इतिहास ने कितने ही अनुसन्धाताओं को संस्कृत के अनेक अज्ञात ग्रंथों का आलोचन तथा प्रकाशन करने के लिए प्रेरित किया था यह अनुवाद उसी इतिहास के परिष्कृत एवं परिवर्धित मूल पर आधारित है।

इस ग्रंथ के दो भाग हैं। प्रथम में अलङ्कार शास्त्र के महत्त्वपूर्ण ग्रंथों का विशद परिचय, उनकी विषय वस्तु का संक्षिप्त विश्लेषण तथा आचार्यों के काल क्रम का विवरण प्रस्तुत किया गया है। दूसरे भाग में अलङ्कार शास्त्र के सभी महत्त्वपूर्ण विषयों का समीक्षण है साथ ही साहित्यालोचन के विभिन्न मानदण्डों के क्रमिक विकास का चित्र अंकित है। अलङ्कार शास्त्र के ज्ञात एवम् अज्ञात ग्रंथ, आचार्य एवं प्रतिपाद्य का प्रामाणिक इतिहास जानने के लिये आपको इस ग्रंथ को पढ़ने का सविनय आमन्त्रण देते हैं। मूल्य १५-००

साहित्यिक निबन्ध

[शास्त्री, आचार्य बी० ए०, एम० ए० के छात्रों के लिए उपयोगी उत्तम निबन्ध]

लेखक—म० म० गिरिधर शर्मा चतुर्वदी

मान्य महामहोपाध्यायजी हिन्दी और संस्कृत के अग्रणी लेखकों में हैं, प्रस्तुत पुस्तक उनके समय-समय पर लिखे गये विभिन्न सामाजिक, धार्मिक एवं साहित्यिक निबन्धों का संग्रह है। इसमें जो निबन्ध दिये गये हैं वे शास्त्रीय एवं लौकिक दोनों दृष्टियों से महत्त्वपूर्ण हैं। इससे छात्रों को प्रौढ़ एवं पाण्डित्यपूर्ण निबन्ध लिखने में अत्यधिक सहायता मिलेगी। मूल्य ३.००

साहित्यदर्पण

श्रीविश्वनाथ कविराज कृत तथा श्रीशालग्राम शास्त्री कृत विमला हिन्दी व्याख्या सहित। रायल आठपेजी : पृष्ठ संख्या ४०४ चतुर्थ संस्करण सजिल्द मूल्य १२.५०

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

"साहित्याचार्य श्री शालग्राम शास्त्री जी ने साहित्य दर्पण की हिन्दी भाषा में जो विस्तृत, गम्भीर, सुस्पष्ट, सम्यक् एवं सरल टीका लिखी है यह उनके गौरवास्पद 'आचार्य पद' के अनुरूप ही हुआ है। इस टीका से न केवल साहित्यदर्पण पढ़ने में विद्यार्थियों को सहा[illegible] मिलेगी किन्तु शास्त्र-व्यसनी, सहृदय और अध्यापक भी बहुत लाभ उठा सकेंगे। [illegible]समें साहित्य के सब ही अंगों का बड़ी मार्मिकता और विद्वत्ता से विवेचन किया गया है। न केवल दर्पणकार का, किन्तु उदाहृत श्लोकों के रचयिता महाकवियों का भी हृदय मानो पाठकों के सामने रख दिया गया है। मेरे विचार से तो हिन्दी साहित्य क्षेत्र में कार्य करने के अभिलाषी उदारहृदय सज्जन इस टीका की शैली से यह सीख सकते हैं कि पुराने काव्य या अलंकार ग्रन्थों का भाषान्तर किस प्रकार करना चाहिए।" म० म० गिरिधर शर्मा चतुर्वेदी

साहित्यदर्पण—षष्ठ परिच्छेद

दृश्यकाव्य विषय की पूर्ण जानकारी इसी परिच्छेद से सम्भव है। अतः केवल षष्ठ परिच्छेद अलग से प्रकाशित किया गया है। श्रीमहेश्वर भट्टाचार्य की अत्यन्त प्राचीन 'विज्ञप्रिया' संस्कृत टीका एवं शालिग्राम शास्त्री जी की उक्त विमला हिन्दी टीका से युक्त इस अनुपम संस्करण का मूल्य केवल ३.००

साहित्यदर्पण प्रश्नोत्तरी

साहित्यदर्पण के जितने भी प्रश्न परीक्षा में पूछे जा सकते हैं वे सब इसमें उत्तर सहित दिये गये हैं। साहित्य के छात्रों के लिये अत्यन्त उपयोगी है। पहला संस्करण तो हाथों-हाथ ही बिक गया है, अब नया संस्करण छपा है। मूल्य ०.७५

Sahityadarpan of Viswanatha

[Paricchedas I, II, *Arthalankaras*]

With Exhaustive Notes by M. M. P. V. Kane. Demy Octavo : : pp 358 : : Price Rs. 10.00

This book contains a thorough discussion on the technicalities of the dramatic art and forms together with the Natyasastra of Bharata and the Dasarupa of Dhananjaya. Another merit of the work is that it is written in a simple and flowing style, In the

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

first Pariccheda the author speaks of the fruits of poetry, discusses definitions of Kavya proposed by diffierent writers and at last gives his own definitions and illustrates it. In the second, after defining a sentence and a word, the author deals at great, length with three powers of a word and in the 10th both Sabdalankaras and Arthalankaras are dealt with.

The Songs of Vidyapati

by

Dr. Subhadra Jha

Crown Octavo pp. 500 Cloth bound : Rs. 10.00

These are the lyrics, of Vidyapati – the most illustrious poet of Maithili exclusively based on the famous Nepal Manuscript which has been followed more faithfully than any of the contemporary or post writers on the subject, and is an exhaustive edition of the Maithili writings of the Great poet from the point of view of Linguistic Studies.

The author has translated these lyrics into English, as the readers will not find in it the literary embellishments that are usually noticeable in other similar works. He gives an elaborate introduction about Maithili and the Poet Vidyapati who is next only to Tulsidas. He discusses the date of Vidyapati and his Sect and also throws light on the previous editions of the work, Nepal manuscripts and its Language and the Theme of the Erotic Songs, the writer has given Five Appendices, discussing therein the Songs composed by poets other than Vidyapati and included in the Nepal manuscript, Incomplete Songs in the same manuscript. The Beginning and the Concluding syllabus of the different folios, Index of the first lines in Alphabetical Order and Serial Number of the Songs in the manuscript and their corresponding number in the edition.

Vidyapati is a Mystic Poet as all his readers do not hold similar views about him. In Bengal and Assam he is considered

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

to be a Vaishnava. In Mithila he is generally believed to be a songster of festive occasions and of the prayer hymns dedicated to Siva. It is here that the celebrated author does full justice and rationally details out th· result in this book.

Harshacharita of Bana

Text with an Introduction and Notes in English

By

MM. Dr. P. V. Kane

Demy Octavo pp 660 (2nd revised Edition) Rs. 12.00

The present edition contains the whole of the text of the Harshacharita (Uchchhvasa I-VIII). As there is at present no other edition of the Harshacharita in the market, the present edition needs no apology. Some matter has been introduced besides the Notes in order to bring the second Edition upto date. This edition will meet the requirements of the University students. No pains have been spared to make the book useful not only to the college student, but also to the general reader.

The Harsa-Charita of Bana

English Translation *by* E. B. Cowell & F. W. Thomas, *D.my Octavo* : *PP.* 300 : *Cloth bound Jacketed* *Price Rs 12.00*

This is an English Translation of Harshacharita of Bana—almost a forgotton book in India, presented for the first time to those who are interested in Indian Literatue & Antiquities, The great merit of the Harsha-Charita consists in the face that it is a very early attempt at an historical romance in prose by an author who has taken his own sovereign as his hero and has woven the story out of the actual events of his reign. In fact it is as much based on real events as Scotts Quentin Durward or Waverley. Sri Harsa was the ruler whose court was visited and elaborately described by the Chinese Buddhist traveller Hiuen Tsang in the 7th century. He was

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

the Akbar of the Hindu Period and under his wise toleration the adherents of the contending religions sank their differences in a common feeling of loyalty.

Bana's style resembles the *Estilo Culto* of Spanish Literature and abounds in double meanings and veiled historical allusions necessitating the authors to preserve this characteristic feature by continually explaining the puns in their notes and Appendices. Bana's masterly narration is a mirror faithfully reflecting the condition of Indian Society and the manners and customs of the period into a life-like picture supplementing the Chinese Traveller's Journal. The book concludes with an Index of proper names.

काव्य के अन्य महत्त्वपूर्ण ग्रन्थ

१ अच्युतरामाभ्युदय (राजनाथ डिण्डिम) "लघुपञ्चिका" व्याख्या सहित
१-६ सर्ग १·३७ ७-१२ सर्ग ५·००
२ अन्योक्तितरङ्गिणी—म० म० मथुराप्रसाद दीक्षित २·००
३ अन्योक्तिमुक्तावलि—राम शास्त्री १·२५
४ अन्योक्तिविलास (भामिनी विलास) भा० टी०, जनार्दनशास्त्री पाण्डेय २·५०
५ अन्योक्तिसाहस्री—पं० बद्रीनाथ झा ०·८०
६ अब्दुलचरित (लक्ष्मीधर चौधरी सम्पादित) २ भाग १२·००
७ अमरमण्डन (अमरसिंहकृत) कृष्णसूरि विरचित ३·००
८ अमरुशतक—भा० टी०, बम्बई १·१०
९ अमरुशतक—"रसिकसञ्जीविनी" व्याख्या सहित १·५०
१० अमरुशतक (अमरु), अनुवादक कमलेशदत्त त्रिपाठी १०·००
११ अमरुशतक—भा० टी०, विद्यानिवास मिश्र २·५०
12 Amarusatak—with English Translation by Dr. R. C Devadhar 6.25
१३ अम्बिकालाप १·००
१४ अवदानकल्पलता (तृतीयपल्लव)—क्षेमेन्द्र ०·२५
15 Araji Booji by Dr. Raghuvir 35.00
१६ आचार्य क्षेमेन्द्र—डा० मनोहर लाल गौड़कृत समीक्षा, हिन्दी अनुवाद ४·००
१७ आर्यासप्तशती—विश्वेश्वरविरचित-स्वोपज्ञव्याख्या ४·५०
१८ आर्यासप्तशती (गोवर्धनाचार्य), भा० टी०, रमाकान्त त्रिपाठी १०·००

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

१९	आश्लेषशतक—नारायण पंडित	० ३७
२०	आह्निकस्तव—कपालिशास्त्री	१·००
२१	ईश्वरविलास महाकाव्य—कृष्णभट्ट	११·५०
22	Usaniruddham (Canto I & II) of Rampanivad with English Translation & Notes by Dr. N. V. Vaidya	2·25
२३	उषानिरुद्ध (प्राकृतकाव्य) रामपणिवाद प्रणीत, अंग्रेजी भूमिका सहित	६·००
२४	ऋतुसंहार काव्य—भा० टी०, बम्बई	१·१०
२५	ऋतुसंहार (कालिदास) "प्रभा" हिन्दी व्याख्या	०·४०
26	Ritusamhara with English Translation by A. C. Das	1·45
27	Ritusamhara—English Translation by R. S. Pandit	5·00
२८	एक दिन में कवि—पं० विश्वेश्वरदयाल वैद्य	०·२५
29	Anthology of Sanskrit Court Poetry (Subhasita-Ratna Kosha Vol. II) by D. H. H. Ingalls	120·00
३०	औचित्यदृष्टि (क्षेमेन्द्र)	४ ००
३१	औचित्यविचारचर्चा (क्षेमेन्द्र) अनुवादक चौधरी नारायणसिंह	२·००
३२	कण्टकञ्जली—कण्टकार्जुन	५·००
३३	कण्ठाभरण—हिन्दी अनुवाद सहित	०·३१
३४	कथाकोषप्रकरण—जिनेश्वरसूरिकृत (प्राकृत)	१०·५०
३५	कथासरित्सागर—भा० टी०, अनुवादक केदारनाथ प्रथमखण्ड	१०·००
	द्वितीयखण्ड	१२·००
36	Kathasarit Sagar—English Translation by C. H. Tawny with Notes by N. M. Penzer—10 Vols	Shortly
37	Kabir Granthavali (Doha) V. Charlotte	8·00
३८	कमलीनिकलहंस—राजाचौधरीदीक्षित	२·२५
३९	करणोत्तमम्	२·००
४०	कर्णकुतूहल एवं कृष्णलीलामृत—भोलानाथ महाकवि	१·५०
४१	कलाविलासिनी वासवदत्तम्—देवदत्त शास्त्री	२·५०
४२	कविकल्पलता	१·५०
४३	कविकौमुदी (कल्पलक्ष्मीनृसिंह)	१·५०
४४	कवीन्द्रचन्द्रोदय—डा० हरदत्त सम्पादित	२ ५०
४५	कंसवहो—डा० ए. एन. उपाध्याय	४·५०
46	Kangra Painting of Geeta Govinda	50·00

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

४७	कार्णिकरठाभरण—व्याख्या	०·८५
४८	कालवधकाव्य	१·००
४९	कालिकामन्दाक्रान्ताशतक (धर्माधिकारिवंशवर्णन)	२·००
५०	कालिदासकाव्यामृतम्—रामलखनशर्मा	१·२५
५१	कालिदास की ललित योजना—हजारीप्रसाद द्विवेदी	६·००
५२	कालिदास के काव्य—भा० टी०, रामप्रतापशास्त्री	१२·००
५३	कालिदासग्रन्थावलि—भा० टी०, रामप्रतापशास्त्री	१८·००
५४	कालिदासग्रन्थावलि—भा० टी०, पं० रामतेजपाण्डेय	८·००
५५	कालिदासग्रन्थावलि—भा० टी०, पं० सीताराम चतुर्वेदी	२०·००
५६	कालिदासरहस्य (खण्डकाव्य)—श्रीधरभास्कर	२·००
५७	कावेरी महिमादर्श—जग्गू वेंकटाचार्य	०·५०
५८	काव्यप्रबन्ध—बालकृष्णभट्टशास्त्री कृत	१·५०
५९	काव्यमाला—नानाविध-प्राचीन काव्यों का संग्रह—इसके ४, ५, ६, १२ और १४ वा गुच्छक उपलब्ध है।	१०·००
६०	काव्यरत्न (मुनि सुव्रत) अर्हद्दास	०·८७
६१	काव्यवल्लरी—व्यथित हृदय	४·००
६२	किङ्किणीमाला—महालिङ्गशास्त्री	२·५०
६३	किरातार्जुनीयम् महाकाव्य (भाषा), रामप्रताप शास्त्री	६·००
६४	किरातार्जुनीयम्—(१-३) भा० टी०, जनार्दनशास्त्री पाण्डेय	२·००
६५	किरातार्जुनीयम् (भारवि) १-२ सर्ग, "मल्लिनाथी", हिन्दी अनुवाद प्रत्येक सर्ग	१·२५
६६	किरातार्जुनीयम्—१-२ सर्ग, सुबोधिनी टीका, गौरीनाथपाठक	१·००
६७	किरातार्जुनीयम् महाकाव्य (सम्पूर्ण), मल्लिनाथ टीका व विस्तृत भूमिका, गौरीनाथपाठक	२·५०
६८	किरातार्जुनीयम् (भारवि)—"घण्टापथ" टीका सहित, बम्बई	३·००
६९	किरातार्जुनीयम्—प्रथम सर्ग, हिन्दी टीका, जगदीशलाल शास्त्री	०·९४
७०	किरातार्जुनीयम्—१-३ सर्ग, "बालबोधिनी" सं० टीका	०·३१
७१	किरातार्जुनीयम्—"मल्लिनाथी" "सुधा" हिन्दी सहित १-३ सर्ग	२·००
	१-२ सर्ग	१·२५
७२	किरातार्जुनीयम्—१३वाँ सर्ग, स० हिन्दी व्याख्या, उमेशचन्द्रपाण्डेय	१·२५

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

७३ किरातार्जुनीयम्—"घण्टापथ" "प्रकाश" स० हिन्दी टीका सहित, सम्पूर्ण ४·०० १-५ सर्ग १·५०

74 Kiratarjuniyam I to IV–text with English Translation Mallinath Comm. & Notes by S. Ray 14·00

75 Kiratarjuniyam Canto XIII, text with English & Hindi Translation by Varendra Kumar 1·50

76 Kiratarjuniyam Cantos I–III, with Sanskrit Comm. and English Translation by N. R. Ayyenger 3·37

77 Kiratarjuniyam Cantos I–II with English Translation & Notes by R. G. Asti 1·50

78 Kiratarjuniyam Cantos I to III with English & Hindi Translation & Notes by M. R. Kale 4·00

79 Kiratarjuniyam I–III with English Translation & Notes by S. V. Dixit 3·00

80 Kiratarjuniyam Cantos I, XIII & XIV with English Translation, Notes by A. K. Shasrti & M. Shastri each 4·00

81 Kiratarjuniyam I–II with English Gujarati Transl. M. C. Modi 4·00

82 Kiratarjuniyam—with English Translation & Notes by C. S. R. Shastri Canto I 1·50, Canto II–III 2·75

८३ कुटनीमतकाव्य—मधुसूदनकौल कृत टिप्पणी सहित ३·००

८४ कुटनीमतकाव्य—(दामोदर गुप्त) भा० टी०, जगन्नाथ पाठक ७·५०

८५ कुटनीमतकाव्य—भा० टी० अत्रिदेव गुप्त ६·००

८६ कुमारसम्भव १-५ सर्ग—सं० हिन्दी टीका, जगदीशलालशास्त्री ३·५०

८७ कुमारसम्भव—सटीक कृष्णमणिशास्त्री २·००

८८ कुमारसम्भव (सम्पूर्ण) "प्रकाश" हिन्दी टीका युक्त ३.००

८९ कुमारसम्भव (१-७ सर्ग), "पुसवनीं" सं० हि० व्याख्या ५-००

९० कुमारसम्भव (१, ५ सर्ग) सटीक, कान्तानाथशास्त्री तैलंग १·५०

९१ कुमारसम्भव (सम्पूर्ण) "सजीविनी" टीका, बम्बई २·५०

९२ कुमारसम्भव (पंचम सर्ग) सं० हि० व्याख्या १·००

९३ कुमारसम्भव (सम्पूर्ण) भा० टी०, काशी २·००

९४ कुमारसम्भव—१-७ सर्ग, सटीक १·४८

९५ कुमारसम्भव (कालिदास) डा० सूर्यकान्त सम्पादित, नोट्स १०·००

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

९६ कुमारसम्भव १-३ सर्ग, गोपालाचारी स० व्याख्या १·१३

97 Kumarsambhava of Kalidas Canto I—V with English Translation & Notes by R. D. Karmarkar 4.50

98 Kumarsambhava Canto I to VI with Sanskrit comm. English Translation by Satkopan 5·50

99 Kumarsambhava (Complete) Text with English Translation by S. R. Sehgal 16·50

100 Kumarsambhava Canto I to V with Sanskrit comm. English Translation & Notes by S. Ray 15·50

101 Kumarsambhava Canto I to V with English Translation and Notes etc. by M. R. Kale -shortly

102 Kumarsambhava Canto III, V & VI with English Translation and Notes by S. Rangachar 7·28

१०३ कृष्णकर्णामृत—मूल १·१२

104 Krishnakarnamrita—with English Translation 2·25

१०५ कृष्णगीति—सोमनाथ १·७५

१०६ कृष्णलीलातरङ्गिणी—मूल १·७५

107 Krishnavatarlila (English) G. A. Grierson 3·75

१०८ कृष्णस्य शान्तिप्रयासः—सं० हि० टीका १·७५

109 Kevaladvaita in Gujrati Poetry—V. J. Tripathi 12.00

110 Cloud Messenger (Meghduta) V. S. Agrawal 3·00

111 Kshemedra Studies— Suryakanta 12·50

११२ क्षेमेन्द्रलघुकाव्यसंग्रह—आर्येन्द्रशर्मा सम्पादित १५·००

113 Khan Khanan and Sanskrit Literatrue J. B. Choudhry 6·00

114 Khanda Khadya Sahasrika with English Translation D. A. Somayaji 3·00

११५ गउडवहो—वाक्पति (ऐतिहासिक-प्राकृतकाव्य) पाठान्तरसंस्कृत, व्याख्या, अंग्रेजी भूमिका ५·५०

116 Ganika Vrtta Sangraha—Text with English Translation by L. Sternback 20·00

११७ गंगावतरण—नीलकण्ठदीक्षित, मूल ०·७५

११८ गाथासप्तशती—विस्तृत हिन्दी टीका, परमानन्दशास्त्री २५·००

११९ गाथासप्तशती (मराठी)—जोगलेकर सम्पादित २५·००

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

१२० गाथा सप्तशती (हिन्दी)—व्याख्याकार नर्मदेश्वर चतुर्वेदी ५·००
१२१ गांधी चरितम्—ब्रह्मानन्दशुक्ल १·५०
१२२ गीतगोविन्द—मूल ०·५६
१२३ गीतगोविन्द (जयदेव) "इन्दुमती" हिन्दी टीका १·००
१२४ गीतगोविन्द—भा० टी० ०·७५
१२५ गीतगोविन्द—अभिनयसहित २·२५
१२६ गीतगोविन्द (सचित्र)—विनयमोहनशर्मा सम्पादित ६·००
127 Geetagovinda—Text with English Translation
L. N. Shastri 2·81
128 Geetagovinda—English Translation by George Keyt 15·00
129 Geetagovinda—English Translation by D. Greenless 8·00
130 Geetagovinda with English Translation
Banke Bihari 3·80
131 Geetagovinda in Basohli school of Painting 12·50
१३२ गुरुवंशकाव्यम्—प्रथम भाग १–७ सर्ग १·८७
१३३ गुर्जररासावली २२·००
१३४ गोदवर्मयशोभूषणम्—अरुणगिरि विरचित ०·८७
१३५ गोपिकोन्माद ०·५०
१३६ ग्रामज्योति—क्षमाराव २·००
१३७ घटखर्परकाव्य—अभिनवगुप्तकृत "विवृति" ०·५०
138 Ghatkharpara Kavya with English Translation by
J. B. Chaudhry 1.00
१३९ चकोरदूतम्—(मूलमात्र) वाणीशशर्मकृत ०·३७
१४० चक्रपाणिविजय महाकाव्य—भट्ट लक्ष्मीधर ३·५०
१४१ चन्द्रप्रभाचरित्र—वीरनन्दि २·५०
१४२ चन्द्रप्रभाचरित—प्रथम सर्ग ०·३२
१४३ चन्द्रप्रभाचरित्र—३रा सर्ग, सं० हि० टीका प० कृष्णमणि ०·५०
१४४ चन्द्रप्रभाचरितम्—"सुधा" हिन्दी व्याख्या सहित ०·४५
१४५ चन्द्रप्रभाचरितम्—"पौर्णमासी" संस्कृत व्याख्या सहित ५·००
१४६ चन्द्रापीडचरितम् ०·७५
१४७ चारुचर्या (क्षेमेन्द्र) "प्रकाश" हिन्दी व्याख्या सहित १·००
१४८ चारुचर्या (हिन्दी) देवदत्तशास्त्री सम्पादित २·००

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

१४९	चित्रकाव्य कौतुकम् (संस्कृत)—रामरूपपाठक	१२·००
१५०	चीमनी चरित—नीलकण्ठ विरचित	३·००
१५१	जवाहरतरङ्गिणी (भारतरत्नशतक)—वर्णेकर	१·५०
१५२	जानकीहरणमहाकाव्य (कुमार दास) भा० टी०	१५·००
१५३	जातिमाला—सोमनाथ विरचित	२·००
१५४	जाम विजयकाव्य (वाणीनाथ)	६·००
१५५	ज्ञान श्री—वर्णेकार	१·००
१५६	ज्ञानेश्वर चरित—क्षमा राव	४·५०
157	Dhola Maru—Vandeville Charlotte	10·00
१५८	त्रिपुरादहनम् वसुदेव, सटीक	१·५०
१५९	त्रिपुराभारतीलघुस्तव—लघ्वाचार्य, सोमतिलकसूरिकृत टीका सहित	३·२५
१६०	दयानन्ददिग्विजयम् (दो भाग) हिन्दी अनुवाद सहित	१०·००
१६१	दशग्रीववधमहाकाव्य मार्कण्डेय मिश्र विरचित	३·००
१६२	दिग्विजयमहाकाव्य—मेघविजय कृत	८·००
१६३	दुर्गापुष्पाञ्जलि—दुर्गा प्रसाद द्विवेदी	४·२५
१६४	देशिकेन्द्रस्तवाञ्जलि—महालिङ्गशास्त्री	०·६२
१६५	देशोपदेशनाममाला—क्षेमेन्द्र विरचित	१·५०
१६६	देलरामकथासार—राजनक भट्टाह्लादकविरचित	०·७५
१६७	द्राविडार्यासप्तसती—महालिंगशास्त्री कृत	०·२५
१६८	द्रौपदीपरिणयम्—चक्रकवि	०·७५
१६९	धर्मशर्माभ्युदय—(हरिश्चन्द्र) मूल	१·५०
१७०	धर्माधिकारिवंशवर्णनम्—पं० वेणीरामवर्माधिकारी	०·५०
१७१	धर्माभ्युदयमहाकाव्य—(वस्तुपालचरित) उदयप्रभ	८·५०
१७२	धर्मकूतम्-त्र्यम्बक मखिन—किष्किन्धा काण्ड	१६·००
१७३	,, ,, युद्ध काण्ड	३०·००
१७४	,, ,, बाल काण्ड	२·७५
१७५	,, ,, अयोध्या काण्ड	५·५०
१७६	,, ,, सुन्दर काण्ड	४·७५
१७७	,, ,, अरण्य काण्ड	४·५०
१७८	नटेशविजय—वेंकटकृष्णदीक्षित	०·८७

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

१७९ नरेश्वरपरीक्षा—(पादज्योति) संस्कृत व्याख्या २·००
१८० नवसाहसांकचरित—परिमल-पद्मगुप्तकृत हि० व्याख्या व विस्तृत अध्ययन सहित प्रथम सर्ग ०·७५ सम्पूर्ण १०·००
१८१ नागेशः–विद्यार्थी ०·४०
१८२ नारायणशतक—(विद्याकर) सव्याख्या ४·००
१८३ निम्बादित्य-दशश्लोकी—श्री हरी व्यासदेवकृत कुसुमांजलिभाष्य सहित ०·५०
१८४ नीलकंठदीक्षितस्य लघुकाव्यानि १·००
१८५ नेमिदूतम् १·५०
१८६ नेमिनिर्वाणकाव्य—महाकवि-वाग्भट्टकृत १·५०
187 Naishadha Charita (I to III) Text with English Translation & Notes by S. V. Dixit 4.00
१८८ नैषधचरित (१–९ सर्ग) मल्लिनाथी टीका—गौरीनाथपाठक ४·००
१८९ नैषधपरिशीलन—डा० चन्डिकाप्रसाद शुक्ल १०·००
१९० नैषधमहाकाव्य—प्रथम सर्ग भा० टी०, नोटस—डा० शिवराजशास्त्री २·५०
१९१ नैषधीयचरित— श्रीहर्ष, नैषधीयप्रकाश नारायणी टीका वल्लभादि प्राचीन ६ टीकाओं के पाठभेद से युक्त १६·००
१९२ नैषधीयचरितम्'—जीवातु', 'मणिप्रभा' सं० हिन्दी व्याख्या सहित सम्पूर्ण, २ भाग १३·००
१ सर्ग १·००, १–३ सर्ग १·७५, १–५ सर्ग ३·५०, १–९ सर्ग ६·००
193 Naisadha Charita–(Complete) English Translation by Handiqui 21.00
१९४ नैषधीयचरित – भा० टी०, चण्डिकाप्रसाद शुक्ल १०·००
१९५ नैषधीयचरित '१–३' स० हिन्दी टीका—मन्नालाल अभिमन्यु १·७५
१९६ नैषधीयचरित—भा० टी० सम्पूर्ण पं० ऋषीश्वरनाथभट्ट ४·००
१९७ नैषधीयचरित-'प्रकाश' 'अलंकार दीपिका' व्याख्यायुत बम्बई १०·००
१९८ पउमसिरि चरिउ (धाहिल) अपभ्रंश ४·७५
१९९ पंचामृत–सम्पा० प्रो० गौतम हंसवंशी ३·००
२०० पण्डितराजकाव्यसंग्रह—डा० आर्येन्द्र सम्पादित ६·००
२०१ पतञ्जलिचरित–रामभद्रदीक्षित ०·८७
२०२ पदांकदूतम्—डा० जे० बी० चौधरी १·००
203 Padmavat (English Translation) by A. G. Shirreff 8.50
204 Padmavati–A Linguistic Study—L. Dhar 31·25

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

२०५	पद्यनामशतक–रामवर्म कुलशेखर	०·३७
२०६	पद्यचूड़ामणि–बुद्धघोषाचार्य, वेङ्कटेश्वरणशास्त्री शठकोपाचार्येण च निर्मितया व्याख्यया युतः	१·२५
२०७	पद्यमाला—सं० हि०, हरिशंकरमिश्र	१·००
२०८	पद्यमुक्तावली—कृष्णभट्ट	४·००
२०९	पद्यमोदतरङ्गिणी–डा० हरिदत्त पालीवाल	०·१५
२१०	पद्यवेणी–वेणीदत्त (सुभाषित) डा० चौधरी	१०·००
२११	पद्यहर्षचरित–राजगोपालचक्रवर्ती	१·२५
२१२	पद्यामृततरङ्गिणी (हरिभास्कर) डा० चौधरी	१५·००
२१३	परमानन्दकाव्य–कवि परमानन्द	१५·००
२१४	पवनदूत–धोयी विरचित	१·५०
२१५	पान्थदूतम् काव्यम्–डा० चौधरी सम्पादित	१·००
२१६	पारिजातहरणमहाकाव्य–कर्णपूर	८·००
२१७	पारिजातहरणमहाकाव्य–उमापति	५·००
२१८	पुष्पवाणविलास–कालिदास, व्याख्याकार वेङ्कट सार्वभौम	०·५०
२१९	पूर्णवाज–पं० सूर्यनारायण शास्त्री	१·००
२२०	पृथ्वीराजविजय–जोनराज व्या० सहित, अपूर्ण	२·२५
221	Poems of Kalidasa—M. C. Datt.	5·25
२२२	प्रतापरासो–जीवनकृत, सम्पा० मोतीलाल गुप्त	
२२३	प्रभाकरविजय	२·२५
२२४	प्रभावकचरित—डा० हीरानन्द सम्पादित	३·००
२२५	प्रभावकचरित—आचार्य जिनविजय सम्पादित	७·००
२२६	प्रशस्तिमाला	०·३२
२२७	प्राकृतपुष्करिणी (प्राकृत की सर्वश्रेष्ठ ५०० गाथाओं का संग्रह) हिन्दी अनुवाद—डा० जगदीशचन्द्र	२·००
२२८	प्राचीन फागु संग्रह—भागीलाल	८·००
२२९	प्रेमरसायनम् सटीक—विश्वनाथ पण्डित	१·००
230	Fresh Lights on Meghduta by Paranjpe	14·00
२३१	बघेलवंशवर्णन—पं० नन्दकिशोर	२·००
२३२	बालभारतम् (अगस्त्य पंडित)—संस्कृतव्याख्या	२·२५
२३३	बुद्धचरितम् (हिन्दी अनुवाद) २ भाग, अनुवादक—रामचन्द्र शास्त्री	५·५०

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

२३४ बुद्धचरित (अश्वघोष) -- भाषा टीका २ भाग, अनुवादक सूर्यनारायण ४.००
235 Buddha Charit Cantos I & III Text with Translation S. Rangachar 5·00
२३६ बोधिसत्त्वचरितम्—सत्यव्रत शास्त्री ६.५०
२३७ ब्रह्मतर्कस्तव — पञ्चरत्नस्तुति (अप्पय दीक्षित) १.३७
238 Brahmadvarta Prakasika. 1.50
२३९ भक्तिविष्णुप्रियम्—जे. बी. चौधरी १.५०
२४० भट्टिकाव्यम्—"जयमंगला", हिन्दी व्याख्या सहित, शीघ्र
२४१ भट्टिकाव्यम् (रामचरित) सम्पूर्ण जयमंगला व्याख्या सहित ५.२५
२४२ भट्टिकाव्यम्—'चन्द्रकला' "विद्योतिनी" सं. हि. व्याख्योपेतम् १२.५०
२४३ भट्टिकाव्यम्—भर्तृहरिकृत मल्लिनाथी जयमंगला तथा एस्. राय कृत मितभाषिणी व्याख्या सर्ग १–३ प्रत्येक ४.०० सर्ग १०–१२ ६.५०
२४४ भानुचन्द्रगणिचरित—सिद्ध चन्द्रोपाध्याय ८.००
२४५ भामिनीविलास—"प्रकाश" सं० हि० व्याख्या १०.००
२४६ भामिनीविलास — भाषा टीका, बम्बई १.५०
२४७ भामिनीविलास—भाषा टीका प्रथम विराम,—राजदेव मिश्र २.२५
२४८ भामिनीविलास (अन्योक्ति विलास) भाषा टीका—जनार्दनशास्त्री पाण्डेय २.५०
२४९ भारतप्रशस्ति—डा० सी० कुन्हन राजा ०.७५
२५० भारती विषाद २.००
२५१ भारतवैभवम्—माधवप्रसाद देवकोटा १.३७
२५२ भारतीयरत्नचरितम्—श्री रुद्रदत्त पाठक ८.००
२५३ भारविकाव्य में अर्थान्तरन्यास—उमेश प्रसाद रस्तोगी ५.००
२५४ भावभास्करकाव्यम् – मनु श्रीधनराज २.००
२५५ भूपशतकम्—(राघव वाचस्पति) डा० जे० बी० चौधरी १.००
२५६ भृङ्गसन्देश (वासुदेव) साम्ब शिवशास्त्री ०.५०
२५७ भ्रमरकहलो—प्रभाकराचार्य ०.५६
२५८ भ्रमरसन्देश—पं० महालिंगशास्त्री १.८७
२५९ मत्स्येन्दुपद्यशतकम् ०.२५
२६० मदनपराजय—नागदेव ६.००
261 Madhura Vijayam of Ganga Devi 8·00
२६२ मनोदूत—चिन्ताहरणचक्रवर्ती १.२५

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

२६३ मर्दोर्मिमाला ०·५०
२६४ मयूरसन्देश—उदय, संस्कृत व्याख्या ३·७५
२६५ महर्षिकुलवैभवम्–मूल, मधुसूदन ओझा ४·००
२६६ महर्षिकुलवैभवम्—मधुसूदन ओझा, संस्कृत—हिन्दी व्याख्या सहित
२ भाग १४·७५
२६७ महाकवि अश्वघोष और उनका काव्य—डा० हरिदत्त शास्त्री ४·७५
२६८ महाकवि भवभूति—डा० गंगासागर राय ५·००
२६९ महाकवि भरवी दामोदर ०·५०
२७० महाकवि भास: एक अध्ययन—बलदेव उपाध्याय ४·००
२७१ महाकवि माघ:—गौरीनाथ पाठक ०·५०
२७२ महात्मविजय–A Tribute in Musical Poetry paid to
Gandhiji with English Translation 1·13
273 Minor Works of Ksemendra Edited by Dr. A. Sharma 15.00
२७४ माणवकगौरवम्—म० म० श्री कालीपदतर्काचार्य २·५०
२७५ मातृमुक्तावली ०·५०
२७६ मानसविजय १२·००
२७७ मानसोल्लास—सोमेश्वर, तीसरा भाग २२·००
२७८ मानसोल्लास—(एक अध्ययन) २५·००
२७९ मार्तण्डोदय १·००
२८० मीरालहरी—क्षमा राव २·५०
२८१ मुकुन्दशतकम्—रामपाणिवाद १·१२
२८२ मुक्ताजालम्—वी० पी० जोशी २·००
२८३ मूकपञ्चशती—मूक कवि कृत १·१३
२८४ मेघदूतम् (सं० हिं०)—कवि कालिदास प्रणीत, विस्तृत हिन्दी अनुवाद
पदच्छेद व्याकरण नोटस्, डा० संसारचन्द ५·००
२८५ मेघदूतम्—मल्लिनाथ कृत सञ्जीवनी, पदार्थ भावार्थ-विशेष टिप्पणी
सहित (हिन्दी)—जनार्दनशास्त्री पाण्डेय १·२५
२८६ मेघदूतम्—सञ्जीवनी, चारित्र्यवर्धिनी, भावबोधिनी, सौदामिनी टीकाएँ १·२५
२८७ मेघदूतम्—'चन्द्रकला' सं० हिं० व्याख्या ४·५०
२८८ मेघदूतम्—मल्लिनाथ टीका १·५०
२८९ मेघदूतम्—मल्लिनाथी तथा भा० टी० ०·७५

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

२६० मेघदूत (पूर्व मेघ)—शिशुरञ्जनी सं० टीका ०·२५
291 Meghduta with Sanskrit Comm. English Notes and Translation by M. R. Kale 4.50
292 Meghduta-English Translation by V. S. Agrawala 2·00
२६३ मेघदूतम्—भा० टी०, डा० शिवराज शास्त्री ५·००
२६४ मेघदूतम्—(पूर्व मेघ) भा० टी०, साधुराम २·५०
२६५ मेघदूतम्—भरत मल्लिक तथा आठ विविध टीकाओं के उद्धरणों सहित ८·००
२६६ मेघदूतम्—भा० टी०, स्वामी द्वारकादास १·००
२६७ मेघदूतम्—मल्लिनाथ कृत सञ्जीवनी टीका, बम्बई १·२५
२६८ मेघदूतम्—(पूर्वमेघ) मल्लिनाथी व्याख्या तथा हिन्दी अनुवाद २·००
२६९ ,, (उत्तरमेघ) १·७५
३०० मेघदूतम् (उत्तरमेघ)—व्याख्या०—डा० यदुपाल सिंह ६·००
301 Meghduta with Mallinatha Comm. English, Bengali Translation & Notes by S. Ray 6.50
302 Meghduta with English Translation by V. R. Nerurkar 2·25
303 Meghduta-English Translation by H. H. Wilson. 7.50
304 Meghduta-Sans. Text with Notes S. K. De 5.00
305 Meghduta-English Translation by M. C. Sadgopalachariar 0.62
३०६ मेघदूत : एक अनुचिन्तन—रञ्जनसूरिदेव ६·००
३०७ मेघदूत : एक पुरानी कहानी—डा० हजारी प्रसाद द्विवेदी ४·००
३०८ मेघदूत की वैदिक पृष्ठभूमि और उसका सांस्कृतिक सन्देश सुधीर कुमार गुप्त ०·४०
३०९ मेघदूत में रामगिरि अर्थात् रामटेक—वि० वि० मिराशी ३·००
३१० मेघदूत—एक अध्ययन, वासुदेवशरण अग्रवाल ४·५०
३११ मेघसन्देश : आङ्गलानुवाद, नोट्स सहित ३·७५
312 Megh Sandesh-Rangacharya 1.25
३१३ मेघसन्देशम्—विद्युल्लता व्याख्या २·००
३१४ यदुवंशचरितम्—जग्गूकुलभूषन ४·००
३१५ यशोधरचरित—वादिराज ५·००
316 Yadavabhyudaya—A. V. Gopalachariar 1.75
317 Yadavabhyudaya Cantos I-IV with Eng. Notes & Trans. 2.50

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

३१८ यादवाभ्युदयकाव्य (वेदान्त देशिक)—अप्पय दीक्षित–२ भाग (१३-२४ सर्ग) ६·२५

३१९ यात्राप्रबन्ध (समरपुङ्गव) २·००

३२० युधिष्ठिर विजय (वासुदेव) राजानक ३·००

३२१ रघुवंश–मल्लिनाथकृत सञ्जीविनी, पं० धारादत्तकृत सरल संस्कृत व्याख्या, हिन्दी अनुवाद, अन्वय, वाच्यपरिवर्तन, समास आदि देकर अत्यन्त छात्रोपयोगी बनाया गया है। १-५ सर्ग ३·००, ६-१० सर्ग ४·०० प्रत्येक सर्ग ०·६२

३२२ रघुवंश—वल्लभ, हेमाद्रि, दिनकर, मिश्र एवं अनेक टीकाओं के विशिष्टांश ४·५०

३२३ रघुवंशमहाकाव्य (सम्पूर्ण) भाषा टीका पं० कृष्णमणित्रिपाठी ५·००

३२४ रघुवंश—अनुवादक, देवदत्त शास्त्री २·००

३२५ रघुवंश—हि० टी०, डा० रामकृष्ण आचार्य (द्वितीय, पञ्चम एवं त्रयोदश सर्ग) प्रत्येक १·५०

३२६ रघुवंश १–५ सर्ग, चूर्णिका सं० व्याख्या ०·३७

३२७ रघुवंश महाकाव्यम्—समग्रम्, मल्लिनाथी टीका ४·००

३२८ रघुवंश महाकाव्यम्—'सञ्जीविनी, मणिप्रभा' सं० हि० टीका सर्ग १–५ १·५०
सर्ग ६–१४ २·२५ सम्पूर्ण ५·००

३२९ रघुवंश महाकाव्यम् (सर्ग १–५) 'मल्लिनाथी' एवं 'सुधा' २·००

३३० रघुवंश-सञ्जीविनी टीका—रामतेज पाण्डेय ३·००

३३१ रघुवंश —भा० टी०, काशी ३·००

३३२ रघुवंशमहाकाव्यम् (१३–१४ सर्ग) संजीविनी तथा विस्तृत हि० व्या० जनार्दनशास्त्री पाण्डेय १·५०

३३३ रघुवंशमहाकाव्यम् (१३–१४ सर्ग) पं० श्री शेषराज शर्मा १·५०

३३४ रघुवंशमहाकाव्य (१–५ सर्ग)—भा० टी० कृपाचार्यशास्त्री १·५०

३३५ रघुवंशमहाकाव्य (१–२ सर्ग) भा० टी० गौरीनाथ पाठक १·५०

३३६ रघुवंशमहाकाव्य 'सुबोधिनी टीका' गौरीनाथ पाठक ३·००

३३७ रघुवंश (१–४ सर्ग) मल्लिनाथ कृत सं० टी०, भा० टी० १·२४

३३८ रघुवंश (६ सर्ग) सं० हि० व्याख्या, जगदीशलाल शास्त्री १·२५

339 Raghuvansa Cantos IV, VI, XIII & XIV with English Translation by Rangacharya 8.72

340 Raghuvansa Cantos XI & XIIIwith Eng. Notes & Trans. P. V. Ramanuja Swamy. 4.50

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

341 Raghuvansa Cantos I–IV with English Translation & Notes by S. V. Diksit. 3.00

342 Raghuvansa Cantos XI--XIV English Notes & Tran. R. D. Karmarkar 3.00

343 Raghuvansa of Kalidasa Cantos 10 & 11 with Eng. Notes & Trans.–S. Viswanathan 2.50

३४४ रम्भाशुकसम्वाद—भाषानुवाद सहित ०·२५

३४५ रसतरङ्गिणी –बदरीनाथम् २·२५

३४६ रसराज—मतिराम हि० व्या०, रामजी मिश्र ७·५०

३४७ रसिकजीवन ७·५०

३४८ रसिकाष्टक काव्य—नारायणभट्ट पर्वणीकर ०·१२

३४९ राक्षसकाव्य कवि राक्षस ०·१२

३५० राक्षसकाव्यम्—नूतन किशोर केलि व्याख्या ०·२०

३५१ राघवनैषधीयकाव्य—हरिदत्त सूरिकृत, स्वकृत टीका १·००

३५२ राघवपाण्डवीयम—कविराज पण्डित, व्याख्या–दामोदर झा १२·५०

३५३ राघवीयम् रामपाणिवाद १·७५

३५४ राजतरंगिणी –कल्हण, भाषा टीका २०·००

३५५ राजतरंगिणी – कल्हण, मूल संस्कृत, स्टेन सम्पादित यंत्रस्थ

३५६ राजतरंगिणी (कल्हण)—विश्वबन्धु सम्पादित, २ भाग ६०·००

357 Rajatarangini of Kalhana–English Translation by M. A. Stein 100.00

३५८ राजतरंगिणी (कल्हण) मूल संस्कृत, स्टेन् सम्पादित ७५·००

३५९ राजविनोदमहाकाव्य—उदयराज प्रणीत २·२५

३६० रामकर्णरसायनम्—रामभद्र दीक्षित ०·८७

३६१ रामकर्णामृत—शंकर भगवत्पाद–मूल १·००

३६२ रामकृष्णकथामृतम्—जगन्नाथानन्दस्वामी २·८८

३६३ रामकृष्णविलोमकाव्य—सं० टी० ०·४५

३६४ रामकथा—वासुदेव ०·५०

३६५ रामचरित—(सन्ध्याकरनन्दि) संस्कृत व्याख्या, अंग्रेजी अनुवाद ६·००

३६६ रामदासचरितम्—क्षमाराव ५·००

३६७ रामपञ्चशती—(स्तोत्र ग्रंथ) राम व्याख्या ४·५०

३६८ रामपादयुगलीस्तवः (चित्र काव्य)—लक्ष्मण शास्त्री १·००

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

३६९ रामवनगमन—सं० टी०, भा० टी० १·२५
३७० रामविजयमहाकाव्यम् —रूपनाथ २·००
३७१ रामविवाह (चित्रकाव्य)—भावार्थ बोधिनी व्या० १·००
३७२ रामशतक पुण्यविजय सम्पादित १०·००
३७३ रामायण मञ्जरी—क्षेमेन्द्र, अनु० डा० बी० एन० पाण्डेय १·५०
३७४ रामायणसारसंग्रह —भारतसारसंग्रह १·१३
३७५ रामोदन्तम्—शंकरराम शास्त्री ०·३५
३७६ ,, अंग्रेजी नोट्स सहित ०·७५
३७७ रावण-महाकाव्य, राधागोविन्द बसाक सम्पादित ४५·००
३७८ रिष्टसमुच्चय—दुर्गदेव विरचित १०·००
३७९ रुक्मिणीकल्याणमहाकाव्य १·२५
३८० रुक्मिणीकल्याणमहाकाव्य राज चूडामणि दीक्षित ५·००
३८१ रुक्मिणीहरणं महाकाव्यम् —काशीनाथ द्विवेदी विरचित २५·००
३८२ लघुकाव्यानि नीलकंठ दीक्षित १·००
३८३ लक्ष्मीसहस्रम्—वेंकटाध्वरि विरचित, व्याख्या श्री निवास पण्डित २०·००
384 Love Song of Vidyapati—English Translation by W. G. Archer. 24.00
385 Light of Asia—The Indian Song of Songs Edwin Arnold. 2.00
३८६ वङ्गीयदूत—काव्येतिहास (संस्कृत)—चौधरी ५·००
३८७ वनलता—पं० महालिङ्ग शास्त्री १·२५
३८८ वरदराजस्तवः—(अप्पयदीक्षित) सटीक १·४५
389 The Vasanta Vilasa—Ed. W. Norman Brown 37·50
३९० वसन्तशतक—म० म० सदाशिव शास्त्री सटीक ०·५०
३९१ वाग्वल्लभः—दुःखभञ्जन, टीका, देवी प्रसाद ४·००
३९२ वासुचरितराम—कलाहस्ती ४·००
३९३ वासुमतिचरित्र ३.००
३९४ विक्रमाङ्कचरित—सटीक १.६६
३९५ विक्रमाङ्कदेवचरितम् (प्रथम सर्ग), बिल्हण ०·६५
३९६ विक्रमाङ्कदेवचरितम् (प्रथम सर्ग) भा० टी०, डा० हरदत्त शास्त्री १·५०
३९७ विक्रमाङ्कदेवचरितम् (सम्पूर्ण) विश्वनाथशास्त्री भारद्वाजकृत हिन्दी टीका, ३ भाग २२·००

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

398	Vikramanka Deva Charitam—English Translation by S. C. Banerji.	20.00
३९९	विचित्रपरिषद्यात्रा—क्षमाराव	०·७५
४००	विदुलोपाख्यानम्	०·५५
४०१	विदूच्चरितपञ्चक	२·००
४०२	विद्यापतिगीतसंग्रह—मूल	२·००
४०३	विद्यापतिगीतसंग्रह (नेपालक पोथी रागतरङ्गिणी तथा रामभद्रपूरक पोथी के आधार पर) सम्पादक सुभद्र झा	१·७५
४०४	विनायक वैजयन्ती— वर्णेकर	२·००
४०५	विन्मोदतरंगिणी काव्य—म० म० वामदेव चिरंजीव भट्टाचार्य	०·४५
४०६	विवेकानन्दचरितम् (चम्पूकाव्यम्)—यतीन्द्रविमल चौधरी	३·००
४०७	विष्णुचतुर्विंशत्यवतारस्तोत्रम् (चित्रकाव्य)—लक्ष्मण शास्त्री	१·००
४०८	विष्णुचरितामृतम् (चित्रकाव्य) मूल	२·००
४०९	विष्णुभक्तिकल्पलताकाव्य—पुरुषोत्तम, टीका महीधर	१·००
४१०	विष्णुविलास (रामपाणिवाद) विष्णुप्रिया व्याख्या	३·३७
४११	वीरतरङ्गिणी—डा० त्रिलोकनाथ शर्मा	३·००
४१२	वीरोत्साह-वर्धनम्—सुरेशचन्द्र त्रिपाठी	०·५०
४१३	वेंकटेशकाव्यकलाप	४·००
४१४	वेमभूपालचरितम्	
४१५	शंकरजीवनाख्यानम्— क्षमाराव प्रणीत	२·५०
४१६	शंकरविजय-व्यासाचल, सम्पा० चन्द्रशेखर दीक्षित	९·१२
४१७	शतरंज कुतूहल	०·६२
४१८	शम्भुचर्योपदेश—पं० महालिंग शास्त्री	०·२५
४१९	शाहेन्द्रविलास —श्रीधर वेंकटेश	३·२५
४२०	शिवपरिणय— कृष्णराजानक कृत संस्कृत छाया	५·२५
४२१	शिवलीलार्णव (महाकाव्य) नीलकण्ठ दीक्षित	१०·००
४२२	शिवविलास (दामोदर)	१·१३
४२३	शिवशतक	०·३७
424	Sivanand Vilasa–Sans. Text with Eng. Trans. by P. K. Bhatt	6·00
४२५	शिशुपालवध—(माघ) हिन्दी अनुवाद सम्पूर्ण, रामप्रताप शास्त्री	८·००
४२६	शिशुपालवध १–२ सर्ग भाषा, टीका वीरेन्द्रकुमार	१·५०

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

४२७ शिशुपालवधम्—'मल्लिनाथी' मणिप्रभा हि० टी० सम्पूर्ण ८·००
४२८ शिशुपालवधम् १—२ सर्ग, 'मल्लिनाथी' ०·७५
४२९ शिशुपालवधम् १—२ सर्ग—सुधा हिन्दी टीका २·००
४३० शिशुपालवधम् (तृतीयसर्ग) मल्लिनाथी–वल्लभदेवी टीका ०·५०
४३१ शिशुपालवध भा० टी० (१—२ सर्ग) २·००
४३२ शिशुपालवधम् (१—२ सर्ग) अभिनय राजलक्ष्मी, मल्लिनाथी, भा० टी० गुरुप्रसादशास्त्री २·००
४३३ शिशुपालवधमहाकाव्य (प्रथमसर्ग) भा० टी०, श्रीनिवासशास्त्री १·७५
४३४ शिशुपालवध—मल्लिनाथ सं० टीका, सम्पूर्ण ८·००, ६·००
४३५ शिशुपालवध (१—२ सर्ग)—गौरीनाथपाठक सं० हि० टीका १·००
४३६ शिशुपालवध—सं० हि० टीका १—६ सर्ग ३·००
437 Shishupalavadha (I & II Canto) with Sanskrit Comm. English & Bengali Translation by—S. Ray 10.00
438 Shishupalavadha—M. A. Mehendale. 2.50
439 Shishupalavadha (Canto I & II) with English Translation C. S. R. Shastri 4.00
440 Shishupalavadha (Cantos I—III) with English Translation & Notes by S. V. Dixit 4·00
४४१ शुकसप्तति—संस्कृत १०·००
४४२ शुकसप्तति—भा० टी० ४·५०
४४३ शृङ्गारतिलक—मूल ०·०५
४४४ शृङ्गारतिलक—सं० हि० टीका यन्त्रस्थ
४४५ शृङ्गारसारिणी—डा० त्रिलोकनाथशर्मा ४·००
४४६ शृङ्गारसुधाकर ०·५०
४४७ शृङ्गारहारावली—हर्षकवि २·७५
४४८ श्रद्धांजलि ०·१२
४४९ श्रद्धाभरणकाव्यम्—प्रो० चन्द्रधरशर्मा ०·५०
४५० श्रयङ्ककाव्य—कृष्णकौर विरचित ५·००
४५१ श्रीकृष्णविलासकाव्य २ सर्ग—संस्कृत और अंग्रेजी ०·५०
४५२ शृङ्गारादिनवरसनिरूपण—भाषा टीका ०·६२
४५३ शृङ्गारमंजरी (अकबर शाह) मूल तेलगु एवं संस्कृत छाया के लच और व्याख्या का हिन्दी २·५०

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

454 Sringara Manjari—English Translation by Ayyar 2.00
455 Srikrisnavatarlila—English Trans, by Sir George Grierson. 3.75
४५६ सत्याग्रहनीतिकाव्यम् (हिं० अ०) २·५०
४५७ सन्त वैष्णव काव्य पर तांत्रिक प्रभाव—विश्वम्भरनाथ उपाध्याय १५·००
४५८ सन्देशचतुष्टयम् ३·३७
४५९ सन्देशरासक (अब्दुल रहमान कृत) हजारी प्रसाद द्विवेदी १०.००
४६० समयमातृका—क्षेमेन्द्र कृत मूल ०·८७
४६१ सर्वदेव विलास—डा० राघवन सम्पादित ६·२५
462 Sarasvati Chadra—R. I. Patel 2.00
४६३ संक्षिप्तरामायणमंजरी—हरिद्वारीलाल शर्मा तथा श्रीनिवासशर्मा २.५०
४६४ संस्कृतकाव्यकलिका—आद्याप्रसाद मिश्र ०·६५
४६५ संस्कृत काव्य धारा—राहुल सांकृत्यायन १५·००
४६६ संस्कृत के सन्देश-काव्य—मेघदूत और उसकी परम्परा का एक अध्ययन—डा० रामकुमार आचार्य २०·००
४६७ संस्कृत गीतिकाव्य का विकास—डा० परमानन्द शास्त्री १८·००
४६८ संस्कृतप्रतिभा—७ भाग १४·००
४६९ संस्कृत वाङ्मय परिचय—मधुसूदन प्रसाद मिश्र १·५०
४७० साम्बपञ्चाशिका—टीका-क्षेमराज ०·५०
४७१ साम्बपञ्चाशिका—सव्याख्या १·१२
४७२ सावित्र्युपाख्यान—सं० टी०, भा० टी०, ब्रह्मानन्द शुक्ल १·२४
४७३ साहित्य विन्दु—पं० छज्जूराम शास्त्री २·५०
४७४ साहित्य सुधा भाग १—पं० मेघाव्रत १·२५
४७५ साहित्यसुधा संग्रह—२, ३ भाग २ ५०
476 Similes in Naishad Charit—P. C. Banerjee. 8.00
४७७ सीतारामविहारकाव्य ४·००
४७८ सुरभोत्सव—सोमेश्वरदेव १·२५
४७९ सुर्जनचरितमहाकाव्य—भा० टी०, चन्द्रधर शर्मा १०·००
४८० सुर्जनचरितम्—जे० वी० चौधरी ८·००
४८१ सूर्यशतक—मयूरकवि, व्याख्या-त्रिभुवन पाल ०·८७
४८२ सूर्यशतकम—हिं० टी० २ ५०

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

४८३ सेतुबन्ध—केवल हिन्दी अनुवाद ४.५०
484 Song Celestial—Edwin Arnold 1·25
485 Songs of Vidyapati—Dr. Subhadra Jha 10.00
४८६ सौन्दरानन्दकाव्य (अश्वघोष) भा० टी०, पं० सूर्यनारायण चौधरी ३.००
४८७ सौन्दरानन्दमहाकाव्य—डा० हरप्रसाद सम्पादित ३.००
४८८ स्वराज्यविजय—क्षमा राव ६.००
४८९ हनुमद्दूत —नित्यानन्द शास्त्री ०.८५
४९० हरिचरितम् (परमेश्वर विरचित) सव्याख्या ७.५०
४९१ हरिद्वादशाक्षरीस्तोत्रम् (चित्रकाव्य) १.००
४९२ हंससन्देश—सव्याख्या ०.५६
493 Hansasandesa with Eng. Notes & Translation 2·00

अलङ्कार के अन्य महत्त्वपूर्ण ग्रंथ

४९४ अलङ्कारकौमुदी—एस० एन० शास्त्री २.२५
४९५ अलङ्कारकौस्तुभ-कविकर्णपूरकृत पं० शिवप्रसादभट्टाचार्य सम्पादित २०.००
४९६ अलंकारदीपिका—भवभूति शर्मा .६०
४९७ अलंकारदीपिका—श्री भीमसेन शास्त्री १.७५
४९८ अलंकारप्रकाश—वीरेन्द्र कुमार १.००
४९९ अलंकारप्रदीप—विश्वेश्वर पाण्डेय १.००
५०० अलंकारप्रभा—श्रीजनार्दनशास्त्री पाण्डेय .४०
५०१ अलंकारमंजरी—श्रीवेणीदत्त २.००
५०२ अलंकारमञ्जूषा—भट्टदेवशंकर ४.००
५०३ अलंकारमंजूषा—पं० लक्ष्मीकान्तदीक्षित १.००
५०४ अलंकारमणिहार—श्रीकृष्णब्रह्मतन्त्र परकाल स्वामी २, ३, ४, भाग ८.२५
५०५ अलंकारमीमांसा (हिन्दी)—डा० र. च. द्विवेदी १६.००
५०६ अलंकारमुक्तावली—श्रीविश्वेश्वर पाण्डेय १.८०
५०७ अलंकाररत्नाकर—कवि शोभाकरमित्र प्रणीत ३.७५
५०८ अलंकारशेखर—श्रीकेशवमिश्र १.०० १.२५
५०९ अलंकारसर्वस्व—गोपीनाथ पाठक २.००
५१० अलंकारसर्वस्व—संजीवनी, हिन्दी टीका, डा० र. च. द्विवेदी १५.००
५११ अलंकारसर्वस्वम्—कुमारी एम. एस. जानकी २५.००

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

५१२ अलंकारसंग्रह—अमृतानन्द योगी १६·००
५१३ अलंकारसारमंजरी ·५०
५१४ अलंकारसारमंजरी—म. म. पं. नारायण शास्त्री खिस्ते ·४०
५१५ अलंकृतिमणिमाला (मानचित्र) १·२५
५१६ अवन्तिकुमारियाँ—देवदत्त शास्त्री २·००
५१७ आचार्य मम्मट और उनका काव्यप्रकाश—रामचन्द्र झा २·००
५१८ उपनिदानसूत्रम्—डा० महादेवशास्त्रिणा सम्पादितम् १·००
519 Ancient Indian Erotics and Erotic Literature S. K. De 8.00
५२० औचित्यविचारचर्चा 'प्रभा' संस्कृत हिन्दी व्याख्या सहित—क्षेमेन्द्र ४००
५२१ औचित्यविचारचर्चा—प्रो. लाजपत राय ४००
522 Comparative Studies in Pali and Sanskrit Alamkaras—Dr. Hermbha Chatterjee 6.00
५२३ कविकर्पटिका—वादीन्द्र कवि ·२५
५२४ कविकल्पलता—सरत्तचन्द्रशास्त्री सम्पादित (अपूर्ण) १ ५०
५२५ कविदर्पण—अज्ञात कर्तृक, सम्पा., प्रो. एच. डी. वेलणकर ६ ००
५२६ कर्णभूषण—गंगानन्द कविराज १·००
५२७ काव्यकदम्ब—सम्पा० भुवनेश्वर प्रसाद पाण्डेय २·५०
५२८ काव्यकला १·००
५२९ काव्यकल्पलतावृत्ति—अमरचन्द्रयतिकृत, अरिसिंह कृत सूत्रसहित
५३० काव्यचन्द्रकला—छन्द—अलंकार बोधक, सरल भाषा १·००
५३१ काव्यचिन्ता—डा. रमाशंकर तिवारी ६ ००
५३२ काव्यडाकिनी – गंगानन्द कवीन्द्र, सम्पा. होशिंगराज जगन्नाथ शास्त्री ·६६
५३३ काव्यतत्त्वसमीक्षा—डा. एन. एन. चौधरी २०·००
५३४ काव्यदर्पण—राजचूडामणि कृत १–६ ३·५०
५३५ काव्यदीपिका-मयूख, संस्कृत हिन्दी व्याख्योपेता २·००
५३६ काव्यदीपिका—सं. हि. टीका सहित २·००
५३७ काव्यदीपिका—अष्टम शिखा, अलंकार निरूपण—चन्द्रशेखर पाण्डेय ·८०
५३८ काव्यदीपिका अष्टम शिखा, भा० टी०, भोलाशंकर व्यास १·२५
५३९ काव्यदीपिका अष्टम शिखा, टीकाकार रामकृष्ण आचार्य ·७५
५४० काव्यनिर्णय—हिन्दी में छन्दोबद्ध ३·००

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

५४१ काव्यपरीक्षा—श्रीवत्सलांछन भट्टाचार्य ८·००
५४२ काव्यप्रकाश—सोमेश्वर भट्टकृत 'काव्यादर्श, संकेत सहित २ भाग २०·२५
५४३ काव्यप्रकाश—भा० टी०, आचार्य विश्वेश्वर १६·००
५४४ काव्यप्रकाश—हिन्दी टीका, हरदत्त शास्त्री १०·००
५४५ काव्यप्रकाश—वामनाचार्य कृत बालबोधिनी टीका सहित १८·००
५४६ काव्यप्रकाश (प्रथमोल्लास ' व्याख्याकार, गोकुलनाथ उपाध्याय १·००
५४७ काव्यप्रकाश (संकेत टीका) ४ ७५
५४८ काव्यप्रकाश 'नागेश्वरी' संस्कृत व्याख्या ६·००
५४९ काव्यप्रकाश (हिन्दी), डा० सत्यव्रत सिंह १० ००
५५० काव्यप्रकाश (हिन्दी) १–३ उल्लास, डा० सत्यव्रत सिंह ३ ००
५५१ काव्यप्रकाश (हिन्दी) दशमोल्लास, डा० सत्यव्रत सिंह ५·००
552 Kavya Prakasa-(1, 2, 3 & 10 Ullassa) with English Translation & Notes by S. V. Dixit 8.00
553 Kavya Prakasa—Text with two Sansk. Comm., Translation & Notes Vol I–1 to 6 Ullassa Dr. R. C. Dwivedi 12.00
Vol II & III ,, Shortly
554 Kavya Prakasa (1, 2, 3 & 10) with English Trans. Gajendragadkar 12.50
555 Kavya Prakasa (1, 2, 3 & 10) with English Trans. & Notes H. Sharma 12.50
५५६ काव्यप्रकाश (श्रीधरी)—शिवप्रसाद भट्टाचार्य सम्पादित २ भाग ३६·००
५५७ काव्यप्रकाशखण्डन—सिद्धचन्द्र गणि, आर० सी पारिख सम्पादित ४·५०
५५८ काव्यप्रकाशदीपिका—चण्डीदास भाग १ १·७५
५५९ काव्यप्रकाशरहस्यम् (प्रश्नोत्तरी) १ ५०
५६० काव्यप्रकाशविवरणम्—गोकुलनाथ उपाध्याय ८·००
५६१ काव्यप्रदीप—गोविन्द व्याख्या, वैद्यनाथ ३·००
५६२ काव्यप्रबन्ध (आलोचनात्मक ग्रन्थ) १·५०
५६३ काव्यमीमांसा—महाकवि राजशेखर, भा० टी० सम्पूर्ण ९·५०
५६४ काव्यमीमांसा (राजशेखर) 'मधुसूदनी' व्याख्या युत ४·००
५६५ काव्यमीमांसा १–५ अध्याय नारायणशास्त्री खिस्ते कृत 'चन्द्रिका' व्याख्या युत १·५०
५६६ काव्यमीमांसा—मधुसूदन मिश्रकृत संस्कृत हिन्दी व्याख्या युत १–५ अध्याय १ ००

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

567 Kavya Mimansa—with Eng. Notes by C. D. Dalal and R. A. Shastri 8.00

५६८ काव्यमीमांसा (हिन्दी)—डा० गंगासागर राय ८·५०

५६९ काव्यलक्षण—रत्नश्रीदण्डि कृत काव्यादर्श पर व्याख्या रत्नश्रीज्ञान १५·००

५७० काव्यविलास—चिरञ्जीव भट्टाचार्य १ १२

५७१ काव्यांगनिर्णय—जंग बहादुर मिश्र यन्त्रस्थ

५७२ काव्यात्ममीमांसा—डा० जयन्तमिश्र १६·००

५७३ काव्यादर्श—भा० टी०, अनु० व्रजरत्न दास २·००

574 Kavyadarsha with Sanskrit comm, and English Translation by V. N. Iyer 5·50

575 Kavyadarsha with English Translation & Notes by Bhattacharya 2 Vols 6.50

576 Kavyadarsha with English Translation & Notes by S. Ray 8.50

५७७ काव्यादर्शः (संस्कृत-तिब्बती) सम्पा—अनुकूलचन्द्र बनर्जी ३·७५

578 Kavyadarsa of Dandin, Text in full with English Notes and Trans. (Parichheda 1-2) by C. S. R. Shastri 4.00

५७९ काव्यादर्श (हिन्दी) व्याख्याकार, आचार्य रामचन्द्र मिश्र ६·५०

५८० काव्यानुशासन – हेमचन्द्र, स्वोपज्ञालंकार चूड़ामणिसंज्ञकवृत्ति सहित ५·००

५८१ काव्यानुशासनम्—आचार्य हेमचन्द्र १५ ००

५८२ काव्यालंकार (हिन्दी) रुद्रट, व्याख्याकार, श्री रामदेव शुक्ल १६·००

५८३ काव्यालंकार—रुद्रट (हिन्दी व्याख्या) सत्यदेव चौधरी २१·००

५८४ काव्यालंकार (भामाह) भा० टी० ५·००

५८५ काव्यालंकार—रुद्रट कृत, नमिसाधुकृत टीका सहित ३·००

५८६ काव्यालंकारसूत्र—वामन (भा० टी०) आचार्य विश्वेश्वर १२·००

५८७ काव्यालंकारसूत्राणि यास्कीयवृति मंगला वृत्ति १·२५

५८८ काव्यालंकारसूत्राणि—वामन १·२५

५८९ काव्यालंकारसूत्रवृति (वामन) कामधेनु टि० पंचम अधि पर्यन्त

590 Kavyalankara of Bhamaha with English Translation P. V. N. Shastri 5.00

५९१ काव्यालंकारसारसंग्रह—(उद्भट) लघुवृत्ति सहित २·५०

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

५९२ कुवलयानन्द—अप्पयदीक्षित, डा० भोलाशङ्कर हिन्दी व्याख्या ६·००
५९३ कुवलयानन्द—अलंकारचन्द्रिका सं० टीका ३·००
५९४ कुवलयानन्द—चन्द्रिकाचकोर, जग्गू वेंकटाचार्य ७·५०
५९५ कुवलयामाला—प्रथम भाग उद्योतन सूरि, डा० उपाध्याय सम्पादित १५·५०
५९६ कुवलयामालाकथासंक्षेप—रत्नप्रभुसूरि ५·५०
५९७ चन्द्रालोक—रमाव्याख्या युत १·००
५९८ चन्द्रालोक—संस्कृत हिन्दीटीकायुत, गौरीनाथ पाठक २·००
५९९ चन्द्रालोक—सरल सं० हिन्दी व्याख्या सहित, सुबोधचन्द्रपन्त ३·५०
600 Chandraloka of Jayadeva—5th Mayukha with English Notes and Translation by C. S. R. Shastri 2·50
६०१ चन्द्रालोक—पंचम मयूख, सं. हि. व्याख्या १·५०
६०२ चन्द्रालोक—गागाभट्ट 'राकागम' टीका ३·००
६०३ चन्द्रालोक—पौर्णमासी कथाभट्टी स. हि. व्याख्या (सम्पूर्ण) ३·००
६०४ चन्द्रालोक—बुद्धरञ्जनी संस्कृत व्याख्या सहित १·१३
६०५ चन्द्रालोकरहस्यम् (प्रश्नोत्तरी) १·२५
६०६ चन्द्रालोकसुधा (पञ्चम मयूख)—विश्वम्भर नाथ त्रिपाठी ४·००
६०७ चित्रमीमांसा—विस्तृत हिन्दी व्याख्या सहित, कालिका प्रसाद शुक्ल १६·००
६०८ त्रिवेणिका—कालिका प्रसाद शुक्ल २·००
६०९ त्रिवेणिका—आशाधर भट्ट, सम्पादित—बटुकनाथ शर्मा १·००
६१० दशरूपक (धनञ्जय) भा० टी०, टीकाकार डा० गोविन्द त्रिगुणायत ८·००
६११ दशरूपक—भा० टी० डा० भोला शंकर व्यास ६·००
612 Dasarupa of Dhananjaya with English Translation & Notes by G. C. O. Haas 7·50
६१३ दशरूपक एक अध्ययन २·२५
६१४ दशरूपकप्रकाश—डा० शिवराज शास्त्री ६·००
६१५ ध्वन्यालोक—लोचन, हिन्दी अनु० व 'तारावती' व्याख्या डा० रामसागर त्रिपाठी (दो भागों में) २५·००
६१६ ध्वन्यालोक—लोचन, एस. कुप्पुस्वामी शास्त्री व्याख्या, प्रथम भाग ९·००
६१७ ध्वन्यालोक—हिन्दी व्याख्या सहित, आचार्य विश्वेश्वर १२·००
६१८ ध्वन्यालोक—अलखदेव सं. टी., भा. टी., १–२ उद्योत २·४८

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

६१९ ध्वन्यालोकः—आनन्दवर्धनाचार्य रचित 'बालप्रिया' व अभिनवगुप्त-रचितलोचनेन च सहितः यन्त्रस्थ
६२० ध्वन्यालोक—'दीधिति' सं. हि. व्याख्योपेत ९·००
६२१ ध्वन्यालोक—लोचन (हिन्दी)—जगन्नाथ पाठक १६·००
622 Dhvanyaloka of Anandavardhana-English Translation by Krishnamoorty 12·50
623 Dhvanyaloka—I & II Udyot Bhattacharya 25·00
६२४ ध्वन्यालोकरहस्यम् (प्रश्नोत्तरी) २·००
६२५ ध्वन्यालोकसारः—पुरुषोत्तमशर्मा चतुर्वेदी १·२५
626 Number of Rasas—Dr. V. Raghvan 8·00
६२७ नञ्जराजयशोभूषण (अभिकालिदास) १२·००
६२८ नाट्यशास्त्र की भारतीय परम्परा और दशरूपक—हजारीप्रसाद द्विवेदी १०·००
६२९ प्रतापरुद्रीयम् (विद्यानाथ) 'रत्नपणाख्य' व्याख्या युतश्च ८·००
630 Le Prataprudriya—Edited by Vidyanath de 25·00
६३१ भारतीयसाहित्यशास्त्र—बलदेव उपाध्याय २ भाग २५ ००
६३२ भारतीयसाहित्यशास्त्र—देशपाण्डे १२·५०
६३३ भारतीयसाहित्यशास्त्र और काव्यालंकार डा० भोलाशंकर व्यास प्रथम भाग १०·००
६३४ रसगङ्गाधर—मधुसूदन शास्त्री कृत सं० हि० व्याख्या, प्रथम भाग १५·००
६३५ रसगङ्गाधर—(हिन्दी) पं० पुरुषोत्तम चतुर्वेदी, ३ भाग २४·००
६३६ रसगङ्गाधर 'चन्द्रिका' सं. हि. व्याख्या व्याख्याकार मदनमोहनशास्त्री, सम्पूर्ण ४५·००
६३७ रसगङ्गाधरमर्मप्रकाश—मर्मोद्घाटन, जग्गु वेंकटाचार्य २ ५०
६३८ रसगङ्गाधररहस्यम् (प्रश्नोत्तरी) १·००
६३९ रसगङ्गाधरहृदयम्—ज्ञानचन्द त्यागी २·००
६४० रसचन्द्रिका—विश्वेश्वरपाण्डेय १·००
६४१ रसतरङ्गिणी—भानुमिश्र (भा० टी०), पं० जीवननाथझा कृत २·५०
६४२ रसतरङ्गिणी—रामानन्द ठक्कुर २·२५
६४३ रसदीर्घिका—विद्याराम कृत २·००
६४४ रसप्रदीप—प्रभाकरभट्ट रचित १·१२

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

६४५ रसमञ्जरी (हिन्दी)—'सुरभि' सं० हि० व्याख्या सहित ५·००
६४६ रसमीमांसाविवेक—गंगाराम रचित, सं० व्याख्याकार
डा० लाल रमायदुपाल सिंह यन्त्रस्थ
६४७ रसरत्नप्रदीपिका—आर० एन० दंडेकर सम्पादित ३·००
६४८ रसविलास—भूदेव शुक्ल ५·००
६४९ वक्रोक्तिजीवित—एस० के० दे० सम्पादित १५·००
६५० वक्रोक्तिजीवित (हिन्दी)—आचार्य विश्वेश्वर १६·००
६५१ वक्रोक्तिजीवित (हिन्दी)—व्याख्याकार राधेश्याम मिश्र यन्त्रस्थ
६५२ वाग्भट्टालंकार—सं० हि० टीका २·५०
६५३ वाग्भट्टालंकार—(सिंहदेवगणि) 'शशिकला' हिन्दी व्याख्या २·००
६५४ वाणीभूषण—दामोदरमिश्र ०·७५
६५५ वृत्तिदीपिका—मौनिकृष्ण भट्ट २·००
६५६ वृत्तिवार्तिक—अप्पयदीक्षित ०·३७
६५७ व्यक्तिविवेक—भा० टी०, रेवा प्रसाद द्विवेदी १६·००
658 Vyajoktiratnavali with English Translation 2·00
६५९ शिवराजभूषण २·२५
660 Shrngara Prakasha of Bhoja English Translation
by Dr. V. Raghavan 50·00
६६१ श्रृङ्गारप्रकाश—भोजराज, जी० आर० जौशेयर सम्पादित २ भाग ५०·००
६६२ श्रृङ्गारप्रकाश—भोजदेव, सम्पा०—सुब्रह्मण्यशास्त्री १·७५
६६३ श्रृङ्गारमञ्जरी कथा १२·५०
664 Sringara Manjari—Ayyar 2·00
६६५ श्रृङ्गारमञ्जरी—रूपान्तरकार चिन्तामणि २·५०
६६६ श्रृङ्गारादिनवरसनिरूपण—हि० टी० च ०·६०
667 Sapta Vidanu Papathy Pariksha—Jagadish Sastrigal 2·00
६६८ सभ्यालंकरणम्—जे० बी० चौधरी ३·५०
669 Some Problems of Sanskrit Poetics—S. K. De 15·00
६७० सरस्वतीकण्ठाभरणम्—चित्रप्रकरण ०·८०
६७१ संस्कृत आलोचना—पं० बलदेव उपाध्याय ४·००
६७२ संस्कृत काव्य शास्त्र का इतिहास—मूल लेखक पी० वी काणे,
अनुवादक इन्द्रचन्द्र शास्त्री १५·००

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

673 Sanskrit Poetics as a Study of Aesthetic—S. K. De 15·00
674 Sanskrit Poetics—Krishna Chaitanya 40·00
६७५ संस्कृत साहित्य में सादृश्य मूलक अलंकारों का विकास—ब्रह्मानन्दशर्मा १२·००
676 Sahityadarpana Chapter I—Xwith English Translation, Notes & Skt. Comm. by S. Ray 35·00
६७७ साहित्यदर्पण—सं० टीका, रामचरणतर्कवागीश भट्टाचार्य १२·५०
६७८ साहित्यदर्पण—शालिग्राम शास्त्री कृत 'विमला' हिन्दी टीका १२·००
679 Sahityadarpana (English Translation) Ballyntyne 15 00
६८० साहित्यदर्पणम्—कृष्णमोहन शास्त्री कृत 'लक्ष्मी' सं० टीका १२ ००
६८१ साहित्यदर्पण 'शशिकला' हिन्दी व्याख्या सहित १२·५०
६८२ साहित्यदर्पण—१, २ तथा १० परि०, नोटस, डा० काणे १०·००
६८३ साहित्यदर्पण प्रश्नोत्तरी ०·७५
६८४ साहित्यदर्पणादर्श (प्रश्नोत्तरी) १ ५०
६८५ साहित्यनिबन्ध १·००
६८६ साहित्यविमर्श—सोमेश्वर शर्मा २.५०
६८७ साहित्यसार—रामकृष्णकवि २.२५
६८८ साहित्यसार—सर्वेश्वरकवि १·१२
689 Studies in Indian Poetics—S. Bhattacharya 12·00
690 History of Sanskrit Poetics—S. K. De 35·00
691 History of Sanskrit Poetics—P. V. Kane 15·00

छन्द :

६९२ छन्द.कौमुदी—म० म० नारायणशास्त्री खिस्ते ०·४०
६९३ छन्दःप्रभा—प० रामसुख द्विवेदी सम्पादित ०·३०
६९४ छन्दःशास्त्र (पिङ्गलाचार्य) हलायुधकृत सञ्जीविनी व्याख्या, वृत्ति ३·५०
६९५ छन्दःसार—भाषाटीका ०·१५
६९६ छन्द संग्रह—गौरीनाथ पाठक ०·१६
६९७ छन्दःसंग्रह—हिन्दी टीका ०·२५
६९८ छन्दोदीपिका—विद्यासागर शास्त्री ०·४०
६९९ छन्दोमंजरी—रुचिरा सं० हि० व्याख्या २·००
७०० छन्दोलंकारदीपिका—भवभूतिशर्मा ०·६०
७०१ छन्दोलंकारप्रकाश—प्रो० राधामोहन मिश्र १ ००

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

७०२ छन्दोलंकारमंजरी—संसारचन्द २·००
७०३ छन्दोलंकारविवेचन—ज्ञानीराम शास्त्री १·५०
७०४ छन्दोविचिति २·८१
७०५ छन्दोविद्वन्मंडनम्—स्वामी लक्ष्मीराज जी ३·५०
७०६ छन्दोविंशतिका—विमलाटीका, रामचंद्र मिश्र ०·२५
७०७ छन्दोनुशासन—हेमचन्द्रसूरि १४·४०
७०८ जगद्विजयछन्द ३·२५
७०९ जयदामन—(संस्कृत छन्द काव्य संग्रह) १०·००
७१० जानाश्रयी छन्दोविचितिः २·८०
७११ पिङ्गलच्छन्दःसूत्रम् (वैदिक छन्दःप्रकरण) ०·८०
७१२ पिङ्गलच्छन्दःसूत्र (वैदिक प्रकरण) हलायुध वृत्तिकादम्बिनी हि. टी. ०७५
७१३ पिङ्गलप्रवेशिका—श्री प्यारेलाल २·००
७१४ प्राकृतपैङ्गलम्—पिङ्गल विरचित सं० व्याख्यात्रयोपेत हिन्दी टीका सहित २ भाग ३१·००
७१५ भास्करपिंगलचंद्रिका—डा० आर. पी. भास्कर ४·२५
७१६ राजस्थान का पिंगल साहित्य—डॉ० मोतीलाल मेनारिया ८·००
७१७ वाणीभूषण—दामोदरमिश्र ०·७५
७१८ वृत्तमुक्तावलो—कृष्णभट्ट प्रणीत, सं० मथुरानाथ भट्ट ३.७५
७१९ वृत्तमौक्तिक—चन्द्रशेखर कृत, लक्ष्मीनाथ भट्ट तथा मेघविजय कृत दो टीकाओं सहित १८·२५
७२० वृत्तरत्नाकर—श्रीधरानन्द शास्त्री कृत सं० हि० टीका सहित ३·००
७२१ वृत्तरत्नाकर—भट्ट नारायणकृत व्याख्या तथा हि० टीका० ३·००
७२२ वृत्तरत्नाकर—मणिमयी हिन्दी टीका ०·५०
७२३ वृत्तरत्नाकर—चरणदास शास्त्री कृत हिन्दी टीका २·५०
७२४ वृत्तरत्नाकर—पंचिका व्याख्या सहित २·००
७२५ वृत्तालंकार ०·४८
७२६ वृत्तरत्नावली—वेंकटेश, सं० व्या० अ० सहित ४·००
७२७ वृत्तवार्तिक—रामपाणिवाद १·७५
728 Vrittaratnavali—Text with Skt. Comm. and English Translation 4·00
७२९ श्रुतबोध —विमलाटीका ०·२५

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

७३० श्रुतबोध—आशुबोधिनी टीका ०·७५
७३१ श्रुतबोध—हिन्दी टीका ०·३५
७३२ श्रुतबोध सटीक—हरिशंकर शर्मा ०·१२
७३३ श्रुतबोध—व्रजरत्न भट्टाचार्य ०·५०
७३४ श्रुतबोध—भा० टी०, गौरीनाथ पाठक ०·६२
७३५ सभाष्यरत्नमंजूषा (पिंगल) हरिदामोदर वेलणकर सम्पादित २·००
७३६ सुवृत्ततिलकम् क्षेमेन्द्र ०·२५
७३७ स्वयम्भूछन्दः—प्रो० एच्० डी० वेलणकर सम्पादित ७·७५

चम्पूकाव्य

७३८ आनन्दकन्दचम्पू—मित्रमिश्र विरचित ३·५०
७३९ कविमनोरञ्जकचम्पू—सीतारामसूरि १·७५
७४० कुमारसंभवचम्पू—श्रीसरभोजी महाराजा श्रीविद्यासागर १·१३
७४१ चम्पूकाव्य का आलोचनात्मक एवं ऐतिहासिक अध्ययन
डा० छविनाथ त्रिपाठी १२·००
७४२ चम्पूभारत—रामचन्द्र बुधेन्द्र कृत व्याख्या सहित ८·००
७४३ चम्पूभारत—प्रकाश सं० हि० व्याख्या, रामचन्द्रमिश्र ८·००
७४४ चम्पूभारत—नारायणसूरि व्याख्या २·००
७४५ चम्पूरामायण—भोजराज, लक्ष्मण सूरि तथा रामचन्द्र बुधेन्द्र कृत
व्याख्या सहित ६·००
७४६ चम्पूरामायण—(बालकांड) प्रकाश सं० हि० व्याख्या ३·००
७४७ चम्पूरामायण—प्रकाश व्याख्या, रामचन्द्र मिश्र ६·००
७४८ चम्पूरामायण - मंजूषिका व्याख्या तथा लक्ष्मण सूरि विरचित
युद्ध कांड सहित ६·७५
749 Champu Ramayan—With English Translation
by S. Rangachar Ayodhya Kanda 2·50
750 ,, ,, ,, Aranya Kanda 2·75
751 ,, ,, ,, Kiskindha Kanda 1·50
७५२ चोलचम्पू—संम्प० डा० वी राघवन् १·१३
७५३ जीवनधरचम्पू—हरिश्चन्द्र ८·००
७५४ दशकंठवधचम्पू दुर्गाप्रसाद द्विवेदी कृत ४·००
७५५ नलचम्पू—प्रथम उच्छ्वास, भा० टी०, रामनाथ वेदालंकार २·००

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

७५६ नलचम्पू (१-२ उच्छ्वास)—प्रकाश सं० हि० व्याख्यासहित
कैलाशपति त्रिपाठी ३·००
७५७ निम्बादित्यदशश्लोकी —(हरिव्यास देव) ०·५०
७५८ नीलकंठविजयचम्पू—प्रकाश हि० व्याख्या, रामचंद्र मिश्र ४·००
759 Nilakantha Vijayam—Chapter III with Eng. Translation 2·25
७६० नृगमोक्षप्रबन्ध (चम्पू) नारायण भट्ट ०·८७
७६१ नृसिंहचम्पू—विमर्श सं० हि० व्याख्या, डा० सूर्यकान्त शास्त्री २·५०
७६२ पारिजातहरणचम्पू—शेषकृष्ण ०·७५
७६३ पारिजातहरणचम्पू—'श्रद्धा' हिन्दी व्याख्या ३·५०
७६४ पूर्वभारतचम्पू ११·२५
७६५ भागवतचम्पू (अभिनवकालिदास) ४·५०
७६६ भारतीयसिद्धान्तादेश—दुर्गा प्रसाद द्विवेदी ०·३७
७६७ मन्दारमन्दचम्पू—माधुर्यरसरंजिनी टीका सहित २·००
७६८ यशस्तिलकचम्पू—सोमदेवसूरिकृत, अनु० सुन्दरलाल शास्त्री १६·००
७६९ रामानुजचम्पू—संपादक सुब्रह्मण्यशास्त्री ३·००
७७० विश्वगुणादर्शचम्पू—पदार्थचन्द्रिका तथा हिन्दी व्याख्या सहित १०·००
७७१ वीरपञ्चवसन्तोत्सवचम्पू २·८०
७७२ वीरभद्रचम्पू (पद्मनाथ मिश्र) जे० बी० चौधरी सम्पादित ६·००
७७३ शाकिनीसहकारचम्पू २·२५
७७४ श्रीकृष्णगुरुकुलवासचम्पू १·१२
७७५ श्रीनिवासविलासचम्पू—वेंकटेश प्रणीत तथा धरणीधर कृत टीका १·२५
७७६ श्रीबालरामविजयचम्पू—सीताराम कवि कृत ०·८५
७७७ सर्वदेवविलास—डा० वी० राघवन् ५·००

सुभाषित

778 Anthology of Sanskrit Court Poetry (Subhashit-
Ratna Kosh Vol II)—D. H. Ingalls 120·00
७७९ अन्योक्तिमुक्तावली—रामशास्त्री भागवताचार्य १·२५
७८० कर्णामृतप्रपा—सोमेश्वरभट्ट कृत २·२५
७८१ कालिदास के सुभाषित—भगवतशरण उपाध्याय ५·००
782 Gems from Sanskrit Literature (सूक्तिमाला)—
Aryendra Sharma 1·50

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

७८३	द्राविडार्या सुभाषितसप्तति:	१·१२
७८४	समयोचितपद्यमालिका	१·००
७८५	समयोचितपद्यरत्नमालिका	०·७५
७८६	सदुक्तिकर्णामृत—सं० रामावतार शर्मा	१·५०
७८७	सदुक्तिकर्णामृत—श्रीधरदास कृत, बैनर्जी सम्पादित	४०·००
७८८	संस्कृत महाकवियों के संबन्ध में प्रचलित लोकोक्तियाँ	१·५०
७८९	संस्कृतसुभाषितसौरभ—मुनिदेव उपाध्याय	२·५०
७९०	संस्कृतसूक्तिरत्नाकर—डाँ० रामजी उपाध्याय	२·५०
७९१	संस्कृतसूक्तिसागर—हि० टी०, नारायण स्वामी	२१·००
७९२	सुभाषितत्रिशती (भर्तृहरिशतकत्रय) रामचन्द्र बुधेन्द्र व्याख्या	२·५०
७९३	सुभाषितरत्नकोष—विद्याकर कृत, २ भाग	१६८·००
७९४	सुभाषितरत्नभाण्डागार—नारायण राम आचार्य	१६·००
७९५	सुभाषितसप्तशती—मंगलदेव शास्त्री	२·५०
७९६	सुभाषितसुधारत्नभांडागार—कविरत्न पं० शिवदत्त	१०·००
७९७	सुभाषितावली—बल्लभ देव	२५·००
७९८	सूक्तिमंजरी—वलदेव उपाध्याय	
७९९	सूक्तिमुक्तावली—गोकुलनाथोपाध्याय	७ ५०
८००	सूक्तिमुक्तावली अथवा हरिहरसुभाषित	७ ५०
८०१	सूक्तिशतकम् – हरिहरझा, २ भाग	१·५०
८०२	सूक्तिसंग्रह—कविराक्षस	०·१२
८०३	सूक्तिसंग्रह—प्राज्ञविनोदिनी व्याख्या	०·२०
८०४	सूक्तिसुधा २ भाग	० ६२
८०५	हरिहरसुभाषित-मूल	० ७५

भाण

८०६	अनङ्गजीवनभाण	०·५०
८०७	मदनकेतुचरितम्—रामपाणिका विरचित	१·००
८०८	मुकुन्दानन्दभाण—काशीपति, मूल	०·७५
८०९	रससदनभाण—युवराज कवि कृत	१·००
८१०	शृङ्गारतिलकभाण—रामचन्द्र दीक्षित	०·५०
८११	शृङ्गारभूषणभाण—वामनभट्टबाणकृत	०·३७

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

८१२ शृङ्गारसर्वस्वभाण—वल्लालकवि कृत ०·६२
८१३ शृङ्गारसुन्दरभाण २·००
८१४ सन्देशरासक—सं० विश्वनाथ त्रिपाठी १०·००

गद्यकाव्य

८१५ अभिलेखमाला—व्याख्याकार, झा बन्धु ४·००
८१६ अवन्तिकुमारियां—देवदत्त शास्त्री २·००
८१७ अवन्तिसुन्दरी—आचार्य दण्डी ४·५०
८१८ अवन्तिसुन्दरी कथासार—जी० हरिहर शास्त्री ३·५०
८१९ इन्द्रप्रस्थप्रबन्ध—अज्ञात कर्तृक, सम्पा० डा० दशरथ शर्मा २·२५
८२० ईसवनीति कथा, २ भाग १·६२
८२१ उत्कीर्णलेखपञ्चकम्, व्याख्याकार-झा बन्धु २·५०
८२२ उत्कीर्णलेखाञ्जलि (सं० टी०, भा० टी०) टीकाकार जयचन्द १·००
८२३ उपाख्यानमञ्जरी—सम्पा० बटुकनाथ शास्त्री खिस्ते १·२५
824 Upakhyanamala—V. Narayana 3·00
८२५ उषापरिणयप्रबन्ध ०·५६
८२६ ऋजुलघ्वी मालतीमाधव कथा २·५०
827 Adventures of King Vikrama—Hansa Mehta 7·00
८२८ कथापञ्चकम्—चमाराव २·००
८२९ कथापञ्चदशी—चमाराव, कथा मुक्तावली की आलोचना एवं टीका—डा० हरिदत्त शास्त्री १·२५
८३० कथामुक्तावली—चमाराव ४·५०
८३१ कथासरित्सागर, सोमदेव भट्ट, २ भाग, भा० टी० २२·५०
832 Kathasaritsagara or Ocean of Stories By Tawney & N. H. Penzer (10 Vols) Shortly
८३३ कथासंवर्तिका ०·७५
८३४ कादम्बरी—'चन्द्रकला' 'विद्योतिनी' सं० हि० व्याख्या, सम्पूर्ण २४·००
८३५ कादम्बरी (पूर्वार्ध) भानुचन्द्र सिद्दचन्द्र सं० व्याख्या, हिन्दी अनुवाद श्रीनिवास शास्त्री १४·००
८३६ कादम्बरी—भा० टी० (सम्पूर्ण) काशी ७·००
८३७ कादम्बरी—भानुचन्द्र-सिद्धचन्द्र संस्कृत टीका, हिन्दी अनुवाद, रतिनाथ झा यन्त्रस्थ

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

838 Kadambari—C. Kunhan Raja 2·50
839 Kadambari—Peterson's Edition Page 124 to 175
By R. D. Karmarker 1·69
840 Kadambari—English Translation by C. M. Ridding 2·00
841 Kadambari—Kathamukha with Hindi & English
Translation—D. P. Malavia 5·00
842 Kadambari—Kathamukha with English Translation
and Notes by J. N. S. Chakravarty 7·25
८४३ कादम्बरी (महाश्वेतावृत्तान्त)भा० टी०, राजदेव मिश्र २·२५
८४४ कादम्बरी (,,)—वि० ना० त्रिपाठी, डा० सनाढ्य ३·००
८४५ कादम्बरी (महाश्वेतावृत्तान्त)भा० टी०, प्रद्युम्नपांडेय ४·००
846 Kadambari (Mahashweta Vrittanta)—With English
Translation—S. Rangachar 2·50
847 Kadambari (P. P. 124 to 175) MahashwetaVrittanta
English Tran. & Notes By Karnik & Gengal 2·75
८४८ कादम्बरी—सम्पूर्ण (हिन्दी) ऋषीश्वरनाथ कृत ५·००
८४९ कादम्बरी—अनु० भगवतशरण उपाध्याय ३·००
८५० कादम्बरी एक सांस्कृतिक अध्ययन—डा० वासुदेवशरण अग्रवाल १३·७५
८५१ कादम्बरी (कथामुख)—संस्कृत टीका , हिन्दी अनुवाद
उपेन्द्रनारायण मिश्र ४·००
852 Kadambari (Kathamukha) with English Translation
& Notes—S. Ray 6·00
८५३ कादम्बरी—कथामुख भा० टी०, डा० देवर्षि सनाढ्य ३·५०
८५४ कादम्बरी—कथामुख सं० हि० टीका श्री रतिनाथ झा ३·७५
855 Kadambari Sangraha—V. Gopal Iyengar 2·00
८५६ कार्तवीर्यविजयप्रबन्ध—आश्विनश्री रामवर्म कृत ०·३५
८५७ कालिदासीयनाटक कथामञ्जरी—मालविकाग्निमित्र, विक्रमोर्वशीय
तथा शाकुन्तल का गद्य परिवर्तन २·५०
८५८ काव्यसमुदय—वेंकटरमण पदार्थबोधिनी व्याख्या २·५०
८५९ काव्यमञ्जूषा—नाम रत्नावली गद्य काव्य २·००
८६० काव्यानुशीलन—निबन्धों का संग्रह ४·५०
८६१ काव्यप्रबन्ध—काव्यपदार्थ विवृति १·५०
८६२ कुचेलोपाख्यानम्—के० साम्बशिव शास्त्री सम्पादित ०·३१

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

८६३ कुसुमलक्ष्मी—ए० आर० रत्नपारखी ४·५०
८६४ गद्यकारवाण—प्रो० सत्यपालदेव तथा महेन्द्रप्रताप ६·००
८६५ चतुर्वेदीसंस्कृतरचनावली—भाग १, म० म० गिरिधरशर्मा २०·००
८६६ चन्द्रमहीपतिः—श्रीनिवासशास्त्री ८·००
८६७ चन्द्रापीडकथा—वी० अनन्ताचार्य १·००
८६८ चिन्तन के नये चरण—देवदत्तशास्त्री ६·००
869 Jnanesvaracarita—K. Rao 5·00
870 Tales from Indian Classics 2·50
871 Tales from Kalidasa 2·00
872 Ten Princes—W. Ryder 2·00
८७३ तिलकमंजरी—धनपाल ४·००
८७४ तिलकमञ्जरी—धनपालविरचित, शान्त्याचार्यप्रणीत टीका, ३ भाग १८·००
875 Tukaramcharita—Kshama Rao 5·62
८७६ दरिद्राणां हृदयम् ०·४०
८७७ दशकुमारचरित—सं० हिन्दी टीका, सम्पूर्ण ५·५०
८७८ दशकुमारचरित—हिन्दी, अनु० पं० ज्वालाप्रसादमिश्र १·५०
879 Dasakumaracharita, 2&3 Uchhvasas—with English Translation & Notes by S. V. Dixit 3·00
८८० दशकुमारचरित—पूर्वपीठिका, सं० हि० व्याख्या, विश्वनाथ झा १·५०
८८१ दशकुमारचरित—पूर्वपीठिका, भा० टी०, डा० रामकृष्ण आचार्य १·००
८८२ दशकुमारचरित (संक्षिप्त)—सुधीरकुमार गुप्त ३·२५
८८३ दशकुमारचरित—सरल हिन्दी, पं० निरंजनदेव ६·००
884 Dasakumaracharita (Proper) of Dandin (1-4 Uchhvasas) with English Translation—C. S. R. Sastri 4·00
885 Dasakumaracharita (Uchhvasas VI to VIII) with English Translation—S. V. Dixit 2·62
886 Dasakumaracharita (Purva Pithika) with English Notes & Translation—C. S. R. Sastri 3·00
887 Dasakumaracharita (Purva Pithika) with "Padadipika" comm. and English Translation and Introduction Satakopan 2·75
888 Dasakumaracharita—(Complete) with Sanskrit comm., English Translation & Notes by M. R. Kale 15·00

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

८८९ दशकुमारचरितसार—डा० सत्यव्रतसिंह ०·६५
८९० दशकुमारकथासार—अप्पयामात्य कृत २·००
८९१ देववाणीपरिचायिका—चक्रधर शर्मा १·६५
८९२ द्वा सुपर्णा—डा० रामजी उपाध्याय ३·००
८९३ देलारामकथासार—शिवदत्त ·७५
894 Nalopakhyan with English Translation—D. P. Malviya 1·50
८९५ नलोपाख्यान (वनपर्व) भा० टी०, विश्वम्भरनाथ त्रिपाठी १·२५
८९६ नलोपाख्यान—भा० टी० टीकाकार डाँ० जगदम्बा प्रसाद सिनहा १३·५०
८९७ नलोपाख्यान—भा० टी०, वनपर्व राजदेवमिश्र १·५०
898 Nalopakhyanam By Monier Williams 25 00
८९९ नलोपाख्यानकोश—डा० जगदम्बा प्रसाद सिनहा ५·००
९०० नृगमोक्षप्रबन्ध—नारायणभट्ट ०·८५
९०१ नृपतिनीतिगर्भितवृत्तम्—जे० बी० चौधरी १०·००
902 Narrative of Bhoja (Bhoj Prabandha) By H. Gray 16 87
९०३ पुरातनप्रबन्धसंग्रह ८·७५
९०४ प्रबन्धकोष—राजशेखरसूरिप्रणीत ७·००
905 Prabandha Cintamani—English Translation
By C. H. Tawney 3·75
९०६ प्रबन्धचिंतामणि—मेरुतुङ्गाचार्यकृत, मूल ६·५०
९०७ प्रयोगवादी काव्यधारा – डा० रमाशंकर तिवारी १२·५०
९०८ बाणभट्ट की आत्मकथा—डा० हजारी प्रसाद द्विवेदी २·००
९०९ बालभारतम् २·२५
९१० भारतस्य सांस्कृतिकनिधिः—डा० रामजी उपाध्याय १५·००
९११ भासकथासार—महालिङ्ग शास्त्री (भाग १–३) २·००
९१२ भोज और कालिदास ३·००
९१३ भोजचरित्र (बल्लाल) ०·५०
९१४ भोजचरित्र (राजवल्लभ)—सं० डा० छावडा ८·००
९१५ भोजप्रबन्ध—भा० टी०, तारिणीश झा २·००
९१६ भोजप्रबन्ध—भा० टी०, श्यामसुन्दरलाल त्रिपाठी २·५०
९१७ भोजप्रबन्ध—सरल संस्कृत टीका, अन्वय, कोष, सुबोध हिन्दी तथा
अंग्रेजी अनुवाद सहित—जगदीशलाल शास्त्री ३·७५

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

९१८ भोजप्रबन्ध—भा टी०, शिवराज शास्त्री २·००
९१९ भोजप्रबन्ध—(संक्षिप्त) डा० देवर्षिसनाढ्य १·५०
९२० भोजप्रबन्ध—(सटिप्पण) ०·७५
९२१ भोजप्रबन्ध —'राज्यश्री' हिन्दी० टी० १·५०
९२२ मत्स्यावतारप्रबन्ध —नारायणभट्ट, मूल ०·३७
९२३ मन्दरावती (कथासंग्रह) १·००
९२४ मन्दाकिनी—डा० देवर्षिसनाढ्य १·२५
९२५ मन्दारमंजरी—संस्कृत टीका सहित विश्वेश्वर सूरि ४·००
९२६ महाकवि बाण—केदारनाथसारस्वत ०·२४
९२७ महाकवियों की अमर रचनाएँ—चक्रधरशर्मा २·००
९२८ महादेवशास्त्रिणाभिनन्दनग्रन्थः—रतिनाथझा १५·००
९२९ माधवानलकामकन्दलाप्रबन्ध १५·००
९३० मुद्राराक्षसनाटककथा—महादेव २·७५
९३१ रामकथा -वासुदेव ०·८०
९३२ रामावतारप्रकीर्णप्रबन्धावली—प्रथम भाग ११·००
९३३ वासवदत्तम् (कथासंग्रह) ०·२५
934 Vasavadatta with English Translation and Notes by L. H. Gray .. 7·50
९३५ वासवदत्ता—सं० हि० व्याख्या ४·००
936 Vikrama's Adventures—Franklin Edgerton 8·000
937 Vikramaditya Tales from Mongolia Charles R. Bawden 30 00
९३८ विदितपदस्यविचारः—जग्गू वेंकटाचलम् १·५०
९३९ विद्वच्चरितपंचकम् नारायणशास्त्री खिस्ते २·००
९४० विद्वद्विभूति —रामचन्द्रझा १·२५
941 Vinodkathamanjari—K. V. Subrahmaniam 1 50
९४२ विश्रुतचरित —भा० टी० रामकृष्णशुक्ल १·२५
९४३ विश्रुतचरित—सटीक १·००
९४४ विश्रुतचरित—भा० टी०, सुधीरकुमारगुप्त १·२५
९४५ शम्भुचर्योपदेशः ०·२५
९४६ शिवराजविजय—अम्बिकादत्तव्यास, संपूर्ण ८·००

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

९४७ शिवराजविजय—प्रथमविराम १–४ निश्वास २·७५
९४८ शिवराजविजय—द्वितीय विराम ५–८ निश्वास २·२५
९४९ शुकनासोपदेश—हिन्दी अनु०, डा० रामकृष्ण आचार्य १·५०
950 Suknasopadesh with English Notes and Translation by K. Ray 3 50
951 Suknasopadesh with English Translation—R. Saksena 2·25
९५२ शुकनासोपदेश—भा० टी० तारिणीश झा १·००
९५३ शुकनासोपदेश—हिन्दी टीका "झाबन्धु" ३·००
९५४ शुकसप्तति—सम्पूर्ण १०·००
९५५ श्रृङ्गारमञ्जरी—बड़े साहेब् अकबर विरचित, राघवन सम्पादित २२·५०
९५६ श्रृङ्गारमञ्जरी—भागीरथ मिश्र २·५०
९५७ श्रृङ्गारमञ्जरीकथा १२·५०
958 Sringara Manjari—English Translation by Aiyar 2·00
९५९ शेक्सपीयरनाटककथावली—वेंकटरमणाचार्य सम्पादित २·७५
९६० सत्यशोधनम्—(संस्कृतमें गांधी जीकी आत्मकथा) २५·००
९६१ समस्यासमज्या—भागवताचार्यस्वामिकृत २·००
९६२ समुद्रसंगम—दाराशिकोह १२·००
९६३ संस्कृतकथाहार ०·६९
९६४ संस्कृत काव्यमें शकुन—डा० दीपचन्द्र शर्मा १५·००
९६५ संस्कृतकुसुमाञ्जलि—हेमराज २·००
९६६ संस्कृतगद्यकाव्यकैरवी—चारुदेव शास्त्री १·७५
९६७ संस्कृतगद्यगरिमा—शारदाचरण पाण्डेय
९६८ संस्कृतगद्यपद्यसंग्रह—श्री बृहस्पतिशास्त्री कृत हिन्दी व्याख्या २·००
९६९ संस्कृतगद्यमंजरी—चन्द्रशेखर पाण्डेय तथा शा. ना. व्यास २·५०
९७० संस्कृतगद्यलहरी—हरिहर झा १–२ भाग ३·००
९७१ संस्कृतगद्यालोक—डा० फतह सिंह ४·००
९७१ संस्कृतमुक्तावली—श्री रमेशचन्द्र रस्तोगी १·५०
९७३ संस्कृतरत्नावलि—मुकुन्दशास्त्री खिस्ते १·५०
९७४ सारस्वतालोकः (भारवि परिचय)—म. म. गोपीनाथ कविराज १·२५
९७५ साहित्यनिबन्धः १·००
९७६ सिंहासनबतीसी (मराठी) जोगलेकर ३·००

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

977 Stories of Vikramaditya (Vetala Pancha Vimsati) 2·50
978 Stories of Vikramaditya (Sinhasan Dwatrinshika) 2·50
979 Stories from Kathasaritsagar—P. V. Ramanujswami 7·00
980 Stories from Kathasaritsagar—C. H. Tawney 2·00
९८१ हरिश्चन्द्रोपाख्यानम्—सायणभाष्य, प्रकाश हिन्दी व्याख्या २·५०
९८२ हर्षचरित—भाषानुवाद १–८ उच्छ्वास दो भाग, सूर्यनारायण चौधरी ५·००
983 Harshacharita—Text with Notes By P. V. Kane 12·00
९८४ हर्षचरित—प्रथम उच्छ्वास, सटीक १·२५
९८५ हर्षचरित—शंकर कृत संकेत टीका, सम्पूर्ण २·००
९८६ हर्षचरित—(पंचम उच्छ्वास) सुधा सं. हिं. व्याख्या ३·००
९८७ हर्षचरित—१ म उ० – जयश्री कथामही सं. हिं. व्याख्या १·२५
988 Harshacharita—III Uchhvas with Notes & Trans. 1·50
९८९ हर्षचरित—सं० हि० टीका, आचार्य जगन्नाथ पाठक ७·००
९९० हर्षचरित—एक सांस्कृतिक अध्ययन डा० वा. श. अग्रवाल ९·५०
991 Harshacharita—English Translation by Cowell 12·00
992 Harshacharita—3rd Uchhvasa with English Translation by V. N. Iyer 1·75
993 Harshacharita—5th Uchhvasa with English Translation & Notes—C. S. R. Sastri 2·50
९९४ हर्षचरितसार—वी. अनन्ताचार्य ०·७५
९९५ हर्षचरितसार—वी. वी. मिराशी ४·००
९९६ हर्षचरितसार—हरिहर झा १·५०
९९७ हर्षचरितसारतरंगिणी—ब्रह्मानन्दशुक्ल ०·४८

Grammar (व्याकरण)

आदर्शप्रस्तावरत्नमाला

सं. पं. विश्वनाथ शास्त्री प्रभाकर परिवर्द्धित द्वितीय संस्करण मूल्य ५·००

इसमें लगभग १०० निबंध (प्रस्ताव) संगृहीत हैं जो धार्मिक सामाजिक विषयों को लेकर सरल, सुबोध और प्राञ्जल संस्कृत भाषा में लिखे गये हैं। संस्कृत के छात्रों के लिये अत्युपयोगी पुस्तक है।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

अनुवादचन्द्रिका

(संशोधित एवं परिवर्द्धित संस्करण)

लेखक पं. चक्रधर हंस शास्त्री एम. ए. एल. टी. पृ० ३७७ मूल्य ३ ५० मात्र प्रथमा, मध्यमा के विद्यार्थियों को हिन्दी से संस्कृत अथवा संस्कृत से हिन्दी में अनुवाद सिखाने के ध्येय से यह पुस्तक अत्यन्त लोकप्रसिद्ध है। इसमें विद्वान् अनुभवी लेखक ने इतनी आसानी से जटिल व्याकरण के विषयों को अनेक प्रकरणों में बांट कर आइने की भांति सामने रख दिया है कि विद्यार्थी को संस्कृत में विशुद्ध वाक्य बनाना सरल हो गया है। इसमें 'मुहावरेदार प्रयोग', 'लोकोक्ति संग्रह' 'निबन्धावली' 'शब्दभण्डार' (Glossary) 'वाच्य परिवर्तन' 'व्यावहारिक शब्द संग्रह' आदि आदि ३० प्रकरण दिये गये हैं। अन्त में पंजाब, पटना, बनारस की परीक्षाओं के प्रश्नपत्र भी दिये गये हैं।

अनुवादकला

ले० श्री चारुदेव शास्त्री एम. ए., एम्. ओ. एल., द्वितीय संस्करण। मूल्य २ ५० यह एक अधिकार के साथ लिखी गई पुस्तक है। इसमें विद्वान् लेखक ने प्रायः अनुवाद करने में विद्यार्थी कहाँ चूकते हैं और क्यों चूक होती है। इस पर अच्छा प्रकाश डाला है और अच्छी समीक्षा भी की है।

Ashtadhyayi of Panini

By Shri Srischandra Vasu, *Royal Octavo* : *pp*. 1788 : : *Cloth bound & Gold Embossed* ; Price *Rs*. 49·00 Complete in 2 Vols.

The first complete English Translation of Panini's Aphorisms as explained in the well-known commentary called the Kasika by the Late Shri Srischandra Vasu. Reprinted by photo offset process under the Govt. of India Scheme. It represents the first attempt in the history of the world to describe and analyse the components of a language on scientific lines. Ashtadhyayi has not only been universally acclaimed as the first and foremost specimen of Descriptive Grammar but has also been the chief source of inspiration of linguists engaged in describing languages all the world over. The Paninian Tradition stands un-surpassed in the greatest economy of worlds in describing

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

linguistic features and is the chief source of inspiration to linguistics all over the world. Western Sholars have described it as a wonderful specimen of human intelligence. An Alphabetical Index to Panini Sutras, the Roots, the Unadi Sutras, the Phit Sutras and an Ashtadhyayi Sutrapath have been added at the end.

अष्टाध्यायी प्रकाशिका

श्रीदेवप्रकाशपातंजलशास्त्री एम० ए० कृत,

पृष्ठ संख्या ५५२ : पक्की कपड़े की जिल्द, मूल्य ८—००

अष्टाध्यायी प्रकाशिका में पाणिनीय अष्टाध्यायी के १३१५ सूत्रों की विशद व्याख्या है। भट्टोजिदीक्षित आदि अर्वाचीन टीकाकारों ने अष्टाध्यायी के सूत्रोंका क्रम तोड़ कर उन्हें अपने मनमाने क्रम में जोड़ सिद्धान्तकौमुदी आदि ग्रन्थों का निर्माण किया था, जिससे मूल-ग्रन्थका वैज्ञानिक महत्व नष्ट होकर व्याकरण का अध्ययन दुःसाध्य बन गया था। किन्तु इस ग्रन्थ में सूत्रों का मूल क्रम बिना भंग किए पाणिनीय अध्ययनकी लुप्त विधि का पुनरुद्धार करके व्याकरण के रहस्य को स्पष्ट कर दिया गया है।

पाणिनिमुनि कृत अष्टाध्यायी के चुने हुए १३१५ सूत्रों की साङ्गोपाङ्गव्याख्या ग्रन्थ के प्रारम्भ में समझने के लिए १२ व्याख्यान हिन्दी में दिए गए हैं। संस्कृत न जानने वालों के लिए भी यह ग्रन्थ व्याकरण ज्ञान के लिए अत्यन्त उपयोगी है। बिना रटे सूत्रों को समझकर पढ़ने से विद्यार्थी ६ महीने में रामायण, महाभारत, गीता आदि ग्रन्थ पढ़ने योग्य बन जाता है।

प्रतिसूत्र पदच्छेद, विभक्ति, समास, अर्थ, उदाहरण और सिद्धि दिखलाकर प्रत्येक शब्द की सिद्धि में सभी उपयोगी सूत्रों का निर्देश किया गया है। संस्कृत में व्याख्या दी गई है और संस्कृत का हिन्दी में अनुवाद भी दिया गया है। यह ग्रन्थ मौलिक है। अष्टाध्यायी के क्रम में अपना स्वतन्त्र स्थान रखता है;

बालनिबन्धादर्श

प्रारम्भिक निबन्धलेखन की अत्युत्तम पुस्तक—पं० विश्वनाथशास्त्रिकृत

इसमें संस्कृत-निबन्ध लिखना सिखाया गया है। चुनकर ३८ निबन्ध दिये गये हैं। जिनमें कुछ पौराणिक और कुछ आधुनिक हैं, जैसे गो, विद्यालयः, उत्तरप्रदेशः, गङ्गा, दीपमाला, रामचन्द्रः, श्रीकृष्णचन्द्रः लोकमान्यतिलकः, महामनामालवीयः, महात्मा

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

गान्धिः, पं० जवाहरलाल नेहरूः आदि प्रस्तावना में निबन्ध की परिभाषा, प्रतिज्ञा, उपपत्ति, दृष्टान्त, उपसंहार, अंशकल्पना आदि ज्ञातव्य विषय देकर छात्रों को निबन्ध के सम्बन्ध में पूर्णज्ञान कराया गया है। मूल्य १.५०

बृहद् अनुवादचन्द्रिका

ले० श्रीचक्रधरहंस नौटियाल एम. ए. एल. टी.

कपड़े की जिल्द डिमाई पृष्ठ सं० ७५० द्वितीय संस्करण मूल्य १५.००

'अनुवाद चन्द्रिका' के यशस्वी लेखक श्रीचक्रधरनौटियाल 'हंस' शास्त्रीजी ने वस्तुतः उस अभाव की पूर्ति की है जिसका अनुभव संस्कृत-प्रेमी वर्षों से कर रहे थे। अनुवाद चन्द्रिका में सुपाठ्य सामग्री का सम्पादन एवं संकलन निःसन्देह अतीव रोचक ढंग से किया गया था, किन्तु प्रौढ़ छात्रों एवं उच्च कक्षाओं के छात्रों की आवश्यकता की पूर्ति उससे नहीं हो पाती थी। उसी अभाव की पूर्ति 'बृहद् अनुवाद चन्द्रिका' ने की है। बृहद् की शैली भी अनुवाद चन्द्रिका की भाँति आकर्षक सरल एवं सुगम है। इसमें प्रत्येक पाठ के अन्त में व्याकरण और अनुवाद के समन्वय हेतु अभ्यास दिए गये हैं जो पुस्तक की अपनी विशेषता है।

बृहद् अनुवाद चन्द्रिका में व्याकरण के नियमों का आधार पाणिनीय सूत्रों पर रखा गया है और उपयुक्त व्याकरण, जैसे—सन्धि-कारक-समास-क्रिया-कृदन्त तद्धित-स्त्रीप्रत्यय प्रकरणों के अतिरिक्त उसमें संस्कृत के मुहावरे, लोकोक्तियाँ, पत्र-लेखन-प्रकार, संस्कृत व्यावहारिक शब्द-संग्रह, वृत्त-परिचय, अशुद्धि-प्रदर्शन, संस्कृत परीक्षाओं के अनुवाद सम्बन्धी प्रश्न-पत्र और निबन्धरत्नमाला का समावेश किया गया है। इन विषयों के अतिरिक्त उसमें लगभग १२५ शब्दों के सातों विभक्तियों के रूप २०० धातुओं के दसो लकारों के समस्त रूप तथा ५०० धातुओं के संक्षिप्त रूप दिए गये हैं। साथ ही साथ सोपसर्ग धातुओं के उदाहरण महा-कवियों की सुप्रसिद्ध रचनाओं से उद्धृत किये गये हैं। अनुवादार्थ गद्य-पद्य संग्रह में महाकवियों की अमर रचनाओं से उद्धरण दिये गये हैं, जिनके पारायण से सहृदय उन कवियों की कविताओं के रसास्वादन का आनन्द भी ले सकते हैं। इस प्रकार पुस्तकको परमोपयोगी बनाने का भरसक प्रयत्न किया गया है।

पुस्तक की एक और विशेषता यह है कि इसमें व्याकरण तथा अनुवाद की प्रारम्भिक शृंखला टूटने नहीं पायी है जिससे अल्पज्ञानवाले तथा प्रौढ़ ज्ञान वाले दोनों ही प्रकार के छात्र लाभान्वित हो सकते हैं। एक ओर इससे मैट्रिक्यूलेसन, इण्टरमिडिएट, प्राज्ञ, प्रथमा आदि निम्न कक्षाओं के छात्र लाभ उठा सकते हैं तो

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

दूसरी ओर बी. ए., एम. ए., शास्त्री तथा आचार्य आदि उच्च कक्षाओं के छात्र लाभान्वित हो सकते हैं। अनुवाद के अभ्यासार्थ प्रदेश के विभिन्न शिक्षा-संस्थानों— हाई स्कूल बोर्ड, महाविद्यालयों एवं विश्वविद्यालयों की परीक्षाओं—के प्रश्न-पत्र भी सहायक टिप्पणियों के साथ दिए गये हे और पुस्तक के अन्त में निबन्धरत्नमाला में उच्च कक्षाओं के लिये परमोपयोगी विषयों पर १६ निबन्ध दिये गये हैं। अत: इसमें सन्देह नहीं कि यह पुस्तक अपनी शैली की एक अनूठी पुस्तक है और संस्कृत अध्ययन एवं अनुशीलन करने वालों के लिए कामधेनु के समान हितकारी है। ऐसी दिव्य, भव्य और हृद्य पुस्तक आज तक नहीं लिखी गयी, इससे प्रत्येक संस्कृत-प्रेमी को लाभ उठाना चाहिए। पुस्तक बृहद् आकार में छपी है।

Comparative Grammar of the Prakrit Language

By R. Pischel, Translated from the original German Edition, in English for the first time, by Dr. Subhadra Jha. New, revised edition with Index. Price Rs. 50·00

This work full of references drawn from different sources, has served as the most authentic treatise on the subject during the period of more than half a century. It has served as a work of general reference to scholars o so many branches of Indo-European Linguistics.

Gana-Ratna-Mahodadhi of Vardhaman

By Julius Eggeling, *Demy Octavo* : *pp.* 492 : : *Cloth bound*, *Antique Paper* : *Price Rs.* 15.00

This is one of the rare book first published in 1870. This is the *SECOND EDITION* and has been published under the scheme of reprinting of Important out-of-print Sanskrit books sponsored by the Government of India.

Panini—the originator of Classical Sanskrit—had before him a list of irregularly formed words, which survives, in a somewhat modified form, as the UNADI SUTRA. There are also two appendices to which Panini refers : the DHATU-

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

PATHA containing some 2000 roots, the GANA-PATHA to which certain rules apply. These GANAS were metrically arranged in the GANA-RATNA-MAHODADHI by VARDHAMAN in 1140 A.D. There were several manuscripts scattered into remoteness and the credit goes to the author J. Eggeling to trace them out and collate to form the present volume.

The book is in Sanskrit Text with the author's commentary, edited with critical notes and indices so as to be of great importance towards Lexicographic purposes.

Higher Sanskrit Grammar

By M. R. Kale, pp. 727 : *Cloth bound* : : *Rs.* 12·50

Grammar is not merely an empiric study but a science and must be studied as such. The author has brought into one volume the various departments of Sanskrit Grammar as full and as concise as possible, but has kept in view the University level to meet the growing wants of the Indian University students. It is based on indigenous words understood and studied in their genuine scientific spirit.

In writing various chapters of the book he has closely followed Panini except the chapter on 'Conjugation of Verbs. Many of the rules given are translation of the Aphorisms of Panini and where necessary, original Aphorisms have been quoted in the foot notes, as an aid to the memory. Sandhis and declensions are very fully treated. Unlike the other books of the subject, compounds have received special attention. The formation of Feminine bases has been separately treated. The VII Chapter deals with the Taddita affixes and have been arranged in alphabetical order, each followed by a number of derivatives formed by it. The perplexing question of gender has been treated and the 'Indeclinables' have been dealt with separately. Thus the first nine chapters forming the first part of the book deal with all that relates to the noun (declinable & indeclinable). A special feature of the present Grammar is the chapter on the 'Conjugation of Verbs' which has always rema-

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

ined a confounding problem to the student. All the verbs changing their *PADA* when preceded by particular prepositions have been illustrated and are given in an alphabetical order. A chapter on Syntax and another on Prosody, have also been added. The book closes with a list of verbs containing almost all the roots in Sanskrit and giving the 3rd person singular in the important tenses & moods.

Indo-European & Semitic

by

Dr. Surya Kanta

A suggestion for the ultimate unity of the Indo-European and Semitic lauguages. Rs. 2·50

लघुसिद्धान्त कौमुदी

टीकाकार—पं० श्रीविश्वनाथशास्त्री 'प्रभाकर'

मोटा अक्षर, ग्लेज कागज, नवम संस्करण । पृष्ठ ४४० मूल्य २ ५०

(१) ह्रस्व-दीर्घ-प्लुत भेदों के चक्र (२) आभ्यन्तर और बाह्य प्रयत्नों के दो चित्र (३) प्रयोगों का सन्धिविच्छेद (४) प्रयोगों की सिद्धि का प्रकार (५) सूत्रविषयक सुभाषितों का उल्लेख (६) अकर्मक और सकर्मक धातुओं का निर्णय (७) कर्त्ता और कर्म आदि का उक्त और अनुक्त का विचार (८) कोष्ठक में प्रथम, मध्यम और उत्तम पुरुष का विचार (९) चित्र में परस्मैपद और आत्मनेपद की व्यवस्था (१०) चक्र में धातुओं के अनुबन्ध की इत्संज्ञा का फल (११) धातुओं के मूल में न दिये गये रूपों के विशेष उच्चारण और उनकी सिद्धि (१२) इनके अतिरिक्त परिशिष्ट में (१३) लघुलिंगानुशासन (१४) व्याकरण, सूत्र, वार्तिक, भाष्य और व्याख्यान के सोदाहरण लक्षण दिये गये हैं (१५) व्याकरण के चार अनुबन्ध, 'पाँच सन्धियों का विवरण (१६) लेखोपयोगी नियम और चिह्न (१७) अशुद्धि-संशोधन (१८) उपसर्ग साथ लग जाने से धातुओं का अर्थ भेद (१९) लघुकौमुदी में आए हुए समस्त प्रयोगों का संग्रह तथा उनका भाषा में अर्थ (२०) अव्यय, धातुपाठ के हिन्दी भाषा में अर्थ (२१) इस आवृत्ति में हिन्दी भाषा में टीका भी दे दी है । काशी, बिहार तथा पंजाब की परीक्षाओं के प्रश्नपत्र भी साथ हैं । उपर्युक्त

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

विशेषताओं से ही आप अनुभव करेंगे कि पुस्तक छात्रों के लिए कितनी उपयोगी हो सकती है।

लघुसिद्धान्तकौमुदी

'प्राज्ञतोषिणी' नामक हिन्दी व्याख्या और रूपसिद्धि सहित।

व्याख्याकार—व्याकरणाचार्य पं० श्रीधरानन्दशास्त्री एम० ए०

संशोधित और परिवर्धित चतुर्थ संस्करण लगभग ११५० पृष्ठों को कपड़े की पक्की जिल्द सहित पुस्तक का मूल्य १२·००

संस्कृत साहित्य का प्रवेश द्वार पाणिनि—व्याकरण है और लघुकौमुदी उसकी प्रथम पुस्तक है, इसकी लोकप्रियता इस बात की साक्षी है कि संस्कृत में प्रवेश कराने के लिए इससे उपयुक्त दूसरी पुस्तक नहीं। इस पर एक सुन्दर, सरल प्रामाणिक और सुबोध ऐसी व्याख्या अपेक्षित थी जिसकी भाषा आधुनिक हो, सम्पूर्ण प्रयोगों की साधनप्रक्रिया, शब्दों और धातुओं के आकांक्षित रूप, सुव्यवस्था के अनुसार टीका में प्रदर्शित हों, छपाई सफाई आकर्षक हो, सौभाग्य से पं० श्रीधरानन्दशास्त्री जी ने प्राज्ञतोषिणी में यह सब देकर जिज्ञासुओं की समस्त आशाएं पूर्ण कर दी हैं। संक्षेप में इस व्याख्या की विशेषताएं ये हैं—

(१) यह अत्यन्त सरल बनाई गई है। कठिन से कठिन स्थलों को भी इसमें आसानी से समझाया गया है जिससे छात्र को किसी प्रकार की कठिनता प्रतीत नहीं होती। (२) सूत्रों का शब्दार्थ पृथक् देकर विवरण द्वारा उसे स्पष्ट किया गया है और उदाहरणों में उसका पूर्ण समन्वय कर दिया गया है (३) प्रत्येक प्रयोग की सिद्धि का पूर्ण प्रकार दिखाया गया है, (४) सूत्र और वार्तिक के ऊपर उनके विधेय को स्पष्ट करने वाले शीर्षक लगा दिए गये हैं, (५) विसर्ग सन्धि आदि विशिष्ट स्थलों पर ऐसे चक्र दिए गए हैं जो अत्यन्त उपयोगी हैं, (६) षड्लिङ्ग में प्रत्येक शब्द के और तिङन्त में प्रत्येक धातु के पूर्णरूप दिए गए हैं, (७) सकर्मक, अकर्मक, फल, व्यापार आदि को परिभाषा द्वारा विशेष विवेचन और उदाहरण देकर समझाया गया है, (८) धातुओं के अनुबन्धों का फल चक्र द्वारा स्पष्ट करके सेट्-अनिट्, लिट् में क्रयादि नियम, थल् का भारद्वाज नियम बहुत स्पष्ट समझाया गया है, (९) उपसर्गों के योग से धातुओं के अर्थ में होनेवाला नियम बहुत स्पष्ट समझाया गया है, (१०) उपसर्गों के योग से धातुओं के अर्थ में होनेवाला अन्तर सर्वत्र दिखाया गया है! ऐसी अनेकों विशेषताएँ हैं जिनसे यह ग्रन्थ छात्रो के लिए निधि बन गया है।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

This translation commands a unique position in world of schol·rship. It was out-of-print for a long time and now it is published under the scheme of Ministry of Education, Govt. of India. Siddhanta Kaumudi is a critical and scholarly commentary on the Sutras of Panini by Bhattoji Diksita, a stalwart grammarian of the Panini system, who flourished in the first half of the 17th century. The work is exhaustive, yet not voluminous, difficult yet popular and critical yet lucid. The Sutras are arranged topic-wise and fully explained with examples and counter-examples.

PANINI is universally acknowledged as the First and Foremost descriptive grammarian of scientific lines and Siddhanta Kaumudi is a 'Gateway' to that great 'Panini Edifice' and hardly needs any introduction.

सिद्धान्तकौमुदी–प्रश्नावली

सोत्तरा, लेखक—श्री रामगोविन्दशुक्ल न्यायव्याकरणाचार्य

मूल्य प्रथम भाग १ ५०, द्वितीय भाग १ ५०, तृतीय भाग २·२५, चतुर्थ भाग २·७५

इस पुस्तक में सम्पूर्ण सिद्धान्तकौमुदी के सभी प्रष्टव्य स्थलों को प्रश्न और उत्तर के रूप में सिद्ध कर दिया गया है। इससे व्याकरण के छात्रों की एक बहुत बड़ी समस्या हल हो गई है। परीक्षा में उत्तीर्ण होने के साथ ही इस पुस्तक को पढ़नेवाले सिद्धान्तकौमुदी में पर्याप्त व्युत्पन्नता प्राप्त कर सकेंगे क्योंकि विद्वान् लेखक ने कोई स्थल छोड़ा नहीं है। सरल और सुबोध भाषा में उत्तम छपाई के साथ पुस्तक के चारो भाग तैयार हैं, जिसमें सिद्धान्तकौमुदी के प्रश्न पत्र भी दे दिये गये हैं।

सिद्धान्तकौमुदी–प्रयोगसूची

(खण्डानुक्रम से ४ खण्डों में) श्रीजगदीशचन्द्रशास्त्री 'शिरोमणि' (प्रथम भाग के रचयिता—पण्डित श्री जितेन्द्रियाचार्य) प्रत्येक भाग का नाम मात्र मूल्य खण्डानुक्रम से रखा गया है—१.५०, १.५०, १.७५, २.०० ।

सिद्धान्तकौमुदी व्युत्पत्ति का समुद्र है। कोमलमतिवाले छात्रों के लिए उसे समझना, कण्ठ रखना बड़ा कठिन होता है। बिना समझे प्रश्नोत्तरियों के आधार पर रटे हुये प्रयोगों को लिखने से परीक्षाओं में बहुत कम अंक प्राप्त होते हैं। इन सब

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

कठिनाइयों को दूर करने के लिये काशी के प्रकाण्ड विद्वान् श्रीजगदीशचन्द्रशास्त्री 'शिरोमणि' (प्रथम भाग के रचयिता—पण्डित श्रीजितेन्द्रियाचार्य जी हैं) ने बड़ी सरलता से प्रयोगों के सिद्धि प्रकार को सूत्र, वार्तिक, परिभाषा, और भाष्य सहित राष्ट्रभाषा हिन्दी में समझाया है।

इस पुस्तक के आधार पर सुगमता से 'सिद्धान्तकौमुदी' कण्ठ की जा सकती है, और परीक्षाओं में उत्तम सफलता प्राप्त की जा सकती है। अध्ययनकाल में प्रक्रियाओं को क्रमबद्ध रूप से स्मरण दिलाने में यह पुस्तक अत्यन्त उपयोगी हैं। विद्यालय का सहयोग न होने पर भी पाठक 'सिद्धान्तकौमुदी' में प्रवीणता प्राप्त कर सकता है। साथ ही 'पङ्क्तिचन्द्रिका' (संस्कृत में पङ्क्तियों का व्याख्यान) और 'प्रश्नपत्रावली' भी पुस्तक में संलग्न हैं।

वैदिक ग्रामर

(छात्र संस्करण)—मूल लेखक डा० मेक्डानल हिन्दी अनुवादक—डा० सत्यव्रत, दिल्ली विश्वविद्यालय, छप रही है।

हिन्दी में वैदिक साहित्य के व्याकरण को दर्शाने वाली कृतियों का अभाव ही रहा है। अतएव इस त्रुटि को पूर्ण करने के लिए A. A. Macdonell कृत Vedic Grammar for Student's का प्रामाणिक अनुवाद, अनुभवी विद्वान डा० सत्य व्रत ने वैदिक साहित्य के छात्रों की कठिनाई को अनुभव करते हुए किया है।

वैदिक व्याकरण पाणिनीय व्याकरण से बहुत मात्रा में भिन्न है। इस पुस्तक में वैदिक ध्वनियों का ध्वन्यात्मक अनुसंधान एवं वैदिक साहित्य का भाषा विज्ञान उज्ज्वल करके प्रत्यक्ष कर दिया गया है और वैदिक ध्वनियों की विशेषता को तीसरे परिशिष्ट में भली प्रकार दर्शा दिया गया है। वैदिक साहित्य में वैदिक गद्य और पद्य दोनों ही व्याकरण के दृष्टिकोण से इसमें वर्णित हैं और जहां कहीं ऋग्वेद से अन्य वेदों की भाषा में भिन्नता पाई गई है उसका भी यथोचित निराकरण कर दिया गया है।

विषय प्रवेश में वैदिक ध्वन्यात्मक परिचय, पदों का सुमधुर संयोग, विभक्तियों के रूप, क्रिया पद के रूप, अव्यय, नामधातु तथा उनकी बनावट और संयोग और वाक्य रचना आदि प्रदर्शित हैं। परिशिष्टों में क्रियाएं, छन्द भेद व ध्वन्यात्मक परिचय व अन्त में वैदिक व साधारण सूचियां दे दी गई हैं।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

व्याकरणमहाभाष्य

महर्षिपतञ्जलिकृत (१-३ आह्निक) पं० चारुदेवशास्त्रिकृत हिन्दी टीका सहित मूल्य ४.००

यों तो व्याकरण को मुख कहा जाता है उसमें भी पातंजलमहाभाष्य के बिना व्याकरण का ज्ञान पूर्ण नहीं माना जाता। ऐसे अनुपम ग्रन्थ के ज्ञान से हिन्दो जगत अपरिचित ही था। परीक्षार्थी छात्रों को भी बड़ी कठिनाई का अनुभव करना पड़ता था। अतः हमारे आग्रह पर पाणिनीय व्याकरण के अधिकारी विद्वान् पं० चारुदेव शास्त्री ने इसका सुन्दर सरल और प्रांजल भाषा में अनुवाद किया है मूल का शब्दानुवाद तो है ही स्थान-स्थान पर विस्तृत टिप्पणियों द्वारा विशिष्ट स्थलों को इस प्रकार समझा दिया है कि मूल ग्रन्थ आसानी से लग जाता है।

व्याकरणमहाभाष्य

(महर्षिपतञ्जलिकृत। प्रदीपोद्योत तथा छाया सहित सम्पूर्ण महाभाष्य भारत सरकार की योजना अनुसार छप रहा है। सम्पूर्ण पुस्तक का मूल्य १९.६४ होगा। प्रतीक्षा करें।

Laghu Siddhanta Kaumudi

(English Version) By Dr. James R. Ballantyne, LL. D., *Demy Octavo : pp.* 420 *Cloth bound : Rs* 1·00

The importance of Laghu Siddhanta Kaumudi cannot be under- estimated for any student starting with Sanskrit Studies This is an English Translation of the same with the original Sutras with their Sanskrit commentary retained by an accomplished author with a deep understanding of the subject and remarkable wisdom that reveals devoted labour. Ballantyne goes on to explain the Panini Sutras, 'the studied brevity' of which Mr. Colebrooke observed 'renders in the highest degree obscure,' with alphabetical Index of the Aphorisms, Crude Forms of Words (PRATIPADIKAS) and Verbs.

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

मध्यसिद्धान्त-कौमुदी

वरदराजप्रणीत

प्रभाकर विवृति (सहित) पक्की कपड़े की जिल्द सहित सर्वांग सुन्दर इस पुस्तक का मूल्य केवल ५·५० मात्र

हिन्दीभाषानुवाद एवं अत्यंतोपयोगी परिशिष्ट तथा प्रश्नोत्तरों से सुसज्जित दूसरा संस्करण। पृष्ठ आठ सौ, सुन्दर छपाई अच्छे कागज पर विशुद्ध संस्करण। इस संस्करण में विद्यार्थियों को मध्यकौमुदी का भाव हृदयंगम कराने तथा उसको परीक्षाओं में लिखने के लिये विद्वान् व्याख्याकार ने संस्कृत तथा हिन्दी ऐसी सरल एवं सुबोध व्याख्या की है कि अब विद्यार्थियों को मध्यकौमुदी के प्रश्नों का उत्तर लिखना सहज हो गया है। सुविधा के लिये सूत्रों को पृथक् पंक्ति में मोटे अक्षरों में दिया गया है और उनकी क्रमिक संख्या और अष्टाध्यायी क्रम संख्या भी दी गई है। अन्त में १० वर्षों के प्रश्न-पत्र तथा उनके उत्तरों के साथ सूत्र, वार्तिक, धातुपाठों की अकारादि क्रम से सूची दी गई है। मध्यकौमुदी में आये सभी गणों में पठित सभी शब्दों का पाठ भी दिया गया है। अव्ययों का हिन्दी में अर्थ भी लिख दिया गया है।

छात्रोपयोगी 'अशुद्धिप्रदर्शन' अशुद्धिसंशोधन के साथ देकर छात्रों को अनुवादादि में शुद्धसंस्कृत लिखने का दिग्दर्शन कराया गया है। 'पाणिनीय शिक्षा' भी लघु टिप्पणी के साथ दी गई है, जो कि विद्यार्थियों को अवश्य मननीय है। इस संस्करण के लिये छात्र बड़ी देर से लालायित थे।

पालिमहाव्याकरण

भिक्षु—श्रीजगदीशकश्यपकृत

क्राउन आठ पेजी : पृष्ठ संख्या ६५४ : सजिल्द : मूल्य १०·००

'मागधी भाषा' मगध की खास अपनी भाषा न थी; किन्तु सारे मध्य-मंडल में बोली जाने वाली वह भाषा थी जिसे मगध सम्राटों ने अधिक उपयोगी देख कर अपनी राज भाषा बनाया था। इसी मागधी भाषा को बुद्ध ने धर्म-प्रचार का सर्वोत्तम माध्यम समझ, इसी में अपने सारे उपदेश दिये। धीरे २ उस भाषा का ही नाम—जिसमें बुद्ध वचन सुरक्षित था—'पालि' हो गया जान पड़ता है।

पालि-व्याकरणों में 'मोग्गल्लान' अत्यन्त पूर्ण और प्रौढ़ है। इसी के सारे सूत्रों को लेखक ने इस तरह सजा कर सरल भाषा में समझाने का प्रयत्न किया है, कि क्रमशः प्रवेश कर व्याकरण पर पूरा अधिकार प्राप्त कर लिया जा सके। मूल

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

पुस्तक केवल २८६ पृष्ठों में ही समाप्त हो जाती है; और, इसमें भी आधी में अधिक पाद-टिप्पणियां हैं। साधारण विद्यार्थी इन पाद-टिप्पणियों को छोड़ कर विषय पर अधिकार कर सकते हैं और जो कुछ गहराई से अध्ययन करना चाहते हैं, वे पाद-टिप्पणियों से भी सामग्री ग्रहण कर सकते हैं।

पुस्तक की विशेषता यह है कि प्रत्येक 'पाठ' के अन्त में एक अभ्यास दे दिया गया है, जो विद्यार्थियों के लिये लाभदायक सिद्ध होगा। अभ्यास की भाषा तथा शैली को त्रिपिटक के अधिक से अधिक निकट रखने का लेखक का प्रयास है और पुस्तक के अन्त में, विद्यार्थियों की सहायतार्थ अभ्यासों के लिये संकेत भी प्रचुर मात्रा में दे दिये गये हैं।

प्राकृत मार्गोपदेशिका

पं० बेचरदास

क्राउन आठ पेजी : पृष्ठ संख्या लगभग ४०० : मूल्य १०·००

शब्दों की जटिलता और विवशता के लिए कोश जितना जरूरी है उतना ही भाषाशास्त्र के सम्यक् अनुशीलन तथा साहित्यिक मूल्याकन के लिए उस भाषा का व्याकरण भी नितांत आवश्यक है। संस्कृत भाषा की तरह प्राकृत भाषा विशाल और दुर्गम भी है। प्राकृत भाषा के गहन अध्येता और जैनागम ग्रन्थों के विशिष्ट व्याख्याता पण्डित बेचरदासजी दोशी द्वारा लिखित 'प्राकृतमार्गोपदेशिका' उसी गहराई की ओर बढ़ने के लिए सुनियोजित सोपान है।

प्राकृतमार्गोपदेशिका का प्रकाशन आज से बहुत पहिले गुजराती भाषा में हुआ परन्तु हिन्दी भाषा भाषी स्वाध्यायी विद्द्वर्ग या विद्यार्थी समाज मात्र गुजराती न जानने के कारण उसकी उत्कृष्टता तथा मौलिकता से वंचित ही रह जाता था। पंडित जी के ही कर कमलों से यह हिन्दी रूपान्तर एक परिवर्द्धित संस्करण के रूप में पूरा किया गया है। पंडित जी ने आचार्य हेमचन्द्र के नियमों से नियंत्रित इस व्याकरण का ऐसा मार्ग निर्देशन किया है कि इसके सहारे साधारण से साधारण विद्यार्थी भी इस भाषा का ज्ञान प्राप्त कर लेगा।

इसमें प्राकृत के नियमों तथा उपनियमों तथा उपनियमों का पालि के नियमों के साथ कहाँ-कहाँ ताल-मेल है, कहाँ अपवाद है, मगही, अपभ्रंश के शब्दों के साथ कहाँ किस रूप में भिन्नता है, वैदिक शब्दों के तथा आर्ष प्राकृत के शब्दों के उच्चारण में कहाँ-कहाँ भिन्नता व समता है, इत्यादि बातों का सोदाहरण विवेचन किया गया है। साथ ही प्राकृत के अध्ययन करने वालों को पालि और अपभ्रंश के मौलिक सिद्धान्तों

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

का भी परिचय मिल जाता है। इस प्रकार अब तक के प्रकाशिक प्राकृत के व्याकरणों में इसका अपना अद्वितीय स्थान है।

Prakrit Prakasa of Vararuchi

By E. B. Cowell. *Demy Octavo* : *Pages* 265 :: *Bound* :
Price Rs. 16·00

This is the first book in English to give a complete edition of the original text of the *Prakritaprakasa* or the Prakrit Grammar of Vararuchi, with notes, English Translation, Index of Prakrit words, Preface on the Prakrit dialect and an Easy Introduction to Prakrit Grammar.

सिद्धान्तकौमुदी की फक्किकाओं को कठिनता से घबराये हुए छात्रों का सम्बल

फक्किकादर्श

लेखक—पं० विश्वनाथझा व्या० आ० मूल्य १·२५ मात्र

Sanskrit Grammar

Including Both, The Classical Language and The Old Dialects, of Veda and Brahmana *By* William Dwight Whitney, *Demy Octavo pp. 586 Cloth bound, Cheap Indian Edition*
Price Rs. 10·00

This Sanskrit Grammar is on a somewhat different plan from those already in use. It presents the facts of the language primarily as they show themselves in use in the literature, and only secondarily as they are laid down by the native grammarians. It also includes in the presentation the forms and constructions of the older language, as exhibited in the Veda and the Brahmana.

The author casts all students, classifications and so on, into a form consistent with the teachings of linguistic science. Also care has been taken to facilitate the transition from the old to the new. It has been sought also to help an appreciation of the character of the language by putting its facts as far as possible into a statistical form. Regard has been cons-

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

tantly had to the practical needs of the learner of the language, and it has been attempted, by due arrangement and by the use of different sizes of type, to make the work as usable by one whose object is to acquire knowledge of the classical Sanskrit alone as those are in which the earlier forms are not included. A Historical treatment of the facts of the language has also been made.

संस्कृतानुवाद–निबन्धादर्श

पूर्णानन्द गौड़

उत्तर प्रदेश, बिहार, पंजाब आदि प्रदेशों की संस्कृत तथा अंग्रेजी परीक्षाओं में संस्कृत में अनुवाद एवं निबन्ध को प्रमुख स्थान दिया गया है। अभ्यास एवं समझ की कमी के कारण छात्र अनुवाद और निबन्ध लिखने में असफल से रहते हैं। इसी बात को ध्यान में रख कर गौड़ जी ने उक्त पुस्तक का निर्माण कर छात्रों का कठिनाई दूर कर दी है। पुस्तक में अनुवाद कराने के नियम, सहायतार्थ शब्द और आदर्श वाक्यों को देकर पुस्तक की उपादेयता बढ़ा दी है। अभ्यासार्थ सरल एवं छोटे छोटे निबन्धों ने पुस्तक में चार चाँद लगा दिये हैं। मूल्य १.५० मात्र।

संस्कृतरचनानुवादचन्द्रिका

पं० रामबालक शास्त्री

हाईस्कूल की परीक्षा देनेवालों को संस्कृत से हिन्दी में अनुवाद करने और उसमें प्रस्ताव आदि लिखने में बड़ी कठिनाई होती है। जयनारायण कालेज काशी के प्रवीण अध्यापक, संस्कृत के यशस्वी विद्वान् पं० रामबालक जी शास्त्री ने इस विशिष्ट पुस्तक में अपने अनुभवों से यह कठिनाई दूर की है। शास्त्री जी ने प्रत्येक प्रान्त के पाठ्यक्रम को सामने रखा है। इसलिये पुस्तक प्रारम्भिक परीक्षा देनेवाले सभी विद्यार्थियों के लिए उपयोगी है। स्वतन्त्ररूप में आधुनिक ढंग से संस्कृत अध्ययन आरम्भ करने वालों के लिए पुस्तक अत्यधिक सहायक सिद्ध होगी। मूल्य १.२५

सरलसंस्कृतव्याकरण

प्रो० सत्यांशुमोहन मुखोपाध्याय एम० ए० एल० टी०

पौने तीन सौ पृष्ठ और नयनाभिराम छपाई। मूल्य केवल २.००

टीचर्स ट्रेनिंग कालेज, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय के प्रवीण शिक्षा शास्त्री और मान्य

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

लेखक मुखोपाध्यायजी का विश्वास है कि संस्कृत व्याकरण अन्य भाषाओं के व्याकरणों की तुलना में कठिन नहीं हूँ। यदि संस्कृत व्याकरण 'अ-सरल' जान पड़ता हैं तो इसका उत्तरदायित्व आज की शिक्षण पद्धति और देशी-विदेशी भाषाओं में लिखी गई पुस्तकों पर है।

इस विश्वास के साथ मुखोपाध्याय महोदय ने हाई-स्कूल, एडमिशन और इण्टर-मीडिएट की परीक्षाओं में बैठनेवाले विद्यार्थियों के लिए यह अत्यन्त उपयोगी पुस्तक उपस्थित की है। विद्वानों का कहना है कि इस पुस्तक में विषय का विन्यास ऐसे नवीन एवं सरल रूप में हुआ है कि महर्षि पाणिनि के मार्मिक सिद्धान्त मनोरम एवं हृदयग्राही हो गये हैं। परीक्षा में सफलता प्राप्त करने के साथ-साथ जो विद्यार्थी महामति पाणिनि के सिद्धान्त को भी पूर्णतया समझना चाहते हैं वे इस पुस्तक से अवश्य लाभ उठावें।

सिद्धान्तकौमुदी

भट्टोजिदीक्षित प्रणीता

बालमनोरमा तथा तत्त्वबोधिनी दो सरल संस्कृत टीकाओं सहित। पृष्ठ संख्या २५८५, कपड़े की चार जिल्दों सहित सम्पूर्ण, मूल्य रु० २१·००
सिद्धान्तकौमुदी जैसे कठिन ग्रन्थ को समझने के लिए यह दोनों व्याख्याएँ नितान्त आवश्यक है। इन दोनों टीकाओं के सहारे छात्र इस दुरूह ग्रन्थ को अनायास ही स्वयं लगा सकते हैं।

Siddhanta Kaumudi of Bhattoji Diksita

Edited and translated into English by the late Sris-Chandra Vasu. Complete in 2 Vols. *Royal octavo pages* 2504 *Full cloth bound with gold letters. Price Rs.* 73.25.

This translation commands a unique position in world of scholarship. It was out-of-print from a long time and now it is published under the scheme of Ministry of Education, Govt. of India. Siddhanta Kaumudi is a critical and scholarly commentary on the Sutras of Panini by Bhattoji Diksita, a stalwart grammarian of the Panini system, who flourished in the first half of the 17th century. The work is exhaustive, yet not voluminous, difficult yet popular and critical yet lucid.

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

The Sutras are arranged topic-wise and fully explained with examples and counter-examples.

PANINI is universally acknowledged as the First and Foremost descriptive grammarian on scientific lines and Siddhant Kaumudi is a 'Gateway' to that great 'Panini Edifice' and hardly needs any introduction.

वैयाकरणसिद्धान्तकौमुदी

लक्ष्मीव्याख्या

रायल आठ पेजी :: पृष्ठ संख्या ८५६ :: मूल्य ३५.००

भारत के सुप्रसिद्ध विद्वान्, सर्वतन्त्र स्वतन्त्र विद्यावयोवृद्ध पं० श्रीसुभापति शर्मा उपाध्याय (भू० पू० प्रधानाचार्य बिरला सं० कालेज, एम्० एल्० सी०) विरचित अभिनवलक्ष्मीव्याख्या संवलित वैयाकरणसिद्धान्तकौमुदी के दो भाग प्रकाशित हो गये हैं। व्याख्याकार महानुभाव ने इस व्याख्या में व्याकरणादि विभिन्न शास्त्रों के गूढ़ अद्यावधि अप्रकाशित विषयों का संग्रह गवेषणात्मक पद्धति से किया हैं। जो अन्यत्र अलभ्य है। शब्दों की व्युत्पत्ति, सिद्धिप्रकार ग्रन्थग्रन्थिविभेदन, एवं संस्कृत के समस्त कोषों के आधार पर उन शब्दों के प्रयोग विषय को वैज्ञानिक ढङ्ग से लेखक महोदय ने प्रस्तुत किया है। इस व्याख्या में समस्त शब्दशास्त्र का मन्थन पूर्वक चमत्कृतिजनक विषयों का समावेश है। टीकाकार के लगातार ६० वर्ष तक अविच्छिन्न परम्परा से अध्यापनकार्य से स्वानुभूति गम्य मौलिक स्वतन्त्र विषयों का लक्ष्मीव्याख्या में अनेकत्र स्थलों में निरूपण (इति उपाध्यायाः शब्द से) किया गया है। प्राचीन समस्त टीकाओं का अवलोकन पूर्वक तत्तत्स्थलो में उन टीकाकारों के मतों का खण्डन भी इसमें सन्निहित है। एवं उदाहरणरूप में ग्रन्थ में प्रस्तुत सम्पूर्ण शब्दों का योगज अर्थ इसमें किया गया हैं। इस अर्थों की प्रामाणिकता के लिए विभिन्नप्रमाणों का विशाल संग्रह व्याख्या में विद्यमान है। जिससे अध्यापक महानुभावों को अध्यापन कार्य में सुगमता मिलेगी यह व्याख्या वरदरूप में सिद्ध होगी। तथा फक्किकाओं का विशद-विवेचन, लाघव गौरवाविवेचनपूर्वक न्यासविमर्श आदि से शास्त्रार्थ के इच्छुक विद्वज्जनों को प्रचुर सामग्री इससे प्राप्त होगी।

इस टीका का वैशिष्ट्य दो भाग के 'आमुख' में विद्वान् सम्पादक द्वारा संक्षेपतः संगृहीत है। संस्कृत भाषा में वर्ण विचार दार्शनिक सम्मत नियम—वरिसंख्या विवेचन, वैज्ञानिक दृष्टि से द्वीपविमर्श, अखण्ड पद विचार, अभिवादन प्रकार, पञ्च-

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

सन्धिविमर्श, बालमनोरमादिमत खण्डन, तत्त्वबोधिनीकारमतपर्य्यालोचन, परिशिष्टांश में विभिन्न सिद्धान्तों का प्रतिपादन, गुरुवर श्री दामोदर शास्त्री भारद्वाज महोदय के अपूर्व मौलिक पदार्थ प्रदर्शन (अत्र गुरव आदि शब्दों से) शैवशाक्ततन्त्रानुसार शब्द विमर्श, मातृकाचक्रानुसारवर्णोपन्यास, षोडशमातृकास्वरूप, अष्टशक्तियों, नव नाद, दार्शनिक रीति से भगवान् के सुदर्शनचक्रविमर्श, तीन ही सन्धियों, 'त्रय एव सन्धयः' इति महावैयाकरण श्रीरामाज्ञापाण्डेय सम्पादक द्वारा कोशों में अनुपलब्ध शब्दों का निर्देश, व्यवहार मार्ग में आगत शब्दों के पुंलिङ्गादि विमर्श, अभ्यास निरूपण, श्रीपञ्चोलिसंगृहीत विशदकालविमर्श, गर्गाचार्य-महाभाष्यकार का मतभेद रहस्य, इस स्वल्पाकार सूचना में लक्ष्मीव्याख्या का पूर्वोक्त वर्णन शब्दपयोनिधि का एक बिन्दु सम है। लक्ष्मी व्याख्या आदितः अन्त तक मननीय है। अशुद्धियों से रहित इस प्रकार का प्रथम संस्करण पुस्तकालयों, एवं संस्कृतज्ञों के लिए सर्वथा उपादेय है। यह संस्करण कारक प्रकरणान्त है।

"व्याकरण, रचना एवं निबन्ध" के अन्य महत्वपूर्ण ग्रन्थ

१	अनुवादकला—चारुदेव शास्त्री	२·५०
२	अनुवादकौमुदी—गुरुप्रसाद शास्त्री	·७५
३	अनुवादकौमुदी—दुर्गादत्त पन्त	१·५०
४	अनुवादचन्द्रिका—चक्रधर हंस	३·५०
५	अनुवादचन्द्रिका—लोकमणि जोशी	१·२५
६	अनुवादतरंगिनी—विद्यावागीश देवशर्मा शास्त्री	१·८०
७	अनुवादप्रभा—गौरीशंकर शास्त्री	१·२५
८	अपभ्रंशप्रकाश—देवेन्द्र कुमार	३·००
९	अपभ्रंशव्याकरण—केशवराम का० शास्त्री	४·००
१०	अभिनवनिबन्धावली—श्यामलाकान्त वर्मा	४·५०
११	अभिनवप्राकृतव्याकरण—नेमिचन्द्र शास्त्री	१५·००
१२	अर्थप्रकाशिका—राधारमण पाण्डेय	१५·००
१३	अव्ययार्थ (वेदाङ्गप्रकाश)	·२५
१४	अष्टाध्यायी सूत्रपाठ-मूल (शुद्ध संस्करण)—ब्रह्मदत्त जिज्ञासु	·६२
१५	अष्टाध्यायी-मूल	·८०
16	Ashtadhyayi of Panini : 2 Vols : with English Translation & Notes by S. C. Vasu	49·00

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

१७	अष्टाध्यायीप्रकाशिका—देवप्रकाश पातंजल	८·००
१८	अष्टाध्यायीभाष्य—स्वामीदयानन्द भाष्य, २ भाग	१३·००
१९	अष्टाध्यायीभाष्य—ले० ब्रह्मदत्त जिज्ञासु प्रथम भाग	१२·००
२०	,, —ले० ब्रह्मदत्त जिज्ञासु द्वितीय भाग	१०·००
२१	अष्टाध्यायीशब्दानुक्रमणिका—श्रीधरशास्त्री	१२·००
२२	अष्टाध्यायीसूत्रपाठ—पाणिनि	·७५
२३	अष्टाध्यायीसूत्रपाठ—पाणिनि कृत वार्तिकादियुक्त	१·२५
२४	अष्टाध्यायीसूत्रपाठ—वार्तिक, गण, धातु, परिभाषा पाठ व पाणिनायशिक्षा सहित	१·५०
२५	आचार्य हेमचन्द्र और उनका शब्दानुशासन एक अध्ययन—नेमिचन्द्र शास्त्री	१५·००
२६	आदर्शप्रस्तावरत्नमाला—विश्वनाथ शास्त्री	५·००
२७	आदर्शलघुकौमुदी—म०म० मथुराप्रसाद दीक्षित	२·००
२८	आर्यभाषापाठावली—भवानी प्रसाद	१·५०
२९	आर्षप्राकृतिक व्याकरण—ले० श्री जगन्मोहन वर्मा	·२५
३०	उक्तिव्यक्ति प्रकरण—प० दमोदर विरचित	८·००
३१	उणादिकोष—अजमेर	१·८०
३२	उणादिकोश—महादेववेदान्तिकृत	११·२५
३३	उणादिसूत्र-औणादिक पदार्णव वृति पेरुसूरि कृत	४·५०
३४	उत्तरपद्यावली—सपरिष्कृता	·२५
३५	उपसर्गवृत्ति	०·१०
३६	ऋजुपाणिनीयम्-गोपालशास्त्री	०·५०
३७	कच्चायनव्याकरण (पालि व्याकरण)—लक्ष्मीनारायण तिवारी	१५·००
३८	कविकल्पद्रुम – बोपदेव (धातुकोष) बालकृष्ण	६·००
39	Kavi Sirobhusanama or Ahobala Panditiyamu (A Telugu grammar in Sanskrit I)	16·00
४०	कारकचक्रम—माधवी टोका प्रदीप टिप्पणी सहित	१·२५
४१	कारकसंबन्धोद्योत—रामसनिन्द रचित	१·७५
४२	कारकोय—अजमेर	·४५
४३	कारकोल्लास—भरतमल्लि	·२५
४४	काले धातुकोष	१·५०

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

४५ काशकृत्स्नधातुव्याख्यानम् (कन्नडटीका का संस्कृत रूपान्तर) ६·२५
४६ काशकृत्स्न व्याकरण और उसके उपलब्ध सूत्र—युधिष्ठिर मीमांसाक १·००
४७ काशिका-पदमंजरी तथा न्यास सहित, भाग १-४ प्रत्येक २०·००
४८ काशिकाविवरणपंजिका—४ भाग, वामन जयादित्य काशिका व्याख्या ६५·००
४९ काशिकावृत्ति १-६—प्रथम भाग ·४०
५० काशिकावृत्ति—वामन जयादित्य, प्रस्तावना ले० श्री ब्रह्मदत्त जिज्ञासु १२·००
51 Concordance of Sanskrit Dhatupathas—G. B. Palsule 12·00
52 Comparative Grammar of the Prakrit Language R. Pischel 50·00
५३ कृदन्तरूपमाला—प० रामसुब्रह्मण्य शास्त्रिभि, २ भाग २०.००
५४ कौमुदीकथाकल्लोलिनी—रामनारायण शास्त्री ८·७५
५५ चीरतरंगणी—चीरस्वामीकृत धातुपाठ की प्राचीनतम व्याख्या १२·००
५६ गणपाठ—अजमेर ·६०
57 Gana Ratna Mahodadhi of Vardhamana Ed. by J. Eggline 15·00
58 Guide to. Sanskrit Translation and Composition 1·25
५९ गीर्वाणपदमंजरी एवं गीर्वाणवनमञ्जरी—सम्पादक यू० पी० शाह ८·००
६० गुजरातीस्वरव्यञ्जनप्रक्रिया २·००
६१ गुप्ताशुद्धिप्रदर्शन—अम्बिकादत्त व्यास ०·७५
६२ गुरुप्रसाद तथा गुरुप्रसादशेषम् —ताता सुब्बारायशास्त्रि कृत, २ भाग १९·७५
63 Gotras in Panini by V. S. Agrawal 3·00
६४ गौरीव्याकरण १·२५
65 Grammar of the Sanskrit Language—H. H. Wilson 20·00
66 Grammetical Method in Panini by Betly Shefts 20·00
६७ चान्द्रव्याकरण—चन्द्रगोमिन, २ भाग २७·००
६८ चित्रनिबन्धावली (संस्कृतनिबन्ध)—रघुनाथ शर्मा १०·००
६९ चित्रप्रभा-लघुशब्द रत्न व्याख्या, हरिशास्त्रिकृत ४·५०
७० जैनेन्द्रमहावृत्ति (आचार्य अभयनन्दि) शम्भुनाथ त्रिपाठी सम्पादक १५·००
७१ जैनेन्द्रव्याकरण—श्रीदेवनन्दि तथा उभयनन्दिरचित ५·००
72 Jottings on Sanskrit Metrics by Prof. Siva Prasada Bhattacharya 5·62

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

७३	तिङन्तमञ्जरी—धातुपाठसहित	·४०
७४	तिङन्तार्णवतरणि—धातुसंख्यायुक्त	३०·००
75	Tripadi—H. E. Buiskool	48·00
७६	दशपाद्युणादिवृत्तिः—सम्पा० पं० युधिष्ठिर मीमांसक	३·२५
७७	देववाणीप्रवेशिका—सम्पा० अनुसूयाप्रसाद भट्ट, २ भाग	२·००
७८	दैवम्–पुरुषकार—वार्तिकोपेतन् (धातुपाठ विषयक) पं० विद्यासागर	८·००
७९	धातुप्रदीप—मैत्रेयरचित	८·००
८०	धातुपाठ—अजमेर	·७५
८१	धातुमाला	१·००
८२	धातुरत्नाकर (१–२, ४–८)—श्रीलावण्यविजयजी	३५·००
८३	धातुरूपसंग्रह—चरणदासशास्त्री	५·५०
८४	धातुरूपमञ्जरी—विद्यासागर के० एल० बी० शास्त्री	२·००
८५	धातुरूपावली—परिष्कर्ता, गोपालशास्त्री नेने	·५०
८६	धातुरूपावली—श्रीनृसिंहराम उपाध्याय	१·२५
८७	धातुरूपावली—पं० श्री शिवदत्त मिश्र शास्त्री	१ २४
८८	धातुरूपावली—गुरुप्रसादशास्त्री	·३७
८९	धातुरूपावली—निर्णयसागर	·७०
९०	ध्वनिविचार—नारायण गोविन्द	५·००
९१	ध्वनिविज्ञान—गोलोक विहारी	१०·००
९२	नन्दिकेश्वरकाशिका—उपमन्यु कृत टीका सहित	०·२५
९३	नागेशांशनिर्णय—(परिभाषेन्दुशेखर व्याख्या)	१·२५
९४	निबन्धप्रकाश—कृष्णकुमार अवस्थी	२·००
९५	निबन्धप्रभा—प्रो० रामरंग शर्मा	१·५०
९६	निबन्धसुधा—सम्पा. श्री कपिलदेव त्रिपाठी	२·००
९७	निबन्धसौरभ (प्रथमापरिक्षोपयोगी)—बाबूलाल मिश्र	१·२५
९८	न्यासकल्पलता अर्थात् पाणिनीसन्न्यास शास्त्रार्थ	१·००
९९	पदवाक्यरत्नाकर—गोकुलनाथउपाध्याय, टीकाकार—यदुनाथ मिश्र	१५·००
१००	पदार्थदीपिका—कौण्डभट्ट	·५०
१०१	परमलघुकला (परमलघुमजूषा प्रश्नोत्तरी)	१·००
१०२	परमलघुमञ्जूषा—सम्पा. पं० कालिकाप्रसाद शुक्ल	६·२५
१०३	परमलघुमञ्जूषा "अर्थदीपिका" टीका टिप्पणी सहित	१·२५

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

१०४ परिभाषावृत्तिज्ञापकसमुच्चय व कारकचक्रम्—दिनेशचन्द्र १५·००

105 Paribhashendu Tippani—Nagesa Gudhartha Dipika by P. Venkateswara Sharti 28·15

१०६ परिभाषेन्दुदीपिका—हरिशंकर झा ०·७५

१०७ परिभाषेन्दुप्रकाश—पं० नारायण दत्त शर्मा त्रिपाठी १·५०

१०९ परिभाषेन्दुप्रश्नपञ्जिका (परिभाषेन्दुशेखर प्रश्नोत्तरी) ·६५

११० परिभाषेन्दुप्रश्नोत्तरी—पं० रामावतार त्रिपाठी ·६४

१११ परिभाषेन्दुशेखर—'बृहच्छास्त्रार्थकला' टीका सहित, ३·००

११२ परिभाषेन्दुशेखर—वैद्यनाथकृत गदा टीका सहित ३·५०

११३ परिभाषेन्दुशेखर–२ भाग, सम्पा० कीलहार्न (With English Translation) २७·००

११४ परिभाषेन्दुशेखर—तत्वप्रकाशिकाभूति टीका ५·५०

११५ परिभाषेन्दुशेखरलघुजटाजूट—पं०गोविन्दशास्त्री ९·००

११६ परिष्कारदर्पणम्—'शास्त्रार्थकला'सहित २·००

११७ पंक्तिचन्द्रिका—द्वितीयखंड, श्री गंगाप्रसादशास्त्री १·००

११८ पाणिनिसूत्रव्याख्या—सोदाहरणश्लोका, वीरराघवाचार्य, दो भाग ३१·७५

११९ पाणिनिकालीनभारतवर्ष—डा० वासुदेवशरणअग्रवाल १५·००

120 Paníni : His Place in Sanskrit Literature—Goldstucker 16·00

121 Panini's Grammatik—Otto Bohtlingk 220·00

१२२ पाणिनीयधातुपाठ ३·३७

१२३ पाणिनीयधातुसमीक्षा—भागीरथी प्रसाद त्रिपाठी १८·५०

१२४ पाणिनीयपरिचय—वासुदेवशरण अग्रवाल ५·००

१२५ पाणिनीयप्रदीप—रामलग्न त्रिपाठी, २ भाग १·२४

१२६ पाणिनीयप्रबोध (पूर्वार्ध तथा उत्तरार्ध) २·२५

१२७ पाणिनीयप्रशस्ति—गोपालशास्त्री ·२५

१२८ पाणिनीयव्याकरणसार—रामजन्म महतो, १–६ भाग १२·७५

१२९ पाणिनीयव्याकरणवादरत्नम्—सूर्यनारायणशुक्ल, २ भाग ५·००

१३० पाणिनीय व्याकरण का अनुशीलन—रामशंकर भट्टाचार्य १२·००

१३१ पाणिनीयशिक्षा ·२०

१३२ पाणिनीयशिक्षा—गुरुप्रसादशास्त्री ·५०

१३३ पाणिनीयशिक्षा 'प्रदीप' व्याख्या सहित ·४०

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

१३४ पाणिनीयाष्टकम्—दो भाग १४·००
१३५ पाणिनीयसिद्धान्तकौमुदी (कारक) भा. टी. मथुराप्रसाद ३·००
१३६ पाणिनीयसिद्धान्तकौमुदी—मूल, मथुराप्रसाद दीक्षित ३·५०
१३७ पातञ्जलमहाभाष्य—पं० श्री छज्जूराम विद्यासागर १-२ आह्निक २·५०
१३८ पातञ्जलमहाभाष्य—(हिन्दी) नवाह्निक—अनुवाद वासुदेव शास्त्री अभ्यंकर २५·००
139 Patanjal Mahabhasya—K. Chandra Chatterjee 5·00
140 Patanjal Vaiyakarana Mahabhasya (Marathi Trans.) by Vasudeva Shastri Abhyankar, 7 Parts 80·00
१४१ पातञ्जलव्याकरणमहाभाष्य—प्रथम भाग (नवाह्निक) कैयट विरचित प्रदीप, नागोजी भट्टकृत उद्योत तथा पायगुण्डे कृत छाया सहित १६·००
१४२ पातञ्जलव्याकरणमहाभाष्य—तृतीय भाग (विधि प्रकरणरूपम्) कैयटकृत प्रदीप तथा उद्योत सहित ६·००
१४३ पातञ्जलव्याकरणमहाभाष्यम्—चतुर्थ भाग (चतुर्थ पञ्चमाध्यायात्मकं) ११·००
१४४ पातञ्जलव्याकरणमहाभाष्यम् ५वाँ भाग (स्थान विधि रूप) १२·००
१४५ पातञ्जलमहाभाष्य-तन्त्राधिकार प्रदीप तथा उद्योत २ भाग, ७ अ., २ पा., १ आ. ६·५०
१४६ पातञ्जलमहाभाष्यम्—कैयट प्रदीपेन अन्नभट्टकृत प्रदीपोद्योतेन च सवलितम् १०·३७
१४७ पातञ्जलव्याकरणमहाभाष्य—२ भाग, सम्पा० कीलहार्न ४०·००
१४८ पातञ्जलव्याकरणमहाभाष्य, १-३, आह्निक भा० टी० चारुदेव शास्त्री ४·००
१४९ पातञ्जलव्याकरणमहाभाष्य—१० खण्ड (सम्पूर्ण) प्रदीप तथा उद्योत सहित—वेदव्रत सम्पादित ७५·००
१५० पातंजलव्याकरणमहाभाष्य प्रदीपोद्योत तथा छायासहित, सम्पूर्ण १९·६४
१५१ पातंजलव्याकरणमहाभाष्य (नवाह्निक) हि० टी० सहित प्रो० चारुदेव शास्त्री यन्त्रस्थ
१५२ पातंजलव्याकरण महाभाष्यम् (नवान्हिकम) प्रदीप, उद्योत, तत्त्वालोक टीका त्रयोपेतम्—सम्पा म० म० पं० गिरिधर शर्मा १५·००
१५३ पातंजलव्याकरणमहाभाष्य—सप्रदीप हिन्दी व्याख्योपेतम्, प्रथम आन्हिक २·००
१५४ पातंजलमहाभाष्य—नवाह्निक, कीलहार्न सम्पादित, के. बी. अभ्यङ्कर संशोधित ४·००

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

१५५ पातंजलव्याकरणमहाभाष्यप्रकाश (महाभाष्य प्रश्नोत्तरी) ·७५
१५६ पालिपाठमाला– भिक्षुधर्मरक्षित १·००
१५७ पालीप्रबोध—आद्यादत्त ठाकुर २·५०
१५८ पालीप्राकृत व्याकरण—मथुराप्रसाददीक्षित १·५०
१५९ पालीमहाव्याकरण– भिक्षु जगदीश कश्यप १०·००
१५९ क पालि मोग्गल्ल न-व्याकरण—भदन्त आनन्द कौसल्यापन ५·५०
१६० पालीव्याकरण—भिक्षुधर्मरक्षित २·५०
१६१ प्रक्रियाकौमुदी – रामचन्द्राचार्य कृत प्रसाद टीका, दो भाग २०·००
१६१ क प्रक्रियाकौमुदीविमर्श—आद्याप्रसाद मिश्र ८·००
१६२ प्रक्रियासर्वस्व—सम्पा डा० सी० कुन्हनराजा, तद्धित प्रकरण ३·६२
163 Prakriya Sarvasvam of Narayana Bhatta, Part III 3·37
१६४ प्रथमा शब्दधातुरूपसंग्रह—सम्पा० रामचन्द्र झा ·५०
१६५ प्रबन्ध पारिजात—रामचन्द्र मिश्र १·७५
१६६ प्रबन्धामृतम् १·५०
१६७ प्रयोगशास्त्रार्थकला—बेणीमाधव शुक्ल ·२५
१६८ प्रवेशिका संस्कृतव्याकरण—सत्यनारायण चौधरी ४·५०
१६९ प्रस्तावतरङ्गिणी—चारुदेव शास्त्री ४·००
170 Prakrita Kalpataru 10·00
171 Prakrita Grammar of Hema Chandra
Ed. by P. L. Vaidya 6·00
१७२ प्राकृतप्रकाश—वररुचि, रामपाणिवादकृत व्याख्या १०·००
173 Prakrita Prakash or Prakrita Grammar with English
Translation by Edward Cowell 16·00
१७४ प्राकृतप्रकाश—भामह कृत 'मनोरमा', मथुराप्रसाद दीक्षित
कृत 'चन्द्रिका' संस्कृत हिन्दी व्याख्यायुत ५·००
१७५ प्राकृतप्रवेशिका—कोमलचन्द्र जैन ४·००
१७६ प्राकृत भाषा (हिन्दी)—ले० डा० पं० प्रबोध बेचरदास १·५०
१७७ प्राकृत भाषाओं का व्याकरण—ले० रिचर्ड पिशल २०·००
१७८ प्राकृतमणिदीप—अप्पयदीक्षित प्रणीत व्याख्या ७·५०
१७९ प्राकृतमार्गोपदेशिका—(गुजराती) पं० बेचर दास १०·००
१८० प्राकृतमार्गोपदेशिका (हिन्दी)—पं० बेचरदास १०·००

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

181 Prakritarupavatara—Ed. by E. Hultzsch 9·37
१८२ प्राकृतव्याकरण—त्रिविक्रम स्वोपज्ञवृति पाठान्तर परिशिष्टादि १०·००
१८३ प्राकृतव्याकरण (हिन्दी) मधुसूदनप्रसाद मिश्र ५·००
१८४ प्राकृतव्याकरणवृत्ति (ससूत्रा)—त्रिविक्रमदेव ७·५०
१८५ प्राकृतानन्द—रघुनाथकविकृत ४·२५
१८६ प्रारम्भिकपाणिनीय—पं० विश्वनाथ शास्त्री १·००
१८७ प्रारम्भिकरचनानुवादकौमुदी—डा० कपिलदेव द्विवेदी १·४०
188 Practical Grammar of the Sanskrit Language
M. Williams 20·00
189 Practical Grammar of the Sanskrit—Kulkarni 10·00
१९० प्रौढ़मनोरमा—पञ्चसन्ध्यन्त, श्री दिवाकरशास्त्री जोशी २·५०
१९१ प्रौढ़मनोरमा—अव्ययीभावान्त शब्दरत्न, भैरवी तथा
पं० सभापति कृत टिप्पणी सहित १६·००
१९२ प्रौढ़मनोरमा—बृहच्छब्दरत्न, लघुशब्दरत्न टीकायुक्त अयमव्ययीभावसमास
प्रथमो भाग, सीताराम शास्त्री सम्पादित ३०·००
१९३ प्रौढ़मनोरमा—'शब्दरत्न' सहित, तत्पुरुषादि सचन्त प्रक्रयान्त १०·००
१९४ प्रौढ़मनोरमा–शब्दरत्नयुता–वी. एल. जोशी सम्पादित ३०·००
१९५ प्रौढ़मनोरमा–शब्दरत्न, परिशिष्टम्, वी० एल० जोशी ४·००
१९६ प्रौढ़मनोरमा–शब्दरत्न–भैरवी-भावप्रकाश सरलाटीकोपता
अव्ययीभावान्त १४·००
१९७ प्रौढ़मनोरमा–शब्दरत्न प्रश्नोत्तरावली तथा व्याकरणशास्त्र १·५०
१९८ प्रौढरचनानुवादकौमुदी—डा० कपिलदेव द्विवेदी १०·००
१९९ पूर्व पत्रावली ०·२५
२०० फक्किकादर्श – पं० विश्वनाथ झा १·२५
२०१ फक्किकाप्रकाशः (पंक्तिव्याख्यानम्) वृहद् टिप्पणी सहित १·५०
२०२ फक्किकाप्रश्नोत्तरी १·५०
२०३ फक्किकामर्मविवृत्ति—हरिशङ्कर झा १·५०
२०४ फक्किकारत्नमञ्जूषा (पंक्तिव्याख्यानम्) प्रथम भाग २·५०
२०५ फक्किकासरलार्थ १·००
206 Philosophy of Word and Meaning—Gaurinath Shastri 22·50
२०७ बटुतोषिणी—पं० हरिशङ्कर झा ०·८७

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

२०८	बनारस-सोत्तरा प्रथमा प्रश्नावली	२·५०
२०९	बालनिबन्धादर्श—संस्कृत, विश्वनाथ शास्त्री	१·५०
२१०	बिहार-सोत्तरा–प्रथमा–प्रश्नावली	२·००
२११	बृहच्छब्देन्दुशेखर—नागेशभट्ट, सम्पा. सीताराम शास्त्री, ३ भाग	४५·००
२१२	बृहत्संस्कृत शिक्षावाटिका—द्वितीय, तृतीय तथा चतुर्थ भाग	२ ०५
२१३	बृहद्अनुवादचन्द्रिका—चक्रधर हंस	१५·००
२१४	भजभारतीयम्—रामबालक शास्त्री	०·५०
२१५	भागवृक्तिसङ्कलनम् (अष्टाध्यायी की प्राचीन वृत्ति) युधिष्ठिर मीमांसक	३·००
२१६	भाषातत्व और वाक्यपदीय—डा० सत्यकाम वर्मा	१५·००
२१७	भाषामञ्जरी	०·३७
२१८	भाषावृत्ति—पुरुषोत्तम देव सटिप्पण	३०·००
२१९	भाषाप्रवेशिनी—वेंकटरमन शास्त्री	२·००
२२०	भूषणसारचन्द्रिका (प्रश्नोत्तरी)—हरिशङ्कर झा	·७५
२२१	भूषणसारप्रकाश—पं० शुकदेव झा	·७५
२२२	मध्यकौमुदीरहस्य (प्रश्नोत्तरी)	२·५०
२२३	मध्यमा व्याकरण सोत्तरा प्रश्नावली सम्पा. रामचन्द्र झा प्रथम खण्ड	१·७५
	द्वितीयखण्ड १·७५ तृतीयखण्ड २·७५ चतुर्थखण्ड	२·७५
२२४	मध्यसिद्धान्तकौमुदी—"प्रभाकरी" संस्कृत हिन्दी टीका, विश्नाथ शास्त्री ५·००,	६·००
२२५	मध्यसिद्धान्तकौमुदी "सुधा", 'इन्दुमती' संस्कृत हिन्दी टीका सहित	५·००
२२६	मध्यसिद्धान्तकौमुदी—वरदराज कृत, मूल	३·००
२२७	मनोरमारत्नप्रकाश—पं० शुकदेव झा	१ ५०
२२८	मनोरमारत्नविवेक—हरिशंकर झा	१·५०
२२९	महाभाष्यटीका—भर्तृहरिकृत, डा० वासुदेवशरण अग्रवाल सम्पादित	१०·००
२३०	महाभाष्यशब्दानुक्रमणी—श्रीधरशास्त्री	१५·००
२३१	महाभाष्यादर्श · पं० शुकदेव झा	१·२५
२३२	महाभाष्यकुञ्जिका—हरिशंकर झा	१·५०
२३३	महाभाष्यप्रश्नोत्तरी—विश्वनाथ शास्त्री	०·८७
२३४	माधवीयाधातुवृत्ति—सायणाचार्य प्रणीत	२०·००
२३५	माधवीयाधातुवृत्ति-सायणाचार्य, सम्पा. अनन्तशास्त्री	१०·००
२३६	मानक हिन्दी व्याकरण—रामचन्द्र वर्मा	२·००

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

२३७ मुग्धबोध व्याकरण (अपूर्ण), शिवनारायण सम्पादित ५·२५
238 Manual of Sanskrit Composition 0·75.
239 Manual of Sanskrit Phonatics—C. C. Uhlenbeck 12·50
240 Matriculation Sanskrit Grammar—S. R. Bhatt 2·25
२४१ रचनानुवादकौमुदी—डा० कपिलदेव द्विवेदी ३·८०
२४२ रामचन्द्रिका—दुंजीकर कृत संस्कृत शब्दरूपावली ·५०
२४३ राष्ट्रभाषा सरल हिन्दी व्याकरण—केदारनाथ शर्मा १·२५
२४४ रूपचन्द्रिका—रामचन्द्र झा २·५०
२४५ रूपतरङ्गिणी—चक्रधर ·५०
२४६ रूपमाला—४ भाग २·६५
२४७ रूपावतार—(धर्मकीर्ति) एम. रंगाचार्य, दो भाग १२·५०
२४८ लघुकौमुदी—वरदराज, श्री कुमुदरञ्जनराय कृत अंग्रेजी व्याख्या सहित ५·००
२४९ लघुकौमुदी प्रश्नोत्तरी—रामगोविन्द शुक्ल २·७५
२५० लघुकौमुदी-सोत्तरा प्रश्नावली २·००
२५१ लघुकौमुदी-प्रयोग सूची-अमृता टिप्पणीच ·३५
२५२ लघुकौमुदी सोत्तरा-प्रयोगसूची-प्रयोगार्थ सहित 'इन्दुमती' टिप्पणी सहित ·६५
२५३ लघुजूटिका अर्थात् अभिनव परिभाषेन्दुशेखर परिष्कृत निर्मित ·५०
२५४ लघुनिबन्धमणिमाला—श्रुतिकान्त १·५०
२५५ लघुभाष्य—श्री सरस्वतीकृत सम्पूर्ण व्याकरण सूत्राख्यान। सारस्वतसूत्रों पर महाभाष्यानुसार सर्वोत्तम व्याख्या। ५·००
२५६ लघुशब्देन्दुकला (लघुशब्देन्दुशेखर प्रश्नोत्तरी) १·२५
२५७ लघुशब्देन्दुप्रकाश—पं० शुकदेव झा १·००
२५८ लघुशब्देन्दुशेखर—नागेशाक्ति प्रकाश टीका २·५०
२५९ लघुशब्देन्दुशेखर—म. म. श्री पं० नित्यानन्द पन्त 'पर्वतीय' कृत 'शेखरदीपक' टीका सहित अव्ययीभावान्त १०·००
२६० लघुसारस्वतव्याकरणम् ·५०
261 Laghusiddhanta Kaumudi with English Translation & Notes by J. R. Ballantyne 12·00
262 Laghusiddhanta Kaumudi with English Translation by V. V. Mirashi 3·50
२६३ लघुसिद्धान्तकौमुदी—वरदराज कृत प्रभाकरी विवृति सहित १·२५

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

२६४ लघुसिद्धान्तकौमुदी—मूल ·६०
२६५ लघुसिद्धान्तकौमुदी—हिन्दी व्याख्या, श्रीधरानन्द शास्त्री १२·००
२६६ लघुसिद्धान्तकौमुदी—म. म. पं० शिवदत्त शर्माकृत टिप्पणी सहित १·००
२६७ लघुसिद्धान्तकौमुदी (सन्धिप्रकरण) हिन्दी व्याख्या आदि रामकृष्ण आचार्य १·५०
२६८ लघुसिद्धान्तकौमुदी—सरल हिन्दी टीका सहित, विश्वनाथ शास्त्री २·५०
२६९ लघुसिद्धान्तकौमुदी—'बाल बोधिनी' टीका सहित ०·७५
२७० लघुसिद्धान्तकौमुदी—व्याख्याकार, महेशसिंह कुशवाहा प्रथम भाग १२·५०
२७१ लघुसिद्धान्तकौमुदी—'सुधा' टीका प्रश्नोत्तर लेखन सहित ३·७५
२७२ लघुसिद्धान्तकौमुदी—'इन्दुमती' संस्कृत हिन्दी टीका २·००
२७३ लघुसिद्धान्तचन्द्रिका ·५०
२७४ लिङ्गवचनविचार—दीनबन्धु रचित ४·००
२७४ क लिङ्गानुशासनवर्गः—मुकुन्द शर्मा १२·००
२७५ लिङ्गानुशासन—दुर्गासिंह कृत स्वोपज्ञवृत्ति समेत ८·००
276 Lectures on Patanjali's Mahabhasya—Vol I, IV, V & VI by P. S. Subrahmania Shastri 45·00
२७७ लौकिकन्यायशास्त्रार्थकला ·७५
२७८ वाक्यपदीय—(भर्तृहरि) तृतीय काण्ड, सम्पादिक डा० अय्यर २५·००
279 Vakyapadiya—Vol I English Translation by K. A. S. Iyer 10·00
२८० वाक्यपदीय(भर्तृहरि)—प्रथमकाण्ड, अय्यर सम्पादित २५·००
२८१ वाक्यपदीय (भर्तृहरि)—तृतीयकाण्ड, हेलराज कृत टीका ३·३७
२८२ वाक्यपदीय-वृत्तियुत—सम्पा० के० ए० एस० अय्यर १०·००
२८३ वाक्यपदीय—ब्रह्मकाण्ड 'भावप्रदीप' संस्कृत-हिन्दी व्याख्या सहित ४·५०
२८४ वाक्यपदीय-ब्रह्मकाण्ड—रघुनाथ सम्पादितः १०·००
२८५ वाक्यपदीय (भर्तृहरि)—सम्पूर्ण मूल, नोटस् २५·००
२८६ वाक्यमुक्तावली—चारुदेवशास्त्री ३·००
२८७ वाणीप्रकाश—पं० रामबालकशास्त्री १·००
२८८ वादार्थसंग्रह—चार भाग २·००
२८९ वामनीयमलिङ्गानुशासनम्—स्वोपज्ञवृत्तिसहितम् ३·५०
२९० विभक्त्यर्थनिर्णय—गिरिधरोपाध्याय २०·००
291 Vedic Grammar by A. A. Macdonell 10·00

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

292 Vedic Reader by A. A. Macdonell 3·00
२९३ वैदिक व्याकरण (छात्र संस्करण) मेकडोनेल
अनुवादक — डा० सत्यव्रत यन्त्रस्थ
२९४ वैदिकव्याकरणभास्कर—आचार्य रुद्रमित्र शास्त्री ५·००, ६·००
२९५ वैदिकव्याकरण—डा० रामगोपाल १५·००
२९६ वैदिकव्याकरण—डा० उमेशचन्द्र पाण्डेय २·००
२९७ वैदिकस्वरमीमांसा—युधिष्ठिर मीमांसक ४·००
२९८ वैयाकरणभूषणनिबन्धसंग्रह नाम तिङर्थवादसार ·२५
२९९ वैयाकरणभूषणसार (शांकरी) प्रथम भाग ८·५०
३०० वैयाकरणभूषणसार—दर्पण, भैरवी टीकाद्वय सहित १५·००
३०१ वैयाकरणभूषणसार—"सरला" 'सुबोधिनी' व्याख्या द्वयोपेता
सम्पा० गोपालशास्त्री नेने २·००
३०२ वैयाकरणसिद्धान्तकारिका—भट्टोजीदीक्षित १·००
303 Vaiyakaran Siddhanta Kaumudi—M. V. Mahashabde 5·00
३०४ वैयाकरणसिद्धान्तपरमलघुमञ्जूषा—पं० सभापति उपाध्याय २·५०
३०५ वैयाकरणसिद्धान्तलघुमञ्जूषा—सभापति शर्मोपाध्याय कृत "रत्नप्रभा"
व्याख्यासहित १२·००
३०६ वैयाकरणसिद्धान्तलघुमञ्जूषारहस्यम् (वै० सि० लघुमञ्जूषाप्रश्नोत्तरी) १·००
३०७ वृत्तिदीपिका श्रीकृष्णमौनि रचित १·१२
३०८ व्याकरणतत्त्वप्रकाश—स्वामी रामनारायणदास शास्त्री ४·५०
३०९ व्याकरणसिद्धान्तसुधानिधि—विश्वेश्वरसूरि कृत २२·५०
३१० व्युत्पत्तिप्रदर्शनम् गूढ़ाशुद्धिप्रदर्शनम्—पं० महादेव उपाध्याय ·५०
३११ शब्दकौस्तुभ—भट्टोजीदीक्षित प्रणीत २४·००
३१२ शब्दतत्त्वप्रबोधिनी ·५०
३१३ शब्दधातुरूपछन्दसांतालिका—गौरीनाथ पाठक ·४०
३१४ शब्दमञ्जरी ·९०
३१५ शब्दमञ्जरी—के० एस० बी० १·००
३१६ शब्दमञ्जरी—शंकरराम शास्त्री सम्पादिता ·८५
३१७ शब्दरत्नप्रदीप २·००
३१८ शब्दरूपादर्श ·८१
३१९ शब्दरूपावली ·२५

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

३२०	शब्दरूपावली—गुरुप्रसाद शास्त्री	०·३७
३२१	शब्दरूपावली—श्री पं० शिवदत्तमिश्र शास्त्री	·४०
३२२	शब्दरूपावली—एकाक्षरीकोश सहित	·३५
३२३	शब्दाशब्दविवेक—पं० चारुदेव शास्त्री	५·००
३२४	शब्देन्दुसुधा—हरिशङ्कर झा	१·५०
३२५	शब्दानि अर्थ - बी०जे० सन्देसर	२·५०
३२६	शास्त्रार्थरत्नावली—जयदेव मिश्र	३·००
३२७	शिशुतोषिणी—हरिशंकर झा	·७५
३२८	सज्जनेन्द्रप्रयोगकल्पद्रुम—धर्माधिकारीकृष्ण पंडित रचित	१·५०
३२९	सन्धिचन्द्रिका - सम्पा. पं० रामचन्द्र झा	१·००
३३०	सन्धिविषय (वेदाङ्ग प्रकाश)	·८०
३३१	समासचक्र—सटिप्पण	०·२०, ०·१२
३३२	समासचक्र—पाणिनीयशिक्षासहित	·३७
३३३	समासदर्पण	·२५
३३४	सरलशब्दरूपावली	१·२५
३३५	सरल संस्कृत व्याकरण—सत्यांशुमोहनमुखोपाध्याय	२·००
३३६	सरल संस्कृत व्याकरण—श्यामविहारी शुक्ल	२·००
३३७	सरस्वतीकण्ठाभरण—भोजदेवनारायण दण्डनाथ कृत हृदयहारिणी व्याख्या सहित—चतुर्थ भाग	४·५०
३३८	संभोटव्याकरण—अंगरूप लाहुली	१०·००
३३९	संस्कृत अनुवाद व्याकरण तथा रचना (चतुर्थ भाग) —ले० यदुनन्दन मिश्रा	२·७५
३४०	संस्कृतकुसुमांजलि—प्रो० हेमराज	१·७५
341	Sanskrit Grammar—W. D. Whitney	10·00
341a	Sanskrit Grammar for Students—A. A. Macdonell	31·25
३४२	संस्कृत द्वितीय पुस्तक—रामबिहारीलाल	३·५०
343	Sanskrit Dhatupathas—a critical study—G. B. Palsule	,6·00
३४४	संस्कृतनामरूपावली	·५०
३४५	संस्कृतनिबन्धदर्शिका—पं० ओंकारनाथ मिश्रा	४·००
३४६	संस्कृतनिबन्धपथप्रदर्शक—वी० एस० आप्टे	४·००
३४७	संस्कृत निबन्धमाला—प्रथम भाग, डा० रमेशचन्द्र शास्त्री	२·००

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

३४८	संस्कृत निबन्धमाला—द्वितीय भाग, प्रो० सी० मिश्रा	२·००
३४९	संस्कृतनिबन्धादर्श—वासुदेव द्विवेदी	२·००
३५०	संस्कृतनिबन्धावली—डा० रामजी उपाध्याय	४·००
३५१	संस्कृतपठनपाठन की अनुभूत सरलतम विधि	१·५०
३५२	संस्कृतपाठमाला—भाग १–५ राहुल सांकृत्यायन	३ ९०
३५३	संस्कृतपाठमाला—सातवलेकर, २४ भाग	१४·४०
३५४	संस्कृतपाठावली—डा० बाबूराम सक्सेना	१·२५
३५५	संस्कृतप्रकाश—कुबेरनाथ द्विवेदी	२.५०
३५६	संस्कृतप्रथमपाठ—हिन्दी अनुवाद सहित	३·००
३५७	संस्कृतप्रथमपुस्तक—रामबिहारीलाल	२·००
३५८	संस्कृतप्रबन्धप्रदीप—हंसराजअग्रवाल	५·००
३५९	संस्कृतप्रबोध—दो भाग—गौरीनाथपाठक	०·२२
३६०	संस्कृतप्रवेशिका—प्रथम, द्वितीय भाग	१·७५
३६१	संस्कृत बालादर्श	·९०
३६२	,, प्रथमादर्श	१·१५
३६३	,, द्वितीयादर्श	१ २५
३६४	,, तृतीयादर्श	१·५०
३६५	संस्कृतभाषा—टी० वरो, अनुवादक डा० भोलाशंकर व्यास	१०·००
३६६	संस्कृतमुक्तावली—प्रो० रमेशचन्द्ररस्तोगी	१·५०
366a	Sanskrit Manual for High School—R. Antoine, 2 Vols	6·50
३६७	संस्कृतरचना—डा० गणेशदत्तगौड	२·००
३६८	संस्कृतरचना—आप्टे, हिन्दी अनुवादक—श्री उमेश चन्द्र पाण्डे	४ ००
३६९	संस्कृतरचनाप्रकाश—रमाकान्तद्विवेदी	१·९५
३७०	संस्कृतरचनानुवादचन्द्रिका—रामबालकशास्त्री	१·२५
३७१	संस्कृतरचनानुवादशिक्षक—आचार्यविश्वेश्वर	२·००
३७२	संस्कृतरचनासरणि—बाबूरामत्रिपाठी, २ भाग	४·५०
378a	Sanskrit Reader–Lanman	48·00
३७३	संस्कृतवाक्यप्रबोध	·२५
३७४	संस्कृतव्याकरण—डा० रामजीउपाध्याय	१०·००
३७५	संस्कृतव्याकरण (एम. ए.)—डा० श्रीनिवासशास्त्री	६·००

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

३७६ संस्कृतव्याकरण—रामचन्द्रझा ३·००
३७७ संस्कृतव्याकरण—डा० कपिलदेवद्विवेदी ५·००
३७८ संस्कृतव्याकरण की उपक्रमणिका—ईश्वरचन्द्रविद्यासागर
अनु. गोपालचन्द्रशास्त्री १·२५
३७९ संस्कृतव्याकरणकौमुदी—ईश्वरचन्द्रविद्यासागर
अनु. गोपालचन्द्र शास्त्री, ४ भाग ८·००
३८० संस्कृतव्याकरणप्रबोध—२ भाग ५·५०
३८१ संस्कृतव्याकरणप्रबोध—३ भाग संसार चन्द्र ७·५०
३८२ संस्कृतव्याकरणप्रवेशिका—बाबूरामसक्सेना ५·००
३८३ संस्कृतव्याकरणबोध—पं० रामबालकशास्त्री १·५०
३८४ संस्कृतव्याकरणशास्त्र का इतिहास—२ भाग, युधिष्ठिर मीमांसक २०·००
३८५ संस्कृतव्याकरणोदय—डा. जयमन्तमिश्र ४·५०
३८६ संस्कृतशिक्षणपद्धति—आचार्य सीताराम चतुर्वेदी २·५०
३८७ संस्कृतशिक्षा—गौरीशंकर, ३ भाग १·७१
३८८ संस्कृतशिक्षा—ले. श्री कनकलालशर्मा, ४ भाग २·५२
३८९ संस्कृतशिक्षा—पं० जीवरामउपाध्याय, ३ भाग ·६२
३९० संस्कृतशिक्षा—प्रथमभाग, पं० गिरिजादत्तत्रिपाठी ·४८
३९१ संस्कृतशिक्षा—डा. कपिलदेवद्विवेदी, ३ भाग ३·००
३९२ संस्कृतशिक्षाविधि—गौरीशंकर ३·२४
३९३ संस्कृतसरणि—केशवप्रसादमिश्र, २ भाग २·५०
३९४ संस्कृतसरलप्रबन्धप्रकाश—वी. अनन्ताचार्य १·००
३९५ संस्कृतसाहित्य में गणपाठ की परम्परा और आचार्य पाणिनी—कपिलदेव ८·००
३९६ संस्कृतस्वयंशिक्षक—डा. रामजीउपाध्याय २·५०
३९७ संस्कृतस्वयंशिक्षक—श्रीपाददामोदरसातवलेकर, २ भाग ५·००
३९८ संस्कृतस्वयंशिक्षकप्रभा (बालकोपयोगी अभिनव ग्रन्थ) ·७०
३९९ संस्कृतालोक—पं० रामबालकशास्त्री, १·५५
400 Sanskrit Historical Phonology—Franklin Edgerton 4·00
४०१ संस्कृतानुवादनिबन्धादर्श—पूर्णानन्दगौड़ १·५०
४०२ संक्षिप्तहिन्दीव्याकरण—ले० कामताप्रसाद गुरु २·५०
४०३ सादृश्यशास्त्रार्थकला ·२०
४०४ सामासिक (वेदांगप्रकाश) ·४०

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

४०५ सारस्वतव्याकरण—डा० मुन्शीरामशर्मा ५·५०
४०६ सारस्वत—चन्द्रकीर्ति टीकासहित पूर्वार्ध, उत्तरार्ध ७·२५
४०७ सारस्वत—पूर्वार्ध, भा. टी. १·००
४०८ सारस्वतव्याकरण—मूल, २ भाग १·५७
४०९ सारस्वतव्याकरण—अनुभूति, स्वरूपाचार्य आदि तीन वृत्ति ३·२५
४१० सारस्वतव्याकरण—बालबोधिनी, इन्दुमती सहित १·००
४११ सारस्वतव्याकरण—चन्द्रकीर्तिटीका "मनोरमा" विवृति तथा सटीक लिंगानुशासन प्रकरण सहित उत्तरार्ध ५·००
४१२ सिद्धान्तकौमुदी—तत्त्वबोधिनीटीका, सम्पूर्ण १०·००
४१३ सिद्धान्तकौमुदी—मूल ३·००
४१४ सिद्धान्तकौमुदी—(कारकप्रकरण) हिन्दी टीका, श्रीधरानन्दशास्त्री २·५०
४१५ सिद्धान्तकौमुदी—(कारकप्रकरण) हिन्दी व्याख्यायुत, उमेशचन्द्र पाण्डेय १·५०
४१६ सिद्धान्तकौमुदी—बालमनोरमा, १-४ भाग १३·००
४१७ सिद्धान्तकौमुदी—बालमनोरमा एवं तत्त्वबोधिनी टीका सहित पं० गिरिधरशर्मा एवं परमेश्वरानन्द सम्पादित ४ भाग २१·००
४१८ सिद्धान्तकौमुदी—(कारकप्रकरण) लक्ष्मी व्याख्या, २ भाग पं० सभापति उपाध्याय ३५·००
४१९ सिद्धान्तकौमुदी—स्त्रीप्रत्ययान्त भाग १·५०
४२० सिद्धान्तकौमुदी—मूल, जेबी गुटका ३·५०
421 Siddhanta Kaumudi—Text with English Translation & Notes by S. C. Vasu 2 Vols 73.25
४२२ सिद्धान्तकौमुदी—भट्टोजीदीक्षित कृत और एस. के. राय कृत अंग्रेजी अनुवाद ६४·००
४२३ सिद्धान्तकौमुदी—परिशिष्टसंग्रह ·५०
४२४ सिद्धान्तकौमुदीप्रतिसंस्कृता—सोमनाथशर्मा २०·००
४२५ सिद्धान्तकौमुदी—बालमनोरमा व्याख्या सहित, उत्तरार्ध ७·८०
४२६ सिद्धान्तकौमुदी प्रयोगसूची—४ भाग, जगदीशचन्द्र, जितेन्द्रियाचार्य ६ ५०
४२७ सिद्धान्तकौमुदी प्रश्नोत्तरी—४ भाग, रामगोविन्दशुक्ल ८ ५०
४२८ सिद्धान्तकौमुदी—वैदिकीप्रक्रिया, हिन्दी व्याख्या श्री उमाशंकर शर्मा 'ऋषि' ४·००
४२९ सिद्धान्तकौमुदी—शैषिकादि द्विरुक्तान्ततद्धिति प्रयोगसूची ·२०
४३० सिद्धान्तकौमुदी—स्वाद्यादि चतुरादिगणान्त प्रयोग सूची ·६५

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

४३१	सिद्धान्तकौमुदी—सोत्तरारूपलता (३६७ शब्दों की शब्द रूपावली)	१·५०
४३२	सिद्धान्तकौमुदी सोत्तरा स्वरवैदिकप्रयोगसूची	·६०
४३३	सिद्धान्तकौमुदी सोत्तराप्रयोगसूची—१-४ भाग	४·००
४३४	सिद्धान्तकौमुदी स्वरवैदिकप्रक्रियाप्रश्नोत्तरी	१·२५
४३५	सिद्धान्तचन्द्रिका—'बालबोधिनी' टीका सहित	३·५०
४३६	सिद्धान्तचन्द्रिका—सुबोधिनी, तत्त्वदीपिका टीका बृहद् चक्रधरा टिप्पणी, अव्ययार्थमाला लिङ्गानुशासन, उणादिकोष सहित	१२·००
४३७	सुगमधातुरूपावली—वासुदेवद्विवेदी	०·३०
४३८	सुगमशब्दरूपावली—वासुदेवद्विवेदी	०·२०
४३९	सुबोधसंस्कृतव्याकरण—२ भाग	१·००
४४०	सुबोधसंस्कृतसामान्यज्ञानम्	२·००
४४१	सुलभसंस्कृत—नरोत्तम शास्त्री	·३७
४४२	सोवर—(वेदाङ्ग प्रकाश)	·२५
443	Students Guide to Sanskrit Composition—V. S. Apte	4·75
४४४	स्त्रैणतद्धित—(वेदाङ्ग प्रकाश)	१·७५
४४५	स्फोटवादः—नागेशभट्ट	१०·००
446	Sphota Siddhi (Lo Demonstration du Sphota) Parmanand Misra—Biardean Madeleine	7·50
४४६क	स्मालर संस्कृत ग्रामर—काले	४·००
४४७	स्वर-वयञ्जन—डा० रघुबीर	१२·००
४४७क	हायर संस्कृत ग्रामर—काले, अनुवादक कपिलदेव द्विवेदी	७·५०
448	Higher Sanskrit Grammar—M. R. Kale	12·50
४४९	हिन्दी कारकों का विकास—डा० शिवनाथ	३ ००
४५०	हिन्दी वैदिक व्य करण—उमेशचन्द्रपाण्डेय	२·००
४५१	हिन्दी व्याकरण—कामताप्रसाद गुरु	६·००
४५२	हिन्दी शब्दानुशासन—किशोरीदास वाजपेयी	१०·००
453	Helps to the Study of Sanskrit—S. Basistha	5·00

Dictionary (कोष)

Student's English-Sanskrit Dictionary

by V. S. APTE, *Demy octavo : pp 501 cloth bound Rs. 4·00*
- This dictionary which was originally priced at Rs. 12.00, is

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

again printed by *photo-offset process* from the *third* revised and enlarged edition, against an incessant demand, in co-operation with the Ministry of Education, Government of India and has been priced at Rs. 4·00 only. It is based upon Websters' Complete English Dictionary and includes general terms of all sciences and such technical terms as could be duly represented by Sanskrit equivalents actually existing in the language besides, the general vocabulary. Quotations within easy reach, too, have been inserted to facilitate the study of Sanskrit by those who are enamoured of it and want a guide to have a deep dive into the Alma Mater of so many languages.

Student's Sanskrit-English Dictionary

by V. S. APTE, *Double Crown Octavo. pp 680 tully cloth bound & jacketed : Price Rs. 6·00*

The present volume is a *photo-offset reprint*, is a long felt need and has been brought out under the auspices of the Govt. of India. It is a boon to the Sanskrit World and covers a very large field containing Appendices on Sanskrit Prosody and Important Literary, Geographical & Technical Terms in the ancient history of India, with Sanskrit quotations wherever necessary, thus, ensuring all the requirements of a University Student & general reader interested in the study of Sanskrit Language & Literature. To reach every aspirant it has been priced at the lowest level of Rs. 6·00 only as against its original Price of Rs. 20·00.

संस्कृत-हिन्दी डिक्शनरी

आप्टे संस्कृत-इंगलिश (छात्र संस्करण) का हिन्दी अनुवाद अर्थात् संस्कृत-हिन्दी कोष १४७८ पृष्ठ में है। इतने बड़े आकार के कोष का मूल्य सर्वसाधारण के उपयोग के लिये भारत सरकार की सहायता से केवल दस रु० रखा है। साईज २०×३० आठ पृष्ठ

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

Practical Sanskrit-English Dictionary

By V. S. Apte For higher studies with appendix giving ten thousand new words, Price Rs. 50·00

English-Sanskrit Dictionary

by M. Monier Williams, *Demy Quarto pp. 800, Cloth Bound, Rs.* 36·00

The most valuable and rarest contribution. Indispensable for coinage of Technical Terms in Hindi and other Indian Languages. Reprinted by Photo-process.

A Concordance to the Principal Upanishads & Bhagavadgita

by Col. G. A. Jacob. pp. 1092 Cloth bound Price Rs. 19·40
A long out of print book is again reprinted by offset process under the Scheme of reprinting of out-of-print Sanskrit books sponsored by the Ministry of Education, Govt. of India.

Glossary of Smriti Literature

by Suresh Chandra Banerjee, *Demy Octavo* : *Pages* 142 : : *Bound* : Price Rs. 10·00

The present volume is a collection of all such important words in Sanskrit alphabetical order, with their interpretations as are contained in the comparatively early works of Smriti Literature and which have often their peculiar forms and are consequently of much importance for extension of our knowledge of Ancient Indian Geography, Religion & Society.

An Index to the Names in the Mahabharata

by Dr. S. Sorensen, Ph. D. *Royal Quarto* : : *pp.* 850 : *Rexin bound & gold embossed Antique Paper* : Rs. 73·20

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

The Present Volume is a Photo-Offset Reprint of the original edition and is an indispensable reference book to Indologists throughout the world, who are to study this subject with special reference to Mahabharata.

Epigraphical Glossary

Compiled by Dr. D. C. Sircar, Indispensable book for each library of the world. Price Rs. 50·00

रघुकोश

सम्पादक—रघुनाथदत्त बन्धु, डबल क्राउन ३२ पेजी साईज में : ५२० पृष्ठ : पक्की कपड़े की जिल्द : मू० ३·००

इन कोश में हर समय सम्बन्ध रखने वाली चीजों को वर्गीकरण करके संस्कृत पर्यायवाची शब्दों सहित दे दिया गया है। उसमें बोल-चाल के व्यवहारिक शब्द पर्याप्त मात्रा में संकलित हैं। बोल चाल के शब्दों में तत्सम, तद्भव, देशज तथा विदेशज शब्दों को ले लिया गया है और उन सब के संस्कृत पर्यायवाची शब्द दे दिये गये हैं। संस्कृत में एक वस्तु के अनेक नाम होते हुए भी यहाँ प्रायः वही पर्याय लिये हैं जो हिन्दी क शब्दों से अधिक मिलते हैं अन्य पर्यायों के लिये उनके संदर्भों का प्रमाणों सहित संकेत दे दिया गया है। प्रत्येक शब्द के लिंग ज्ञान का भी प्रबन्ध कर दिया गया है। पूर्वार्द्ध में हिन्दी व प्रचलित शब्दों का वर्गीकरण (यथा अन्नवर्ग, अग्निवर्ग, आकाशवर्ग इत्यादि) करके उनके संस्कृत के पर्यायवाची और उत्तरार्द्ध में संस्कृत शब्दों का उपरोक्त रीति से वर्गीकरण करके हिन्दी में पर्यायवाची शब्द दे दिये गये हैं। परिशिष्ट में एकाक्षर वर्ग, गणनाक्षर वर्ग, जयन्ति वर्ग, आचार वर्ग, व्यवहार वर्ग, परिभाषा वर्ग और अन्त में वर्णानुक्रमणिका विशेष रूप से दे दी गई है।

Sabdakalpadruma

(A Sanskrit Encyclopaedical Lexicon) By Lata Raja Sri Radhakanta Deva Bahadur, K. C. S. I., *Royal Octavo, 5 Big volumes, pages 3200, cloth bound and Gold embossed, Rs. 194·75*
This unparalleled Herculean task, with an unprecedented labour has been rendered into Devanagari Script & in Sanskrit Language, to make it a fruitful and authoritative reference to

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

any student of Indology and Sanskrit studies throughout the world. In this work each word with gender if a noun & grammatical character if otherwise, is followed by the explanation of its meaning, synonyms, the source being indicated from which they are taken; by the description of the object to which the word applies and by quotations from the classical works in which it is used. The utility of this work for the purposes of study was unfortunately limited by reason of its great scarcity and accordingly a REPRINT of its original bold type edition of 1886, by Photo-offset process and under the auspices of the Govt. of India, has been brought out. This important literary enterprise has brought to a successful conclusion a vast treasure of information, on a great number of subjects connected with Indian Religion, Science, Arts, Geography and material productions—an inexhaustible mine of hidden treasure—to Sanskrit scholars. It surpasses all ancient and modern Sanskrit dictionaries & is in a nutshell "Exergiste monumentum oere perennius." (Latin—A trophy more lasting than brass & other transitory things). NO LIBRARY IS COMPLETE WITHOUT IT.

शब्दकल्पद्रुम

एतद्देशस्थसमस्तकोषाशेषशास्त्रसङ्कलिताकारादिवर्गक्रम विन्यस्तशब्दनानार्थ-पर्य्याय-प्रमाण-प्रयोग-धातु- तदनुबन्धाभिधेयसहित - तत्तच्छब्द - प्रसंगोत्थितवेद - वेदाङ्ग - वेदान्त-न्याय-पुराणेतिहास- सङ्गीत-शिल्प-सूपकारशास्त्र-ज्योतिष - तन्त्राख्यानकाव्यालंकार-छन्दः प्रभृति-नामलक्षणोदाहरण-द्रव्यगुण-रोगनिदानौषधस्मृत्युक्तव्यवस्थादि - संयुक्त - सर्व्वदर्शनमतानुसारिसंस्कृताभिधानग्रन्थः—सम्पूर्ण पाँच बड़ी जिल्दों में। मूल्य रु० १६४—७५

Sanskrit-English Dictionary

By M. Monier-Williams. Greatly Enlarged and Improved 1963 Edition with the collaboration of Profs : Leumann, Cappeller & Others. *Double Demy Octavo : pages 1333 : full cloth bound and Gold embossed. price Rs. 100'00*

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

It is not the mere aggregation of words and meanings, but the method of dealing with them and arranging them, which gives a dictionary the best right to be called an original production. This New Edition of Sanskrit English Dictionary, etymologically and philologically arranged with special reference to cognate Indo-European Languages, by Sir Monier M. Williams, is on a wholly unique plan—a plan the utility of which has been now proved by experience.

The volume printed on the best offset paper in England and offered to students of both Sanskrit & Comparative Phlology, will supply them with the most complete and useful one-volume Sanskrit-English Dictionary ever yet produced—a Dictionary which in its gradual progress has kept pace with the advancing knowledge and scholarship of the day and is moderately priced as against its previous price of Rs. 183. 75.

The authors here, have earnestly striven to secure the Scholarly accuracy, Practical utility, Lucidity of arrangement and completeness and comprehensiveness to the fullest extent attainable in the latest state of Sanskrit Research.

Vedic Concordance

by Prof. M. Bloomfield, Harvard Oriental Series No. 10. Very cheap edition. Indian reprint. (Jan. 64). Price Rs. 40.00

Being an alphabetical index to every line of every stanza of the published Vedic literature and to the liturgical formulas thereof, that is, an index to the Vedic Mantras, together with an account of their variations in the different Vedic books.

Vedic Index of Names & Subjects

by Macdonell & Keith. *Demy Octavo : 2 Vols. pp. 1152 Cloth bound Jacketed Price Rs.* 60·00

This standard work of Reference is reproduced by Photo-Offset process from the original study of Sanskrit & Sankrit Literature, this Vedic Index provides Historical matter accessible to

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

in the earliest literary documents of India and thus a conspectus of the most ancient phase of Aryan Civilisation that can be realised by direct evidence, is furnished in Sanskrit Alphabetical Order and with Sanskrit & English Indexes at the end.

वैदिककोश

डा० सूर्यकान्त—प्रो. अलीगढ़ विश्वविद्यालय कृत। सुपर रायल आठ पेजी : पृष्ठ ६१० : वस्त्रावेष्टित जिल्द : मूल्य २२·५०

प्रस्तुत वैदिक कोष में प्रगल्भ लेखक ने वेदगत विषयों एवं नामों का परिपूर्ण कोष उपस्थित करके संस्कृत हिन्दी जगत का भारी उपकार किया है। मैकडानल तथा कीथ कृत वैदिक इन्डेक्स का इसमें पूर्ण समावेश है तथा जो भी त्रुटियाँ उसमें रह गई थीं उन्हें पूर्णरूपेण तथा नई खोजों का समावेश हर एक उद्धरण को मिला कर यथा स्थान रख दिया गया है। इसमें पाठकों को पहली बार वैदिक पदों के ऐतिहासिक यात्तिक अर्थों के साथ-साथ उनके भावमय अथवा प्रतीक-परक अर्थ भी पढ़ने को मिलेंगे। यह अनोखी परिपूर्णता हो इस कोष की अपनी विशेषता है।

अमरकोश (प्रथम कांड)

'सुधा' हिन्दी व्याख्या सहित

व्याख्याकार पं० विश्वनाथ झा, व्याकरणाचार्य

इस पुस्तक में अमरकोश की सुप्रसिद्ध टीका रामाश्रमी के आधार पर प्रत्येक शब्द की व्युत्पत्ति, प्रकृति-प्रत्यय का बोध और हिन्दी में सुन्दर अर्थ दिया गया है जिससे प्रत्येक शब्द के अर्थबोध के साथ-साथ उससे पूर्ण व्युत्पन्न भी हो जाता है। प्रथमा के छात्रों के लिए अत्यन्त आवश्यक संग्रहणीय पुस्तक। मूल्य ०·७५ पै०

"कोश" के अन्य महत्त्वपूर्ण ग्रन्थ

१	अंग्रेजी हिन्दी कोश—डा० भोलानाथ तिवारी	यन्त्रस्थ
२	अंग्रेजी हिन्दी पर्यायवाची कोश—बद्रीनाथ कपूर	१·००
३	अंग्रेजी-हिन्दी मेडिकल डिक्शनरी – डा० भट्टाचार्य.	१५·००

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

४ अनेकार्थध्वनिमञ्जरी—द्विरूपकोष एकाक्षरकोश सहित ·२०
५ अनेकार्थतिलकम् (महीप विरचित) मधुकर स० ६·००
६ अनेकार्थमञ्जरीनाममाला—नन्ददास ०·४५
७ अनेकार्थसंग्रहकोश—हेमचन्द्र प्रणीत, मूल ४·००
८ अभिधानचिन्तामणिकोश—चन्द्रोदयाभिवगुर्जर भाषा टीका सहित,
विजय कस्तूरसूरि १०·००
९ अभिधानचिन्तामणिकोश—मूल ४·५०
१० अभिधानचिन्तामणिकोश—हेमचन्द्र कृत, हरगोविन्द शास्त्री कृत
हिन्दी टीका २०·००
११ अभिधानराजेन्द्रकोश—सम्पूर्ण, बड़ी बड़ी ७ जिल्दों में अर्धमागधी
श्री विजयराजेन्द्रसूरि प्रणीत जैन इन्साइक्लोपीडिया २५०·००
१२ अमरकोश—मूल, सम्पूर्ण १·००
१३ अमरकोश—मूल, शब्दकोष सहित, बम्बई १·५०
१४ अमरकोश—"माहेश्वरी" टीका, बम्बई ३·००
१५ अमरकोश—पं० शक्तिधर शास्त्री कृत रसालाख्य व्याख्या सहित, लखनऊ ५·००
१६ अमरकोश—हिन्दी टीका, सम्पूर्ण, बम्बई ५·००
१७ अमरकोश—कुलचन्द गौतम ६·००
१८ अमरकोश—"मणिप्रभा" हिन्दी टीका, सम्पूर्ण ६·००
१९ अमरकोश—भा० टी० सम्पूर्ण गुटका १·२४
२० अमरकोश—(प्रथम काण्ड) भा० टी०, विश्वनाथ झा ०·७५
२१ अमरकोश—(द्वितीय काण्ड) भा० टी०, विश्वनाथ झा यन्त्रस्थ
२२ अमरकोश—(प्रथम काण्ड) गौरीनाथ पाठक १·२५
२३ अमरकोश—(द्वितीय काण्ड) मूल ०·४०
२४ अमरकोश—तृतीय काण्ड, "प्रभा" टीका सहित ०·५०
२५ अमरकोश (तिब्बती) डा० लोकेश चन्द्र ३०·००
२६ अमर टीका कामधेनु
(Tibetan translation)—S. C. Vidyabhusana १·२५
२७ अर्धमागधीकोश—अर्धमागधी संस्कृत, गुजराती, हिन्दी, ५ जिल्दों
में सम्पूर्ण (दुष्प्राप्य) १०००·००
२८ अवधीकोश—रामाज्ञा द्विवेदी ७·५०
२९ अष्टोत्तरशतनाममालिका—पं० विद्यासागर ५·००

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

३० आख्यानकमणिकोश—मुनि पुण्यविजय सम्पादित २१·००
३१ आङ्गल भारतीय प्रशासन शब्दकोश—डा० रघुवीर १५·००
३२ आङ्गल भारतीय पच्चिनामावलि—डा० रघुवीर १५·००
३३ आदर्श हिन्दी शब्दकोश (हिन्दी से हिन्दी) छोटा ६·००, बड़ा १२·००
३४ आदर्श हिन्दी-संस्कृतकोश—रामस्वरूप शास्त्री १२·५०
३५ आधुनिक कथा कोश—डा० भोलानाथ तिवारी ३·००
36 English-Tibetan Colloquial Dictionary—C. A. Bell 15·00
37 English-Tamil Dictionary—Vol I & II 17·00
38 English-Telugu Pocket Dictionary 5·62
39 English-Pali Dictionary—A. P. Buddhadatta Mahathera 56·25
40 English-Pali Dictionary—Widurupala Siyatissu 25·00
41 English-Sanskrit Dictionary—Monier Williams 36·00
42 English-Uraon Dictionary—C. Bleses 4·00
43 Indian Epigraphical Glossary—Dr. D. C. Sircar 50·00
44 Indian Conventional Sings—Dr. Raghuvir 1·00
45 Index to the Names in the Mahabharata—S. Sorensen 73·20
४६ उपनिषद्वाक्यकोश—डा० जेकोबी सम्पादित १६·४०
४७ उपनिषद्वाक्यमहाकोश २५·००
४८ उर्दू-हिन्दीकोश—श्री रामचन्द्र वर्मा ६·००
४९ उर्दू-हिन्दी कोश—केदारनाथ भट्ट ८·००
५० उर्दू-हिन्दी शब्दकोश मु० मुस्तफा १६ ००
५१ उणादिकोश—महादेव वेदान्तिविरचित ११.२५
५२ उणादिकोश—दयानन्द सरस्वति १·८०
५३ एकार्थनाममाला—द्वयक्षरी नाममाला सौभरी प्र० ४·००
54 Anglo Assamese Pronouncing Dictionary
B. N. Bhattacharya 15·00
५५ कृषिज्ञानकोश—नारायण दुलीचन्द ४·००
५६ काश्मीरशब्दामृत—ईश्वरकौल कृत, २ भाग ५·००
57 Concise Marathi Encyclopaedia—Y. R. Date, 6, vols. 150 00
58 Classical Dictionary of Hindu Mythology—J. Dowson 29·40
59 Comparative Dictionary of the Indo Aryan Languages
Fasc. 1 to 10—R. L. Turner 375·00

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

59a Comparative & Etymological Dictionary of Vedic Interpretation—Vishwabandu 8·00
60 Concise Dictionary of the Persian Language E. H. Palmer 18.90
61 Concise Etymological Sanskrit Dictionary M. Mayrhofer 333·00
62 Concise Oxford Dictionary (English-Eng.) E. Mckintosh 13·50
63 Concise Pali-English Dictonary—Buddha Datta 18·50
64 Concordance to the Principal Upanishads & B. Gita J. A. Jacob 19.40
65 Critical Pali Dictionary—13 Fasc.—V. Trenckner
66 Concise Dictionary of Literature—I. A. Langnas 36·75
67 Comprehensive English—Hindi Dictionary Dr. Raghuvir 30·00

६८ काशकृत्स्नाशब्दकल्पधातुपाठ—ए० एन० नरसिंह ५·००
६९ कोशावतंस—पूर्वार्द्ध, शि० आ० खोडेकर सम्पादित २·२५
७० कोशकल्पतरु—विश्वनाथ, २ भाग ५०·००
७१ कोशकौमुदी—रामदत्त त्रिपाठी ०·५०
७२ कोशसंग्रह १·५०
७३ कौषीतकोब्राह्मणआरण्यकविषयकोष ६·००
७४ कृषिकोश—प्रथम खण्ड, डा० विश्वनाथप्रसाद ३·००
७५ खनिजअभिज्ञान—डा० रघुवीर ५·००
७६ गणितीयकोश—डा० ब्रजमोहन ६·००
७७ गोज्ञानकोश—पं० सातवलेकर, २ भाग १२·००
78 Glossary of Smṛti Literature—S. C. Banerjee 10·00
79 Grammatical Dictionary of Vedic Phonetics Dr. Suryakant 50·00
८० ज्ञानशब्दकोश—मुकुन्दोलालश्रीवास्तव १५·००
८१ चिकित्साविज्ञानकोश—एस० सी० सेनगुप्त ७·५०
८२ जन्तुविज्ञानकोश—चम्पतस्वरूप गुप्त ५·५०
८३ जीवरसायनकोश—ब्रजकिशोर मालवीय ६·००
84 Dictionaries—Kenneth Whittakar 18·00

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

85	Dictionary of Erotic Literature—H. E. Wedeck	44·00
86	Dictionary of Art and Artist—Peter & Linda Murray	132·30
87	Dictionary of Pali Proper Names G. P. Malalasekhar, 2 Vols	162·50
88	Dictionary of Philosophy—D. D. Runes	3·75
89	Dictionary of Marathi Idioms and Proverbs, 2 Vols. Edited by Y. R. Date	35·00
90	Dictionary of French Literature—S. D. Braun	44·00
91	Dictionary of Linguistics—M. A. Pei	31·50
92	Dictionary of Wisdom—B. M. Motiwala	3·00
92a	Dictionary of Sri Aurobindo's yoga—M. P. Pandit	10·00
93	Dictionary of Sanskrit Grammar—Abhyankar	25·00
94	Dictionary of Scientific Terminology—Y. R. Date	45·00
95	Dictionary of Spanish Literature—M. Newmark	47·25
९६	डिंगलकोश—नारायण सिंह	१२·००
97	Dravidian Etymological Dictionary—T. Burrow	157·50
९८	तर्कशास्त्रपारिभाषिकशब्दावली	१·००
99	Tibetan—English Dictionary by H. A. Jaschke	63·00
100	Tibetan—Sanskrit Dictionary Vol III to XII Dr. Lokesh Chandra	295·00
101	Telugu—English Dictionary—Samdasanarayana	17·00
१०२	तुलसीशब्दसागर—भोलानाथ तिवारी	१२·००
१०३	त्रिकाण्डशेष—सार्थचन्द्रिका व्याख्या सहित	५·००
१०४	देशीनाममाला—हेमचन्द्र प्रणीत, पिशल सम्पादित, पूना	४·५०
१०५	दोहाकोश—सिद्धसरहपाद कृत, राहुल कृत छायानुवाद	१३·२५
१०६	धर्मकोश (व्यवहारकाण्ड) १–३ खण्ड	८०·००
१०७	धर्मकोश—(उपनिषदकाण्ड) १–४ खण्ड, लक्ष्मण शास्त्री सम्पादित	११०·००
१०८	धर्मकोश (संस्कारकाण्ड)—लक्ष्मणशास्त्री सम्पादित	४५·००
१०९	नानार्थमञ्जरी—राघवविरचित, कृष्णामूर्ति सम्पादित	१५·००
११०	नानार्थरत्नमाला—दण्डाधिनाथ विरचित	१५·००
१११	नानार्थसंग्रह—अजयपाल	१·७५
११२	नाममाला—धनञ्जय विरचित, सभाष्य	३·५०
११३	नाममाला—धनञ्जय विरचित हिन्दी टीका सहित	०·६२

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

११४ नाममालिका—भोज संग्रहित, दत्तात्रेय कुलकर्णी सम्पादित ६·००
115 Natakalaksanaratna Kosh of Sagaranandin 17·50
११६ नालन्दा अद्यतनकोश—प्र० ना० अग्रवाल ६·००
117 Nalanda Concise Dictionary—P. N. Aggarwal 10·50
118 Nalanda Current Dictionary—P. N. Aggarwal 16·50
११९ नालन्दाविशालशब्दसागर—(हिन्दी-हिन्दी) २५·००
१२० नृत्यरत्नकोश—कुम्भकर्ण प्रणीत—प्रथम भाग ३·७५
121 Nepali Dictionary—R. L. Turner 220·55
१२२ नेपालीभाषाशब्दसंग्रह २·५०
१२३ नेपालीशब्दकोश १·२५
१२४ पंजाबीमुहावराकोश—डा० साहिबसिंह २०·००
१२५ पर्यायमुक्तावली ६·००
१२६ पाइयलच्छीनाममाला—पं० बेचरदास जीवराज दोशी सम्पादित १०·००
१२७ पाइयसद्दमहण्णव (प्राकृत-हिन्दी कोश)—पं० हरगोविन्ददास २०·००, ३०·००
१२८ पारिभाषिकशब्दसंग्रह (अंग्रेजी-हिन्दी) १२·००
१२९ पारिभाषिकशब्दकोश—सम्पादक मुकुन्दीलाल श्रीवास्तव ४·००
१३० पुस्तकालयविज्ञानकोश—प्रभुनारायण ४·५०
131 Pali-English Dictionary—Rhys Davids 162·50
132 Pali Tripitaka Concordance—14 Pts—Edited by E. M. Hare 312·50
133 Penguin Dictionary of Quotations—J. M. & M. J. Cohen 3·68
134 Practical Sanskrit-English Dictionary—A. A. Macdonell 56·25
135 Practical Sanskrit-English Dictionary 3 Vols V. S. Apte 125·00
136 Practical Sanskrit-English Dictionary with 10000 new words—V. S. Apte (Cheap Edition) 50·00
१३७ प्रत्यक्षशरीरकोश—एस० सी० सेनगुप्त ८·००
१३८ प्रभाकर हिन्दी शब्दकोश ९·००
१३९ प्रसादसाहित्यकोश—डा० हरदेव बाहरी ८·००
140 Progressive English Dictionary (Eng. to Eng.) A. S. Hornby 4·37
१४१ प्राचीन भारतीय कोरीव कोश ५०·००
१४२ बालकोश (हिन्दी-हिन्दी) ३·००

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

१४३ बंगला हिन्दी शब्दकोश—गोपालचन्द्र चक्रवर्ती ७'००
१४४ बाल हिन्दी शब्दकोश—रामचन्द्र पाठक
१४५ बाल हिन्दी संस्कृत शब्दकोश—लक्ष्मीनारायण शास्त्री २'७५
146 Business Directory (Hindi) 12·50
१४७ बृहतपर्यायवाचीकोश—भोलानाथ तिवारी १४'००
१४८ बृहतहिन्दीशब्दसागर—प्रथम भाग, सम्पादक श्री श्यामसुन्दरदास १८'००
१४९ ब्रजभाषारीतिशासनग्रन्थकोश—जवाहरलालचतुर्वेदी ६'५०
१५० ब्रजभाषासूरकोश - प्रेमनारायण टण्डन सम्पादित, २ खण्ड ४०'००
151 Beitrage Zur Vedischen Lexicographic—Aryendra Sharma
152 Biographical Dictionary of Puranic Personages
A. K. Devi 2·50
१५३ भार्गव अंग्रेजी—हिन्दी शब्द कोश (बड़ा) १२'००
१५४ भार्गव अंग्रेजी—हिन्दी शब्द कोश (छोटा) ४'५०
१५५ भार्गव हिन्दी—अंग्रेजी शब्द कोश (बड़ा) १२'००
१५६ भार्गव हिन्दी—अंग्रेजी शब्द कोश (छोटा)
१५७ भारतीय व्यवहार कोश—प्रथम भाग(१६ भाषाओं का कोश)
वि० दिनकर० नरवाणे सम्पादित ४०'००
१५८ भारतज्ञानकोश—अवनीन्द्र कुमार विद्यालंकार ३'००
१५९ भारतवर्षीय प्राचीन चरित्रकोश—म० म० सिद्धेश्वर शास्त्री ६०'००
१६० भारतीय भाषायें और वैज्ञानिक शब्दावली—डा० ओमप्रकाश ८'७५
१६१ भारतीयराजनीतिकोश—कालिदास खण्ड ८'००
१६२ भारतीय संस्कृति कोश—प० महादेव शास्त्री जोशी, २ भाग ६०'००
१६३ भाषा विज्ञान कोश—डा० भोलानाथ तिवारी २५'००
१६४ भाषा शब्द कोश (हिन्दी से हिन्दी)—रामशंकर शुक्ला १२'००
१६५ भाषा शास्त्र का पारिभाषिक शब्द कोश—राजेन्द्र द्विवेदी १०'००
१६६ भूतत्त्वविज्ञानकोश (अंग्रेजी-हिन्दी) २'५०
१६७ भौगोलिकशब्दकोश-परिभाषायें—डा० कपूर १०'००
१६८ मगही व्याकरण कोश—डा० सम्पति अर्याणी ७'५०
१६९ महाभारतकोश—रामकुमार राय, २ खण्ड ४०'००
१७० महाराष्ट्रशब्दकोश—१ से ७ भाग ७०'००
१७१ मानक हिन्दी कोश—१–५ खण्ड—सम्पादक डा० रामचन्द्र वर्मा १२५'००
१७२ मानविकी पारिभाषिक कोश (दर्शन खण्ड) डा० नागेन्द्र सम्पादक १२'५०

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

१७३	मानविकी पारिभाषिक कोश (साहित्य खण्ड)—डा० नागेन्द्र	१२·५०
१७४	मानसशब्दसागर—बद्रीनारायण अग्रवाल	२०·००
१७५	मेडीकल पाकेट डिक्शनरी—एम० भट्टाचार्य	१०·००
१७६	रघुकोष—रघुनाथदत्त बन्धु	३·००
१७७	राजस्थानीसब्दकोश—सीताराम लालस, प्रथम खण्ड	५०·००
१७८	राष्ट्रभाषा हिन्दी मराठी कोश—कृष्णलाल वर्मा	७·००
१७९	रामगुलामशब्दकोश	५·००
180	Russian—Hindi Dictionary—W. Rajendra Rishi	35·00
१८१	रूपनिघन्टुकोश—रूपलाल वैश्य	३ ००
१८२	लघु हिन्दी शब्द सागर—पं० करुणापति त्रिपाठी	११·००
१८३	लघुतर हिन्दी शब्द सागर—करुणापति त्रिपाठी सम्पादक	६·००
184	Lexicographical Studies in Jain Sanskrit B.T. Sandesara	15·00
१८५	लोककथाकोश—प्राचार्य नलिनीविलोचन शर्मा	·३२
१८६	वस्तुरत्नकोश—सम्पादक डा० प्रियबालाशाह	४·००
१८७	वाचस्पत्यम्—तारानाथ भट्टाचार्य, ६ भागों में	२७५·००
१८८	वाणिज्यशब्दकोश—कान्तानाथ वर्मा	२·००
१८९	वाणिज्यशब्दकोश—डा० रघुवीर	२·००
१९०	वाल्मीकीयरामायणकोश—डा० रामकुमार राय	२०·००
१९१	विधिशब्दावली	२.५०
१९२	विश्वइतिहासकोश—चन्द्रराज भण्डारी १–५ खण्ड	५२·५०
193	Vedanta Dictionary—Ernest Wood	26·00
१९४	वैज्ञानिक परिभाषाकोश—बदरीनाथ कपूर	१२ ००
195	Vedic Index to the Names and Subjects A. B. Keith & Macdonell, 2 Vols	60·00
१९६	वैदिकइण्डेक्स (हिन्दी) कीथ, मैकडोनल, २ भाग	४०·००
197	Vedic Concordance—M. Bloomfield	40·00
१९८	वैदिककोश—डा० सूर्यकान्त	२२·५०
१९९	वैदिकपदानुक्रमकोश—विश्वबन्धु सम्पादित, १६ भाग	३२०·००
200	Vocabulary of the Kui Language—Wingield	2·50
२०१	शब्दकल्पद्रुम—राजा राधाकान्तदेव विरचित, ५ भागों में	१९४·७५
२०२	शब्दभेदप्रकाश—एकातरकोशयुक्त	०·२५

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

२०३ शब्दरत्नप्रदीप—अज्ञातकर्तृक २·००
२०५ शब्दार्थकल्पतरु—श्री मामिडि वेङ्कटाचार्य २०·००
२०६ शारदीयाख्याननाममाला—हर्षकीर्ति प्रणीत ५·००
२०७ शाश्वतकोश—अनेकार्थसमुच्चय—एन० एन० कुलकर्णी सम्पादित १२·००
२०८ शिवकोश—शिवदत्त मिश्र प्रणीत, आर० जी० हर्ष सम्पादित १२·००
२०९ श्रीकोश (हिन्दी-संस्कृत कोष) प० केदारनाथ १·२५
२१० श्रौतकोश—वापट सी० दातार, सी० ज० काशीकर सम्पादित २ भाग
211 Sraut Kosh—English Translation
२१२ संक्षिप्त हिन्दी शब्दसागर—रामचन्द्र वर्मा १८·००
२१३ संक्षिप्त हिन्दी कोश—भोलानाथ तिवारी ३·००
214 Standard English—Panjabi Dictionary—Vol I (A. to E.) Dr. Tej Singh 15·00
२१५ समाचारपत्रशब्दकोश (अंग्रेजी-हिन्दी)—डा० सत्यप्रकाश १·७५
२१६ सरकारी हिन्दी शब्दकोश (अंग्रेजी-हिन्दी) ४·००
217 Sanskrit-English Dictionary—Monier Williams 100·00
218 Sanskrit-English Marathi Dictionary—Kanta Karjuna 5·00
219 Sanskrit-Kannada Dictionary ed. by M.V.P. Sastri 6·75
२२० संस्कृतशब्दार्थकौस्तुभ (संस्कृत हिन्दी कोष)—द्वारिकाप्रसाद शर्मा १५·००
२२१ सामान्य अंग्रेजी हिन्दी शब्दकोश—राममूर्ति सिंह १२·००
२२२ साहित्यशास्त्र का पारिभाषिक शब्दकोश—राजेन्द्र द्विवेदी ८·००
२२३ साहित्यकपरिभाषकशब्दावली
२२४ साहित्यकशब्दावली—प्रेमनारायण टण्डन १०·००
225 Student's English-Prakrit Dictionary—H. Kapadia 2·00
229 Student's-English-Sanskrit Dictionary—V. S. Apte 4·00
227 Student's New Model Practical Dictionary 2·00
228 Student's New Sanskrit Dictionary—Devasthali 5·62
229 Student's Practical English-Sanskrit Dictionary 1·50
230 Student's Practical Dictionary (English-Hindi) 8·00
231 Student's Practical Sanskrit-English Dictionary 2·50
232 Student's Sanskrit-English Dictionary—V. S. Apte 6.00
२३३ स्टूडेण्ट संस्कृत-हिन्दी कोष—बी० एस० आप्टे १०·००
234 Student's Home Dictionary (English-Hindi) 6·50

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

२३५ हिन्दी कथा-कोश—धीरेन्द्र वर्मा ३·००
२३६ हिन्दी पर्यायो का भाषागत अध्ययन—डा० बद्रीनाथ कपूर ७·००
२३७ हिन्दी बँगला कोश—गोपाल चन्द्र चक्रवर्ती ६ ५०
२३८ हिन्दी मुहावरा कोश—डा० भोलानाथ तिवारी
२३९ हिन्दी मुहावरा कोश—प्रो० आर० जे० सरहिन्दी ३·००
२४० हिन्दी रचनाकोश—डा० नलिन विलोचन शर्मा ४·००
२४१ हिन्दी विश्वकोश—२-७ खण्ड १५५·००
२४२ हिन्दी शब्दकोश—बलरामसिंह ८·००
२४३ हिन्दी शब्द सागर—प्रथम भाग १८·००
२४४ हिन्दी शब्दानुशासन—किशोरी दास वाजपेयी १०·००
२४५ हिन्दी शब्दार्थपारिजात (हिन्दी से हिन्दी)—पं० द्वारिका प्रसाद ६·००
२४६ हिन्दी साहित्यकार कोश—प्रेम नारायण टण्डन १५·००
२४७ हिन्दी संस्कृत शब्दकोश—(छात्रोपयोगी) १·५०
२४८ हिन्दी साहित्य कोश—धीरेन्द्र वर्मा सम्पादित, २ भाग ४५·००

संगीत (Music)

संगीतराज [प्रथम खण्ड]

संपादिका डा० प्रेमलता शर्मा

संगीत के साथ मानव का रागात्मक संबन्ध रहा है। भारत की आदि संस्कृति के प्रतीक वेद ही गीतमय हैं। बिना मंत्र के किसी यज्ञ का संपादन नहीं और न ही कोई कार्य पवित्र माना जाता है। इसे और भी परिष्कृत करने के लिए आदि ऋषियों ने सामवेद की ऋचाओं का दर्शन किया।

संगीतराज मेवाड़ के राजा राणा कुंभ की अमर रचना है। इसे भारतीय संगीत शास्त्र का विश्व कोष ही कहा जा सकता है। इसमें संगीत की विभिन्न शाखाओं नृत्य, गीत, वाद्य का विवेचन किया गया है। इतना ही नहीं रस सिद्धान्त पर भी पर्याप्त प्रकाश डाला गया है।

राणा कुंभ की अमर कृति आजतक अप्रकाशित थी, इसे महत्वपूर्ण टिप्पणियों और Texts के साथ प्रकाशित किया गया है। पृष्ठ सं० १००० मूल्य—४०·००।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

भारतीय संगीत के युगप्रवर्तक आचार्य

संगीत मार्तण्ड पं० श्री ओंकारनाथ ठाकुर की कृतियाँ

१. प्रणव भारती—(भारतीय स्वरशास्त्र पर एकमात्र प्रामाणिक ग्रन्थ) जिसमें स्वर, श्रुति, ग्राम, मूर्च्छना, तान, अलंकार आदि विषयों का विशद विवेचन है। भारतीय संगीत के विद्यार्थियों तथा प्राध्यापकों के लिए अनिवार्य। मूल्य ९·००

२. संगीताञ्जलि प्रथम भाग			३·००
३.	,,	द्वितीय ,,	३·००
४.	,,	तृतीय ,,	५·००
५.	,,	चतुर्थ ,,	८·००
६.	,,	पञ्चम ,,	८·००
७.	,,	षष्ठ ,,	८·००
८.	,,	सप्तम, अष्टम भाग	(छप रहा है)

संगीत के क्रियात्मक तथा शास्त्रीय पक्षों की प्रामाणिक सामग्री से सुसज्जित यह पुस्तकमाला संगीत के अध्ययन में क्रमिक विकास की सुविधा को ध्यान में रखते हुए प्रस्तुत की गई है। आज तक प्रकाशित संगीत–पुस्तक-मालाओं की अपेक्षा यह वैज्ञानिक क्रम में, प्रामाणिक सामग्री के संकलन में तथा नवीन शोधपूर्ण विवेचन में अद्वितीय है। प्रत्येक भाग में नौ रागों का शास्त्रीय विवेचन, मुक्त आलापतान तथा, बद्धआलापतान, बोलतान आदि के अतिरिक्त भूमिका में अनेक शास्त्रीय विषयों का समावेश है।

भावरंग-लहरी

संगीताचार्य पं० बलवन्त राय भट्ट

प्राध्यापक, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय,

१२५ मौलिक संगीत कृतियों का संकलन। मूल्य ५)

प्रचलित तथा अप्रचलित प्रायः ५० रागों में, २५ तालों में (जिनमें कई एक नवीनताएँ भी हैं), देव-स्तुति, नीच-वाक्य, प्रकृति-वर्णन, पौराणिक प्रसंग, सूक्तियों, उपनिषद्-वाक्य, प्रेम भक्ति आदि विविध विधियों में ये कृतियाँ निबद्ध हैं। भारतीय संगीत के साहित्य पक्ष की दुर्बलता को दूर करने का इसमें सफल प्रयास किया गया है। प्रत्येक संगीतप्रेमी के लिए संकलन रुचिकर होगा।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

संगीत के अन्य महत्वपूर्ण ग्रन्थ

1 Aspects of Indian Music 0·75
2 Understanding Indian Music—V. Joshi 10·50
3 Understanding Bharat Natyam—M. Sarabhai 15·00
4 Abhinayadarpana of Nandikeshwar with English Translation 10·00
५ अभिनय प्रकाशिका—गोपीनाथ—अंग्रेजी अनुवाद सहित १०·५०
६ श्रीमापत—के० वासुदेव शास्त्री सम्पादित २·१२
7 Art of Kathakali—Pandeya 18·00
8 Indian Classical Music and the Western Listener—Howard Boatwright. 0·50
9 Indian Dances—C. R. Srinivasa Iyengar.. 4.00
10 Indian Music—Mrs. Ram. 7·50
11 Illustrations of Indian Music & Dance 55·00
12 Introduction to Bharta Natya Shastra
13 Introduction to Music—H. M. Miller 12·00
१४ उत्तरीय संगीत शास्त्र -- पतंजलदेव शर्मा १·५०
15 Aids to the Teaching of Music with illustrations—P. Sambamoorthy 5.62
16 Elements of Western Music for Students of Indian Music—P. Sambamoorthy 2·79
१७ कथक नृत्य— सचित्र ८·००
१८ कथक नृत्य परिचय—पं० प्रेमनारायण, प्रो० हरिश्चन्द्र श्री वास्तव २·००
19 Classical and Folk Dances of India 50·00
20 Classical Dance Poses of India—R. Rao 5·00
21 Kathakali—K. B. Iyer 78·75
२२ कथकलीनृत्यकला—सचित्र नृत्य-शिचा ३·००
23 Catalogue of the Musical Instruments Exhibited—P. Sambamoorthy, 2·25
२४ क्रमिक पुस्तक मालिका (भाग १ से ६)—भातखण्डे कृत मराठी पुस्तक का हिन्दी रुपान्तर ५९·२५
25 Guide to the Teaching of Music—P. Sambamoorthy 1·37
26 Great Composers (Their Lives & Contributions) P· Sambamoorthy. Book I 3·97

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

27 Great Musicians (Their lives & achievements)
P. Sambamoorthy 2·25
28 Kudimiyamalai Inscription on Music Vol I (Sources) 6·00
29 Glimpses of Indian Music—V. Ram 7·50
३० चतुर्दण्डीप्रकाशिका २·२५
31 Gitalamkara—Danielou & Bhatt 14·25
32 Illustrations of Indian Music and Dance in
western Indian Style—V. S. Nawab 55·00
33 Textes des Purana Sur la theorie musicall, Vol I
Alain Daniilon and N. R. Bhatt. 6·00
34 Tablean Comparatig des Intervalles Musicawg
Alain Danielou 6.00
35 Dance of India—P. Banerji 8·75
36 Dance of India—Bhavanani 65·00
37 Dancing Foot—M. R. Anand 1.50
38 Dances of India—Ragini Devi 6·00
39 Dictionary of South Indian Music & Musicians—by
P. Sambamoorthy Vol I 7·87
Vol II 11·31
४० तबलावादन—गिरीशचन्द्र श्रीवास्तव २ ५०
४१ दत्तिलम्—दत्तिल कृत (हिन्दी टीका सहित) २·५०
४२ ध्वनि और संगीत—ललित किशोर सिंह ४·५०
४३ नृत्याध्याय १०·००
४४ नृत्तसंग्रह—अज्ञातकर्तृक, सम्पा०—डा० (कु०) प्रियबालाशाह १·७५
४५ नृत्य अंक—प्राचीन एवं आधुनिक नृत्यों पर सचित्र लेख ३·५०
४६ नृत्यरत्नकोष—कुम्भकर्ण नृपति विरचित ३·७५
47 New Oxford History of Music, Vol I, II & III 262·50
४८ नृत्यभारती—प्रथम भाग, सुधाकर ४·००
४९ पाश्चात्य संगीत शिक्षा ७·००
50 Pelican History of Music
५१ प्रणव भारती—पं० ओंमकारनाथ ठाकुर ६·००
52 Folk Dances of Maharashtra 10·00
53 Theory of Indian Music—Bishanswarup 10.00
54 Folk Dances of India 2·00

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

५५	भातखण्डे संगीत शास्त्र (शास्त्रीय विवेचन) भाग १ से ४	३६ ००
५६	भातखण्डे स्मृति ग्रन्थ—प्रभाकर चिचौरे सम्पादित	२५ ००
५७	भारत का संगीत सिद्धान्त—कैलाशचन्द्र देव बृहस्पति	६·५०
५८	भारत के लोकनृत्य (सचित्र २०० लोकनृत्य)	५·००
५९	भारतीय नृत्यकला—केशवचन्द्र वर्मा	५·००
६०	भावरंग लहरी—पं० बलवन्तराय भट्ट	५·००
६१	भारतभाष्यम्—प्रथम खण्ड, तान्यभूपाल	८·००
62	Natya-Nritya & Nritya—K. M. Verma	3·00
63	Folk Dences of India—Banerji	7.75
64	Bharata Natya & its Costume—G. S. Ghurye	4.50
65	Bharata Natya and other Dances—Iyer	1·75
66	Musical Instrument of India	
67	Music of Hindostan—F. Strongways	
68	Music of India—N. A. Williard & Jones	12.00
69	Music of India—Popely	5·00
70	Music of India—B. Bandoypadhyay	5·50
71	Music for Mohini—Bhabani Bhattacharya	2·50
72	Music East & West—Ashton	25·00
७३	मेलरागमालिका—महावघनाथ शिवन्	५·००
७४	मुद्राविचारप्रकरण	
75	Musique Cambodge—A. Danielou	6·00
76	Music in the life of Man—J. Portnoy	24·00
77	Melodies Played by H. N. Serforju's Band in Staff Notation—P. Sambamoorthy	12·37
78	Melodic Type of Hindustan—N. K. Bose	25·00
79	Universal History of Music—Raja S. M. Tagore	20·00
८०	रसकौमुदी—श्रीकण्ठ विरचित	१३·००
८१	राग आलापना—सम्पादक के. वासुदेव शास्त्री	६ ००
८२	रागकोश—१४३८ रागों का लघुपरिचय	१·२५
८३	रागतत्त्वविबोध—श्रीनिवास विरचित	४·००
84	Ragnidhi Vol III—B. Subba Rao,	7·50
८५	रागनिर्णय—पं० जे० एन० पाठक	४·००
८६	रागपरिचय—ले०-हरिश्चन्द्र श्रीवास्तव, भाग ४	

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

87	Ragas and Ragini—O. C. Ganguli	25·00
88	Ragas and Ragini—Sanyjal	5·00
८९	रागरत्नाकर—भाषा	७·००
९०	रागविबोध – रच० एवं व्याख्या०—सोमनाथ	१५·००
91	Language of Mus ic—Deryek Cooke	9·37
92	Laya Vadyas	4 94
93	Language of Kathakali—Prem Kumar	6·00
94	World of Music—Vol I & II	115·00
९५	वाद्यशास्त्र - प्रो० हरिश्चन्द्र श्रीवास्तव	२·५०
96	Sruti Vadoyas (Droves)	4·20
९७	संगीतअर्चना (क्रमिक पुस्तक तीसरी को ताने)—भातखण्डे	६·००
९८	संगीत अष्टछाप—जीवनी व ध्रुपद स्वरलिपियाँ	६·००
९९	संगीत कादम्बिनी—(क्रमिक पुस्तक चौथी की ताने)—भातखण्डे	६·००
१००	संगीतदर्पणम्—चतुर दामोदरकृत	३·००
१०१	संगीतदर्पण—दामोदरकृत (हिन्दी टीका सहित)	२ ५०
१०२	संगीत चिंतामणि—डा० बृहस्पति	२० ००
१०३	संगीतदामोदर—शुभकर	१६·००
१०४	संगीतिका—विश्वम्भरनाथ	५·००
१०५	संगीत मालिका—मुहम्मद शाह कृत अंग्रेजी भूमिका	५·००
१०६	संगीत निबन्धमाला	२·५०
१०७	संगीत निबन्ध संग्रह—हरिश्चन्द्र श्रीवास्तव	२ ५०
१०८	संगीत निबन्धावली	२ ५०
१०९	संगीत निर्देश—नन्दकिशोर मदन	२ ००
११०	संगीत पद्धतियों का तुलनात्मक अध्ययन	३·००
१११	संगीत परिचय,—रामावतार संगीताचार्य भाग १ और ३	२·२५
११२	संगीत पारिजात—अहोबाल (हि० टी०)	५·००
११३	संगीत प्रवेशिका —(संस्कृत, हिन्दी, अंग्रेजी)—भाग २	३·००
११४	संगीत-भागवद्‌गीता—शिवप्रसाद तथा प्रो० इंगले	०·७५
११५	संगीतरत्नाकर, भाग १ (हि० टी०)	७·००
११६	संगीतरत्नाकर :—शार्ङ्गदेवकृत चतुर मल्लिनाथ विरचित कलानिधि तथा सिंह भूपाल विरचित संगीत सुधाकर टीका सहित, ४ भागों में	९०·००

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

११७	संगीतराज—प्रथम खण्ड, प्रेमलता शर्मा	४०·००
११८	संगीतरागदर्शन—बसन्त ठकार	२·५०
११९	संगीत शास्त्र—के० वासुदेव शास्त्री	६·५०
१२०	संगीत शास्त्र मीमांसा—पं० जगदीश नारायण पाठक	४·००
१२१	संगीत सागर—गायन, वादंन एवं नर्तन	७·००
१२२	संगीत सारामृतः—तुलाजी	३·३०
१२३	संगीताञ्जली—पं० ओंकार नाथ ठाकुर भाग ६	३५·००
१२४	संगीत विशारद	६·००
१२५	संगीतो पनिषद् सारोद्धार—वाचनाचार्य	१२·००
१२६	संग्रहचूड़ामणिः—रच० गोविन्द वेंकट कविकृत बाहत्तरमेलकर्त्ता कृतः	१५·००
127	Studies in Indian Music—by T. V. Subha Rao	15·00
128	Story of Indian Music—O. Goswami	12·00
129	South Indian Music—P. Sambamoorthy Book I to V	26·16
130	South Indian Musical Instruments	2·53
१३१	सितारतरङ्ग—श्री ब्रजनन्दन गोस्वामी भाग १	१·५०
१३२	सितारमालिका—थ्योरी विवेचन १ से ४ वर्ष	६·००
१३३	सितारवादन, भाग १—ले० प्रो० सतीशचन्द्र	२·००
१३४	सितार शिक्षा (सचित्र शिक्षा व ४२ बन्दिशें)	४·००
१३५	स्वरमेल कलानिधि—हिन्दी	१·००
१३६	स्वरमालिका—विष्णु नारायण भातखण्डे	२·५०
१३७	सा रे ग म—राधा वल्लभ	२·५०
१३८	सितारदर्पण	३·७५
१३९	सूरसंगीत—२ भाग	३·००
140	Hindu Music from Various Authors—S. M. Tagore	25·00
141	History of Indian Music—P. Sambamoorthy	6·62
142	History of Indian Music, with Particular reference to its Theory & Practical—B. A. Pingle	8·00
143	Historical Development of Indian Music Prajnananand	30·00
144	Hand Book of Staff Notation—H. Boatwright	5·00
145	History of Popular Music—David Ewen	12·00
146	History of Indian Music—Swami Prajnanananda	10·00

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

शिल्प (Shilpa)

रूपमण्डन (Rupamandana)

The study of Indian iconography will not be complete unless one dives deep into the works of Mandana, particularly Rupamandana. It is a treatise on iconography and seeks to describe the features of the images of divinities. The present edition of Rupamandana, which has been prepared after judicious comparisons of the versions of different manuscripts provides for the first time the correct version of the text. The correct readings have been determined with the help of other works dealing with the subject like Aprajitpriccha, Brihat sambita, Matsya Purana, Agni Purana Visnudharmottara Purana, Sukraniti, Manasollasa etc. The edition has throughly maintained a comparative outlook by referring to the ana Logous description of other texts in the foot note. This considerably adds to the value of this edition of Rupamandana and provides a handy material for the researchers in the field of iconography.

The text and the Hindi translation of Rupamandana is preceded by a long introduction (pp. 1—103). The first part discusses the tradition of works on Silpa Sastra and determines the value of Rupamandana. The author gives here a short account of the life and other works of Mandana. The Second part of the introduction discusses the contents of Rupamandana chapterwise. The text portion consists of Slokas with their Hindi translation and pathabhedas. The subject has been made quite understandable in to the help of 33 charts and classified lists. It will provide easy reading to University students of art and iconography on one hand and significant material to the researchers of this field.

Some opinions :—

Your work will of great use to scholars and specialists in iconography and art and I hope that the work is well received in the learned press. — A. L. Basham.

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

इस ग्रन्थ का सुन्दर ढङ्ग से सम्पादन कर आपने प्राचीन भारतीय कला के अध्येताओं का उपकार किया है। श्लोकों का अर्थ ठीक ढङ्ग से प्रस्तुत किया गया है। ग्रन्थ की विस्तृत भूमिका में प्रतिमा विधान पर युक्ति संगत व्याख्या दी गयी है। इससे विविध मूर्तियों के स्वरूप तथा उनके सम्बन्ध में व्यापक जानकारी प्राप्त करने में सहायता मिलेगी। कृष्णदत्त वाजपेयी

The present edition of Rupamandana by Dr. Balram Srivastava is a valuable addition to Indology. A. K. Narain.

दीपार्णवः

स्थपति प्रभाशंकर ओघडभाई, शिल्पविशारद संशोधित

श्री विश्वकर्मा प्रणीत शिल्प का प्राचीन महान ग्रन्थ—७६ + ४८८ = ५५६ पृष्ठो; ३५० लाईन ब्लोक रेखाचित्र; १०५ हाफटोन फोटा ब्लोको सहित मूल श्लोक और उनका गुजराती अनुवाद; मर्म और टिप्पण आदि भरपुर सम्पूर्ण विवरण के साथ का दलदार ग्रन्थ अध्याय २७ जिनमें प्रासादका सम्पूर्ण प्रमाणो अनेक देवदेवीओं की शिल्पाकृतियाँ अनेक प्लान इलिवेशन साथ दिये गये हैं। शिल्पका प्रत्येक अङ्ग प्रासाद विषय बहुत सुन्दर रीति से दिया गया है। मूल्य २५·००

प्रासादमञ्जरी

मूल सहित हिन्दी अनुवाद ग्रन्थ सूत्रधार मण्डन के कनिष्ठबन्धु सूत्रधार नाथजी के वास्तुमञ्जरी नामक बड़ा ग्रन्थ की रचना की हो उसके मध्य का स्तबक प्रासाद विषय का संक्षिप्त रूप है। ग्रन्थ में ८० रेखाचित्र बड़ा है और हाफटोन फोटो ब्लोक २० है। मूल्य ७·००

"शिल्पशास्त्र" के अन्य महत्त्वपूर्ण ग्रन्थ

१ अपराजितपृच्छा—भुवनदेवाचार्य विरचित, मनकड सम्पादित २५·००

२ काश्यपशिल्प—महेश्वर विरचित ४·७५

३ काश्यप शिल्पशास्त्रम्—(तामिल लिपि में) सुब्रह्मण्य शास्त्री सम्पादित ९.५०

4 Canons of Indian Art—(a study of Vastuvidya) T. Bhattacharya 30·00

५ कृषिपराशर—मजूमदार सम्पादित ७·५०

6 Thirty Two Vidyas—Narayan Swami Aiyar 7·00

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

७ दीपार्णव—मूल, गुजराती अनुवाद सहित, प्रभाशंकर ओघडभाई २५·००
८ पुरावस्तुविद्या (गुजराती)—रमणलाल नागरण महेता ७·५०
९ प्रसादमञ्जरी—भा० टी० ७·००
१० प्रसादमण्डन (सूत्रधार मण्डन अन्तगर्त) भगवान दास जैन सम्पादित १६·००
११ बुद्धप्रतिमालक्षण—सम्यक् सबुंद्धभाषित प्रतिमालक्षण विवरणी टीका १·२५
१२ बुद्धभूषणाम्—वेलङ्कर सम्पादित १·५०
१३ ब्राह्मीयचित्रकर्मशास्त्रम्—तामिल लिपि में ६·५०
१४ बृहदविमानशास्त्र—स्वामी ब्रह्ममुनि १०·००
१५ भारतीय वास्तु शास्त्र (वास्तुविद्या तथा पुरनिवेश) महाराज भोजदेव विरचित समराङ्गण सूत्रधार के आधार पर—डा० द्विजेन्द्रनाथ ८·५०
१६ भारतीय वस्तु शास्त्र—प्रतिमाविज्ञानै एवं प्र० वि० की पृष्ठभूमि पूजा परम्परा—डा० द्विजेन्द्रनाथ शुक्ल १५·००
17 Manasara Pt. II 9·00
१८ रूपमण्डन—मूल, हिन्दी अनुवाद, बलराम श्रीवास्तव ६·००
19 Vastu Sastra Vol I (Hindu Science of Architecture) D. N. Shukla 36·00
20 Vastu Sastra Vol II (Hindu Canons of Iconography & Painting) D. N. Shukla 36·00
२१ विश्वकर्मप्रकाश —भा० टी०, खुला पत्रा ३ ५०
२२ विश्वकर्मावास्तुशास्त्रम् – के० वासुदेव शास्त्री सम्पादित १६·८७
२३ विश्वकर्मविद्याप्रकाश
24 Shilpa Prakasa—Ramchandra Mahapatra 3.50
२५ शिल्परत्न—कुमार प्रणीत, केवल उत्तरार्द्ध
२६ शिल्परत्न (तामिल) १२·२५
२७ शेषसमुच्चय—विमर्शिनी सहित शंकर प्रणीत, डा० पी० के० नारायण पिल्लई सम्पादित ४·५०
२८ समराङ्गणसूत्रधार—मूलमात्र प्रथम भाग, डा० द्विजेन्द्र नाथ शुक्ल सम्पादित १५·००
२९ समराङ्गणसूत्रधार—हिन्दी अनुवाद सहित, डा० द्विजेन्द्र नाथ शुक्ल ३६·००
३० सकलधिकार ५ ५०
३१ सारस्वतीयंचित्रकर्मशास्त्र ९·५०

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

विलम्ब से प्रकाशित पुस्तकें

१	अथर्ववेद-पदपाठानुक्रमणी —विश्वबन्धु सम्पादित	२५·००
२	अपभ्रंश व्याकरण—पं० शालिग्राम उपाध्याय	५·५०
३	आपस्तम्बधर्मातिप्रयोग	१·५०
4	Introduction to Prakrit—Woolner	15·00
5	Isopanisad—Sitanath Goswami	3·50
६	ईशावास्योपनिषदभाष्य—शंकरभाष्ययुक्त, सटिप्पणम्	०·५०
७	ऋकसूक्तसंग्रह—सत्यनारायण पाण्डेय द्वारा हिन्दी तथा अंग्रेजी अनुवाद	५·००
८	ऋग्वेद घनसार—गनिलक्षण स्वरलक्षण	१·५०
९	ऋग्वेदमन्त्रसूची	२·००
१०	ऋग्वेदमन्त्रानुक्रमणिका— विश्ववन्धु सम्पादित	१२·००
११	ऋग्वेद ऋषिदेवता छन्दानुक्रमणिका	७·००
१२	ऋतुसहार (English) एच० एच० विल्सन	१·५०
१३	कठोपनिषत–सभाष्या श्री सच्चिदानन्देन्द्र सरस्वतो सयमिकृत टिप्पणयादि युक्त	३·२५
१४	कुमारसम्भवम् (English) एच० एच० विल्सन	६·००
१५	केनोपनिषत्-सभाष्या—श्री सच्चिदानन्देन्द्र सरस्वती सयमिकृत–टिप्पणयादियुक्ता	२·००
16	Gangesa's Theory of Truth—Jitendra Nath Mohanty	15·00
१७	गोतमधर्मसूत्राणि—मिताक्षरावृत्ति व हिन्दी टीका सहित	१०·००
१८	ज्योतिषकल्पसार–प्रथम भाग, पण्डित रमाशंकर उपाध्याय	१·५०
१९	तत्वसमाससूत्रम्—डा० रमाशंकर भट्टाचार्य	१·००
20	Tamil Portuguese Dictionary—Antao de Proeuge	60·00
२१	तैत्तिरीयोपनिषत्-आनन्दवल्ली–भृगुवल्ली—श्री सच्चिदानन्देन्द्र सरस्वती निर्मित भाष्यार्थ विमर्शिनो व्याख्या सहित	८·५०
२२	तैत्तिरीयोपनिषत–शिक्षावल्ली–साभाष्य	१·७५
२३	तैत्तिरीयोसंहिता—सायणभाष्य, सम्पूर्ण	५६००
24	Dasasloki—Advaita Pancharatnam & Dhanyastakam of Sri Sankara Bhagvatpadachary	0·85
२५	नाटककथासंग्रह—वी० अनन्ताचार्य	१·२५
२६	सांख्यरहस्यम्—श्रीराम पाण्डेय	४·७५
२७	न्यायदर्शन—वात्सायन भाष्य, हिन्दी टीका	१०·००
२८	निरुक्तसम्मर्श—स्वामी ब्रह्ममुनी परिव्राज	१५·००

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

२९	पौराणिक श्रीमहालक्ष्मीपूजापद्धति—मदनलाल शर्मा गौ०	०.६०
30	Pre-Pallavan Tamil Index—Dr. N. Subramaniam	33·75
31	First Book of Skt. Translation—Bhandarkar	3·37
32	Four Yogas—Swami Atmananda	10·00
३३	ब्रह्माद्वैतप्रकाशिका—भाववागीश विरचित	१.५०
३४	ब्रह्मसूत्रशांकरभाष्य—चतुसूत्री, भा० टी० आचार्य विश्वेश्वर	५.००
३५	मुण्डकोपनिषत्–साभाष्या श्री सच्चिदानन्देन्द्रा सरस्वती सायमिकृति टिप्पणीयुक्त	२.५०
36	Yoga and Yantra—Dr. P. H. Pott	25·00
37	Yoga and Personality—Dr. K. S. Joshi	20·00
38	Yoga Exercises—S. Mazumdar	12·50
39	Laxicography—S. M. Katre	4.25
४०	वेद मन्त्रों के प्रकाश में वेद कथायें—डा० सम्पूर्णानन्द	१.५०
41	Vedas and Sastras–a General View—Vishwa Bandhu	4·00
४२	वेददर्शनयोग—महर्षि में हो परमहंस जी महाराज	१.५०
४३	वेदशास्त्रसंग्रह (साहित्यरत्नकोष)—विश्वबन्धु सम्पादित	१५.००
४४	वेदान्तदोप—रामानुजाचार्य, भा० टी० २ भाग	७.३०
४५	विवेकचन्द्रोदयनाटकम—शिवकवि विरचितम्	५.००
४६	वैदिकव्याख्यानमाला—सातवलेकर, ४ भाग	२०.००
४७	वैयासकन्यायमाला	४.००
४८	व्रततिथिनिर्णय—आचार्य सिंहनन्दी	३.००
49	What Vedanta Means to Me—Arthur Osborne	21·00
५०	व्याकरण...का संचिप्त इतिहास—श्री रमाकान्त मिश्र	१४.००
५१	सत्यंशिवंसुन्द...—रामानन्द तिवारी, २ भाग	५०.००
५२	सिद्धहेमचन्द्रशब्दानुशासन—लघुवृत्ति	६.००
५३	श्रीभाष्यम्–रामानुज विराचित वीरराघवाचार्य कृत टीका सहित, २ भाग	२८.१२
५४	सुभाषितसंग्रह—	२५.००
५५	शुद्धाद्वैतमार्तण्ड—गोस्वामी गिरधर जी महाराज	५.००
५६	श्रुतिसिद्धान्तसारसंग्रह	५.००
57	Stories from Panchatantra	3·00
58	Hidden Teaching Beyond Yoga—Paul Brunton	44·10
५९	हमारे संस्कार सूत्र—लक्ष्मीराम शास्त्री	३.००
६०	हिन्दुओं के व्रत, पर्व और त्योहार—राम प्रताप त्रिपाठी	७.००

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

A GREAT ANNOUNCEMENT

THE OCEAN OF STORY

Being

C. H. Tawney's Translation of

SOMADEVA'S KATHA SARITA SAGARA

Or

(Ocean of Streams of Story)

Now edited with Introduction

fresh explanatory notes and terminal essay

By

N. M. PENZER M. A., F. R. C. S., F. G. S.

in Ten Volumes

Size Royal Octavo **pp 3890** **Very Shortly**

Rexin bound with Gold Letters,

Ocean of Story is for its size, the earliest collection of stories extent in the world. This is the mirror of rich Indian imagination that Somadeva has left as a legacy to posterity. This whole work contains 2200 distiches or Slokas, which gives some idea of its immense size.

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

We Proudly Announce

THE RE-PUBLICATION OF

LINGUISTIC SURVEY OF INDIA

•

Edited & Compiled by

G. R. Grierson

•

LINGUISTIC SURVEY OF INDIA is a very useful book for the students of Linguistics. Late G. R. Grierson was very much interested with all the Indian languages and after his 30 years hard labour he was able to collect all authentic facts and figures about all the dialects of India. There is hardly such a voluminous work in any part of the world where such authoritative facts and figures have been collected.

•

MOTILAL BANARSIDASS

DELHI :: VARANASI :: PATNA

Punjab Printing Press, Pashupatewar, Phone : 5380

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi